आओ ! प्राकृत सीखें

(भाग-2)

गुजराती-रचयिता

पू.आ. श्रीमद् विजय **कस्तुरसूरीश्वरजी म.सा.**

हिन्दी-संपादक :-

पू.आ. श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

आओ ! प्राकृत सीखें

(भाग-2)

(GUIDE BOOK)

गुजराती मार्गदर्शिका के कर्ता

शासन प्रभावक पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय
अशोकचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न, शासन प्रभावक
पू. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय **सोमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

हिन्दी अनुवाद के संपादक

बीसवीं सदी के महान् योगी, नवकार साधक, पूज्यपाद पंन्यासप्रवर
श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के चरम शिष्यरत्न
प्रवचन-प्रभावक, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

165

प्रकाशक

दिव्य संदेश प्रकाशन

C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

आवृत्ति : द्वितीय • मूल्य : 300/- रुपये • विमोचन : दि. 21-11-2025
प्रतियाँ : 1000 • स्थल : महावीर जैन विद्यालय, उदयपुर (राज.)

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.

- **आप जैन धर्म के रहस्य-जैन इतिहास-जैन तत्त्वज्ञान-जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य** आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा. **द्वारा लिखित उपलब्ध 6 पुस्तकें दी जाएगी और अर्हद् दिव्य संदेश मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।**

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
बोरिवली-मुंबई (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी,
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. राहुल वैद,
C/o. अरिहंत मेटल कं.,
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006.
M. 9810353108

4. चंदन एजन्सीज
मुंबई, M. 9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क

Rs. 4000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन

C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डिंग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

(2) प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004. M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से...

प्राकृतविशारद, शासनप्रभावक **स्व. पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी महाराज** द्वारा विरचित **प्राकृत विज्ञान पाठमाला** जो गुजराती भाषी वर्ग के लिए **प्राकृत भाषा** सीखने के लिए अति उपयोगी प्रकाशन है । उसकी गाइड बुक-मार्गोपदेशिका का सर्जन **प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय सोमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** ने आज से 33 वर्ष पूर्व गुजराती भाषा में किया था । हिन्दी भाषी विशाल वर्ग भी प्राकृत भाषा का अध्ययन कर पूर्वाचार्य महर्षियों के सदुपदेश से लाभान्वित हो सके, इसी पवित्र भावना से मरुधररत्न, हिन्दी साहित्यकार **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** ने इस गुजराती प्रकाशन के हिन्दी अनुवाद का संपादन किया है ।

वर्तमान में गुजराती भाषाविद् साधु-साध्वीजी भगवंत इसी **प्राकृत विज्ञान पाठमाला** एवं मार्गदर्शिका के आधार पर प्राकृत भाषा का अध्ययन करते हैं ।

हिन्दी भाषी वर्ग के लिए इस प्रकार के प्रकाशन की बहुत बडी कमी थी । अपने संयम जीवन के प्रारंभिक काल में **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** ने भी इसी **प्राकृत विज्ञान पाठमाला** के आधार पर प्राकृत भाषा का अभ्यास किया था । गुजराती भाषा से अनभिज्ञ विद्यार्थियों के लिए इस साहित्य की कमी पूज्यश्री को अखरती थी । इस कमी की पूर्ति के लिए उनका पूरा पूरा लक्ष्य था ।

पूज्यश्री की प्रेरणा से विदूषी **पू.सा. श्री निर्वेदरेखाश्रीजी** की सुशिष्या **पू.सा. श्री अध्यात्मरेखाश्रीजी** ने **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** मार्गोपदेशिका के हिन्दी अनुवाद के लिए प्रयास किया था । तत्पश्चात् पूज्य आचार्य श्री ने अतिव्यस्तता के बीच भी समय निकालकर उस प्रेस

कॉपी का परिमार्जन किया। इसी के फलस्वरुप आज हम पाठकों के कर कमलों में **'आओ ! प्राकृत सीखें' भाग-2** पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति का प्रकाशन करते हुए परम आनंद का अनुभव कर रहे हैं। पूर्व आवृत्ति में रही भूलों का परिमार्जन **पू.मु. श्री स्थूलभद्रविजयजी म.** ने किया है !

हमारे हिन्दी पाठकों के लिए गोडवाड के गौरव, मरुभूमि के रत्न **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का परिचय देने की हमें कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनका साहित्य ही उनका **'परिचय'** बन गया है। **जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर** के रुप में वे जग मशहूर है ।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पूज्यश्री के पूर्व प्रकाशनों की भांति यह प्रकाशन भी लोकोपयोगी और उपकारक सिद्ध होगा ।

-: निवेदक :-

दिव्यसंदेश प्रकाशन ट्रस्ट मंडल

प्राकृत विद्यार्थियों को सूचनाएँ

प्राकृत विज्ञान पाठमाला की गाइडबुक Guide Book के सर्जन का मुख्य उद्देश्य प्राकृत भाषा के ज्ञान में विशेष वृद्धि करने का ही है। इस मार्गदर्शिका में **प्राकृत विज्ञान पाठमाला** में जो जो प्राकृत वाक्य हैं, उनका संस्कृत और गुजराती अनुवाद किया गया है तथा जो जो गुजराती वाक्य है, उनका प्राकृत और संस्कृत अनुवाद किया गया है।

हमारा उद्देश्य होशियार विद्यार्थी को कमजोर बनाने की नहीं है, बल्कि कमजोर विद्यार्थी को होशियार बनाने का है।

प्राकृत विज्ञान पाठमाला का अभ्यास करते समय विद्यार्थी स्वयं अपनी बुद्धि से प्राकृत का संस्कृत-गुजराती और गुजराती वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत और गुजराती वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद कर इस गाइड से check कर अपनी बुद्धि विकसित कर सकेगा।

प्राकृत विज्ञान पाठमाला की उपयोगिता

प्रातः स्मरणीय परम आदरणीय पुनः पुनः वंदनीय, धर्मराजा पूज्यपाद दादा **गुरुदेव आचार्य देव श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी म.सा.** के ह्रदय में यह बात हमेशा रहती थी कि न्याय, व्याकरण और साहित्य के अभ्यास के कारण संस्कृत भाषा का विकास तो खूब हुआ है और हो रहा हैं, परंतु श्री वीरप्रभु के मुखारविंद से निकली अमृत समान अर्ध मागधी प्राकृत भाषा जो जैनों की **'मातृभाषा'** कहलाती है, फिर भी उसका विकास क्यों नहीं ? उसकी उपेक्षा क्यों हो रही है ? इसी बात को लक्ष्य में रखकर उन्होंने प्राकृत भाषा को आत्मसात् कर, प्राकृत भाषा के रसिक बाल जीव भी इस भाषा का ज्ञान सरलता से कर सके, इसके लिए **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** की रचना की थी।

वि.सं. 1999 में इस पाठमाला की प्रथम आवृत्ति, वि.सं. 2004 में द्वितीय और वि.सं. 2014 में इसकी तृतीय आवृत्ति प्रकाशित हुई।

प्रत्येक आवृत्ति के प्रकाशन समय में अपने विशाल अनुभव के आधार पर विद्यार्थियों के अभ्यास में सरलता रहे, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर जहां-तहां सुधार भी किया । इसी के फल स्वरुप प्राकृत भाषा के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक एक आदर्श पुस्तक बनी है ।

पुस्तक की विशेषताएं

卐 पाठमाला जो प्राकृत वाक्य हैं, उनका संस्कृत और गुजारीत अनुवाद एवं गुजराती वाक्यों का प्राकृत और संस्कृत अनुवाद किया है, जिससे विद्यार्थियों का सुगमता रहेगी ।

卐 **'पाठमाला'** के पीछे परिशिष्य में जो **'गद्य-पद्यमाला'** दी है, जो-जो गाथाएं हैं, उनकी भी संस्कृत व प्राकृत छाया दी है ।

प्राकृत शब्दकोष और धातु कोष भी परिशिष्ट में संग्रहित किए है ।

पूज्यों का उपकार

संयम जीवन में जिस शुभ कार्य का प्रारंभ करते है, उसमें मेरे जीवन के प्राणसमा परम कृपालु पूज्यपाद दादा गुरुदेवश्री की पूर्ण कृपा साथ में ही होती है परंतु उन्ही के ग्रंथ का संपादन करना हो तो उनकी कृपा विशेष हो, यह स्वभाविक है ।

जिन शासन के नभो मंडल में सूर्य-चंद्र की तरह प्रकाशमान बंधु युगल दीर्घदृष्टा परमोपकारी **परम पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रोदयसूरीश्वरजी म.सा.** तथा भवोदधि तारक, समता के भंडार पूज्यपाद गुरुदेव **आचार्य श्रीमद् विजय अशोकचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** की अंतर की भावना थी कि **पूज्य श्रीमान् धर्मराजा गुरुदेव श्री** के सभी ग्रंथ सरल बने और अभ्यासी उसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग करे, इस प्रकार प्रयत्नशील रहे, अतः उन दोनों पूज्यों का मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा ही इस संपादन का निमित्त बना है ।

प्राकृत भाषा के अभ्यासियों के लिए यह **'मार्गदर्शिका'** खूब सहायक बनेगी, इसके साथ ही इसमें संकलित कई गाथाएं, श्लोक एवं कथाओं के अंश भी जीवन में उपयोगी बन सकते हैं, अतः उसका पठन-पाठन कर प्राकृत के अनुरागी बनकर अपना जीवन सफल बनाए, इसी शुभेच्छा के साथ !

वि.सं. 2047
आसो पूर्णिमा
बरवाला (गुज.)

परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय
चंद्रोदयसूरीश्वरजी म.सा. के गुरुबंधु
परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
अशोकचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के
चरणरेणु **पं. सोमचन्द्रविजय गणि**
(वर्तमान में प.पू.आचार्यदेव श्रीमद्
विजय **सोमचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.)**

संपादक की कलम से...

विश्व में जितने भी धर्म है, उन धर्मों का मौलिक साहित्य किसी न किसी भाषा से जुडा हुआ है ।

क्रिश्चियन धर्म का मूलभूत साहित्य Bible अंग्रेजी भाषा में है । इस्लाम धर्म का मूलभूत साहित्य उर्दू भाषा में है । हिन्दुओं के मुख्य ग्रंथ वेद-पुराण-उपनिषद् आदि संस्कृत भाषा में है । बौद्धों के त्रिपिटक पाली भाषा में है, उसी प्रकार जैनों के मूल आगम वर्तमान में विद्यमान आचारांग आदि ग्यारह अंग प्राकृत भाषा में है, जबकि बारहवां अंग दृष्टिवाद संस्कृत भाषा में था ।

वर्तमान में श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ को सर्वमान्य 45 आगम प्राकृत भाषा में ही है । उन आगमों पर उपलब्ध निर्युक्तियां भाष्य-चूर्णि आदि भी प्राकृत भाषा में ही है । हाँ ! उन आगमों के गंभीर रहस्यों को जानने समझने के लिए पूर्वाचार्य महर्षियों ने संस्कृत भाषा में टीकाओं की भी रचनाएं की है ।

वर्तमान में दो अंगों पर शीलांकाचार्य और नो अंगों पर **अभयदेवसूरिजी म.** की टीकाएं संस्कृत भाषा में विद्यमान है ।

श्रावक जीवन के आचारप्रधान ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में ही है सुबह-शाम करने योग्य प्रतिक्रमण के सभी सूत्रों की भाषा प्राकृत है । छः आवश्यक के सभी सूत्र प्राकृत भाषा में है । भागवती दीक्षा अंगीकार करने के बाद जिन **आवश्यक** और **दशवैकालिक** सूत्रों के योगोद्वहन किए जाते है, उनकी भी भाषा **प्राकृत** है ।

बडे ही दु:ख की बात है कि जैनों के प्रधान सूत्र प्राकृत भाषा में होने पर भी उस भाषा को जानने समझनेवाले, श्रावक वर्ग में तो नहींवत् ही है । इस प्रकार प्राकृत भाषा का बोध साधु-साध्वी वर्ग तक सीमित हो गया है ।

भाषा के यथार्थ बोध के अभाव में जब वे सूत्र कंठस्थ किए जाते है तो या तो उनका सही उच्चारण नहीं हो पाता है-अथवा सही उच्चारण होने पर भी उनको बोलने में विशेष आनंद नहीं आता है ।

भाषा बोध के अभाव में प्रतिक्रमण आदि की क्रियाएं नीरस बनती जा रही है । कहीं-कहीं क्रियाएं हो रही हैं, परंतु उसका आनंद चेहरे पर नजर नहीं आ रहा है । तीर्थंकर परमात्मा की वाणी स्वरुप ये सूत्र शाश्वत सत्यों

का बोध करानेवाले होने पर भी भाषाबोध के अभाव में उन शाश्वत सत्यों के लाभ से वंचित रहे है । जैन-दर्शन का मौलिक साहित्य संस्कृत और प्राकृत भाषा में हैं, अतः जैन-दर्शन के मर्म को जानना समझना हो तो संस्कृत और प्राकृत भाषा का बोध होना ही चाहिये ।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यजी ने सिद्धहेमशब्दानुशासनम् के आठवें अध्याय के रुप में प्राकृत व्याकरण की रचना की है, परंतु उस व्याकरण को जानने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान होना जरुरी है ।

संस्कृत भाषा को जाननेवाला ही उस व्याकरण को समझ सकता है, उसी व्याकरण के आधार पर **स्व. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय कस्तुरसूरीश्वरजी महाराजा** ने गुजराती माध्यम से प्राकृत भाषा सीखने के लिए **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** की रचना की थी । उसी पाठमाला के आधार पर **पू.आचार्य श्री अशोकचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्य रत्न **पू. पंन्यास श्री सोमचंद्रविजयजी** (वर्तमान में आचार्यश्री) ने मार्गदर्शिका की रचना की थी । उस पुस्तक के आधार पर आज तक हजारों साधु-साध्वीजी भगवंतों ने प्राकृत भाषा का अभ्यास किया है ।

गुजराती भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति भी प्राकृत भाषा सीख सके, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही **'प्राकृत विज्ञान पाठमाला'** मार्ग दर्शिका की हिन्दी आवृत्ति **'आओ ! प्राकृत सीखें' भाग-2** के नाम से प्रकाशित हो रही है ।

प्राकृत भाषा में जैन धर्म का अमूल्य खजाना है, उस खजाने से लाभान्वित होने के लिए प्राकृत भाषा का अभ्यास बहुत जरुरी है ।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी भाषी वर्ग को प्राकृत सीखने के लिए खूब उपयोगी बन सकेगी । सभी भव्यात्माएँ प्राकृत भाषा का अध्ययन कर वीर प्रभु के बताएं शाश्वत सत्यों को अपने जीवन में आत्मसात् कर आत्मकल्याण के मार्ग में खूब खूब आगे बढे, इसी शुभ कामना के साथ !

निवेदक :

सुमेरपुर (राज.)	अध्यात्मयोगी पूज्यपाद
प्रतिष्ठा शुभदिन	**पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दि. 4-5-2013 शनिवार	कृपाकांक्षी **रत्नसेनसूरि**

Introduction

संपादक का संक्षिप्त-जीवन परिचय

गृहस्थ नाम	: राजु (राजमल चोपड़ा)
माता का नाम	: चंपाबाई
पिता का नाम	: छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा
जन्मभूमि	: बाली (राज.)
जन्म तिथि	: भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-1958
बचपन में धार्मिक अभ्यास	: पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि
ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार	: 18 जून 1974
व्यावहारिक अभ्यास	: 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.)
दीक्षा दाता	: पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य
गुरुदेव	: अध्यात्मयोगी पू. पंन्यास **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दीक्षा दिन	: माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977
समुदाय	: शासन प्रभावक पू.आ. **श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**
दीक्षा दिन विशेषता	: भारत भर में लगभग 50 से ज्यादा दीक्षाएँ
108 मुमुक्षु वरघोड़ा	: 9 जनवरी 1977, मुंबई
दीक्षा स्थल	: न्याति नोहरा-बाली राज.
दीक्षा समय उम्र	: 18 वर्ष
बड़ी दीक्षा	: फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033
बड़ी दीक्षा स्थल	: घाणेराव (राज.)
प्रथम चातुर्मास	: संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में।

- **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि ।
- **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि ।
- **प्रथम प्रवचन प्रारंभ :** फागुन सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात) ।
- **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038 ।

- **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक तामिलनाडू आदि ।
- **पादविहार :** लगभग 49,000 कि.मी. ।
- **अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठायें :** मंड्या (कर्णाटक), वलवण, कामसेट, भायंदर (महा.) राजपुरा, भोपाल सागर, दयालशा किल्ला–राजसमंद आदि में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, जयपुर (राज.) में शिखरबद्ध जिनालय की प्रतिष्ठा, ऐम्पायर स्क्वेर-चिंचवड, बेंगलोर में 3 गृह जिनालय, पूना, विजयपुर तथा कोयम्बत्तुर में एक-एक गृह जिनालय।
- **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपुर पंचतीर्थी ।
- **छ'री पालक संघ निश्रादाता :** उदयपुर से केशरियाजी, गिरधरनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड़ से कुंभोज, सोलापुर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर, हस्तगिरि से शत्रुंजय होकर गिरनार, शत्रुंजय बारह गाऊ, सेवाडी से राणकपूर पंचतीर्थी, बेंगलोर से सुशीलधाम, कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी।
- **प्रथम पुस्तक आलेखन :** ``**वात्सल्य के महासागर**'' वि.सं.संवत् 2038 ।
- **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** 270 ।
- **शिष्य-प्रशिष्य : स्व.मु. श्री उदयरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री केवलरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री कीर्तिरत्नविजयजी म., मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म., मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म., मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म., स्व. मुनि श्री यशोभद्रविजयजी म., मुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म., मुनि श्री निर्वाणभद्रविजयजी म. मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.**
- **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, नेर, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव), नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर, महावीर धाम (मुंबई), लोढा धाम, सुखधाम (राज.), महावीर जैन विद्यालय-उदयपुर ।
- **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, विक्रम संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।
- **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, विक्रम संवत् 2061, दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।
- **आचार्य पदवी :** पोष वदी-1, विक्रम संवत् 2067, दि. 20-1-2011 थाणा ।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा आलेखित हिन्दी साहित्य

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
1.	वात्सल्य के महासागर	2038	अध्यात्मयोगी पू. गुरुदेव का जीवन परिचय	बाली
2.	सामायिक सूत्र विवेचना	2039	सामायिक सूत्रों का विवेचन	
3.	चैत्यवंदन सूत्र विवेचना	2040	चैत्यवंदन के सूत्रों का विवेचन	
4.	आलोचना सूत्र विवेचना	2040	इच्छामिठामि आदि सूत्रों का विवेचन	
5.	श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र विवेचन	2041	वंदित्तु सूत्र पर विस्तृत विवेचन	
6.	कर्मन् की गत न्यारी	2041	महाबल-मलयासुंदरी का चरित्र	पूना
7.	आनंदघन चौबीसी विवेचन	2041	पू.आनंदघनजी के 24 स्तवनों का विवेचन	विजयापूर
8.	मानवता तब महक उठेगी	2041	मार्गानुसारिता के 18 गुणों का विवेचन	
9.	मानवता के दीप जलाएं	2043	मार्गानुसारिता के 17 गुणों का विवेचन	
10.	जिंदगी जिंदादिली का नाम है	2044	पू.पादलिप्तसूरिजी आदि चरित्र	कैलाश नगर राज.
11.	चेतन ! मोहनींद अब त्यागो	2044	'चेतन ज्ञान अजुवालिए' पर विवेचन	रानीगांव
12.	युवानो ! जागो	2045	धुम्रपान आदि पर विवेचन	रानीगांव
13.	शांत सुधारस-विवेचन भाग 1	2045	8 भावनाओं पर विवेचन	पाली
14.	शांत सुधारस- विवेचन भाग 2	2045	8 भावनाओं पर विवेचन	पाली
15.	रिमझिम रिमझिम अमृत बरसे	2045	लेखों का संग्रह	जयपुर
16.	मृत्यु की मंगल यात्रा	2046	'मृत्यु' विषयक पत्रों का संग्रह	सेवाडी
17.	जीवन की मंगल यात्रा	2046	जीवन की सफलता के उपाय	पिंडवाडा
18.	महाभारत और हमारी संस्कृति-1	2046	महाभारत पर जाहिर-प्रवचन	जयपुर
19.	महाभारत और हमारी संस्कृति-2	2046	महाभारत पर जाहिर-प्रवचन	पिंडवाडा
20.	तब चमक उठेगी युवा पीढी	2047	नव युवकों को मार्गदर्शन	पिंडवाडा
21.	The Light of Humanity	2047	मार्गानुसारिता के गुणों का वर्णन	उदयपुर
22.	अंखियाँ प्रभु दर्शन की प्यासी	2047	पू.यशो.वि. की चौबीसी पर विवेचन	शंखेश्वर
23.	युवा चेतना विशेषांक	2047	व्यसनादि पर लेखों का संग्रह	उदयपुर
24.	तब आंसू भी मोती बन जाते है	2047	सागरदत्त चरित्र	उदयपुर
25.	शीतल नहीं छाया रे (गुज.)	2047	गुजराती वार्ताओं का संग्रह	
26.	युवा संदेश	2048	नवयुवकों को शुभ संदेश	पाटण
27.	रामायण में संस्कृति भाग 1	2048	रतलाम में दिए जाहिर-प्रवचन	राजकोट
28.	रामायण में संस्कृति-भाग 2	2048	रतलाम में दिए जाहिर-प्रवचन	जामनगर
29.	जीवन निर्माण विशेषांक	2049	सद्गुणोपासना संबंधी लेख	जामनगर
30.	श्रावक जीवन दर्शन	2049	श्राद्धविधि ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद	गिरधरनगर

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
31.	The Message for the youth	2049	युवा संदेश का अंग्रेजी अनुवाद	गिरधरनगर
32.	यौवन सुरक्षा विशेषांक	2049	ब्रह्मचर्य विषयक लेखों का संग्रह	गिरधरनगर
33.	आनंद की शोध	2050	5 जाहिर प्रवचन	गिरधरनगर
34.	आग और पानी भाग-1	2050	समरादित्य चरित्र कथा	माटुंगा
35.	आग और पानी भाग-2	2050	समरादित्य चरित्र कथा	माटुंगा
36.	शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति)	2068	शत्रुंजय महिमा एवं यात्रा विधि	पालीताणा
37.	सवाल आपके, जवाब हमारे	2050	जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तरी	माटुंगा
38.	जैन विज्ञान	2050	नव तत्व के पदार्थों पर विवेचन	थाणा
39.	आहार विज्ञान विशेषांक	2050	जैन आहार पद्धति	थाणा
40.	How to live true life ?	2050	जीवन की मंगल यात्रा का अनुवाद	थाणा
41.	भक्ति से मुक्ति	2050	प्रभु भक्ति के स्तवन आदि	थाणा
42.	आओ ! प्रतिक्रमण करे	2051	राई व देवसी आदि प्रतिक्रमण	थाणा
43.	प्रिय कहानियाँ	2051	कहानियों का संग्रह	मुलुंड
44.	अध्यात्म योगी पूज्य गुरुदेव	2051	पं. श्री के जीवन विषयक लेख	भायखला
45.	आओ ! श्रावक बने	2051	श्रावक के 12 व्रतों का निर्देश	कल्याण
46.	गौतम स्वामी-जंबुस्वामी	2051	महापुरुषों का विस्तृत जीवन	कल्याण
47.	जैनाचार विशेषांक	2051	जैन आचार विषयक लेख	कल्याण
48.	हंसश्राद्धव्रत दीपिका (गु.)	2051	श्रावक के 12 व्रत	कल्याण
49.	कर्म को नहीं शर्म	2052	भीमसेन चरित्र	कुर्ला
50.	मनोहर कहानियाँ	2052	प्रेरणादायी 90 कहानियाँ	कुर्ला
51.	मृत्यु-महोत्सव	2052	मृत्यु पर विवेचन	दादर
52.	नवलाख नवकार	2052	नवकार	
53.	सफलता की सीढियाँ	2052	श्रावक के 21 गुणों पर विवेचन	दादर
54.	श्रमणाचार विशेषांक	2052	साधु जीवनचर्या विषयक	
55.	विविध देववंदन	2052	दीपावली आदि देववंदन	भायंदर
56.	नवपद-प्रवचन	2052	नवपद के प्रवचन	चीराबाजार
57.	ऐतिहासिक कहानियाँ	2052	भरत आदि 19 महापुरुष	सायन
58.	तेजस्वी सितारे	2053	स्थूलभद्र आदि छ महापुरुष	सायन
59.	सन्नारी विशेषांक	2053	सन्नारी विषयक लेख संग्रह	सायन
60.	मिच्छामि दुक्कडम्	2053	क्षमापना पर उपदेश	सायन
61.	Panch Pratikraman Sootra	2053	पंच प्रतिक्रमण मूल सूत्र	सायन
62.	जीवन ने जीवी तूं जाण (गुज.)	2053	श्रद्धांजलि लेखों का संग्रह	सायन
63.	आवो ! वार्ता कहुं (गुज.)	2053	विविध वार्ताओं का संग्रह	सायन
64.	अमृत की बुंदे	2054	प्रेरणादायी उपदेश	बांद्रा (ई)

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
65.	श्रीपाल-मयणा	2054	श्रीपाल और मयणा सुंदरी	थाणा
66.	शंका और समाधान-भाग-1	2054	1200 प्रश्नों के जवाब	थाणा
67.	प्रवचन धारा	2054	पांच जाहिर प्रवचन	धूले
68.	राजस्थान तीर्थ विशेषांक	2054	राजस्थान के तीर्थ	धूले
69.	क्षमापना	2054	क्षमापना संबंधी चिंतन	धूले
70.	भगवान महावीर	2054	महावीर प्रभु के 27 भव	धूले
71.	आओ ! पौषध करें	2055	पौषध की विधि	चिंचवड
72.	प्रवचन मोती	2054	उपदेशात्मक वचन	चिंचवड
73.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	2055	चैत्यवंदन-स्तुति संग्रह	चिंचवड
74.	श्रावक कर्तव्य भाग 1	2055	श्रावक के 18 कर्तव्यों पर विवेचन	कराड
75.	श्रावक कर्तव्य भाग 2	2055	श्रावक के 18 कर्तव्यों पर विवेचन	कराड
76.	कर्म नचाए नाच	2056	महासती तरंगवती चरित्र	सोलापूर
77.	माता-पिता	2056	संतानों के कर्तव्य	सोलापूर
78.	प्रवचन-रत्न	2056	प्रवचनों का आंशिक अवतरण	पूना
79.	आओ ! तत्वज्ञान सीखे !	2056	जैन तत्वज्ञान के रहस्य	चिंचवड स्टे.
80.	क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	2056	क्रोध के कटु परिणाम	चिंचवड स्टे.
81.	जिन शासन के ज्योतिर्धर	2057	प्रभावक महापुरुष	चिंचवड गांव
82.	आहार क्यों और कैसे ?	2057	आहार संबंधी जानकारी	दहीसर
83.	महावीर प्रभु का सचित्र जीवन	2057	सचित्र संपूर्ण जीवन	थाणा
84.	प्रभु पूजन सुख संपदा	2057	प्रभु दर्शन पूजन विधि	भिवंडी
85.	भाव श्रावक	2057	भाव श्रावक के 17 गुणों पर विवेचन	भायंदर
86.	महान् ज्योतिर्धर	2057	रामचंद्रसूरीश्वरजी का जीवन	भायंदर
87.	संतोषी नर सदा सुखी	2058	लोभ के कटु परिणाम	गोरेगांव
88.	आओ ! पूजा पढाए !	2058	चोसठ प्रकारी पूजाओं के अर्थ	गोरेगांव
89.	शत्रुंजय की गौरव गाथा	2058	शत्रुंजय के 16 उद्धार	भायंदर
90.	चिंतन मोती	2058	विविध चिंतनों का संग्रह	टिंबर मार्केट-पूना
91.	प्रेरक कहानियाँ	2058	प्रेरणादायी कहानियाँ व नाटक	पूना
92.	आईवडिलांचे उपकार	2058	'माता-पिता' का मराठी अनुवाद	पूना
93.	महासतियों का जीवन संदेश	2059	सुलसा आदि के चरित्र	देहुरोड
94.	आनंदघनजी पद विवेचन	2059	आनंदघनजी के 18 पदों पर विवेचन	पूना
95.	Duties towards Parents	2059	माता-पिता का अंग्रेजी	पूना
96.	चौदह गुणस्थानक	2059	'गुणस्थानक क्रमारोह विवेचन	येरवडा
97.	पर्युषण अष्टाह्निक प्रवचन	2059	पर्युषणपर्व के प्रवचन	येरवडा
98.	मधुर कहानियाँ	2059	कुमारपाल आदि का चरित्र	येरवडा

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
99.	पारस प्यारो लागे	2060	पार्श्व प्रभु के 10 भव आदि	येरवडा
100.	बीसवीं सदी के महानयोगी	2060	पूं.पं.श्री भद्रंकरविजयजी स्मृति ग्रंथ	दीपक ज्योतिटॉवर
101.	अमरवाणी	2060	पूं.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. के प्रेरक प्रवचन	दीपक ज्योतिटॉवर
102.	कर्म विज्ञान	2060	'कर्म विपाक' पर विवेचन	दीपक ज्योतिटॉवर
103.	प्रवचन के बिखरे फूल	2061	प्रवचन के सारभूत अवतरण	बोरीवली (ई)
104.	कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	2061	कल्पसूत्र पर दिए प्रवचन	थाणा
105.	आदिनाथ शांतिनाथ चरित्र	2061	प्रभु के भवों का वर्णन	थाणा
106.	ब्रह्मचर्य	2061	ब्रह्मचर्य पर विवेचन	श्रीपालनगर, मुंबई
107.	भाव सामायिक	2061	सामायिक सूत्रों पर विवेचन	श्रीपालनगर, मुंबई
108.	राग म्हणजे आग	2061	'क्रोध आबाद' का मराठी	श्रीपालनगर, मुंबई
109.	आओ ! उपधान-पौषध करे	2062	उपधान संबंधी विस्तृत जानकारी	भिवंडी
110.	प्रभो ! मन मंदिर पधारो	2062	प्रभु भक्ति विषयक चिंतन	आदीश्वर धाम
111.	सरस कहानियाँ	2062	नल-दमयंती आदि कहानियाँ	परेल मुंबई
112.	महावीर वाणी	2062	आगमोक्त सूक्तियों पर विवेचन	कर्जत
113.	सद्गुरु उपासना	2062	सद्गुरु का स्वरुप	कर्जत
114.	चिंतनरत्न	2062	विविध चिंतन	कर्जत
115.	जैनपर्व प्रवचन	2063	कार्तिक पूनम आदि पर्वों के प्रवचन	कर्जत
116.	नींव के पत्थर	2063	अध्यात्म प्राप्ति के 15 गुण	आदीश्वर धाम
117.	विखुरलेले प्रवचन मोती	2063	प्रवचन के बिखरे फूल का मराठी	वणी
118.	शंका समाधान भाग-2	2063	1200 प्रश्नों के जवाब	आदीश्वर धाम
119.	श्रमण शिल्पी प्रेमसूरीश्वरजी	2063	पूज्यश्री का संक्षिप्त जीवन	भायंदर
120.	भाव चैत्यवंदन	2063	जग चिंतामणि से सूत्रों पर विवेचन	भिवंडी
121.	Youth will shine then	2063	'तब चमक उठेगी' का अंग्रेजी अनुवाद	भिवंडी
122.	नव तत्त्व विवेचन	2063	'नवतत्त्व' पर विवेचन	भिवंडी
123.	जीव विचार विवेचन	2063	'जीव विचार' पर विवेचन	भिवंडी
124.	भव आलोचना	2064	श्रावक जीवन संबंधी आलोचना स्थल	
125.	विविध पूजाएं	2064	नवपद, आदि पूजाओं का भावानुवाद	आदीश्वर धाम
126.	गुणवान बनो	2064	18 पाप स्थानकों पर विवेचन	महावीर धाम
127.	तीन भाष्य	2064	तीन भाष्यों का विवेचन	आदीश्वर धाम
128.	विविध तपमाला	2064	प्रचलित तपों की विधियां	डोंबिवली
129.	महान् चरित्र	2064	पेथडशा आदि का जीवन	कल्याण
130.	आओ ! भावयात्रा करे	2064	शत्रुंजय आदि भाव यात्राएं	कल्याण
131.	मंगल स्मरण	2064	नवस्मरण आदि संग्रह	कल्याण

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
132.	भाव प्रतिक्रमण भाग-1	2065	वंदित्तु तक हिन्दी विवेचन	विक्रोली
133.	भाव प्रतिक्रमण भाग-2	2065	आयरिय उवज्झाए से विवेचन	विक्रोली
134.	श्रीपालरास और जीवन	2065	श्रीपाल मयणा का रास एवं जीवन	थाणा
135.	दंडक विवेचन	2065	दंडक सूत्र पर हिन्दी विवेचन	कुर्ला
136.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें	2065	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	भिवंडी
137.	सुखी जीवन की चाबियाँ	2066	मार्गानुसारिता के 35 गुण (कमलदर्शन)	मुंबई
138.	पाँच प्रवचन	2066	पाँच जाहिर प्रवचन	मोहना
139.	सज्झायों का स्वाध्याय	2066	सज्झायों का संग्रह	मोहना
140.	वैराग्य शतक	2066	वैराग्य पोषक विवेचन	मलाड
141.	गुणानुवाद	2066	10 आचार्यों का जीवन परिचय	रोहा
142.	सरल कहानियाँ	2066	प्रेरणादायी कथाएं	रोहा
143.	सुख की खोज	2066	सुख संबंधी चिंतन	रोहा
144.	आओ ! संस्कृत सीखें भाग-1	2067	सिद्धहैम प्रवेशिका-भाग-1	थाणा
145.	आओ ! संस्कृत सीखें भाग-2	2067	सिद्धहैम प्रवेशिका-भाग-2	थाणा
146.	आध्यात्मिक पत्र	2067	पू.पं.श्री भद्रंकरविजयजी म. के पत्र	थाणा
147.	शंका और समाधान भाग-3	2067	छोटे मोटे 750 प्रश्नों के जवाब	थाणा
148.	जीवन शणगार प्रवचन	2067	संस्कार शिबिर-रोहा के प्रवचन	धारावी
149.	प्रात:स्मरणीय-महापुरुष भाग-1	2067	महापुरुषों के चरित्र	भायंदर
150.	प्रात:स्मरणीय-महापुरुष भाग-2	2067	महापुरुषों के चरित्र	भायंदर
151.	प्रात:स्मरणीय-महासतियाँ भाग-1	2067	महासतियों के चरित्र	भायंदर
152.	प्रात:स्मरणीय-महासतियाँ भाग-2	2067	महासतियों के चरित्र	भायंदर
153.	ध्यान साधना	2068	ध्यान शतक-आराधना धाम	हालार
154.	श्रावक आचार दर्शक	2068	धर्म संग्रह का हिन्दी अनुवाद	राजकोट
155.	अध्यात्माचा सुगंध (मराठी)	2068	नीव के पत्थर का मराठी अनुवाद	नासिक
156.	इन्द्रिय पराजय शतक	2068	वैराग्य वर्धक	पालीताणा
157.	जैन शब्द कोष	2068	शास्त्रिय शब्दों के अर्थ	पालीताणा
158.	नया दिन-नया संदेश	2069	तिथि अनुसार दैनिक सुविचार	पालीताणा
159.	तीर्थ यात्रा	2069	शत्रुंजय गिरनार तीर्थ महिमा	हस्तगिरि तीर्थ
160.	महामंत्र की साधना	2069	चिन्तन	पिन्डवाडा
161.	अजातशत्रु अणगार	2069	श्रद्धाजंली लेख	भद्रंकर नगर-लुणावा
162.	प्रेरक प्रसंग	2069	कहानियां	बाली
163.	The way of Metaphysical Life	2069	नीव के पत्थर का English अनुवाद	बाली
164.	आओ ! प्राकृत सीखे भाग-1	2070	प्राकृत प्रवेशिका	सेसली तीर्थ
165.	आओ ! प्राकृत सीखे भाग-2	2070	Guide Book	सेसली तीर्थ

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
166.	आओ ! भाव यात्रा करे ! भाग-2	2070	68 तीर्थ भावयात्रा	बेडा तीर्थ
167.	Pearls of Preaching	2070	प्रवचन मोती का अनुवाद	नाकोडा तीर्थ
168.	नवकार चिंतन	2070	चिंतन	उदयपूर
169.	आओ दुर्ध्यान छोडे ! भाग-1	2070	63 दुर्ध्यान विषय पर विवेचन	घाणेराव
170.	आओ दुर्ध्यान छोडे ! भाग-2	2070	63 प्रकार के दुर्ध्यान विषय पर विवेचन	घाणेराव
171.	परम तत्त्व की साधना भाग-1	2071	चिन्तन	कीर्ति स्थंभ घाणेराव
172.	रत्न संदेश भाग-1	2071	दैनिक सुविचार	बाली
173.	गागर मे सागर	2071	बाली तथा घाणेराव के प्रवचन अंश	पालीताणा
174.	रत्न संदेश भाग-2	2071	तारीख अनुसार दैनिक सुविचार	पालीताणा
175.	My Parents	2071	माता-पिता का English अनुवाद	पालीताणा
176.	श्रावकाचार प्रवचन-1	2071	श्रावक कर्तव्य	पालीताणा
177.	श्रावकाचार प्रवचन-2	2071	श्रावक कर्तव्य	पालीताणा
178.	परम तत्त्व की साधना भाग-2	2071	पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	पालीताणा
179.	परम तत्त्व की साधना भाग-3	2071	पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	पालीताणा
180.	बाली चातुर्मास विशेषांक	2069	बाली चातुर्मास	बाली
181.	उपधान स्मृति विशेषांक	2072	पालीताणा में उपधान	पालीताणा
182.	नवपद आराधना	2072	नवपद के 11 प्रवचन	लोढा धाम
183.	आत्म उत्थान का मार्ग भाग-1	2072	पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	गुंदेचा गार्डन
184.	हेमचंद्राचार्य और कुमारपाल	2072	जीवन चरित्र	डोंबिवली
185.	आईचे वात्सल्य	2072	माता-पिता का मराठी अनुवाद	नासिक
186.	आत्म उत्थान का मार्ग भाग-2	2072	पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	नासिक
187.	जैन-संघ व्यवस्था	2072	देव द्रव्य आदि की व्यवस्था	नासिक
188.	चौबीस तीर्थंकर चरित्र भाग-1	2074	1 से 16 तीर्थंकरों के चरित्र	नासिक
189.	चौबीस तीर्थंकर चरित्र भाग-2	2074	17 से 24 तीर्थंकरों के चरित्र	नासिक
190.	संस्मरण	2073	संयम जीवन के अनुभव	गोकाक
191.	संबोह सित्तरि	2073	वैराग्य का अमृतकुंभ	गोकाक
192.	विवेकी बनों !	2073	विवेक गुण पर विवेचन	राणे बेन्नुर
193.	आत्म उत्थान का मार्ग भाग-3	2073	तत्त्व चिंतन	बेंगलोर
194.	लघु संग्रहणी	2073	जैन भूगोल	बेंगलोर
195.	समाधि मृत्यु	2073	मृत्यु समय समाधि के उपाय	बेंगलोर
196.	दूसरा कर्मग्रंथ	2073	दूसरे कर्मग्रंथ का विवेचन	बेंगलोर
197.	चौथा कर्मग्रंथ	2073	चौथे कर्मग्रंथ का विवेचन	बेंगलोर
198.	आदर्श कहानियाँ	2074	प्रेरणादायी कहानियाँ	बेंगलोर
199.	प्रवचन वर्षा	2074	प्रवचन के बिंदु	सुशीलधाम

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
200.	अमृत रस का प्याला	2074	199 पुस्तकों का सार	बेंगलोर
201.	महान् योगी पुरुष	2074	पं. भद्रंकरविजयजी के जीवन प्रसंग	बेंगलोर
202.	बारह चक्रवर्ती	2074	बारह चक्रवर्तियों का जीवन	मैसूर
203.	प्रेरक प्रवचन	2074	प्रेरणादायी प्रवचन	मैसूर
204.	पाँचवाँ-कर्मग्रंथ	2075	कर्मग्रंथ का विवेचन	मैसूर
205.	छठा-कर्मग्रंथ	2074	हिन्दी में विवेचन	बेंगलोर
206.	Celibacy	2074	ब्रह्मचर्य का अनुवाद	सेलम (T.N.)
207.	मंत्राधिराज प्रवचन सार	2074	पू.भद्रंकर वि. के प्रवचनांश	ईरोड (T.N.)
208.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	2075	साधु जीवन के सूत्रों पर विवेचन	कोयम्बतूर
209.	मोक्ष मार्ग के कदम	2075	मोक्ष मार्ग के 21 गुण	कोयम्बतूर
210.	शंका समाधान भाग-4	2075	मननीय प्रश्नों के जवाब	कोयम्बतूर
211.	व्यसन-मुक्ति	2076	सात व्यसन के अनर्थ	चैनइ
212.	गणधर-संवाद	2076	गौतम स्वामि आदि 11 गणधर प्रतिबोध कथा	चैनइ
213.	New Message for a New Day	2077	सुवाक्य संकलन (अंग्रेजी)	चैनइ
214.	चिंतन का अमृत-कुंभ	2077	पूज्यश्री का मार्मिक चिंतन	बेंगलोर
215.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव-बलदेव	2077	चरित्र ग्रंथ	बेंगलोर
216.	अचिंत्य चिंतामणि (भाग-1)	2077	नमस्कार महामंत्र की महिमा	बल्लारी (Kar.)
217.	अचिंत्य चिंतामणि (भाग-2)	2077	नमस्कार महामंत्र की महिमा	बल्लारी (Kar.)
218.	हार्दिक श्रद्धांजलि	2077	पंन्यासजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आदि के जीवन चरित्र	बल्लारी (कर्णाटक)
219.	सुखी जीवन के Mile-Stone	2077	प्रवचन बिन्दू	बीजापूर(Kar.)
220.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-1	2077	महापुरुषों के चरित्र	बीजापूर(Kar.)
221.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-2	2077	महापुरुषों के चरित्र	बीजापूर(Kar.)
222.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-3	2077	महापुरुषों के चरित्र	बीजापूर(Kar.)
223.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-4	2078	महापुरुषों के चरित्र	बीजापूर(Kar.)
224.	अर्हद् दिव्य-संदेश (दीक्षा-विशेषांक)	2078	संयम जीवन की महत्ता एवं मु. विमलपुण्यविजयजी की दीक्षा प्रसंग	इचलकरंजी (M.S.)
225.	'बेंगलोर' प्रवचन-मोती	2078	बेंगलोर में हुए प्रवचन	कराड (M.S.)
226.	श्री नमस्कार महामंत्र	2078	पू.पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	बोरीवली (ई)
227.	महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ	2078	पू.पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन	भायंदर (W)
228.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	2078	64 प्रकारी पूजा का विवेचन	भायंदर
229.	तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-1)	2078	तत्त्वार्थ सूत्र का हिन्दी विवेचन	भायंदर
230.	तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-2)	2078	तत्त्वार्थ सूत्र का हिन्दी विवेचन	भायंदर
231.	वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी	2078	सामायिक विधि एवं श्रेणी	भायंदर

नं.	पुस्तक नाम	प्रकाशन विक्रम सं.	विषय	विमोचन स्थल
232.	वैराग्य-वाणी	2079	पू.आ.श्री रामचन्द्रसूरिजी के प्रवचन	भायंदर
233.	सम्यग्दर्शन का सूर्योदय	2079	समकित 67 बोल विवेचन	महावीर धाम
234.	जीवन झांकी	2079	मु. पुण्योदयविजयजी का परिचय	कामसेट
235.	मन के जीते जीत है	2079	मन पर चिंतन	थाणा
236.	नमस्कार मीमांसा	2079	नवकार चिंतन	भायंदर
237.	परमेष्ठि-नमस्कार	2079	नवकार चिंतन	निगडी
238.	धर्म बीज	2079	चार भावना चिंतन	निगडी
239.	45 आगम परिचय	2079	आगम बोध	निगडी
240.	नित्य देव वंदन	2080	देव वंदन	लोढा धाम
241.	श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी	2080	शंका समाधान	बडगांव-राज.
242.	अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर	2080	शंका समाधान	बडगांव-राज.
243.	तीसरा कर्मग्रन्थ	2080	तीसरे कर्मग्रंथ का विवेचन	वीरवाडा-राज.
244.	कोयंबत्तुर-प्रवचन	2080	प्रवचन साहित्य	पोसालिया -राज.
245.	दक्षिण भारत प्रवचन	2080	प्रवचन साहित्य	पोसालिया-राज.
246.	पाण्डव-चरित्रम्	2080	जैन महाभारत	पोसालिया-राज.
247.	महावीर-प्रभु की अंतिम देशना	2080	उत्तराध्यय सूत्र के 36 अध्ययन	पोसालिया-राज.
248.	योग की आठ दृष्टियाँ (योगदृष्टि समुच्चय)	2080	योग की आठ दृष्टियों का वर्णन	पोसालिया-राज.
249.	साचा माणस बनीए ! (गुजराती)	2081	मार्गानुसारिता के 35 गुण	पोसालिया (राज.)
250.	शुभ-संदेश	2081	365 संदेश	लुणावा (राज.)
251.	सहनशील बनों (22 परीषह)	2081	22 परीषह विजय हेतु प्रेरणा	भोपाल सागर (राज.)
252.	नवपद आराधना विधि	2081	विधि-विधान	बडगांव राज.
253.	शत्रुंजय की भाव यात्रा	2081	शत्रुंजय महातीर्थ पर विस्तार विवरण	बडगांव शिवगंज-राज.
254.	नवकार-प्रवचन	2081	प.पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के प्रवचन	भद्रंकर नगर लुणावा (राज.)
255.	10 श्रमण-धर्म	2081	10 यति धर्म पर विवेचन	उदयपुर-राज.
256.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-1	2081	संस्कृत-व्याकरण	उदयपुर-राज.
257.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-1	2081	संस्कृत-व्याकरण	उदयपुर-राज.
258.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-1	2081	संस्कृत-व्याकरण	उदयपुर-राज.
259.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-1	2081	संस्कृत-व्याकरण	उदयपुर-राज.
260.	समाधि की साधना	2082	अमृतवेल सज्झाय पर विवेचन	उदयपुर-राज.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	पाठ 1. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	1
2.	पाठ 2. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	3
3.	पाठ 3. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	6
4.	पाठ 4. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	9
5.	पाठ 5. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	12
6.	पाठ 6. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	15
7.	पाठ 7. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	19
8.	पाठ 8. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	23
9.	पाठ 9. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	27
10.	पाठ 10. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	32
11.	पाठ 11. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	37
12.	पाठ 12. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	42
13.	पाठ 13. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	47
14.	पाठ 14. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	54
15.	पाठ 15. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	60
16.	पाठ 16. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	67
17.	पाठ 17. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	74
18.	पाठ 18. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	80
19.	पाठ 19. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	87
20.	पाठ 20. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	94
21.	पाठ 21. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	101
22.	पाठ 22. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	109
23.	पाठ 23. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	118
24.	पाठ 24. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	131
25.	पाठ 25. प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी–वाक्य	141
26.	सिरि पाइयगज्ज-पज्जमाला	153

प्राकृत मार्गदर्शिका

पाठ-1

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**कहामि ।**	कथयामि ।	मैं कहता हूँ ।
2.	**हसामु ।**	हसामः ।	हम हँसते हैं ।
3.	**गच्छेमि ।**	गच्छामि ।	मैं जाता हूँ ।
4.	**वसामो ।**	वसामः ।	हम रहते हैं ।
5.	**चलेम ।**	चलामः ।	हम चलते हैं ।
6.	**रोवामि ।**	रोदिमि ।	मैं रोता हूँ ।
7.	**पीलेमि ।**	पीडयामि ।	मैं दु:ख देता हूँ ।
8.	**जाणमो ।**	जानीमः ।	हम जानते हैं ।
9.	**जेमामि ।**	भुञ्जे ।	मैं भोजन करता हूँ ।
10.	**देक्खेमो ।**	पश्यामः ।	हम देखते हैं ।
11.	**भणमु ।**	भणामः ।	हम पढ़ते हैं ।
12.	**नमामि ।**	नमामि ।	मैं नमस्कार करता हूँ । मैं नमन करता हूँ ।
13.	**भणामि ।**	भणामि ।	मैं पढ़ता हूँ ।
14.	**वसेम ।**	वसामः ।	हम रहते हैं ।
15.	**मुणेमु ।**	जानीमः ।	हम जानतै हैं ।
16.	**भुंजामो ।**	भुञ्ज्महे ।	हम भोजन करते हैं ।
17.	**नवामु ।**	नमामः ।	हम नमस्कार (नमन) करते हैं ।
18.	**पडेमो ।**	पतामः ।	हम गिरते हैं ।
19.	**रोवेमु ।**	रुदिमः ।	हम रोते हैं ।
20.	**बोहामि ।**	बोधामि ।	मैं समझता हूँ ।
21.	**नमेमि ।**	नमामि ।	मैं नमस्कार करता हूँ ।
22.	**बोल्लेमि ।**	कथयामि ।	मैं बोलता हूँ ।
23.	**बीहेमि ।**	बिभेमि ।	मैं डरता हूँ ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
24.	**पुच्छामि ।**	पृच्छामि ।	मैं पूछता हूँ ।
25.	**पीडेमु ।**	पीडयामः ।	हम दु:ख देते हैं ।
26.	**बोल्लिमु ।**	कथयामः ।	हम कहते हैं ।
27.	**पिवामो ।**	पिबामः ।	हम पीते हैं ।
28.	**रुविमो ।**	रुदिमः ।	हम रुदन करते हैं ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	**मैं पूछता हूँ ।**	पुच्छामि ।	पृच्छामि ।
2.	**मैं सताता हूँ ।**	पीलेमि ।	पीडयामि ।
3.	**हम डरते हैं ।**	बीहेमो ।	बिभीमः ।
4.	**मैं पीता हूँ ।**	पिज्जमि ।	पिबामि ।
5.	**हम बोधपाते हैं ।**	बोहामु ।	बोधामः ।
6.	**मैं गिरता हूँ ।**	पडमि ।	पतामि ।
7.	**मैं पढ़ता हूँ ।**	भणेमि ।	भणामि ।
8.	**हम नमन करते हैं ।**	नविमो ।	नमामः ।
9.	**मैं भ्रमण करता हूँ ।**	भमामि ।	भ्राम्यामि ।
10.	**मैं देखता हूँ ।**	देक्खामि ।	पश्यामि ।
11.	**हम भोजन करते हैं ।**	जेमिमो ।	भुञ्महे ।
12.	**मैं जानता हूँ ।**	जाणेमि ।	जानामि ।
13.	**हम रोते हैं ।**	रोविमो ।	रुदिमः ।
14.	**मैं रहता हूँ ।**	वसामि ।	वसामि ।
15.	**हम चलते हैं ।**	चालिमो ।	चलामः ।
16.	**हम जाते हैं ।**	गच्छिमो ।	गच्छामः ।
17.	**मैं हँसता हूँ ।**	हसमि ।	हसामि ।
18.	**हम कहते हैं ।**	कहामु ।	कथयामः ।
19.	**हम बोलते हैं ।**	बोल्लिमो ।	ब्रूमः ।
20.	**हम रहते हैं ।**	वसाम ।	वसामः ।

पाठ-2

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**इच्छित्था ।**	इच्छथ ।	तुम सब इच्छा करते हो ।
2.	**करेसि ।**	करोषि ।	तुम करते हो ।
3.	**चिंतसे ।**	चिन्तयसि ।	तुम विचार करते हो ।
4.	**पासेइत्था ।**	पश्यथ ।	तुम सब दखते हो ।
5.	**मुज्झह ।**	मुह्यथ ।	तुम सब मोहित होते हो ।
6.	**गच्छेसि ।**	गच्छसि ।	तुम जाते हो ।
7.	**मुणह ।**	जानीथ ।	तुम सब जानते हो ।
8.	**देक्खेइत्था ।**	पश्यथ ।	तुम सब देखते हो ।
9.	**पडेह ।**	पतथ ।	तुम सब गिरते हो ।
10.	**सीससे ।**	कथयसि ।	तुम कहते हो ।
		शिनक्षि ।	तुम भेद करते हो ।
11.	**रमेह ।**	रमध्वे ।	तुम सब विलास करते हो ।
12.	**वंदेइत्था ।**	वन्दध्वे ।	तुम सब वंदन करते हो ।
13.	**रूसेसि ।**	रुष्यसि ।	तुम क्रोध करते हो ।
14.	**दूसेह ।**	दुष्यथ ।	तुम सब दूषित करते हो ।
15.	**सीसित्था ।**	शिंष्ठ ।	तुम सब भेद करते हो ।
		कथयथ ।	तुम सब कहते हो ।
16.	**दूसेसि ।**	दुष्यसि ।	तुम दोष दोते हो ।
17.	**रूसेइत्था ।**	रुष्यथ ।	तुम सब गुस्सा करते हो ।
18.	**वंदसे ।**	वन्दसे ।	तुम वंदन करते हो ।
19.	**रमित्था ।**	रमध्वे ।	तुम सब क्रीडा करते हो ।
20.	**मुज्झसे ।**	मुह्यसे ।	तुम मोहित होते हो ।
21.	**कहित्था ।**	कथयथ ।	तुम सब कहते हो ।
22.	**चलसे ।**	चलसि ।	तुम चलते हो ।
23.	**जेमेह ।**	भुङ्ध्वे ।	तुम सब खाते हो ।
24.	**नमह ।**	नमथ ।	तुम सब नमन करते हो ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
25.	**पिज्जसि ।**	पिबसि ।	तुम पीते हो ।
26.	**पासह ।**	पश्यथ ।	तुम सब देखते हो ।
27.	**करित्था ।**	कुरुध्वे ।	तुम सब करते हो ।
28.	**पासित्था ।**	पश्यथ ।	तुम सब दर्शन करते हो ।
29.	**नमेइत्था ।**	नमथ ।	तुम सब नमस्कार करते हो ।
30.	**वंदह ।**	वन्दध्वे ।	तुम सब वंदन करते हो ।
31.	**पुच्छेइत्था ।**	पृच्छथ ।	तुम सब पूछते हो ।
32.	**बोल्लह ।**	कथयथ ।	तुम सब बोलते हो ।
33.	**भणेह ।**	भणथ ।	तुम सब कहते हो ।
34.	**रोवसे ।**	रोदिसि ।	तुम रोते हो ।
35.	**हसित्था ।**	हसथ ।	तुम सब हँसते हो ।
36.	**भणित्था ।**	भणथ ।	तुम सब पढ़ते हो ।
37.	**मुज्झेह ।**	मुह्यथ ।	तुम सब मोहित होते हो ।
38.	**करसे ।**	करोषि ।	तुम करते हो ।
39.	**देक्खह ।**	पश्यथ ।	तुम सब देखते हो ।
40.	**दुसित्था ।**	दुष्यथ ।	तुम सब दूषित करते हो ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	**तुम काँप रहे हो ।**	कंपसे ।	कम्पसे ।
2.	**तुम कहते हो ।**	सीसेसि ।	कथयसि ।
3.	**तुम चलते हो ।**	चलसि ।	चलसि ।
4.	**तुम सब चलते हो ।**	चलेइत्था ।	चलथ ।
5.	**तुम सब निन्दा करते हो ।**	निंदेह ।	निन्दथ ।
6.	**तुम भोजन करते हो ।**	जेमसि ।	भुङ्क्षे ।
7.	**तुम नमन करते हो ।**	नवसि ।	नमसि ।
8.	**तुम मोहित होते हो।**	मुज्झसि ।	मुह्यसि ।
9.	**तुम सब पीते हो ।**	पिज्जेइत्था ।	पिबथ ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
10.	**तुम खेलते हो ।**	रमेसि ।	रमसे ।
11.	**तुम पूछते हो ।**	पुच्छेसि ।	पृच्छसि ।
12.	**तुम बोलते हो ।**	बोल्लसि ।	ब्रवीषि ।
13.	**तुम वंदन करते हो ।**	वन्देसि ।	वन्दसे ।
14.	**तुम पढ़ते हो ।**	भणासि ।	भणसि ।
15.	**तुम सब क्रोध करते हो ।**	कुज्झह ।	क्रुध्यथ ।
16.	**तुम रोते हो ।**	रोवसि ।	रुदिसि ।
17.	**तुम निन्दा करते हो ।**	निंदसि ।	निन्दसि ।
18.	**तुम हँसते हो ।**	हससि ।	हससि ।
19.	**तुम सब पीड़ा करते हो ।**	पीलेइत्था ।	पीडयथ ।
20.	**तुम डरते हो ।**	बीहसि ।	बिभेषि ।
21.	**तुम सब पढ़ते हो ।**	भणेइत्था ।	भणथ ।
22.	**तुम देखते हो ।**	देक्खसे ।	पश्यसि ।
23.	**तुम भ्रमण करते हो ।**	भमेसि ।	भ्राम्यसि ।
24.	**तुम सब रहते हो ।**	वसेह ।	वसथ ।
25.	**तुम इच्छा करते हो ।**	इच्छसे ।	इच्छसि ।
26.	**तुम सब काँपते हो ।**	कंपइत्था ।	कम्पथ ।
27.	**तुम सब बोलते हो ।**	बोल्लेत्था ।	कथयथ ।
28.	**तुम पीड़ा करते हो ।**	पीलसि ।	पीडयसि ।
29.	**तुम सब हँसते हो ।**	हसेइत्था ।	हसथ ।
30.	**तुम गिरते हो ।**	पतसे ।	पतसि ।

पाठ-3

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**आदरेइ ।**	आद्रियते । (आ + दृ) (ग. 6 आ.)	वह आदर करता है ।
2.	**जंमंति ।**	जायन्ते ।	वे उत्पन्न होते हैं ।
3.	**निज्झरए।**	क्षयति ।	यह नष्ट होता है ।
4.	**बविरे ।**	ब्रुवन्ति ।	वे बोलते हैं ।
5.	**वड्ढिरे ।**	वर्धन्ते	वे बढ़ते हैं ।
6.	**हक्कन्ते ।**	निषेधन्ति । (1 ला गण) निषिध्यन्ति । (4 था गण)	वे निषेध करते हैं ।
7.	**जिणेह ।**	जयथ ।	तुम सब जीतते हो ।
8.	**धुणंते ।**	धुन्वन्ति ।	वे हिलाते हैं ।
9.	**सरित्था ।**	स्मरथ ।	तुम सब याद करते हो ।
10.	**लुणिरे ।**	लुनन्ति ।	वे काटते हैं ।
11.	**हुणंति ।**	जुह्वति ।	वे होम करते हैं ।
12.	**धुणेइ ।**	धुनाति ।	वह हिलाता है ।
13.	**फरिसिरे ।**	स्पृशन्ति ।	वे स्पर्श करते हैं ।
14.	**रवेइ ।**	रौति ।	वह आवाज करता है ।
15.	**सुमरेंति ।**	स्मरन्ति ।	वे याद करते हैं ।
16.	**चिणए ।**	चिनोति ।	वह इकट्ठा करता है ।
17.	**थुणेइरे ।**	स्तुवन्ति ।	वे स्तुति करते हैं ।
18.	**पुणेइ ।**	पुनाति ।	वह पवित्र करता है ।
19.	**सुणंति ।**	शृण्वन्ति ।	वे सुनते हैं ।
20.	**बुवेइ ।**	ब्रवीति ।	वह बोलता है ।
21.	**कहेंति ।**	कथयन्ति ।	वे कहते हैं ।
22.	**जाणंते ।**	जानन्ति ।	वे जानते हैं ।
23.	**देक्खेइरे ।**	पश्यन्ति ।	वे देखते हैं ।
24.	**पीडेह ।**	पीडयति ।	वह दु:ख देता है ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
25.	**बीहए ।**	बिभेति ।	वह भयभीत होता है ।
26.	**भणए ।**	भणति ।	वह पढ़ता है ।
27.	**वसंते ।**	वसन्ति ।	वे रहते हैं ।
28.	**इच्छंति ।**	इच्छन्ति ।	वे इच्छा करते हैं ।
29.	**करिरे ।**	कुर्वन्ति ।	वे करते हैं ।
30.	**चिंतइ ।**	चिन्तयति ।	वह विचार करता है ।
31.	**हवइ ।**	भवति ।	वह होता है ।
32.	**बुज्झए ।**	बोधति ।	वह बोध पाता है ।
33.	**रक्खेंति ।**	रक्षन्ति ।	वे रक्षण करते हैं ।
34.	**लज्जंते ।**	लज्जन्ते ।	वे शर्मिन्दा होते हैं ।
35.	**हणए ।**	हन्ति ।	वह मारता है ।
36.	**तूसेइ ।**	तुष्यति ।	वह सन्तोष रखता है ।
37.	**रुसंते ।**	रुष्यन्ति ।	वे रोष करते हैं ।
38.	**थुणइ ।**	स्तौति ।	वह स्तुति करता है ।
39.	**रोविमो ।**	रुदिमः ।	हम रोते हैं ।
40.	**जिणसे ।**	जयसि ।	तुम जीतते हो ।
41.	**थुणित्था ।**	स्तुवीथ ।	तुम सब स्तुति करते हो ।
42.	**बवेमि ।**	ब्रवीमि ।	मैं बोलता हूँ ।
43.	**धुणेमि ।**	धुनोमि ।	मैं हिलाता हूँ ।
44.	**जिणेमि ।**	जयामि ।	मैं जीतता हूँ ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	**वह खरीदता है ।**	किणइ ।	क्रीणाति ।
2.	**वे हिलाते है ।**	धुणंति ।	धूनयन्ति ।
3.	**वह स्पर्श करता है ।**	फासइ ।	स्पर्शति ।
4.	**वे शब्द करते हैं ।**	रवंति ।	रुवन्ति ।
5.	**वह स्मरण करता है ।**	सुमरए ।	स्मरति ।
6.	**वे इकट्ठा करते हैं ।**	चिणंते ।	चिन्वन्ति ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
7.	वह स्तुति करता है ।	थुणेइ ।	स्तौति ।
8.	वे पवित्र करते हैं ।	पुणेइरे ।	पुनन्ति ।
9.	वह सुनता है ।	सुणइ ।	शृणोति ।
10.	वे आदर करते हैं ।	आदरेइरे ।	आद्रियन्ते ।
11.	वह उत्पन्न होता है ।	जंमइ ।	जायते ।
12.	वे क्षय होते हैं ।	निज्झरेइरे ।	क्षयन्ति ।
13.	वह बोलता है ।	बोल्लइ ।	ब्रवीति ।
14.	वह बढ़ता है ।	वड्ढए ।	वर्धते ।
15.	वह निषेध करता है ।	हक्कइ ।	निषिध्यति ।
16.	वे जीतते हैं ।	जिणेइरे ।	जयन्ति ।
17.	वह हिलाता है ।	धुणइ ।	धुवति ।
18.	वह काँपता है ।	कंपए ।	कम्पते ।
19.	वह खेलता है ।	रमइ ।	रमते ।
20.	वह होम करता है ।	हुणइ ।	जुहोति ।
21.	वह जाता है ।	गच्छेइ ।	गच्छति ।
22.	वह खाता है ।	जेमइ ।	भुङ्क्ते ।
23.	वह नमस्कार करता है ।	नवइ ।	नमति ।
24.	वे पूछते हैं ।	पुच्छेइरे ।	पृच्छन्ति ।
25.	वे पढ़ते हैं ।	भणेंति ।	भणन्ति ।
26.	वे वन्दन करते हैं ।	वंदेइरे ।	वन्दन्ते ।
27.	वह रोता है ।	रोवइ ।	रोदिति ।
28.	वे हँसते हैं ।	हसिरे ।	हसन्ति ।
29.	वे काँपते हैं ।	कंपेइरे ।	कम्पन्ते ।
30.	वह चरता है ।	चरेइ ।	चरति ।
31.	वे निन्दा करते है ।	निदंति ।	निन्दन्ति ।
32.	वे मोहित होते हैं ।	मुज्झेइरे ।	मुह्यन्ति ।
33.	वह पोषण करता है ।	पूसइ ।	पुष्यति ।
34.	वह आवाज करता है ।	रवइ ।	रुवति ।

पाठ-4

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	अहं वंदेमि ।	अहं वन्दे ।	मैं वंदन करता हूँ ।
2.	तुम्हे दोण्णि वट्टित्था ।	युवां द्वौ वर्तेथे ।	तुम दोनों वर्तन करते हो।
3.	ते कुप्पेन्ति ।	ते कुप्यन्ति ।	वे कोप करते हैं ।
4.	सो पडए ।	स पतति ।	वह गिरता है ।
5.	ते पिविरे ।	ते पिबन्ति ।	वे पीते हैं ।
6.	तुम्हे कहेइत्था ।	यूयं कथयथ ।	तुम सब कहते हो ।
7.	तुब्भे बीहेह ।	यूयं बिभीथ ।	तुम सब डरते हो ।
8.	तुं भणेसि ।	त्वं भणसि ।	तुम पढते हो ।
9.	स अप्पेइ ।	सोऽर्पयति ।	वह भेंट देता है ।
10.	अम्हो अत्थि ।	वयं स्मः ।	हम हैं ।
11.	अंहे थक्किमु ।	वयं तिष्ठामः ।	हम खड़े रहते हैं ।
12.	स वट्टइ ।	स वर्तते ।	वह है ।
13.	हं वोसिरामि ।	अहं व्युत्सृजामि ।	मैं त्याग करता हूँ ।
14.	ते नमिरे ।	ते नमन्ति ।	वे नमन करते हैं ।
15.	अम्हे वंदिमो ।	वयं वन्दामहे ।	हम वन्दन करते हैं ।
16.	तुज्झे वंदेइत्था ।	यूयं वन्दध्वे ।	तुम सब वन्दन करते हो।
17.	तं वंछसे ।	त्वं वाञ्छसि ।	तुम इच्छा करते हो ।
18.	सो इच्छइ ।	स इच्छति ।	वह इच्छा करता है ।
19.	अंहे बीहेमु ।	वयं बिभीमः ।	हम डरते हैं ।
20.	ते चरेंति	ते चरन्ति ।	वे घूमते हैं ।
21.	तं उज्झसे ।	त्वमुज्झसि ।	तुम छोड़ते हो ।
22.	ते दो किणेइरे ।	तौ द्वौ क्रिणीतः ।	वे दो खरीदते हैं ।
23.	हं म्हि ।	अहमस्मि ।	मैं हूँ ।
24.	ते दुण्णि रक्खंति ।	तौ द्वौ रक्षतः ।	वे दोनों रक्षण करते हैं ।
25.	तुम्हे वे अत्थि ।	युवां द्वौ स्थः ।	तुम दोनों हो ।
26.	तुं सलहेसि ।	त्वं श्लाघसे ।	तुम प्रशंसा करते हो ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
27.	**अम्हे अच्छामो ।**	वयमास्महे ।	हम बैठते हैं ।
28.	**तुम्हे दु रुवेह ।**	युवा द्वौ रुदिथ:।	तुम दोनों रोते हो ।
29.	**अम्हो फासामो ।**	वयं स्पृशाम: ।	हम स्पर्श करते हैं ।
30.	**तुज्झे चुक्केइत्था ।**	यूयं भ्रश्यथ ।	तुम सब भ्रष्ट होते हो ।
31.	**ते दो फासेइरे ।**	तौ द्वौ स्पृशत: ।	वे दोनों स्पर्श करते हैं ।
32.	**हं चिट्ठेमि ।**	अहं तिष्ठामि ।	मैं खड़ा रहता हूँ ।
33.	**अम्हे दुवे चयामो ।**	आवां द्वौ त्यजाव:।	हम दोनों त्याग करते हैं ।
34.	**ते तूसंति ।**	ते तुष्यन्ति ।	वे संतोष रखते हैं ।
35.	**अम्हे चिट्ठेमु ।**	वयं तिष्ठाम: ।	हम खड़े रहते हैं ।
36.	**तुम्हे वंछेह ।**	यूयं वाच्छथ ।	तुम सब इच्छा करते हो ।
37.	**तुम्हे पूसेह ।**	यूयं पुष्यथ ।	तुम सब पोषण करते हो।
38.	**ते साहिंति ।**	ते कथयन्ति ।	वे कहते हैं ।
		ते साध्नुवन्ति ।	वे सिद्ध करते हैं ।
39.	**तुब्भे दुवे सहेइत्था ।**	युवां सहथ: ।	तुम दोनों सहन करते हो।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	**तुम सब इच्छा करते हो ।**	तुब्भे वंछित्था ।	यूयं वाञ्छथ ।
2.	**हम देखते हैं ।**	अंहे देक्खेमो ।	वयं पश्याम: ।
3.	**वह सहन करता है ।**	स सहेइ ।	स सहते ।
4.	**तुम सब सिद्ध करते हो ।**	तुब्भे साहेइत्था	यूयं साध्नुथ ।
5.	**हम दोनों रक्षण करते हैं ।**	अम्हे दो रक्खिमो ।	आवां द्वौ रक्षाव: ।
6.	**तुम सब देते हो ।**	तुब्भे अप्पित्था ।	यूयमर्पयथ ।
7.	**हम त्याग करते हैं ।**	अम्हे चयामो ।	वयं त्यजाम: ।
8.	**तुम दोनों विचार करते हो ।**	तुब्भे वे चिंतेइत्था ।	युवां द्वौ चिन्तयथ।
9.	**वे दोनों कहते हैं ।**	ते दुवे कहेह ।	तौ द्वौ कथयथ ।
10.	**तुम सब बैठते हो ।**	तुब्भे अच्छेह ।	यूयमाध्वे ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
11.	**तुम सब खड़े रहते हो ।**	तुब्भे थक्केह ।	यूयं तिष्ठथ ।
12.	**हम हँसते हैं ।**	अम्हे हसिमु ।	वयं हसामः ।
13.	**वे चुपड़ते हैं ।**	ते चोप्पडेइरे ।	ते म्रक्ष्यन्ति ।
14.	**मैं भोजन करता हूँ ।**	हं जेमामि ।	अहं भुञ्जे ।
15.	**तुम दोनों पीते हो ।**	तब्भे दोण्णि पिज्जेइत्था ।	युवां द्वौ पिबथः ।
16.	**तुम सब नमस्कार करते हो ।**	तब्भे नवह ।	यूयं नमथ ।
17.	**तुम सिलाई करते हो ।**	तुं सिव्वसि ।	त्वं सीव्यसि ।
18.	**हम दो हैं ।**	अम्हे वे अत्थि ।	आवां द्वौ स्वः ।
19.	**मैं त्याग करता हूँ ।**	हं चयामि ।	अहं त्यजामि ।
20.	**वह देखता है ।**	सो देक्खइ ।	स पश्यति ।
21.	**तुम हो ।**	तुं सि ।	त्वमसि ।
22.	**वे प्रशंसा करते हैं ।**	ते सलहेइरे ।	ते श्लाघन्ते ।
23.	**तुम सब भटकते हो ।**	तुब्भे भमित्था ।	यूयं भ्राम्यथ ।
24.	**वे गुस्सा करते हैं ।**	ते रूसंति ।	ते रुष्यन्ति ।
25.	**वे निन्दा करते हैं ।**	ते निंदंति ।	ते निन्दन्ते ।
26.	**तुम सब बोध पाते हो ।**	तुब्भे बुज्झह ।	यूयं बुध्यथ ।
27.	**तुम दोनों विघ्न करते हो ।**	तुम्हे दोण्णि बाहेह ।	युवां द्वौ बाधेथे ।
28.	**तुम दोनों हो ।**	तुब्भे वेण्णि अत्थि ।	युवां द्वौ स्थः ।
29.	**वह चुपड़ता है ।**	सो चोप्पडेइ ।	स म्रक्ष्यति ।
30.	**हम भोजन करते हैं ।**	अम्हे जेमेमो ।	वयं भुञ्ज्महे ।
31.	**तुम सब बाँधते हो ।**	तुम्हे बंधइत्था ।	यूयं बध्नीथ ।
32.	**तुम क्षीण होते हो ।**	तुं निज्झरसि ।	त्वं क्षयसि ।
33.	**वे दोनों काँपते हैं ।**	तुम्ह वे कंपित्था ।	तौ द्वौ कम्पेते ।
34.	**तुम दुःख देते हो ।**	तुं बाहसे ।	त्वं बाधसे ।

पाठ-5

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**अम्हे दोण्णि ठाएमो ।**	आवां द्वौ तिष्ठावः।	हम दोनों खड़े रहते हैं ।
2.	**अम्हो जेएमु ।**	वयं जयामः ।	हम जीतते हैं ।
3.	**हं ठामि ।**	अहं तिष्ठामि ।	मैं खड़ा रहता हूँ ।
4.	**अम्हे होएमो ।**	वयं भवामः ।	हम हैं ।
5.	**अम्हे दुवे झामु ।**	आवां द्वौ ध्यायावः।	हम दोनों ध्यान करते हैं ।
6.	**हं होमि ।**	अहं भवामि ।	मैं होता हूँ ।
7.	**हं पामि ।**	अहं पिबामि ।	मैं पान करता (पीता) हूँ ।
8.	**अहं झाएमि ।**	अहं ध्यायामि ।	मैं ध्यान करता हूँ ।
9.	**सो होइ ।**	स भवति ।	वह होता है ।
10.	**तुम्हे दोण्णि झाएइत्था ।**	युवां द्वौ ध्यायथः।	तुम दोनों ध्यान करते हो ।
11.	**ते होइरे ।**	ते भवन्ति ।	वे होते हैं ।
12.	**ते पान्ति ।**	ते पिबन्ति ।	वे पीते हैं ।
13.	**तुं झासि ।**	त्वं ध्यायसि ।	तुम ध्यान करते हो ।
14.	**हं ण्हाअमि ।**	अहं स्नामि ।	मैं स्नान करता हूँ ।
15.	**तुज्झे ठाएइत्था ।**	यूयं तिष्ठथ ।	तुम सब खड़े रहते हो ।
16.	**तुम्हे विण्णि नेइत्था ।**	युवां द्वौ नयथः ।	तुम दोनों ले जाते हो ।
17.	**तुं पाअसे ।**	त्वं पिबसि ।	तुम पीते हो ।
18.	**ते चवेइरे ।**	ते च्यवन्ते । (ग. 1 आ.)	वे गिरते हैं ।
19.	**हं जरेमि ।**	अहं जीर्यामि ।	मैं जीर्ण (पुराना) होता हूँ ।
20.	**अहं गामि ।**	अहं गायामि ।	मैं गीत गाता हूँ ।
21.	**अम्हे वे ण्हाम ।**	आवां द्वौ स्नावः ।	हम दोनों स्नान करते हैं ।
22.	**सो ण्हवेइ ।**	स ह्नुते । (ग. 2 अ)	वह छुपाता है ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
23.	अम्ह हवेमो	वयं भवाम:।(ग.1) वयं जुहुम: ।	हम होते हैं । हम होम करते हैं ।
24.	तुम्हे हरेह ।	यूयं हरथ ।	तुम सब हरण करते हो।
25.	स ण्हाएइ ।	स स्नाति ।	वह स्नान करता है ।
26.	हं जामि ।	अहं यामि ।	मैं जाता हूँ ।
27.	अम्हे वरामो ।	वयं वृणुम: ।	हम पसंद करते हैं ।
28.	अम्हे वे जाएमो ।	आवां द्वौ याव: ।	हम दोनों जाते हैं ।
29.	अम्हे दो गाइमु ।	आवां द्वौ गायाव: ।	हम दोनों गाते हैं ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत-संस्कृत अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	वे दोनों खड़े हैं ।	ते वे ठाएंति ।	तौ द्वौ तिष्ठत: ।
2.	तुम जाते हो ।	तुं जाएसि	त्वं यासि ।
3.	वे दोनों गाते हैं ।	ते वे गाइंति ।	तौ द्वौ गायत: ।
4.	वे खिन्न होते हैं ।	ते गिलाएंति ।	ते ग्लायन्ति ।
5.	वह खड़ा रहता है ।	सो ठाए ।	स तिष्ठति ।
6.	वह जाता है ।	सो जाएइ ।	स याति ।
7.	वह गाता है ।	सो गाएइ ।	स गायति ।
8.	मैं मुरझाता हूँ ।	हं मिलाएमि ।	अहं म्लायामि ।
9.	वह ले जाता है ।	स नेअइ ।	स नयति ।
10.	वे दोनों जाते हैं ।	ते वे गच्छेइरे ।	तौ द्वौ गच्छत: ।
11.	हम दोनों पीते हैं ।	अम्हे दो पाएमु।	आवां द्वौ पाव: ।
12.	वे दोनों हरण करते हैं ।	ते दो हरंति ।	तौ द्वौ हरत: ।
13.	तुम स्नान करते हो ।	तुं ण्हाएसि ।	त्वं स्नासि ।
14.	तुम दोनों पीते हो ।	तुब्भे वे पाइत्था।	युवां द्वौ पिबथ: ।
15.	तुम खाते हो ।	तुं खाअसे ।	त्वं खादसि ।
16.	वे देते हैं ।	ते दाएइरे ।	ते ददति ।
17.	हम दोनों धारण करते हैं।	अम्हे वे धरिमो ।	आवां द्वौ धराव: ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
18.	तुम दोनों देते हो ।	तुब्भे दो दाअइत्था ।	युवां द्वौ दत्थः ।
19.	हम सब का च्यवन होता हैं । / हम गिरते है ।	अम्हे चविमो ।	वयं च्यवामः ।
20.	तुम दोनों खिसकते हो।	तुम्हे दो सरित्था ।	युवां द्वौ सरथः ।
21.	तुम होते हो ।	तुं होएसि ।	त्वं भवसि ।
22.	तुम सब स्नान करते हो।	तुज्झे ण्हाएह ।	यूयं स्नाथ ।
23.	हम कुम्हलाते हैं ।	अम्हे गिलाएमो ।	वयं ग्लायामः ।
24.	वे ध्यान करते हैं ।	ते झाएइरे ।	ते ध्यायन्ति ।
25.	हम दोनों प्रकाशित होते हैं ।	अम्हे दो भाएमो ।	आवां द्वौ भावः ।
26.	तुम सब होते हो ।	तुज्झे होइत्था ।	यूयं भवथ ।
27.	तुम दोनों मुरझाते हो ।	तुम्हे दो गिलाएह ।	युवां द्वौ ग्लायथः ।
28.	तुम सब छिपाते हो ।	तुज्झे ण्हवित्था ।	यूयं ह्नुध्वे ।
29.	हम तैरते हैं ।	अम्हे तरिमो ।	वयं तरामः ।
30.	तुम सब गुस्सा करते हो ।	तुब्भे कुप्पइत्था ।	यूयं कुप्यथ ।
31.	तुम सब उत्पन्न होते हो ।	तुम्हे जाअह ।	यूयं जायध्वे ।
32.	वह चमकता है ।	सो भाअइ ।	स भाति ।
33.	मैं उत्पन्न होता हूँ ।	हं जाएमि ।	अहं जाये ।

पाठ-6

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	सो अच्छेज्जा ।	स आस्ते ।	वह बैठता है ।
2.	स पिवेज्ज ।	स पिबति ।	वह पीता है ।
3.	सो चुक्केज्जा ।	स भ्रंशते । (ग.1 आ.) स भ्रश्यति (ग.4 प.)	वह भ्रष्ट होता है ।
4.	तुं चिट्ठेज्जा ।	त्वं तिष्ठसि ।	तुम खड़े रहते हो ।
5.	अम्हे दो होज्जामो ।	आवां द्वौ भवावः।	हम दोनों होते हैं ।
6.	स बुज्झेज्जा ।	स बोधति ।	वह बोध पाता है ।
7.	अम्हे दोण्णि झाएज्जिमो ।	आवां द्वौ ध्यायावः।	हम दोनों ध्यान करते हैं।
8.	ते दुवे नेएज्जेइरे ।	तौ द्वौ नयतः ।	वे दोनों ले जाते हैं ।
9.	तुम्हे नेएज्जाह ।	यूयं नयथ ।	तुम सब ले जाते हो ।
10.	अम्हे सोल्लेज्जा ।	वयं पचामः ।	हम पकाते हैं ।
11.	हं मिलाएज्जामि ।	अहं म्लायामि ।	मैं मुरझाता हुँ ।
12.	तुम्हे दो मिलाज्जइत्था ।	यवां द्वौ म्लायथः।	तुम दोनों मुरझाते हो ।
13.	तं गरिहेसि ।	त्वं गर्हसे ।	तुम निंदा करते हो ।
14.	तुज्झे छड्डेज्ज ।	यूयं मुञ्चथ ।	तुम सब छोड़ते हो ।
15.	सो पाएज्जइ ।	स पिबति ।	वह पीता है ।
16.	तुब्भे ठाज्ज ।	यूयं तिष्ठथ ।	तुम सब खड़े रहते हो ।
17.	अम्हे बे मिलाज्जेमु।	आवां द्वौ म्लायावः।	हम दो मुरझाते हैं ।
18.	अहं करेज्जा ।	अहं करोमि ।	मैं करता हूँ ।
19.	अहं ठाज्जेमि ।	अहं तिष्ठामि ।	मैं खड़ा रहता हूँ ।
20.	सो पाज्जइ ।	स पिबति ।	वह पीता है ।
21.	अम्हे जीवेज्जा ।	वयं जीवामः ।	हम सब जीते हैं ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
22.	तुं जाएज्जसे ।	त्वं यासि ।	तुम जाते हो ।
23.	तुज्झे बे मिलाएज्जाइत्था ।	युवां द्वौ म्लायथः।	तुम दोनों मुरझाते हो ।
24.	तुं गाज्जेसि ।	त्वं गायसि ।	तुम गाते हो ।
25.	तुम्हे नच्चेज्जा ।	यूयं नृत्यथ ।	तुम सब नृत्य करते हो ।
26.	अहं छज्जेज्जा ।	अहं राजे ।	मैं सुशोभित होता हूँ ।
27.	ते नस्सेज्ज ।	ते नश्यंति ।	वे नष्ट होते हैं ।
28.	तुज्झे पाएज्जाह ।	यूयं पिबथ ।	तुम सब पीते हो ।
29.	अम्हे सडेज्जा ।	वयं शीयामहे ।	हम क्षीण होते हैं ।
30.	तुम्हे दुवे डहेह ।	युवां द्वौ दहथः ।	तुम दोनों जलाते हो ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	वे दोनों सिद्ध होते हैं ।	ते वे सिज्झेज्जा ।	तौ द्वौ सिध्यतः ।
2.	वह विस्तार करता है ।	सो तड्डेज्जा ।	स तनुते ।
3.	हम पूजा करते हैं ।	अम्हे अच्चेज्जे ।	वयमर्चामः ।
4.	तुम दोनों छिड़कते हो ।	तुज्झे दो सिंचेज्जा।	युवां द्वौ सिञ्चथः ।
5.	तुम सब उत्पन्न होते हो।	तुम्हे जाएज्जाह ।	यूयं जायध्वे ।
6.	वे खाते हैं ।	ते खाएज्जाइरे ।	ते भुञ्जते ।
7.	तुम खेद पाते हो ।	तुं मिलाएज्जसि ।	त्वं म्लायसि ।
8.	तुम जीते हो ।	तुं जीवेज्ज ।	त्वं जीवयसि ।
9.	तुम दोनों युद्ध करते हो ।	तुब्भे दो जुज्झेज्ज।	युवां द्वौ युध्येथे ।
10.	तुम बोध पाते हो ।	तुं बुज्झेज्जा ।	त्वं बुध्यसि ।
11.	तुम खड़ा रहते हो ।	तुं ठाएज्जसि ।	त्वं तिष्ठसि ।
12.	तुम सब ध्यान करते हो ।	तुब्भे जाएज्जह ।	यूयं ध्यायथ ।
13.	मैं उत्पन्न होता हूँ ।	हं जाएज्जामि ।	अहं जाये ।
14.	वह देता है ।	सो दाएज्जइ ।	स ददाति ।
15.	मैं भूलता हूँ ।	हं भुल्लेज्ज ।	अहं भ्रश्यामि ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
16.	वह ग्लानि पाता है । वह खेद करता है ।	सो गिलाएज्जह ।	स ग्लायति ।
17.	तुम सब खड़े रहते हो ।	तुम्हे ठाएज्जह ।	यूयं तिष्ठथ ।
18.	तुम सब प्रकाशित होते हो ।	तुब्भे भाएज्जह ।	यूयं भाथ ।
19.	वे ले जाते हैं	ते नेएज्जंति ।	ते नयन्ति ।
20.	तुम सब हरण करते हो।	तुम्हे हरेज्ज ।	यूयं हरथ ।
21.	हम पीते हैं ।	अम्हे पाएज्जिमो ।	वयं पामः ।
22.	वे गाते हैं ।	ते गाएज्जेइरे ।	ते गायन्ति ।
23.	वे धारण करते हैं ।	ते धरेज्जा ।	ते धरन्ति ।
24.	तुम सब विचार करते हो ।	तुम्हे चिंतेज्ज ।	यूयं चिन्तयथ ।
25.	हम दोनों खिन्न होते हैं।	अम्हे गिलाएज्जिमु।	वयं ग्लायामः ।

उपसर्ग
प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	अम्हे विण्णि । अहिलसेज्जा ।	आवां द्वौ अभिलष्यावः।	हम दोनों अभिलाषा रखते हैं ।
2.	सो निण्हवेइ ।	स निह्नुते ।	वह छुपाता है ।
3.	ते दो वाहरेज्जा ।	तौ द्वौ व्याहरतः ।	वे दोनों कहते हैं ।
4.	हं पविसेज्जा ।	अहं प्रविशामि ।	मैं प्रवेश करता हूँ ।
5.	अम्हे परावट्टिमो ।	वयं परावर्तामहे ।	हम परावर्तन करते हैं ।
6.	तुज्झे वेण्णि अइयरेह ।	युवां द्वौ अतिचरथः ।	तुम दोनों अतिचार दोष लगाते हो ।
7.	तुं अणुजाणेसि ।	त्वमनुजानासि ।	तुम अनुज्ञा देते हो ।
8.	तुम्हे दुण्णि निगच्छेइत्था ।	युवां द्वौ निर्गच्छथः।	तुम दोनों निकलते हो ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
9.	तुब्भे दोण्णि विलसेह।	युवां द्वौ विलसथः ।	तुम दोनों विलास करते हो ।
10.	ते विउव्वेंति ।	ते विकुर्वंति ।	वे बनाते हैं ।
12.	हं पावेज्ज ।	अहं प्राप्नोमि ।	मैं प्राप्त करता हूँ ।
13.	ते वे वियसेज्ज ।	तौ द्वौ विकसतः।	वे दो विकसित होते हैं ।
14.	तुज्झे अणुसरेह ।	यूयम् अनुसरथ ।	तुम सब अनुकरण करते हो ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	हम आनंद करते हैं ।	अम्हे विहरेमो ।	वयं विहरामः ।
2.	तुम मिलते हो ।	तुं संगच्छेसि ।	त्वं सङ्गच्छसे ।
3.	तुम दोनों बुलाते हो ।	तुब्भे वे वाहरेज्ज ।	युवां द्वौ व्याहरथः।
4.	तुम सब प्रवेश करते हो ।	तुम्हे पविसेह ।	यूयं प्रविशथ ।
5.	तुम अभ्यास करते हो ।	तुं अहिज्जेसि ।	त्वमधीषे ।
6.	हम बनाते हैं ।	अम्हे विउव्वेमो ।	वयं विकुर्मः ।
7.	वह आवृत्ति करता है ।	सो परावट्टए ।	स परावर्तते ।
8.	वे दोनों आज्ञा करते हैं ।	ते वे अणुजाणिंति ।	तौ द्वावनुजानीतः।
9.	तुम सब प्राप्त करते हो ।	तुज्झे पावेह ।	यूयं प्राप्नुथ ।
10.	तुम सब छिपाते हो ।	तुब्भे णिण्हवित्था ।	यूयं निह्नुध्वे ।
11.	वे दो अतिचार लगाते हैं ।	ते वे अइयरेंति ।	तौ द्वावतिचरतः।
12.	तुम सब अभिलाषा करते हो ।	तुम्हे अहिलसेह ।	यूयमभिलष्यथ ।
13.	वे आते हैं ।	ते आगच्छेंति	ते आगच्छन्ति ।
14.	तुम निकलते हो ।	तुं निग्गच्छेसि ।	त्वं निर्गच्छसि ।
15.	तुम अनुसरण करते हो ।	तुं अणुसरसि ।	त्वमनुसरसि ।
16.	हम दोनों आज्ञा करते हैं ।	अम्हे वे अणुजाणिमो ।	आवां द्वानुजानीवः ।
17.	हम मिलते हैं ।	अम्हे संगच्छिमो ।	वयं सङ्गच्छामहे ।

पाठ-7

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**देवा वि तं नमंसंति ।**	देवा अपि तं नमस्यन्ति ।	देव भी उनको नमस्कार करते हैं ।
2.	**मुरुक्खो बुहं निंदइ ।**	मूर्खो बुधं निन्दति ।	मूर्ख पण्डित की निन्दा करता है ।
3.	**देवा तित्थयरं जाणिंति ।**	देवास्तीर्थकरं जानन्ति ।	देव तीर्थंकर को जानते हैं ।
4.	**समणे नयरं विहरेइ ।**	श्रमणो नगरं विहरति	साधु नगर में विहार करते हैं ।
5.	**आयरिसो सीसे उवदिसइ ।**	आचार्यः शिष्यान् उपदिशति ।	आचार्य शिष्यों को उपदेश देते हैं ।
6.	**सो तं धरिसेइ ।**	स तं धृष्णोति ।	वह उसके विरुद्ध होता है ।
7.	**अब्भं वरिसेइ ।**	अभ्रं वर्षति ।	बादल बरसता है ।
8.	**मोरो नट्टं कुणेइ ।**	मयूरो नृत्यं करोति।	मोर नृत्य करता है ।
9.	**पुरिसा जिणे वंदेइरे ।**	पुरुषाः जिनान् वन्दन्ते ।	पुरुष जिनेश्वरों को वंदन करते हैं ।
10.	**दाणं तवो य भूसणं ।**	दानं तपश्च भूषणम्।	दान और तप आभूषण हैं ।
11.	**तुम्हे पवयणं किं जाणेह ?**	यूयं प्रवचनं किं जानीथ ?	क्या तुम सिद्धान्त को जानते हो ?
12.	**घरं धणं रक्खेइ ।**	गृहं धनं रक्षति ।	घर धन का रक्षण करता है ।
13.	**सव्वो जणो कल्लाणमिच्छइ ।**	सर्वो जनः कल्याणमिच्छति	सभी लोग कल्याण की इच्छा रखते हैं ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
14.	**रामो सिवं लहेइ ।**	रामः शिवं लभते ।	राम मोक्ष प्राप्त करता है ।
15.	**पावा सुहं न पावेंति**	पापाः सुखं न प्राप्नुवन्ति ।	पापी (मनुष्य) सुख का प्राप्त नहीं करते है ।
16.	**मयणो जणं बाहए ।**	मदनो जनं बाधते ।	काम मनुष्य को दुःख देता है ।
17.	**पुत्ता फुल्लाणि चिणंति ।**	पुत्राः पुष्पाणि चिन्वन्ति ।	पुत्र फूलों को इकट्ठा करते हैं ।
18.	**मुक्खो वत्थाइं उज्झेइ ।**	मूर्खो वस्त्राण्युज्झति	मूर्ख वस्त्रों का त्याग करता है ।
19.	**पण्णाइं पडेइरे ।**	पर्णानि पतन्ति ।	पत्ते गिरते हैं ।
20.	**एसो मुहं पमज्जेइ ।**	एषः मुखं प्रमार्ष्टि ।	यह मुँह धोता है ।
21.	**पयासेइ आइरिसो ।**	प्रकाशते आचार्यः ।	आचार्य प्रकाशते हैं (=कहते हैं ।)
22.	**धणं चोरेइ चोरो ।**	धनं चोरयति चौरः।	चोर धन की चोरी करता है ।
23.	**आयवो जणे पीडेइ।**	आतपो जनान् पीडयति ।	धूप लोगों को पीड़ा करता है ।
24.	**देवा अब्भं विउव्विरे, जलं च सिंचेंति ।**	देवा अभ्रं विकुर्वन्ति, जलं च सिञ्चन्ति ।	देव बादल बनाते है और पानी छिडकते हैं ।
25.	**रामो पण्णाइं डहेइ।**	रामः पर्णानि दहति ।	राम पत्ते जलाता है ।
26.	**स पोत्थयं गिण्हेइ, अहं च भूसणं** गिण्हेमि ।	स पुस्तकं गृह्णाति, अहं च भूषणं गृह्णामि ।	वह पुस्तक ग्रहण करता है और मैं आभूषण ग्रह करता हूँ ।
27.	**अहं पावं निंदेमि ।**	अहं पापं निन्दामि ।	मैं पाप की निन्दा करता हूँ ।
28.	**रहो चलेइ ।**	रथश्चलति ।	रथ चलता है ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
29.	अम्हे नाणं इच्छामो ।	वयं ज्ञानमिच्छामः ।	हम ज्ञान की इच्छा करते हैं ।
30.	अम्हे वत्थाणि पमज्जेमो ।	वयं वस्त्राणि प्रमृज्मः।	हम वस्त्रों को साफ करते हैं ।
31.	जाइं जिणबिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।	यानि जिनबिम्बानि तानि सर्वाणि वंदे ।	जितनी जिनप्रतिमाएँ हैं उन सभी को मैं वंदन करता हूँ ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
1.	मूर्ख लोग मोहित होते हैं ।	मुरुक्खा मुज्झंति ।	मूर्खाः मुह्यन्ति ।
2.	ज्ञान प्रकाशित होता है।	नाणं पयासेइ ।	ज्ञानं प्रकाशते ।
3.	कमल शोभा देते हैं ।	कमलाई छज्जन्ते ।	कमलानि राजन्ते ।
4.	दो नेत्र देखते हैं ।	दोण्णि नेत्ताइं पासंति ।	द्वे नेत्रे पश्यतः ।
5.	शिष्य ज्ञान पढ़ते हैं ।	सीसा नाणं भणंति ।	शिष्याः ज्ञानं भणन्ति ।
6.	दो वृक्ष गिरते हैं ।	दुवे वच्छा पडंति ।	द्वौ वृक्षौ पततः ।
7.	घोड़े जल पीते हैं ।	आसा जलं पिवंति ।	अश्वाः जलं पिबन्ति ।
8.	देव तीर्थंकरों को नमस्कार करते हैं ।	देवा तित्थयरे नमंति ।	देवास्तीर्थकरान् नमन्ति ।
9.	राम पुस्तक का स्पर्श करता है ।	रामो पोत्थयं फासेइ ।	रामः पुस्तकं स्पृशन्ति ।
10.	दो बालक आभूषण ले जाते हैं ।	दुवे बाला भूसणाइं नेइरे ।	द्वौ बालौ भूषणानि नयतः ।
11.	उपाध्याय ज्ञान का उपदेश देते हैं ।	उवज्झाओ नाणं उवदिसइ ।	उपाध्यायो ज्ञानमुपदिशति ।
12.	धन बढ़ता है ।	धणं वड्ढए ।	धनं वर्धते ।

क्र.	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत
13.	पण्डित पुस्तकों को चाहते हैं और मूर्ख चाँदी की इच्छा रखते हैं ।	पंडिआ पोत्थयाइं अहिलसंते, मुक्खा य रययं इच्छंति ।	पण्डिताः पुस्तकान्यभिलष्य-न्ति, मूर्खाश्च रजतमिच्छन्ति ।
14.	वह सिद्ध होता है ।	सो सिज्झइ ।	स सिध्यति ।
15.	पंडित मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।	बुहो मोक्खं लहइ ।	बुधो मोक्षं लभते ।
16.	मूर्ख लज्जित नहीं होते हैं ।	मुक्खा न लज्जंते ।	मूर्खाः न लज्जन्ते ।
17.	वियोग मनुष्यों को दुःख देता है ।	विओगो जणे बाहए।	वियोगो जनान् बाधते ।
18.	साधु तप करते हैं ।	समणा तवं करेंति	श्रमणास्तपःकुर्वन्ति ।
19.	बालक वस्त्र को खींचता हैं ।	बालो वत्थं करिसइ।	बालो वस्त्रं कृषति ।
20.	हम सूत्र का विचार करते हैं ।	अम्हो सुत्ताइं चिंतेमो ।	वयं सूत्राणि चिन्तयामः।
21.	पुत्र पिता को नमस्कार करते हैं ।	पुत्ता जणयं नमंति ।	पुत्राः जनकं नमन्ति ।
22.	पानी सूखता है ।	जलं सूसइ ।	जलं शुष्यति ।
23.	बालक पानी पीता है ।	बालो जलं पाएइ ।	बालो जलं पिबति ।
24.	राम पापी को मारता है ।	रामो पावं हणइ ।	रामः पापं हन्ति ।
25.	पण्डित रक्षण करते हैं ।	बुहा रक्खेंति ।	बुधाः रक्षन्ति ।
26.	बालक डरते हैं ।	वच्छा बीहेंति ।	वत्साः बिभ्यति ।
27.	अभिमान लोगों को पीडा देता है ।	मओ जणे बाहए ।	मदो जनान् बाधते ।

पाठ-8
प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**जो एगं जाणेइ, सो सव्वं जाणइ ।**	य एकं जानाति, स सर्वं जानाति ।	जो एक को जानता है, वह सभी को जानता है।
2.	**जो सव्वं जाणए, सो एगं जाणेइ ।**	य सर्वं जानाति, स एकं जानाति ।	जो सब को जानता है, वह एक को जानता है ।
3.	**बुहा बुहे पिक्खंति किं मुरुक्खो ?**	बुधा बुधान् प्रेक्षंते किं मूर्खः ?	पण्डित पण्डितों को देखते हैं, मूर्ख क्या (देखेगा) ?
4.	**णाइं करेमि रोसं ।**	न करोमि रोषम् ।	मैं गुस्सा नहीं करता हूँ।
5.	**धणं दाणेण सहलं होइ ।**	धनं दानेन सफलं भवति ।	धन दान द्वारा सफल होता है ।
6.	**समणा मोक्खाय जएन्ते ।**	श्रमणाः मोक्षाय यतंते ।	साधु मोक्ष के लिए प्रयत्न करते हैं ।
7.	**बहिरो किमवि न सुणेइ ।**	बधिरः किमपि न श्रृणोति ।	बहरा कुछ भी नहीं सुनता है ।
8.	**समणा नाणेण तवेण सीलेण य छज्जंते ।**	श्रमणाः ज्ञानेन, तपसा, शीलेन च राजन्ते ।	साधु ज्ञान, तप और शील से शोभते हैं।
9.	**सावगो अज्जं पंकएहिं जिणे अच्चेज्ज ।**	श्रावकोऽद्य पङ्कजैर्जिनान् अर्चति ।	श्रावक आज कमलों द्वारा जिनेश्वरों की पूजा करता है ।
10.	**जणो कुढारेण कट्ठाइं छिंदइ ।**	जनः कुठारेण काष्ठानि छिनत्ति ।	मनुष्य कुल्हाड़े से लकड़े काटता है ।
11.	**पावो वहाइ जणं धाएइ ।**	पापः वधाय जनं धावति ।	पापी वध हेतु मनुष्य की तरफ दौड़ता है ।
12.	**आयरिआ सीसेहिं सह विहरेइरे ।**	आचार्याः शिष्यैः सह विहरंति ।	आचार्य शिष्यों के साथ विहार करते हैं ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
13.	**उज्जमेण सिज्झंति कज्जाणि न मणोरहेहिं ।**	उद्यमेन सिध्यन्ति कार्याणि, न मनोरथैः ।	प्रयत्न से कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथों से नहीं ।
14.	**रोगा ओसढेण नस्सन्ते ।**	रोगा औषधेन नश्यन्ति ।	रोग औषध से नष्ट होते हैं ।
15.	**सीसा आइरिए विणएण वंदिरे ।**	शिष्या आचार्यान् विनयेन वन्दन्ते ।	शिष्य आचार्यों को विनयपूर्वक वंदन करते हैं ।
16.	**सज्जणा कयाइ अप्पकेरं सहावं न छड्डिरे ।**	सज्जनाःकदाचिद् आत्मीयं स्वभावं न त्यजन्ति ।	सज्जन कभी भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ते हैं ।
17.	**वाहो मिगे सरेहिं पहरेइ ।**	व्याधो मृगाञ् शरैः प्रहरति ।	शिकारी हिरनों को बाणों से प्रहार करता है ।
18.	**सीलेण सोहए देहो, न वि भूसणेहिं ।**	शीलेन शोभते देहः नाऽपि भूषणैः ।	देह सदाचार से शोभित होता है, आभूषणों से नहीं ।
19.	**धणेण रहिओ जणो सव्वत्थ अवमाणं पावेज्ज ।**	धनेन रहितो जनः सर्वत्राऽपमानं प्राप्नोति ।	धनरहित मनुष्य सर्वत्र अपमानित होता है ।
20.	**बुहो फरुसेहिं वक्केहिं कंपि न पीलेइ ।**	बुधः परुषैर्वाक्यैः कमपि न पीडयति ।	समझदार व्यक्ति कठोर वचनों से किसी को भी पीड़ित नहीं करता है ।
21.	**भावेण सव्वे सिद्धे नमिमो ।**	भावेन सर्वान् सिद्धान् नमामः ।	हम भावपूर्वक सभी सिद्धों को नमस्कार करते हैं ।
22.	**वीयरागा नाणेण लोगमलोगं च मुणेइरे ।**	वीतरागाः ज्ञानेन लोकमलोकं च जानन्ति ।	वीतराग ज्ञान के द्वारा लोक और अलोक को जानते हैं ।
23.	**संघो तित्थं अडइ ।**	सङ्घस्तीर्थमटति ।	संघ तीर्थ में जाता है ।

24. **प्रा. आयारो परमो धम्मो, आयारो परमो तवो ।**
आयारो परमं नाणं, आयारेण न होइ किं ? ॥1॥

सं. आचारः परमो धर्मः, आचारः परमं तपः ।
आचारः परमं ज्ञानम्, आचारेण किं न भवति ? ॥1॥

हि. आचार श्रेष्ठ धर्म है, आचार उत्तम तप है, आचार उत्कृष्ट ज्ञान है, आचार से क्या नहीं होता है ? (1)

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**काम व्यक्ति को दुःख देता है ।**	मयणो जणं बाहए ।	मदनो जनं बाधते ।
2.	**चन्द्र से आकाश शोभा देता है ।**	चंदेण गयणं छज्जइ ।	चन्द्रेण गगनं शोभते ।
3.	**जन्म से ब्राह्मण नहीं होता है, लेकिन आचार से होता है ।**	जम्मेण बंभणो न होइ, अवि आयारेण होइ ।	जन्मना ब्राह्मणो न भवति, अप्याचारेण भवति ।
4.	**लोभ व्यक्ति को परेशान करता है ।**	लोहा जणं पीलइ ।	लोभो जनं पीडयति ।
5.	**राजा न्यायपूर्वक राज्य करते हैं ।**	निवा नायेण रज्जं करेन्ति ।	नृपाः न्यायेन राज्यं कुर्वन्ति ।
6.	**पाप से मनुष्य नरक में जाता है और धर्म से स्वर्ग में जाता है ।**	पावेण जणो नरयं गच्छइ, धम्मेण य सग्गं गच्छइ ।	पापेन जनो नरकं गच्छति, धर्मेण च स्वर्गं गच्छति ।
7.	**मयूर बादल से खुश होता है ।**	मोरो मेहेण तूसइ।	मयूरो मेघेन तुष्यति ।
8.	**तुम दोनों नृत्य के साथ गाते हो ।**	तुब्भे वे नच्चेण सह गाणं करेह ।	युवां नृत्येन सह गायथः ।
9.	**दो हाथों से तुम पुष्प ग्रहण करते हो ।**	बे हत्थेहिं तुब्भे पुप्फाइं गिण्हइत्था।	हस्ताभ्यां यूयं पुष्पाणि गृह्णीथ ।
10.	**साधु ज्ञान बिना सुख प्राप्त नहीं करते हैं ।**	समणा नाणं विणा सुहं न पावेंति ।	श्रमणाः ज्ञानं विना सुख न प्राप्नुवन्ति ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
11.	**हम स्तोत्रों द्वारा जिनेश्वर की स्तुति करते हैं ।**	अम्हे थोत्तेहिं जिणं थुणिमो ।	वयं स्तोत्रैर्जिनं स्तुमः।
12.	**कपटी सज्जनों की निन्दा करता हैं ।**	सढो सज्जणे निंदेइ ।	शठः सज्जनान् निन्दति ।
13.	**उपाध्याय सूत्रों का उपदेश देते हैं ।**	उवज्झायो सुत्ताइं उवदिसइ ।	उपाध्यायः सूत्राण्युपदिशति ।
14.	**मूर्ख दीपक से वस्त्रों को जलाता है ।**	मुक्खो दीवेण वत्थाइं दहइ ।	मूर्खो दीपेन वस्त्राणि दहति ।
15.	**हम फूलों द्वारा जिनप्रतिमा की पूजा करते हैं ।**	अम्हे पुप्फेहिं जिणबिंबं अच्चेमो ।	वयं पुष्पैर्जिन-बिम्बमर्चामः ।
16.	**मनुष्य सर्वत्र धर्म द्वारा सुख पाता है ।**	जणो धम्मेण सव्वत्थ सुहं लहइ।	जनो धर्मेण सर्वत्र सुखं लभते ।
17.	**पंडित भी मूर्खों को खुश नहीं कर सकते हैं ।**	बुहा वि मुरुक्खे न पीणंति ।	बुधा अपि मूर्खान् न प्रीणयन्ति ।
18.	**साधु काम, क्रोध और लोभ को जीतते हैं ।**	समणा कामं, कोहं लोहं च जिणंति	श्रमणाः कामं, क्रोधं, लोभं च जयन्ति ।
19.	**वीर शस्त्रों को फेंकता है ।**	वीरो सत्थाइं खिवइ ।	वीरश्शस्त्राणि क्षिपति ।
20.	**हम दोनों संघ के साथ तीर्थ की ओर जा रहे हैं ।**	अम्हे दो संघेण सह तित्थं गच्छिमो ।	आवां (द्वौ) सङ्घेन सह तीर्थं गच्छावः ।
21.	**वाचाल (बातूनी) मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है ।**	मुहरो जणो किमवि न करेइ ।	मुखरो जनः किमपि न करोति ।
22.	**जो तत्त्व को जानता है, वह पंडित है ।**	जो तत्तं मुणइ, सो बुहो अत्थि ।	यस्तत्त्वं जानाति, स बुधोऽस्ति ।

पाठ-9

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**नमो सिद्धाणं ।**	नमः सिद्धेभ्यः ।	सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो ।
2.	**नमो उवज्झायाणं ।**	नम उपाध्यायेभ्यः।	उपाध्याय भगवंतों को नमस्कार हो ।
3.	**समणा सव्वय च्चिअ आवासयं कम्मं समायरंति ।**	श्रमणाः सर्वदैवाऽऽवश्यकं कर्म समाचरंति ।	साधु हमेशा निश्चय आवश्यक क्रिया करते हैं ।
4.	**जह छप्पआ उप्पलाणं रसं पिविरे, ताइं च न पीलंति, तह समणा संति ।**	यथा षट्पदा उत्पलानां रसं पिबन्ति, तानि च न पीडयन्ति तथा श्रमणाःसन्ति ।	जैसे भौंरे कमलों का रस पीते हैं और उनको पीड़ा नहीं करते हैं, वैसे साधु होते हैं ।
5.	**जो खमइ, सो धम्मं सुट्ठु आराहेइ ।**	यः क्षमते, स धर्मं सुष्ठु आराध्यति ।	जो क्षमा करता है, वह अच्छी तरह धर्म की आराधना करता है ।
6.	**बुहो नरिंदस्स संतोसाय कव्वाइं रएइ ।**	बुधो नरेन्द्रस्य संतोषाय काव्यानि रचयति ।	पण्डित राजा के संतोष हेतु काव्यों की रचना करता है ।
7.	**अईव नेहो दुहस्सं मूलमत्थि ।**	अतीवस्नेहो दुःख-स्य मूलमस्ति।	अतिस्नेह दुःख का मूल है ।
8.	**धम्मस्स फलमिच्छंति, धम्मं नेच्छंति मणूसा ।**	धर्मस्य फलमिच्छं-ति धर्मं नेच्छन्ति मनुष्याः ।	मनुष्य धर्म के फल की इच्छा रखता है, धर्म की इच्छा नहीं रखता है ।
9.	**समणो सावगाणं जिणेसराणं चरितं वक्खाणेइ ।**	श्रमणः श्रावकेभ्यो जिनेश्वराणां चरित्रं व्याख्याति ।	साधु श्रावकों को जिनेश्वरों का **चरित्र कहते हैं ।**

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
10.	**बालो सप्पस्स दंसणेण डरइ, किं पुण संफासेण ?**	बालः सर्पस्य दर्शनेन बिभेति, किं पुनः संस्पर्शेन ?	बालक सर्प को देखने से भी डरता है, तो स्पर्श की क्या बात ?
11.	**मुणिंदो सीसाणं सुत्ताणमट्ठं उवदिसइ ।**	मुनीन्द्रः शिष्येभ्यः सूत्राणामर्थमुपदिशति	आचार्य शिष्यों को सूत्रों के अर्थ का उपदेश देते हैं ।
12.	**नाणं तत्ताणं पयासगं होइ ।**	ज्ञानं तत्त्वानां प्रकाशकं भवति ।	ज्ञान तत्त्वों का प्रकाशक होता है ।
13.	**धम्मो कासइ न रोएइ ?**	धर्मः कस्मैचित् न रोचते ?	धर्म किसको नहीं रुचता है ?
14.	**निट्ठुरो पावेहिंतो धम्मं वंछइ ।**	निष्ठुरः पापेभ्यो धर्मं वाञ्छति ।	निर्दय मनुष्य पापों से धर्म को चाहता है ।
15.	**आणंदो सावगो दंसणत्तो न कया चलइ ।**	आनन्दः श्रावको दर्शनान्न कदा चलति ।	आनंद श्रावक सम्यक्त्व से कभी भी विचलित नहीं होता है ।
16.	**पव्वयाणं मंदरो निच्चलो अत्थि ।**	पर्वतानां मन्दरो निश्चलोऽस्ति ।	पर्वतों में मेरुपर्वत निश्चल है ।
17.	**सो पमाया सुत्तं पुत्तं पहरेइ ।**	स प्रमादात् सुप्तं पुत्रं प्रहरति ।	वह प्रमाद से सोये हुए पुत्र को मारता है ।
18.	**अट्ठाए गामाओ गाममडंति बंभणा।**	अर्थाय ग्रामाद् ग्राममटन्ति ब्राह्मणाः।	ब्राह्मण धन के लिए (एक) गांव से (दूसरे) गाँव घूमते हैं ।
19.	**तस्स वच्छस्स पक्काइं फलाइं अईव महुराणि संति ।**	तस्स वृक्षस्य पक्वानि फलान्यतीवमधुराणि सन्ति ।	उस वृक्ष के पके फल अत्यंत मीठे हैं ।
20.	**धम्मिओ सइ दीणाणं जणाणं धन्नाइं देइ ।**	धार्मिकः सदा दीनेभ्यो जनेभ्यो धान्यानि ददाति ।	धर्मिष्ठ व्यक्ति हमेशा गरीब व्यक्तियों को धान्य देता है ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
21.	**जस्स धम्मो व अड्ढो अत्थि, तं नरं सव्वे अविक्खिरे ।**	यस्य धर्मो वाऽर्थोऽस्ति, तं नरं सर्वे अपेक्षन्ते ।	जिसके पास धर्म अथवा धन है, उस व्यक्ति की सभी अपेक्षा रखते हैं ।
22.	**सो नग्गो भमइ, जणेहिंतो वि न लज्जए ।**	स नग्नो भ्रमति, जनेभ्योऽपि न लज्जते ।	वह नग्न घूमता है, लोगों से भी शरमाता नहीं है ।
23.	**धम्मे सुहाणं मूलं, दप्पो मूलं विणासस्स ।**	धर्मः सुखानां मूलं, दर्पो मूलं विनाशस्य ।	धर्म सुखों का मूल है, अभिमान विनाश का मूल है ।

24. **प्रा. [1]धिद्धि [2]मूढा [3]जीवा, [7]कुणंति [5]गुरुए [6]मणोरहे [4]विविहे ।**
[10]न [8]उ [11]जाणंति [9]वराया, [15]झायइ [12]दइवं [13]किमवि [14]अन्नं ॥1॥

सं. धिग् धिक् मूढा जीवाः, विविधान् गुरुकान् मनोरथान् कुर्वन्ति ।
वराकास्तु न जानन्ति, दैवं किमप्यन्यत् ध्यायति ॥1॥

हि. धिक्कार है कि मूर्ख जीव अनेक प्रकार के बड़े मनोरथ करते हैं, लेकिन वे बिचारे जानते नहीं है कि भाग्य कुछ अलग विचारता है ।

25. प्रा. [1]विणया [2]णाणं [3]णाणाओ, [4]दंसणं [5]दंसणाहि [6]चरणं च ।
[7]चरणाहिंतो [8]मुक्खो, [9]मोक्खे [10]सोक्खं [11]अणाबाहं ॥2॥

सं. विनयाज् ज्ञानं, ज्ञानाद् दर्शनं, दर्शनाच्चरणं च ।
चरणान् मोक्षः, मोक्षे सौख्यमनाबाधम् ॥2॥

हि. विनय से ज्ञान, ज्ञान से दर्शन, दर्शन से चारित्र और चारित्र से मोक्ष, मोक्ष में पीड़ारहित सुख है ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
1.	**सज्जन पुरुष पापियों का विश्वास नहीं करते हैं ।**	सज्जणा पावे न वीससंति ।	सज्जनाः पापान् न विश्वसन्ति ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
2.	शेर के शब्दों से मनुष्यों के हृदय कम्पित होते हैं ।	सिंघस्स सद्देण जणाणं हिययाई कंपेंति ।	सिंहस्य शब्देन जनानां हृदयानि कम्पन्ते ।
3.	साधुओं का समुदाय जिनेश्वर के साथ मोक्ष में जाता है ।	समणाणं संघो जिणेण सह मोक्खं गच्छइ ।	श्रमणानां सङ्घो जिनेन सह मोक्षं गच्छति ।
4.	मूर्ख चारित्र की श्रद्धा नहीं करते हैं ।	मुरुक्खा चरितं न सद्दहेंति ।	मूर्खाश्चारित्रं न श्रद्दधति ।
5.	जीवों और अजीवों को प्रकाश करनेवाला कौन है ?	जीवाणं अजीवाणं च पयासगं को अत्थि ?	जीवानामजीवानां च प्रकाशकं कोऽस्ति ?
6.	जो चारित्र की श्रद्धा करता है, वह भाव से श्रावक है ।	जो चारित्तं सद्दहेइ, भावत्तो सावगो अत्थि ।	यश्चारित्रं श्रद्दधाति स भावतः श्रावकोऽस्ति ।
7.	वह घर से निकलता है और साधु बनता है।	सो घरत्तो निग्गच्छइ, समणो य होइ ।	स गृहान्निर्गच्छति, श्रमणश्च भवति ।
8.	पश्चात्ताप से पाप नष्ट होते हैं ।	पच्छायावत्तो पावाइं नस्संति ।	पश्चातापतः पापानि नश्यन्ति ।
9.	शिष्य उपाध्याय के पास अध्ययन पढ़ते हैं ।	सीसा उवज्झायाउ अज्झयणं भणेंति ।	उपाध्यायादध्ययनं भणन्ति ।
10.	जो न्यायमार्ग का उल्लंघन करता है, वह दुःख पाता है ।	जो नायमग्गं अइक्कमइ, सो दुहं पावइ ।	यो न्यायमार्गमतिक्राम्यति, स दुःख प्राप्नोति ।
11.	राजा काव्यों से पंडितों की परीक्षा करता है ।	निवो कव्वेहिं विबुहे परिक्खइ ।	नृपः काव्यैर्विबुधान् परीक्षते ।

क्र.	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
12.	**व्याघ्र से मनुष्य डरता है ।**	वग्घत्तो जणो बिहेइ ।	व्याघ्राज्जनो बिभेति ।
13.	**संघ धर्म के विरुद्ध सहन नहीं करता है ।**	संघो धम्मस्स विरुद्धं न सहइ ।	सङ्घो धर्मस्य विरुद्धं न सहते ।
14.	**धार्मिक व्यक्ति पापों से डरता है ।**	धम्मिओ जणो पावेहिंतो डरइ ।	धार्मिको जनः पापेभ्यस्त्रस्यति ।
15.	**किसी का धन हरण करना पाप है ।**	कासइ धणस्स हरणं पावं अत्थि ।	कस्यचिद् धनस्य हरणं पापमस्ति ।
16.	**जो जिनवचन का उल्लंघन करते हैं, वे सुख नहीं प्राप्त करते हैं ।**	जो जिणस्स वयणं अइक्कमेंति ते सुहं न पावेंति ।	ये जिनस्य वचनमतिक्रमन्ते, ते सुखं न प्राप्नुवन्ति ।
17.	**तुम विनय से अच्छी तरह शोभा देते हो ।**	तुं विणएण सुट्ठु छज्जसे ।	त्वं विनयेन सुष्ठु शोभसे ।
18.	**उसको धिक्कार हो क्योंकि वह सब की निंदा करता है ।**	तं धिद्धि, सो सव्वं निंदइ ।	तं धिग् धिक्, स सर्वान् निन्दति ।
19.	**वह धान्य बेचता है और बहुत द्रव्य कमाता है ।**	सो धन्नं विक्कइ, बहुं च दव्वं विढवेइ ।	सः धान्यं विक्रीणाति, बहुं च द्रव्यमुपार्जयति ।
20.	**तुम उसकी व्यर्थ ही निंदा करते हो ।**	तुं तं मुझ निंदेसि ।	त्वं तं मुधा निन्दसे ।
21.	**शिष्य हमेशा सूत्रों के अध्ययनों की आवृत्ति करते हैं ।**	सीसा सया सुत्ताणं अज्झयणाइं परावट्टंति	शिष्याः सदा सूत्राणामध्ययनानि परावर्तन्ते ।
22.	**बालक को दूध पसंद आता है ।**	बालाणं दुद्धं रुच्चइ ।	बालाय दुग्धं रोचते ।

पाठ-10

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. हे खमासमण । हं मत्थएण वंदामि ।**
   सं. हे क्षमाश्रमण ! अहं मस्तकेन वन्दे ।
   हि. हे क्षमाप्रधान मुनि । मैं मस्तक से वंदन करता हूँ ।
2. **प्रा. सव्वेसु धम्मेसु जत्थ पाणाइवाओ न विज्जइ, सो धम्मो सोहणो होइ ।**
   सं. सर्वेषु धर्मेषु यत्र प्राणातिपातो न विद्यते, स धर्मः शोभनो भवति ।
   हि. सभी धर्मों में जहाँ जीवहिंसा नहीं है, वह धर्म सुंदर है ।
3. **प्रा. जक्खो समणाणं साहज्जं कुणेइ ।**
   सं. यक्षः श्रमणानां साहाय्यं करोति ।
   हि. यक्ष साधुओं की सहायता करता है ।
4. **प्रा. वुड्ढत्तणे वि मूढाणं नराणं विसया न उवसमंते ।**
   सं. वृद्धत्थेऽपि मूढानां नराणां विषया नोपशाम्यन्ति ।
   हि. वृद्धावस्था में भी मूर्ख मनुष्यों के विषय उपशांत नहीं होते है ।
5. **प्रा. पच्चूसे सो उज्जाणं जाइ, थिआइं पुप्फाइं जिणिंदाणमच्चाणाय घरं आणेइ ।**
   सं. प्रत्यूषे स उद्यानं याति, तत्र स्थितानि पुष्पाणि जिनेन्द्राणामर्चनाय गृहमानयति ।
   हि. वह सुबह बगीचे में जाता है, वहाँ रहे हुए फूलों को जिनेश्वरों की पूजा के लिए घर लाता है ।
6. **प्रा. समणा चेइएसु निच्चं वच्चिरे, देवे य वंदंति ।**
   सं. श्रमणाश्चैत्येषु नित्यं व्रजन्ति, देवांश्च वन्दन्ते ।
   हि. मुनिगण हमेशा जिनालयों में जाते हैं और देवों को वंदन करते हैं ।
7. **प्रा. देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।**
   सं. देवा अपि तं नमस्यन्ति, यस्य धर्मे सदा मनः ।
   हि. जिसका मन सदा धर्म में जुड़ा हुआ है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं ।

8. प्रा. **मिच्छा तुं पुत्ताणं कुज्झसि ।**
सं. मिथ्या त्वं पुत्रेभ्यः क्रुध्यसि ।
हि. तुम पुत्रों पर निष्कारण क्रोध करते हो ।

9. प्रा. **जो धणस्स मएण मज्जइ, सो भवमडइ ।**
सं. यो धनस्य मदेन माद्यति, स भवमटति ।
हि. जो धन के मद से मदोन्मत्त होता है, वह संसार में भटकता है ।

10. प्रा. **पावाणं कम्माणं खयाए ठामि काउसग्गं ।**
सं. पापानां कर्मणां क्षयाय कायोत्सर्गम् तिष्ठामि ।
हि. मैं पाप कर्मों के क्षय के लिए कायोत्सर्ग में रहता हूँ ।

11. प्रा. **मज्जम्मि मंसम्मि य पसत्ता मणुसा निरयं वच्चंति ।**
सं. मद्ये मांसे च प्रसक्ताः मनुष्या नरकं व्रजन्ति ।
हि. मदिरा और मांस में आसक्त मनुष्य नरक में जाते हैं ।

12. प्रा. **नक्खत्ताणं मिअंको जोअइ ।**
सं. नक्षत्राणां मृगाङ्को द्योतते ।
हि. नक्षत्रों में चन्द्र चमकता है ।

13. प्रा. **परोवयारो पुण्णाय, पावाय अन्नस्स पीलण, इअ नाणं जस्स हिए सो धम्मिओत्ति ।**
सं. परोपकारः पुण्याय, पापायाऽन्यस्य पीडनम्, इति ज्ञानं यस्य हृदये सः धार्मिक इति ।
हि. परोपकार पुण्य के लिए, दूसरे को पीड़ा करनी यह पाप के लिए है, इस प्रकार का ज्ञान जिसके हृदय में है वह धार्मिक है ।

14. प्रा. **मूढो हं, तत्तो कत्थ गच्छामि ? कहिं चिट्ठामि ? कस्स कहेमि ? कस्स रूसेमि ?**
सं. मूढोऽहं, ततः कुत्र गच्छामि ? कुत्र तिष्ठामि ? कस्य कथयामि ? कस्मै रुष्यामि ?
हि. मैं मूर्ख हूँ, इसलिए कहाँ जाऊँ ? कहाँ खड़ा रहूँ ? किसको कहूँ ? किस पर गुस्सा करूँ ?

15. प्रा. **जीवा पावेहिं कज्जेहिं निरयंसि उववज्जिरे ।**
सं. जीवाः पापैः कार्येर्नरके उपपद्यन्ते ।
हि. जीव पापकर्मों से नरक में उत्पन्न होते हैं ।

16. प्रा. चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अ अहियं पयासयरा तित्थयरा हुंति ।

सं. चन्द्रेभ्यो निर्मलतराः आदित्येभ्यश्चाधिकं प्रकाशकरास्तीर्थकरा भवन्ति ।

हि. तीर्थंकर चन्द्र से ज्यादा निर्मल और सूर्य से अधिक प्रकाशक होते हैं ।

17. प्रा. खमासमणा सव्वया नाणम्मि, तवंसि, झाणे य उज्जया संति ।

सं. क्षमाश्रमणाः सर्वदा ज्ञाने, तपसि, ध्याने चोद्यताः सन्ति ।

हि. क्षमाप्रधान मुनि हमेशा ज्ञान, तप और ध्यान में तत्पर होते हैं ।

18. प्रा. जारिसो जणो होइ, तस्स मित्तो वि तारिसे विज्जइ ।

सं. यादृशो जनो भवति, तस्य मित्रमपि तादृशं विद्यते ।

हि. जैसा व्यक्ति होता है, उसका मित्र भी उसी प्रकार को होता है ।

19. प्रा. जो पच्छं न भुंजइ, तस्स वेज्जो किं कुणइ ? ।

सं. यः पथ्यं न भुङ्क्ते, तस्य वैद्यः किं करोति ? ।

हि. जो हितकारी वस्तु नहीं खाता है, उसका वैद्य क्या करे ? (अर्थात् कुछ भी नहीं कर सकता है ।) ।

20. प्रा. अम्हेत्थ पुण्णाणं पावाणं च कम्माण फलं उवभुंजिमो ।

सं. वयमत्र पुण्यानां पापानां च कर्मणां फलमुपभुञ्जमः ।

हि. हम यहाँ पुण्य और पाप कर्म के फल भुगतते हैं ।

21. प्रा. नच्चइ गायइ पहसइ पणमइ परिच्चयइ वत्थं पि ।
तूसइ रूसइ निक्कारणं पि मइरामउम्मत्तो ॥1॥

सं. मदिरामदोन्मतः निष्कारणमपि नृत्यति, गायति, प्रहसति, प्रणमति, वस्त्रमपि परित्यजति, तुष्यति, रुष्यति ॥1॥

हि. मदिरा के मद से उन्मत्त व्यक्ति बिना कारण नाचता है, गाता है, खिलखिल हँसता है, प्रणाम करता है, वस्त्र को भी फेंक देता है, खुश होता है और गुस्सा करता है ॥1॥

22. प्रा. सच्चिय सूरो सो चेव, पंडिओ तं पसंसिमो निच्चं ।
इंदियचोरेहिं सया, न लुंटिअं जस्स चरणधणं ॥2॥

सं. स एव शूरः, स एव पण्डितः तं नित्यं प्रशंसामः ।
यस्य चरणधनं, सदा इन्द्रियचौरैर्न लुण्टितं ॥2॥

हि. वही शूरवीर है, वही पण्डित है, हम हमेशा उसी की प्रशंसा करते हैं, जिसका चारित्ररूपी धन हमेशा इन्द्रियरूपी चोरों द्वारा नहीं लूटा गया है ।।2।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि **गुणों में द्वेष अनर्थ के लिए होता है ।**
प्रा. गुणेसु मच्छरो अणत्थाय होइ ।
सं. गुणेषु मत्सरोऽनर्थाय भवति ।

2. हि. **सुवर्ण का पर्याय आभूषण है ।**
प्रा. निक्खस्स पज्जाओ भूसणं अत्थि ।
सं. निष्कस्य पर्यायो भूषणमस्ति ।

3. हि. **मंदिर के शिखर पर मयूर नृत्य करता है ।**
प्रा. मंदिरस्स सिहरम्मि मोरो नच्चइ ।
सं. मन्दिरस्य शिखरे मयूरो नृत्यति ।

4. हि. **आनंद श्रावक सम्यक्त्व में निश्चल है ।**
प्रा. आणंदो सावगो सम्मत्तंमि निच्चलो अत्थि ।
सं. आनन्दः श्रावकः सम्यक्त्वे निश्चलोऽस्ति ।

5. हि. **मनुष्य पाप का फल देखता है, फिर भी धर्म नहीं कर सकता है, इससे अन्य आश्चर्य क्या ? ।**
प्रा. जणो पावस्स फलं पासइ, तहवि धम्मं न करेइ, तत्तो अन्नं किं अच्छेरं ?
सं. जनः पापस्य फलं पंश्यति, तथापि धर्मं न करोति, ततोऽन्यत् किमाश्चर्यम् ?

6. हि. **बालक प्रभात में पिता को नमस्कार करता है, उसके बाद अपना अध्ययन करता है ।**
प्रा. बालो पहाए जणयं नमइ, पच्छा य अप्पकेरं अज्झयणं करेइ ।
सं. बालः प्रभाते जनकं नमति, पश्चाच्चाऽऽत्मीयमध्ययनं करोति ।

7. हि. **विह्वल मनुष्य को कार्य में उत्साह नहीं होता है ।**
प्रा. विब्भलस्स जणस्स कज्जंमि उच्छाहो न होइ ।
सं. विह्वलस्य जनस्य कार्ये उत्साहो न भवति ।

8. हि. **इस बाग में वृक्ष पर सुंदर फल हैं ।**
प्रा. एयंमि उज्जाणंमि वच्छेसु सोहणाइं फलाइं सन्ति ।
सं. एतस्मिन्नुद्याने वृक्षेषु शोभनानि फलानि सन्ति ।

9. हि. **वृद्धावस्था में शरीर जीर्ण होता है ।**
प्रा. वुड्ढत्तणे देहो जिण्णो होइ ।
सं. वृद्धत्वे देहो जीर्णो भवति ।

10. हि. **जो पथ्य का सेवन करता है, वह बीमार नहीं होता है ।**
प्रा. जो पच्छं सेवइ, सो रुग्गो न होइ ।
सं. यः पथ्यं सेवते, स रुग्णो न भवति ।

11. हि. **आचार्य तीर्थंकर के समान है ।**
प्रा. आयरिया तित्थयरेण समा संति ।
सं. आचार्यास्तीर्थकरेण समाः सन्ति ।

12. हि. **साधर्मिकों का वात्सल्य इस लोक में धर्म और परलोक में मोक्ष प्रदान करता है ।**
प्रा. साहम्मिआण वच्छल्लं एयंमि लोगम्मि धम्मं, परलोगम्मि य मोक्खं देइ ।
सं. साधर्मिकाणां वात्सल्यमेतस्मिंल्लोके धर्मं, परलोके च मोक्षं ददाति ।

13. हि. **मेघ पर्वत पर बरसता है ।**
प्रा. मेहो पव्वयम्मि वरिसइ ।
सं. मेघः पर्वते वर्षति ।

14. हि. **साधु व्याख्यान में जिनेश्वरों के चरित्र कहता है ।**
प्रा. समणो वक्खाणे जिणेसराणं चरित्ताइं कहेइ ।
सं. श्रमणो व्याख्याने जिनेश्वराणां चरित्राणि कथयति ।

15. हि. **मैं मार्ग में भालू देखता हूँ ।**
प्रा. हं मग्गम्मि रिच्छं देक्खेमि ।
सं. अहं मार्गे ऋक्षं पश्यामि ।

16. हि. **हे मूर्ख ! तुम गरीबों को क्यों हैरान (परेशान) करते हो ?**
प्रा. हे मुक्ख ! तुं दीणे किमत्थं पीलेसि ?
सं. हे मुर्ख ! त्वं दीनान् किमर्थं पीडयसि ?

17. हि. **तुम दुर्जनों के वचनों पर विश्वास रखते हो इसलिए दुःखी होते हो ।**
प्रा. तुं दुज्जणाणं वयणेसुं वीससिस, तत्तो दुहं पावेसि ।
सं. त्वं दुर्जनानां वचनेषु विश्वसिषि, ततो दुःखं प्राप्नोषि ।

पाठ-11

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **अरिहंतो सव्वण्णवो हवंति ।**
   सं. अर्हन्तः सर्वज्ञा भवन्ति ।
   हि. अरिहंत भ. सब जाननेवाले होते हैं ।
2. प्रा. **कयण्णुणा सह संसग्गो सइ कायव्वो ।**
   सं. कृतज्ञेन सह संसर्गः सदा कर्तव्यः ।
   हि. उपकार को जाननेवाले के साथ संबंध हमेशा करना चाहिए ।
3. प्रा. **छप्पआ महुं चक्खेज्जा ।**
   सं. षट्पदाः मध्वास्वादन्ते ।
   हि. भौंरे मधु का स्वाद लेते हैं ।
4. प्रा. **सूरओ जिणिंदस्स सासणस्स पहावगा संति ।**
   सं. सूरयो जिनेन्द्रस्य शासनस्य प्रभावकाः सन्ति ।
   हि. आचार्यगण जिनेश्वर के शासन के प्रभावक हैं ।
5. प्रा. **गुरुणो सीसाणं सुत्ताणमट्ठमुवदिसंति ।**
   सं. गुरवः शिष्येभ्यः सूत्राणामर्थमुपदिशन्ति ।
   हि. गुरुजन शिष्यों को सूत्रों के अर्थ बताते हैं ।
6. प्रा. **अहिण्णु सत्थाणमत्थेसु न मुज्झंति ।**
   सं. अभिज्ञाः शास्त्राणामर्थेषु न मुह्यन्ति ।
   हि. पंडित शास्त्रों के अर्थ में मोहित नहीं होते हैं ।
7. प्रा. **साहवो तत्तेसुं विम्हयं न पावेइरे ।**
   सं. साधवस्तत्त्वेषु विस्मयं न प्राप्नुवन्ति ।
   हि. साधु तत्त्वों में आश्चर्य नहीं पाते हैं ।
8. प्रा. **सूरी साहुहिं सह आवासयाइं कम्माइं कुणइ ।**
   सं. सूरिः साधुभिः सहाऽऽवश्यकानि कर्माणि करोति ।
   हि. आचार्य साधुओं के साथ आवश्यक क्रिया करते हैं ।
9. प्रा. **साहुणो पमाआ सुत्ताणि वीसरेज्ज ।**
   सं. साधवः प्रमादात् सूत्राणि विस्मरन्ति ।
   हि. साधु प्रमाद से सूत्र भूल जाते हैं ।

10. प्रा. **मुणी धम्मस्स तत्ताइं सूरिं पुच्छंति ।**
सं. मुनयो धर्मस्य तत्त्वानि सूरिं पृच्छन्ति ।
हि. मुनिजन आचार्य को धर्म के तत्त्व पूछते हैं ।

11. प्रा. **साहू गुरुहिं सह गामाओ गामं विहरंते ।**
सं. साधवो गुरुभिः सह ग्रामाद् ग्रामं विहरन्ति ।
हि. साधु गुरु भ. के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव विचरते हैं ।

12. प्रा. **कइणो नरिंदस्स गुणे वण्णेइरे ।**
सं. कवयो नरेन्द्रस्य गुणान् वर्णयंति ।
हि. कवि राजा के गुणों की प्रशंसा करते हैं ।

13. प्रा. **दुक्खेसु साहेज्जं जे कुणंति, ते बंधवो अत्थि ।**
सं. दुःखेषु साहय्यं ये कुर्वन्ति, ते बन्धवः संति ।
हि. जो दुःखों में सहायता करता है, वह बन्धु है ।

14. प्रा. **तुं अंसूणि किं मुंचसि ?**
सं. त्वमश्रूणि किं मुञ्चसि ?
हि. तुम आँसू क्यों बहाते हो ?

15. प्रा. **अजिण्णे ओसढं वारि ।**
सं. अजीर्णे औषधं वारि ।
हि. अजीर्ण में पानी औषध है ।

16. प्रा. **भोयणस्स मज्झम्मि वारि अमयं ।**
सं. भोजनस्य मध्ये वार्यमृतम् ।
हि. भोजन के बीच में पानी अमृत है ।

17. प्रा. **सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू ।**
सं. सूत्रस्य मार्गेण चरेयुर्भिक्षवः ।
हि. साधुगण सिद्धान्त के मार्ग पर चलें ।

18. प्रा. **पज्जुन्नो जणे डहइ ।**
सं. प्रद्युम्नो जनान् दहति ।
हि. काम मनुष्यों को जलाता है ।

19. प्रा. **निवइ मंतीहिं सद्धिं रज्जस्स मंतं मंतेइ ।**
सं. नृपतिर्मन्त्रिभिः सार्धं राज्यस्य मन्त्रं मन्त्रयति ।
हि. राजा मंत्रियों के साथ राज्य की मंत्रणा करता है ।

20. प्रा. निवइणो मणोण्णेहिं कव्वेहिं तूसंति ।

सं. नृपतयो मनोज्ञैः काव्यैस्तुष्यन्ति ।

हि. राजागण सुंदर काव्यों से खुश होते हैं ।

21. प्रा. धन्नाणं चेव गुरुणो आएसं दिंति ।

सं. धन्येभ्य एव गुरव आदेशं ददति ।

हि. गुरु धन्य शिष्यों को ही आदेश देते हैं ।

22. प्रा. धम्मो बंधू अ मित्तो अ, धम्मो य परमो गुरु ।
नराणं पालगो धम्मो, धम्मो रक्खइ पाणिणो ॥1॥

सं. धर्मो बन्धुश्च मित्रं च, धर्मश्च परमो गुरुः ।
नराणां पालको धर्मः, धर्मः प्राणिनो रक्षति ॥1॥

हि. धर्म बन्धु है, मित्र है और धर्म उत्तम गुरु है, धर्म मनुष्यों का पालन करनेवाला है, धर्म जीवों का रक्षण करता है ॥1॥

23. प्रा. दाणेण विणा न साहू, न हुंति साहूहिं विरहिअं तित्थं ।
दाणं दिंतेण तओ, तित्थुद्धारो कओ होइ ॥2॥

सं. दानेन विना साधवो न भवन्ति, साधुभिर्विरहितं तीर्थं न ।
ततो दानं ददता, तीर्थोद्धारः कृतो भवति ॥2॥

हि. दान बिना साधु नहीं होते हैं, साधु बिना तीर्थ नहीं होता है, अतः दान देने से तीर्थ का उद्धार किया हुआ होता है । ॥2॥

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. मुनि शास्त्र में पण्डित होते हैं ।

प्रा. मुणओ सत्थम्मि अहिण्णवो हवन्ति ।

सं. मुनयः शास्त्रेऽभिज्ञ भवन्ति ।

2. हि. तुम साधुओं के साथ हमेशा प्रतिक्रमण करते हो ।

प्रा. तुब्भे साहूहिं सह सया पडिक्कमणं करेह ।

सं. यूयं साधुभिः सह सदा प्रतिक्रमण कुरुथ ।

3. हि. मैं मधु का त्याग करता हूँ ।

प्रा. हं महुं चयामि ।

सं. अहं मधु त्यजामि ।

4. हि. **योगी जंगल में रहते हैं और काम को जीतते हैं ।**
प्रा. योगिनो वने वसन्ति कामं च जयन्ति ।
सं. योगिनो वने वसन्ति कामं च जयन्ति ।

5. हि. **मुनि उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य पालन करते हैं ।**
प्रा. मुणओ उक्किट्ठं बंभचेरं पालिंति ।
सं. मुनयः उत्कृष्टं ब्रह्मचर्यं पालयन्ति ।

6. हि. **पंडित व्याधि से नहीं घबराते हैं ।**
प्रा. अहिण्णवो वाहित्तो न मुज्झंति ।
सं. पण्डिताः व्याधौ न मुह्यन्ति ।

7. हि. **वैद्य व्याधियों को दूर करते हैं ।**
प्रा. वेज्जा वाहिणो हरेन्ति ।
सं. वैद्याः व्याधीन् हरन्ति ।

8. हि. **मैं स्तोत्रों द्वारा सर्वज्ञ भगवंत की स्तुति करता हूँ ।**
प्रा. हं थोत्तेहिं सव्वण्णुं थुणामि ।
सं. अहं स्तोत्रैः सर्वज्ञं स्तौमि ।

9. हि. **ताराओं के बीच में चन्द्रमा शोभा देता है ।**
प्रा. तारगाणं मज्झे इंदू सोहइ ।
सं. तारकाणां मध्ये इन्दुः शोभते ।

10. हि. **राजा दुर्जनों को दण्ड देते हैं और सज्जनों का पालन करते है ।**
प्रा. निवइणो सढे दंडेन्ति सज्जणे य पालेंति ।
सं. नृपतयः शठान् दण्डयन्ति सज्जनांश्च पालयन्ति ।

11. हि. **भौरों को मधु पसंद है ।**
प्रा. छप्पयाणं महुं रुच्चइ ।
सं. षट्पदेभ्यो मधुं रोचते ।

12. हि. **वह सदा उद्यान में जाता है और आचार्यों तथा साधुओं को वंदन करता है ।**
प्रा. सो निच्चं उज्जाणं गच्छइ, आयरिए मुणिणो य वंदए ।
सं. सः नित्यमुद्यानं गच्छति, आचार्यान् मुनींश्च वन्दते ।

13. हि. साधु कभी भी पाप में प्रवृत्ति नहीं करते हैं ।

प्रा. साहवो कयावि पावम्मि न पवट्टन्ति ।

सं. साधवः कदापि पापे न प्रवर्तन्ते ।

14. हि. ऋषि मन्त्र द्वारा आकाश में उडता है ।

प्रा. रिसी मंतेण गयणं उड्डेइ ।

सं. ऋषिर्मन्त्रेण गगनमुड्डयते ।

15. हि. मेघ पानी बरसाता है ।

प्रा. मेहो वारि वरिसइ ।

सं. मेघो वारि वर्षति ।

16. हि. चन्द्र दिन में शोभा नहीं देता है ।

प्रा. दिणम्मि इंदू न सोहइ ।

सं. दिने इन्दुर्न शोभते ।

17. हि. बालक दहीं खाते हैं ।

प्रा. बाला दहीं खाएंति ।

सं. बाला दधि खादन्ति ।

18. हि. गुरु हमारे जैसे पापियों का भी उद्धार करते हैं ।

प्रा. गुरु अम्हारिसे पावे वि उद्धरेइ ।

सं. गुरुरस्मादृशान् पापानप्युद्धरति ।

पाठ-12

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. सव्वण्णूणं अरिहंताणं भगवंताणं इक्को वि नमोक्कारो भवं छिंदेइ ।**
   सं. सर्वज्ञानामर्हतां भगवतामेकोऽपि नमस्कारो भवं छिनत्ति ।
   हि. सर्वज्ञ अरिहंत भगवंतों को किया हुआ एक भी नमस्कार संसार को छेद डालता है ।
2. **प्रा. जरागहिआ जंतुणो तं नत्थि, जं पराभवं न पावंति ।**
   सं. जरागृहीताः जन्तवस्तन्नाऽस्ति, यत् पराभवं न प्राप्नुवन्ति ।
   हि. वृद्धावस्था द्वारा ग्रहण किये गये प्राणियों के समान कोई चीज नहीं है कि जो पराभव को प्राप्त न करे ।
3. **प्रा. आणंदो संतिस्स चेइए नच्चं करेज्जा ।**
   सं. आनन्दः शान्तेश्चैत्ये नृत्यं करोति ।
   हि. आनन्द श्रावक शान्तिनाथ के चैत्य में नृत्य करता है ।
4. **प्रा. पच्चूसे भाणुणो पयासो रत्तो हवइ ।**
   सं. प्रत्यूषे भानोः प्रकाशो रक्तो भवति ।
   हि. प्रभात में सूर्य का प्रकाश लाल होता है ।
5. **प्रा. नमो पुज्जाणं केवलीणं गुरूणं च ।**
   सं. नमः पूज्येभ्यः केवलिभ्यो गुरूभ्यश्च ।
   हि. पूज्य केवली भगवंतों और गुरु भगवंतों को नमस्कार हो ।
6. **प्रा. पंडिआ मच्चुणो णेव बीहंति ।**
   सं. पण्डिता मृत्योर्नैव बिभ्यति ।
   हि. पंडित मृत्यु से डरते नहीं हैं ।
7. **प्रा. तुम्हे गुरूओ विणा सुत्तस्स अट्ठाइं न लहेह ।**
   सं. यूयं गुरोर्विना सूत्रस्याऽर्थानि न लभध्वे ।
   हि. तुम गुरु के बिना सूत्र के अर्थ प्राप्त नहीं कर सकते हो ।
8. **प्रा. जंतूण जीवाउं वारिमत्थि ।**
   सं. जंतूनां जीवातु वार्यस्ति ।
   हि. प्राणियों का जीवन पानी है ।

9. प्रा. **रण्णे सिंघाणं हत्थीणं च जुद्धं होइ ।**

सं. अरण्ये सिंहानां हस्तीनां च युद्धं भवति ।

हि. जंगल में सिंहों और हाथियों का युद्ध होता है ।

10. प्रा. **केवली महुरेण झुणिणा पाणीणं धम्ममुवएसइ ।**

सं. केवली मधुरेण ध्वनिना प्राणिभ्यो धर्ममुपदिशति ।

हि. केवली भगवंत मधुर वाणी से प्राणियों को धर्म बताते हैं ।

11. प्रा. **सूरिणो अवराहेण साहूणं कुज्झंति ।**

सं सूरयोऽपराधेन साधुभ्य: क्रुध्यन्ति ।

हि आचार्य अपराध के कारण साधुओं पर क्रोध करते हैं ।

12. प्रा. **अन्नाणिणो केवलिणो वयणं अवमन्नंति ।**

सं अज्ञानिन: केवलिनो वचनमवमन्यन्ते ।

हि. अज्ञानी केवली के वचन की अवज्ञा करते हैं ।

13. प्रा. **निवईहिन्तो कवओ बहुं धणं लहेइरे ।**

सं. नृपतिभ्य: कवयो बहुधनं लभन्ते ।

हि. कवि राजाओं से बहुत धन प्राप्त करते हैं ।

14. प्रा. **अन्हे पहुणो पसाएण जीवामो ।**

सं. वयं प्रभो: प्रसादेन जीवाम: ।

हि. हम स्वामी की कृपा से जीते हैं ।

15. प्रा. **जइणो मणयं कासइ मन्नुं न कुणिज्जा ।**

सं. यतयो मनागपि कस्मैचिन्मन्युं न कुर्वन्ति ।

हि. साधु किसी पर थोड़ा भी क्रोध नहीं करते हैं ।

16. प्रा. **अंगाराणं कज्जेण चंदणस्स तरुं को डहेइ ?**

सं. अङ्गाराणां कार्येण चंदनस्य तरुं को दहति ?

हि. कोयले के कार्य के लिए चंदन के वृक्ष को कौन जलाये ?

17. प्रा. **मच्चुस्स सो पमाओ जं जीवो जियइ निमेसंपि ।**

सं. मृत्यो: स प्रमादो यज्जीवो जीवति निमेषमपि ।

हि. मृत्यु का वह प्रमाद है कि जिससे जीव पलक मात्र में भी जीते है ।

18. प्रा. गिम्हस्स मज्झण्हे भाणुस्स तावो अईव तिक्खो होइ, पुव्वण्हे अवरण्हे य मंदो होइ ।

सं. ग्रीष्मस्य मध्याह्ने भानोस्तापोऽतीवतीक्ष्णो भवति, पूर्वाह्णेऽपराह्णे च मन्दो भवति ।

हि. ग्रीष्मकाल के दिन के मध्य भाग में सूर्य का ताप अत्यंत तीव्र होता है, दिन के पूर्व भाग और पिछले भाग में मंद होता है ।

19. प्रा. गोयमाओ गणिणो पण्हाणमुत्तरं जाणिमो ।

सं. गौतमाद् गणिनः प्रश्नानामुत्तरं जानीमः ।

हि. गौतम गणधर से हम प्रश्नों के उत्तर जानते हैं ।

20. प्रा. गुरुस्स विणएण मुरुक्खो वि पंडिओ होइ ।

सं. गुरोर्विनयेन मूर्खोऽपि पण्डितो भवति ।

हि. गुरु के विनय से मूर्ख भी पण्डित होते है ।

21. प्रा. नत्थि कामसमो वाही, नत्थि मोहसमो रिऊ ।
नत्थि कोवसमो वण्ही, नत्थि नाणा परं सुहं ॥1॥

सं. कामसमो व्याधिर्नास्ति, मोहसमो रिपुर्नास्ति ।
कोपसमो वह्निर्नास्ति, ज्ञानात् परं सुखं नास्ति ॥1॥

हि. काम समान व्याधि नहीं है, मोह समान दुश्मन नहीं है ।
क्रोध समान अग्नि नहीं है, ज्ञान से श्रेष्ठ सुख नहीं है ॥1॥

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. शिष्य गुरु को प्रश्न पूछते हैं ।

प्रा. सीसा गुरुं पण्हाइं पुच्छंति ।

सं. शिष्या गुरून् प्रश्नानि पृच्छन्ति ।

2. हि. हम सर्वज्ञ भगवंत के पास धर्म सुनते हैं ।

प्रा. अम्हे सव्वण्णुत्तो धम्मं सुणेमो ।

सं. वयं सर्वज्ञाद् धर्म श्रृणुमः ।

3. हि. अज्ञानियों से पण्डित डरते हैं ।

प्रा. अन्नाणीसुंतो अभिण्णु बीहेंति ।

सं. अज्ञानिभ्योऽभिज्ञाः बिभ्यति ।

4. हि. **मैं सदा पुष्पों से शांतिनाथ (भगवान) की पूजा करता हूँ।**
प्रा. हं सव्वया पुप्फेहिं संतिं अच्चामि ।
सं. अहं सर्वदा पुष्पैः शान्तिमर्चयामि ।

5. हि. **वह तीक्ष्ण शस्त्र से शत्रु को मारता है ।**
प्रा. सो तिक्खेण सत्थेण सत्तुं हणइ ।
सं. स तीक्ष्णेन शस्त्रेण शत्रुं हन्ति ।

6. हि. **शान्ति (जिनेश्वर) के ध्यान से कल्याण होता है ।**
प्रा. संतिस्स झाणेण कल्लाणं होइ ।
सं. शान्तेर्ध्यानेन कल्याणं भवति ।

7. हि. **प्रमाद प्राणियों का परम शत्रु हैं लेकिन वीर पुरुष उसको जीतते है ।**
प्रा. पमाओ पाणीणं परमो सत्तू अत्थि, किंतु वीरा पुरिसा तं जिणंति ।
सं. प्रमादः प्राणिनां परमः शत्रुरस्ति, किन्तु वीरास्तं जयन्ति ।

8. हि. **केवली के वचन अन्यथा (विपरीत) नहीं होते हैं ।**
प्रा. केवलिणो वयणाइं अन्नहा न हवंति ।
सं. केवलिनो वचनान्यन्यथा न भवन्ति ।

9. हि. **कृष्ण नेमि (जिनेश्वर) से सम्यक्त्व प्राप्त करता है ।**
प्रा. कण्हो नेमित्तो सम्मत्तं पावइ ।
सं. कृष्णो नेमेः सम्यक्त्वं प्राप्नोति ।

10. हि. **भौंरा मधु के लिए भ्रमण करता है ।**
प्रा. छप्पओ महुणो अडइ ।
सं. षट्पदो मधुनेऽटति ।

11. हि. **सैनिक राजा से द्रव्य की आशा रखता है ।**
प्रा. जोहो निवइत्तो दव्वं आसंसइ ।
सं. योधो नृपतेर्द्रव्यमाशंसते ।

12. हि. **सिंह के शब्द से हिरनों का हृदय काँपता है ।**
प्रा. सिंघस्स झुणिणा हरिणाणं हिययं कंपइ ।
सं. सिंहस्य ध्वनिना हरिणानां हृदयं कम्पते ।

13. हि. **चन्द्र का प्रकाश मन को आनंद देता है ।**
प्रा. इंदुस्स पयासो चित्तं आल्हाएइ ।
सं. इन्दोः प्रकाशश्चित्तमाल्हादयति ।

14. हि. बंदर वृक्ष के पके हुए फल खाते हैं ।

प्रा. कवओ तरुणो पक्काइं फलाइं खाइज्जंति ।

सं. कपयस्तरो: पक्वानि फलानि खादन्ति ।

15. हि. हम गुरु के पास धर्म सुनते हैं ।

प्रा. अम्हे गुरुत्तो धम्मं सुणेमो ।

सं. वयं गुरोर्धर्मं शृणुम: ।

16. हि. मनुष्य व्याधियों से बहुत घबराते ।

प्रा. जणा वाहिसुन्तो अईव मुज्झंति ।

सं. जना व्याधिभ्योऽतीव मुह्यन्ति ।

17. हि. बालकों को प्रभु का पूजन (रुचता है) पसंद आता है ।

प्रा. बालाणं पहुस्स अच्चणं रुच्चइ ।

सं. बालेभ्य: प्रभोरर्चनं रोचते ।

18. हि. सिंह हाथियों को फाड़ते हैं ।

प्रा. सिंघा हत्थिणो दारेंति ।

सं. सिंहा: हस्तिनो दारयन्ति ।

19. हि. साधु शास्त्र का अपमान नहीं करते हैं ।

प्रा. साहवो सत्थं णाइं अवमन्नंति ।

सं. साधव: शास्त्रं नाऽवमन्यन्ते ।

20. हि. हाथियों से सिंह नहीं डरते हैं ।

प्रा. हात्थित्तो सिंघा न बीहेंति ।

सं. हस्तिभ्य: सिंहा: न बिभ्यति ।

पाठ-13

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **जोहा सत्तूसु सत्थाणि मेल्लिंति ।**
   सं. योधाः शत्रुषु शस्त्राणि मुञ्चन्ति ।
   हि. सैनिक शत्रुओं पर शस्त्र फेंकते हैं ।
2. प्रा. **विज्जत्थिणो पभाए पुव्वं चिअ जग्गंति ।**
   सं. विद्यार्थिनः प्रभाते पूर्वमेव जाग्रति ।
   हि. विद्यार्थी सुबह पहले ही जागते हैं ।
3. प्रा. **सीसा गुरुम्मि वच्छला हवंति ।**
   सं. शिष्या गुरौ वत्सला भवन्ति ।
   हि. शिष्य गुरु पर अनुरागवाले होते हैं ।
4. प्रा. **पक्खिणो तरूसुं वसंति ।**
   सं. पक्षिणस्तरुषु वसन्ति ।
   हि. पक्षी वृक्षों पर रहते हैं ।
5. प्रा. **मुणिंसि परमं नाणमत्थि ।**
   सं. मुनौ परमं ज्ञानमस्ति ।
   हि. मुनि में श्रेष्ठ ज्ञान है ।
6. प्रा. **जओ हरी पाणिम्मि वज्जं धरेइ, तओ लोआ तं वज्जपाणित्ति वयंति ।**
   सं. यतो हरिः पाणौ वज्रं धारयति, ततो लोकास्तं **'वज्रपाणिः'** इति वदन्ति ।
   हि. जिस कारण इन्द्र हाथ में वज्र धारण करता है, उस कारण लोक उसे 'वज्रपाणि' कहते हैं ।
7. प्रा. **सव्वण्णुणा जिणिंदेण समो न अन्नो देवो ।**
   सं. सर्वज्ञेन जिनेन्द्रेण समो नाऽन्यो देवः ।
   हि. सर्वज्ञ जिनेश्वर समान अन्य कोई देव नहीं है ।
8. प्रा. **सिद्धगिरिणा समं न अन्नं तित्थं ।**
   सं. सिद्धगिरिणा समं नाऽन्यत् तीर्थम् ।
   हि. सिद्धगिरि समान दूसरा कोई तीर्थ नहीं है ।

9\. प्रा. **मेरुम्मि असुरा असुरिंदा देवा देविन्दा य पहुणो महावीरस्स जम्मस्स महोसवं कुणंति ।**

सं. मेरावसुरा-असुरेन्द्रा-देवा-देवेन्द्राश्च प्रभोर्महावीरस्य जन्मनो महोत्सवं कुर्वन्ति ।

हि. मेरुपर्वत पर दानव, दानवेन्द्र, देव और देवेन्द्र प्रभु महावीर के जन्म का महोत्सव करते हैं ।

10\. प्रा. **पक्खीसु के उत्तमा संति ?**

सं. पक्षीषु के उत्तमाः सन्ति ?

हि. पक्षियों में कौन उत्तम हैं ?

11\. प्रा. **अग्गिंसि पाओ वरं, न उण सीलेण विरहियाणं जीविअं ।**

सं. अग्नौ पातो वरं, न पुनः शीलेन विरहितानां जीवितम् ।

हि. अग्नि में गिरना श्रेष्ठ (अच्छा), परन्तु शील से रहित (व्यक्ति) का जीवन अच्छा नहीं ।

12\. प्रा. **साहूणं सच्चं सीलं तवो य भूसणमत्थि ।**

सं. साधूनां सत्यं शीलं तपश्च भूषणमस्ति ।

हि. सत्य, शील और तप साधुओं का आभूषण है ।

13\. प्रा. **मूढा पाणिणो इमस्स असारस्स संसारस्स सरुवं न जाणिज्ज ।**

सं. मूढाः प्राणिनोऽस्याऽसारस्य संसारस्य स्वरूपं न जानन्ति ।

हि. अज्ञानी जीव इस असार संसार के स्वरूप को नहीं जानते हैं ।

14\. प्रा. **जं कल्ले कायव्वं, तं अज्जच्चिअ कायव्वं ।**

सं. यत् कल्ये कर्तव्यं, तदद्यैव कर्तव्यम् ।

हि. जो (कार्य) आगामी दिन करना है, वह आज ही करना चाहिए ।

15\. प्रा. **अमूसुं तरूसु कवी वसंति ।**

सं. अमीषु तरुषु कपयो वसन्ति ।

हि. इन वृक्षों पर बंदर रहते हैं ।

16\. प्रा. **हे सिसु ! तं दहिंसि बहुं आसत्तो सि ।**

सं. हे शिशो ! त्वं दध्नि बह्वासक्तोऽसि ।

हि. हे बालक ! तू दही में बहुत आसक्त है ।

17. **प्रा. साहवो परोवयाराय नयराओ नयरंसि विहरेइरे ।**
सं. साधवः परोपकाराय नगरान् नगरे विहरन्ति ।
हि. साधु परोपकार के लिए एक नगर से दूसरे नगर में विहार करते हैं ।

18. **प्रा. वसहो वसहं पासेइ, ढिक्कइ अ ।**
सं. वृषभो वृषभं पश्यति, गर्जति च ।
हि. बैल बैल को देखता है और गर्जना करता है ।

19. **प्रा. जणेसुं साहू उत्तमा संति ।**
सं. जनेषु साधवः उत्तमाः सन्ति ।
हि. लोगों में साधु उत्तम हैं ।

20. **प्रा. हत्थिणो विंझम्मि वसंति ।**
सं. हस्तिनो विन्ध्ये वसन्ति ।
हि. हाथी विन्ध्याचल पर्वत पर रहते हैं ।

21. **प्रा. हे सिसु ! तुं सम्मं अज्झयणं न अहिज्जेसि ।**
सं. हे शिशो ! त्वं सम्यगध्ययनं नाऽधीषे ।
हि. हे बालक ! तुम अच्छी तरह अध्ययन नहीं पढ़ते हो ।

22. **प्रा. अन्नाणीसुं सुत्ताणं रहस्सं न चिट्ठइ ।**
सं. अज्ञानीषु सूत्राणां रहस्यं न तिष्ठति ।
हि. अज्ञानियों में सूत्र का रहस्य नहीं ठहरता है ।

23. **प्रा. गिम्हे दिग्धा दिवसा हुविरे ।**
सं. ग्रीष्मे दीर्घा दिवसा भवन्ति ।
हि. ग्रीष्मकाल में दिन लम्बे होते हैं ।

24. **प्रा. सिसू ! तं जणए वच्छलोसि ।**
सं. शिशो ! त्वं जनके वत्सलोऽसि ।
हि. हे बालक ! तू पिता पर स्नेहवाला है ।

25. **प्रा. जो दोसे चयइ, सो सव्वत्थ तरइ ।**
सं. यो दोषांस्त्यजति, स सर्वत्र शक्नोति ।
हि. जो दोषों का त्याग करता है, वह सर्वत्र शक्तिमान होता है ।

26. प्रा. **गुणीसुं चेव गुणिणो रज्जंति नागुणीसु ।**
सं. गुणिष्वेव गुणिनो रज्यन्ते, नाऽगुणिषु ।
हि. गुणवान पुरुष गुणी=गुणवान पर ही स्नेह रखते हैं, निर्गुणी पर नहीं ।

27. प्रा. **सव्वेसु पाणीसु तित्थयरा उत्तमा संति ।**
सं. सर्वेषु प्राणीषु तीर्थंकरा उत्तमाः सन्ति ।
हि. सभी प्राणियों में तीर्थंकर उत्तम हैं ।

28. प्रा. **जं पहूणं रोएइ, तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं ।**
सं. यत् प्रभुभ्यो रोचते, तदेव कुर्वन्ति सेवकाः नित्यम् ।
हि. जो स्वामी को पसन्द आता है, सेवक हमेशा वही करते हैं ।

29. प्रा. **सच्चं सुअं पि सीलं, विन्नाणं तह तवं पि वेरग्गं ।**
वच्चइ खणेण सव्वं, विसयविसेण जईणं पि ॥1॥
सं. विषयविषेण यतीनामपि सत्यं श्रुतमपि शीलं ।
विज्ञानं तथा तपोऽपि वैराग्यं सर्वं क्षणेन व्रजति ॥1॥
हि. विषयरूपी जहर से साधुओं के भी सत्य, श्रुत, शील, विज्ञान, तप और वैराग्य ये सभी क्षणमात्र में चले जाते हैं ॥1॥

30. प्रा. **जह जह दोसो विरमइ, जह जह विसएहि होइ वेरग्गं ।**
तह तह वि नायव्वं, आसन्नंचिय परमपयं ॥2॥
सं. यथा यथा दोषो विरमति, यथा यथा विषयेभ्यो वैराग्यं भवति ।
तथा तथाऽपि परमपदमासन्नमेव ज्ञातव्यम् ॥2॥
हि. जैसे जैसे दोष दूर होते हैं, जैसे-जैसे विषयों से वैराग्य होता है, वैसे वैसे निश्चय मोक्ष (परमपद) नजदीक जानना ॥2॥

31. प्रा. **धन्नो सो जिअलोए, गुरवो निवसंति जस्स हिअयहमि ।**
धन्नाण वि सो धन्नो, गुरूण हियए वसइ जो उ ॥3॥
सं. जीवलोके स धन्यः, यस्य हृदये गुरवो निवसन्ति ।
स धान्यानामपि धन्यः, यस्तु गुरूणां हृदये वसति ॥3॥
हि. जगत् में वह धन्य है कि जिसके हृदय में गुरु रहते हैं, वह धन्यों (भाग्यशालियों) में भी धन्य (भाग्यशाली) है कि जो गुरु के हृदय में रहता है ॥3॥

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. **बालक कण्ठ में हार धारण करते हैं ।**
   प्रा. सिसवो कंठे हारे परिहाइरे ।
   सं. शिशवः कण्ठे हारान् परिदधति ।
2. हि. **इन्द्र देवों को तीर्थंकर के अतिशय कहते हैं ।**
   प्रा. वज्जपाणी देवे तित्थयरस्स अइसए कहेइ ।
   सं. वज्रपाणिर्देवान् तीर्थकरस्याऽतिशयान् कथयति ।
3. हि. **वह शहद में बहुत आसक्त है ।**
   प्रा. सो महुम्मि बहु आसत्तो अत्थि ।
   सं. स मधुनि बह्वासक्तोऽस्ति ।
4. हि. **सर्वज्ञ में जो गुण होते हैं, वे गुण दूसरों में नहीं होते हैं ।**
   प्रा. सव्वणुम्मि जे गुणा हवन्ति, ते गुणा अन्नेसु न हवंति ।
   सं. सर्वज्ञे ये गुणाः भवन्ति, ते गुणा अन्येषु न भवन्ति ।
5. हि. **उस पर्वत पर जहाँ गुरु रहते हैं, वहाँ मैं रहता हूँ ।**
   प्रा. तम्मि पव्वयंमि जहिं गुरु वसइ, तहिं अहं वसामि ।
   सं. तस्मिन् पर्वते यस्मिन् गुरुर्वसति, तस्मिन्नहं वसामि ।
6. हि. **गुरुओं का विनय करने से विद्यार्थियों में ज्ञान बढ़ता है ।**
   प्रा. गुरूणं विणएण विज्जत्थीसुं नाणं वड्ढए ।
   सं. गुरूणां विनयेन विद्यार्थिषु ज्ञानं वर्धते ।
7. हि. **जैसे पशुओं में सिंह, पक्षियों में गरुड़, मनुष्यों में राजा और देवों मे इन्द्र उत्तम है, वैसे सभी धर्मों में जीवों का रक्षण उत्तर है ।**
   प्रा. जहा पसूसुं सिंघो, पक्खीसु गरुलो, जणेसुं निवई, देवेसुं य हरी उत्तमो अत्थि, तहा सव्वेसुं धम्मेसुं पाणीणं रक्खणं उत्तमं अत्थि ।
   सं. यथा पशुषु सिंहः, पक्षिषु गरुडः, जनेषु नृपतिः, देवेषु च हरिरुत्तमोऽस्ति, तथा सर्वेषु धर्मेषु प्राणिनां रक्षणमुत्तममस्ति ।
8. हि. **पक्षियों में उत्तम पक्षी कौन है ?**
   प्रा. पक्खीसुं उत्तमो पक्खी को अत्थि ?
   सं. पक्षिषूत्तमः पक्षी कोऽस्ति ?

9. हि. **इस पानी में बहुत मछलियाँ हैं ।**
प्रा. इमम्मि वारिम्मि बहवो मच्छा संति ।
सं. अस्मिन् वारिणि बहवो मत्स्या: सन्ति ।

10. हि. **अब मैं शत्रुओं के साथ लड़ता हूँ ।**
प्रा. इयाणिं हं सत्तूहिं सह जुज्झामि ।
सं. इदानीमहं शत्रुभिस्सह युध्ये ।

11. हि. **प्राणियों को जीवन देनेवाला धर्म है ।**
प्रा. जंतूणं जीवाऊ धम्मो अत्थि ।
सं. जन्तूनां जीवातुर्धर्मोऽस्ति ।

12. हि. **पर्वतों में मेरु उत्तम है ।**
प्रा. गिरीसुं मेरु उत्तमो अत्थि ।
सं. गिरीषु मेरुरुत्तमोऽस्ति ।

13. हि. **पण्डित अज्ञानियों का विश्वास नहीं करते हैं ।**
प्रा. अभिण्णओ अन्नाणी न वीससंति ।
सं. अभिज्ञा अज्ञानिनो न विश्वसन्ति ।

14. हि. **मनुष्य तालाब में से जल भरता है ।**
प्रा. जणो तलायम्मि वारिं भरइ ।
सं. जनस्तडागे वारि बिभर्ति ।

15. हि. **हे बालको ! तुम सब कहाँ जाते है ?**
प्रा. हे सिसू ! तुब्भे कहिं गच्छह ?
सं. हे शिशव: ! यूयं कुत्र गच्छथ ?

16. हि. **हम सिद्धाचल जाते हैं ।**
प्रा. अम्हे सिद्धगिरिं गच्छेमो ।
सं. वयं सिद्धगिरिं गच्छाम: ।

17. हि. **सरोवर के पानी में कमल हैं ।**
प्रा. सरस्स वारिम्मि कमलाइँ सन्ति ।
सं. सरसो वारिणि कमलानि सन्ति ।

18. हि. **साधु शत्रुओं से नहीं डरते हैं ।**
प्रा. साहवो सत्तुत्तो न बीहेइरे ।
सं. साधव: शत्रोर्न बिभ्यति ।

19. हि. भिक्षु कंजूस के पास द्रव्य मांगता है ।

प्रा. भिक्खू किवणं दव्वं जाएइ ।

सं. भिक्षुः कृपणं द्रव्यं याचते ।

20. हि. बालक चन्द्र के दर्शन से नेत्रों में आनंद प्राप्त करता है ।

प्रा. सिसू इंदुस्स दंसणेण नेत्तेसुं सुहं लहइ ।

सं. शिशुरिन्दोर्दर्शनेन नेत्रयोः सुखं लभते ।

21. हि. साधुओं को मृत्यु का भय नहीं होता है ।

प्रा. साहूणं मच्चुस्स भयं न होइ ।

सं. साधूनां मृत्योर्भयं न भवति ।

22. हि. मुनियों में गौतम गणधर के प्रति अत्यंत राग है ।

प्रा. मुणीणं गोयमे गणहरे अईव रागो अत्थि ।

सं. मुनीनां गौतमे गणधरेऽतीव रागोऽस्ति ।

पाठ-14

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. गोयमो गणहरो पहुं महावीरं धम्मस्स अधम्मस्स य फलं पुच्छीअ ।**
   सं. गौतमो गणधरः प्रभुं महावीरं धर्मस्याऽधर्मस्य च फलमपृच्छत् ।
   हि. गौतम गणधर ने प्रभु महावीर को धर्म और अधर्म का फल पूछा ।
2. **प्रा. पच्चूसे साहुणो पुरिमं देववंदणं समायरीअ, पच्छा य सत्थाणि पढीअ ।**
   सं. प्रत्यूषे साधवः पूर्वं देववन्दनं समाचरन् पश्चात्त शास्त्राण्यपठन् ।
   हि. प्रभात में साधुओं ने पहले देववंदन किया और बाद में शास्त्र पढ़े ।
3. **प्रा. रायगिहे नयरे सेणिओ नाम नरवई होत्था, तस्स पुत्तो अभयकुमारो नाम आसि, सो य विन्नाणे अईव पंडिओ हुवीअ ।**
   सं. राजगृहे नगरे श्रेणिको नाम नरपतिरभवत्, तस्य पुत्रोऽभयकुमारो नामाऽसीत्, स च विज्ञानेऽतीवपण्डितोऽभवत् ।
   हि. राजगृह नगर में श्रेणिक नामक राजा था, उसके अभयकुमार नामक पुत्र था और वह विज्ञान में अतिपण्डित था ।
4. **प्रा. गिम्हे काले विसमेण आयवेण हालिओ दुक्खिओ होसी ।**
   सं. ग्रीष्मे काले विषमेणाऽऽतपेन हालिको दुःखितोऽभवत् ।
   हि. ग्रीष्मकाल में प्रचंड ताप से किसान दुःखी हुआ ।
5. **प्रा. अज्ज च्च कुंभारो बहू घडे कासी ।**
   सं. अद्यैव कुम्भकारो बहून् घटानकरोत् ।
   हि. आज ही कुंभार ने बहुत घड़े बनाये ।
6. **प्रा. सरए ससंको जणस्स हिए आणंदं काहिअ ।**
   सं. शरदि शशाङ्को जनस्य हृदये आनन्दमकरोत् ।
   हि. शरद ऋतु में चन्द्र ने लोगों के हृदय में आनंद किया ।
7. **प्रा. सीयाले मयंकस्य पयासो सीयलो अहेसि ।**
   सं. शीतकाले मृगाङ्कस्य प्रकाशः शीतल आसीत् ।
   हि. शीतकाल में चन्द्र का प्रकाश शीतल था ।

8. **प्रा. बालो जणयस्स विओएण दुहिओ अभू ।**
सं. बालो जनकस्य वियोगेन दु:खितोऽभवत् ।
हि. बालक पिता के वियोग (विरह) से दु:खी हुआ ।

9. **प्रा. नेहेण सो अच्चंतं दुक्खं पावीअ ।**
सं. स्नेहेन सोऽत्यन्तं दु:खं प्राप्नोत् ।
हि. उसने स्नेह से अत्यंत दु:ख पाया ।

10. **प्रा. तित्थयराणं उसहो पढमो होत्था ।**
सं. तीर्थकराणामृषभ: प्रथमोऽभवत् ।
हि. तीर्थंकरों में ऋषभदेव प्रथम हुए ।

11. **प्रा. नाणेण दंसणेण संजमेण तवेण य साहवो सोहिंसु ।**
सं. ज्ञानेन दर्शनेन संयमेन तपसा च साधवोऽशोभन्त ।
हि. साधु ज्ञान, दर्शन, संयम और तप से शोभते थे ।

12. **प्रा. ते जिणिंद अदक्खु, दंसणमेत्तेण य सम्मत्तं चरित्तं च लहीअ ।**
सं. ते जिनेन्द्रमद्राक्षु:, दर्शनमात्रेण च सम्यक्त्वं चारित्रं चाऽलभन्त।
हि. उन्होंने जिनेश्वर को देखा और देखने (दर्शन) मात्र से सम्यक्त्व और चारित्र प्राप्त किया ।

13. **प्रा. जो जारिसं ववसेज्ज, फलं पि सो तारिसं लहेज्ज ।**
सं. यो यादृग् व्यवस्यति, फलमपि स तादृग् लभते ।
हि. जो जैसा प्रयत्न करता है, वह फल भी वैसा ही पाता है ।

14. **प्रा. निट्ठुरो जणो सुत्तेवि जणे खग्गेण पहरीअ ।**
सं. निष्ठुरो जन: सुप्तेऽपि जने खड्गेन प्राहरत् ।
हि. निर्दय मनुष्य ने सोये हुए भी मनुष्य पर तलवार से प्रहार किया ।

15. **प्रा. धम्मो धम्मिट्ठं पुरिसं सग्गं नेसी ।**
सं. धर्मो धर्मिष्ठं पुरुषं स्वर्गमनयत् ।
हि. धर्म धार्मिक पुरुष को स्वर्ग में ले गया ।

16. **प्रा. नरिंदो देसस्स जएण तूसीअ ।**
सं. नरेन्द्रो देशस्य जयेनाऽतुष्यत् ।
हि. राजा देश की जीत से खुश हुआ ।

17. **प्रा. पक्खी उज्जाणे तरूसुं महुरं सद्दं कुणीअ ।**
सं. पक्षिण उद्याने तरुषु मधुरं शब्दमकुर्वन् ।
हि. पक्षियों ने बगीचे में वृक्षों पर मधुर ध्वनि की ।

18. प्रा. स अवोच तुं अधम्मं काही, तेण दुहं लहीअ ।
सं. सोऽवोचत् त्वमधर्ममकारोः तेन दुःखमलभथाः ।
हि. वह बोला, तूने अधर्म किया, इसलिए तूने दुःख पाया ।

19. प्रा. पुरा अम्हे दुवे बंधुणो आसिमो ।
सं. पुराऽऽवां द्वौ बन्धू आस्वः ।
हि. पहले हम दोनों भाई थे ।

20. प्रा. अम्हो मग्गे साऊणि फलाइं जेमीअ ।
सं. वयं मार्गे स्वादूनि फलान्यभुञ्ज्महि ।
हि. हमने मार्ग में स्वादिष्ट फल खाये ।

21. प्रा. स अपढणेण मुक्खो होत्था ।
सं. सोऽपठनेन मूर्खो अभवत् ।
हि. वह नहीं पढ़ने से मूर्ख बना ।

22. प्रा. स तह नरिंदं सेवित्था, जहा बहुं दव्वं तस्स होही ।
सं. स तथा नरेन्द्रमसेवत, यथा बहु द्रव्यं तस्याऽभवत् ।
हि. उसने राजा की वैसी सेवा की कि जिससे उसको बहुत धन हुआ ।

23. प्रा. पारेवओ सडिअं धन्नं कयावि न खाएज्जा ।
सं. पारापतः शटितं धान्यं कदापि न खादति ।
हि. कबूतर सड़ा हुआ धान्यं कदापि न खादति ।

24. प्रा. केसरी अज्ज उज्जाणे वसीअ, इअ सो अब्बवी ।
सं. केसरी अद्योद्यानेऽवसत्, इति सोऽब्रवीत् ।
हि. 'सिंह आज उद्यान में रहा है', इस प्रकार वह बोला ।

25. प्रा. गणहरा सुत्ताणि रइंसु ।
सं. गणधरा सूत्राण्यरचयन् ।
हि. गणधर भ. ने सूत्रों की रचना की ।

26. प्रा. जिणीसरो अट्ठं वागरित्था ।
सं. जिनेश्वरोऽर्थं व्याकरोत् ।
हि. जिनेश्वर भ. ने अर्थ कहा (बताया) ।

27. प्रा. बंभचेरेण बंभणा जाइंसु ।
सं. ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणा अजायन्त ।
हि. ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण बने ।

28. प्रा. सोत्तं सुएणं न हि कुंडलेण, दाणेण पाणी न य भूसणेण ।
सहेइ देहो करुणाजुआणं, परोवयारेण न चंदणेण ।।1।।

सं. श्रोत्रं श्रुतेन कुण्डलेन न हि, पाणिर्दानेन भूषणेन न च ।
करुणायुतानां देहः परोपकारेण राजते, न चन्दनेन ।।1।।

हि. कान श्रुत के श्रवण से शोभते हैं, कुंडल से नहीं, हाथ दान से शोभते हैं आभूषण से नहीं, दयालु मनुष्यों का देह परोपकार से शोभता है चन्दन से नहीं ।।1।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. अमृत पीया लेकिन अमर नहीं हुआ ।
प्रा. अमियं पासी, किन्तु अमरो न हवीअ ।
सं. अमृतमपिबत्, किन्त्वमरो नाऽभवत् ।

2. हि. पराक्रम से शत्रुओं को जीता ।
प्रा. परक्कमेण सत्तू जिणीअ ।
सं. पराक्रमेण शत्रूनजयत् ।

3. हि. मुसाफिरों ने वृक्ष के नीचे विश्रान्ति ली ।
प्रा. पावासुणो वच्छस्स अहो विस्समीअ ।
सं. प्रवासिनो वृक्षस्याऽधो व्यश्राम्यन् ।

4. हि. राम ने गुरु के आदेश का अनुसरण किया इसलिए सुखी हुआ ।
प्रा. रामो गुरुस्स आएसं अणुसरीअ तत्तो सुही अभू ।
सं. रामो गुरोरादेशमन्वसरत्, ततः सुखभवत् ।

5. हि. मुसाफिर ने किसान को रास्ता पूछा ।
प्रा. पवासी हालिअं मग्गं पुच्छीअ ।
सं. प्रवासी हालिकं मार्गमपृच्छत् ।

6. हि. दक्षिण दिशा का पवन बारिस लाया ।
प्रा. दाहिणिल्लो वाऊ विरसं आणेसी ।
सं. दाक्षिणात्यो वायुर्वर्षामानयत् ।

7. हि. सज्जन दुर्जन के जाल में फँसा ।
प्रा. सज्जणो दुज्जणस्स जालंमि पडीअ ।
सं. सज्जनो दुर्जनस्य जालेऽपतत् ।

8. हि. **उसने प्राणों के नष्ट होने पर भी अदत्त का ग्रहण नहीं किया।**
प्रा. सो जीवियंते वि अदत्तं न गिण्हीअ।
सं. स जीवितान्तेऽप्यदत्तं नाऽगृह्णात्।

9. हि. **जैन धर्म में जैसा तत्त्वों का ज्ञान देखा, वैसा अन्य में नहीं देखा।**
प्रा. जइणधम्मे जारिसं तत्ताणं नाणं देक्खीअ, तारिसं अन्नंमि न पेक्खीअ।
सं. जैनधर्म यादृशं तत्त्वानां ज्ञानमपश्याम, तादृशमन्यस्मिन्ना- ऽपश्याम।

10. हि. **सुख और दुःख इस संसारचक्र में अनंतबार जीव ने भुगता है, उसमें आश्चर्य क्या ?**
प्रा. सुहं दुहं च एयम्मि संसारचक्कंमि अणंतखुत्तो जीवो अणुहवीअ, तम्मि किं अच्छेरं ?
सं. सुखं दुःखं चैतस्मिन् संसारचक्रेऽनन्तकृत्वो जीवोऽन्वभवत्, तस्मिन् किमाश्चर्यम् ?

11. हि. **तुमने पाप से बचाया, अतः तुम्हारे जैसा दूसरा उत्तम कौन हो ?**
प्रा. तुं पावत्तो रक्खीअ, तत्तो तुम्हारिसो अन्नो को उत्तमो होइ ?
सं. त्वं पापादरक्षः, ततस्त्वादृशोऽन्यः क उत्तमो भवति ?

12. हि. **रावण ने नीति का उल्लंघन किया, इस कारण वह मृत्यु पाया।**
प्रा. रावणो नयं अइक्कमीअ, तत्तो सो मच्चुं पावीअ।
सं. रावणो नयमत्यक्राम्यत्, ततः स मृत्युं प्राप्नोत्।

13. हि. **पण्डित मृत्यु से नहीं डरे।**
प्रा. पंडिआ मच्चुत्तो न बीहीअ।
सं. पण्डिताः मृत्योर्नाऽबिभयुः।

14. हि. **शिष्यों ने गुरु के पास ज्ञान ग्रहण किया।**
प्रा. सीसा गुरुत्तो नाणं गिण्हीअ।
सं. शिष्याः गुरोर्ज्ञानमगृह्णन्।

15. हि. बहुत से भव्य जीवों ने तीर्थंकर की पूजा से नित्य सुख प्राप्त किया ।

प्रा. बहवो भव्वा जीवा तित्थयरस्स अच्चणेण सासयं सुहं लहीअ ।

सं. बहवो भव्या जीवास्तीर्थकरस्याऽर्चनेन शाश्वतं सुखमलभत ।

16. हि. तुम दोनों प्रभात में कहाँ रहे ?

प्रा. तुम्हे वे पच्चूसे कहिं वसीअ ?

सं. युवां द्वौ प्रत्यूषे कुत्राऽवसतम् ?

17. हि. हम इस नगर में रहेत है ।

प्रा. अम्हे एईए नयरे वसामो ।

सं. वयं एते नगरे वसामः ।

18. हि. हमने प्रभु महावीर के पास धर्म प्राप्त किया ।

प्रा. अम्हे पहुत्तो महावीरत्तो धम्मं पावीअ ।

सं. वयं प्रभोर्महावीराद् धर्मं प्राप्नुम ।

19. हि. यहाँ धर्म ही धन और सुख का कारण है ।

प्रा. एत्थ धम्मोच्चिअ धणस्स सुहस्स य कारणं अत्थि ।

सं. अत्र धर्म एव धनस्य सुखस्य च कारणमस्ति ।

20. हि. उनमें ज्ञान था इसलिए उनकी पूजा की ।

प्रा. तेसुं नाणं हवीअ, तत्तो ते अच्चीअ ।

सं. तेषु ज्ञानमासीत्, ततस्तानार्चयन् ।

21. हि. तुम गुरु की वैयावच्च से एकदम होशियार बने ।

प्रा. तुं गुरुणो वेयावच्चेण सहसा निउणो हवीअ ।

सं. त्वं गुरोर्वैयावृत्येन सहसा निपुणोऽभवः ।

22. हि. वह नगर के बाहर गया और उसने रीछों का युद्ध देखा ।

प्रा. सो नयरत्तो बहिं गच्छीअ, रिक्खाणं च जुद्धं पासीअ ।

सं. स नगराद् बहिरगच्छत्, ऋक्षाणां च युद्धमपश्यत् ।

23. हि. मैंने मंदिर के ध्वज पर मयूर देखा ।

प्रा. मंदिरस्स धयम्मि हं मोरं देक्खीअ ।

सं. मंदिरस्स ध्वजेऽहं मयूरमपश्यम् ।

पाठ-15

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. तुम्हे एत्थ चिट्ठेह, वीरं जिणं अम्हे अच्चेमो ।**
   सं. यूयमत्र तिष्ठत, वीरं जिनं वयमर्चामः ।
   हि. तुम यहाँ खड़े रहो, हम वीर जिनेश्वर की पूजा करते हैं ।
2. **प्रा. सच्चं बोल्लिज्जा ।**
   सं. सत्यं वदेत् ।
   हि. सत्य बोलना चाहिए ।
3. **प्रा. धम्मं समायरे ।**
   सं. धर्मं समाचरेत् ।
   हि. धर्म करना चाहिए ।
4. **प्रा. उज्जमेण विणा धणं न लहेमु ।**
   सं. उद्यमेन विना धनं न लभेय ।
   हि. मैं प्रयत्न किये बिना धन प्राप्त नहीं करूँ ।
5. **प्रा. सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू ।**
   सं. सूत्रस्य मार्गेण चरेद् भिक्षुः ।
   हि. साधु को सूत्र (शास्त्र) के अनुसार आचरण करना चाहिए ।
6. **प्रा. जो गुरुकुले निच्चं वसेज्ज, सो सिक्खणं अरिहेइ ।**
   सं. यो गुरुकुले नित्यं वसेत्, स शिक्षणमर्हति ।
   हि. जो हमेशा गुरुकुल में रहता है, वह शिक्षण (ज्ञान) के योग्य बनता है ।
7. **प्रा. मुसावायं न वएज्जसि ।**
   सं. मृषावादं न वदेः ।
   हि. तुम्हे झूठ नहीं बोलना चाहिए ।
8. **प्रा. तुं नयं न चयिज्जे ।**
   सं. त्वं नयं न त्यजेः ।
   हि. तुम्हे नीति का त्याग नहीं करना चाहिए ।

9. प्रा. **जइ तुम्हे विज्जत्थिणो अत्थि, तया सुहं चएह, पढणे य उज्जमह ।**

सं. यदि यूयं विद्यार्थिनः स्थ, तदा सुखं त्यजत, पठने चोद्यच्छत ।

हि. जो तुम विद्या के अर्थी हो, तो सुख का त्याग करो और पढ़ने में उद्यम करो ।

10. प्रा. **अहं दुद्धं पासी, तुम्हे वि पिवेह ।**

सं. अहं दुग्धमपिव्वम्, यूयमपि पिबत ।

हि. मैंने दूध पीया, तुम भी पीओ ।

11. प्रा. **तुब्भे साहूणं समीवं हियाइं वयणाइं सुणिज्जाह, अहंपि सुणामु ।**

सं. यूयं साधूनां समीपं हितानि वचनानि शृणुत, अहमपि शृणवानि ।

हि. तुम साधुओं के पास हितकारी वचन सुनो, मैं भी सुनूँ ।

12. प्रा. **भवाओ विरत्ताणं पुरिसाणं गिहे वासो किं रोएज्ज ?**

सं. भवाद् विरक्तेभ्यः पुरुषेभ्यो गृहे वासः किं रोचेत ?

हि. संसार से विरक्त पुरुषों को क्या घर में रहना पसंद आता है ?

13. प्रा. **जइणं सासणं चिरं जयउ ।**

सं. जैनं शासनं चिरं जयतु ।

हि. जैन शासन चिरकाल तक जय पाये ।

14. प्रा. **आइरिया दीहं कालं जिणिंतु ।**

सं. आचार्या दीर्घं कालं जयन्तु ।

हि. आचार्य दीर्घकाल तक जाय पायें ।

15. प्रा. **नायपुत्तो तित्थं पवट्टेउ ।**

सं. ज्ञातपुत्रस्तीर्थं प्रवर्तताम् ।

हि. ज्ञातपुत्र = महावीर भ. तीर्थ प्रवर्तायें ।

16. प्रा. **तुं अकज्जं न कुणेज्जसु, सच्चं च वइज्जहि ।**

सं. त्वमकार्यं न कुर्याः, सत्यं च वदेः ।

हि. तुम अकार्य मत करो और सत्य बोलो ।

17. प्रा. **गुरूणं विणएण वेयावडिएण य नाणं पढे ।**

सं. गुरूणां विनयेन, वैयावृत्येन च ज्ञानं पठेत् ।

हि. गुरु भगवंतों की विनय और सेवापूर्वक ज्ञान पढ़ना चाहिए ।

18. प्रा. **अत्थो च्चिअ परिवड्ढउ, जेण गुणा पायडा हुंति ।**
सं. अर्थ एवं परिवर्द्धताम्, येन गुणाः प्रकटा भवन्ति ।
हि. धन निश्चय बढ़े, जिससे गुण प्रकट होते हैं ।

19. प्रा. **जइ सिवं इच्छेह, तया कामेहिंतो विरमेज्ज ।**
सं. यदि शिवमिच्छेत, तदा कामेभ्यो विरमेत ।
हि. जो तुम मोक्ष की इच्छा रखते हो तो काम (=इच्छाओं) से विराम पाओ ।

20. प्रा. **सज्जणे तुम्हे मा निन्देह ।**
सं. सज्जनान् यूयं मा निन्दत ।
हि. तुम सभी सज्जनों की निन्दा मत करो ।

21. प्रा. **पाणीणं अप्पकेरं नाणं दंसणं चरितं च अत्थि, न अन्नं किं पि, तओ तेहिं चिय संसारा पारं वच्चेह ।**
सं. प्राणीनामात्मीयं ज्ञानं दर्शनं चारित्रं च सन्ति, नाऽन्यत् किमपि, ततस्तैरेव संसारात् पारं व्रजत ।
हि. प्राणियों का ज्ञान, दर्शन और चारित्र ही उनका अपना है, अन्य कुछ नहीं, इसलिए उसके द्वारा ही संसार से पार उतरो ।

22. प्रा. **सढेसु माइं वीससेज्जइ ।**
सं. शठेषु मा विश्वस्यात् ।
हि. दुर्जनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

23. प्रा. **सज्जणेहिं सद्धिं वरोहं कया वि न कुज्जा ।**
सं. सज्जनैः सार्धं विरोधं कदापि न कुर्यात् ।
हि. सज्जनों के साथ कभी भी विरोध नहीं करना चाहिए ।

24. प्रा. **हे ईसर ! अम्हारिसे पावे जणे रक्ख रक्खेहि ।**
सं. हे ईश्वर ! अस्मादृशान् पापाञ् जनान् रक्ष रक्ष ।
हि. हे ईश्वर ! हमारे जैसे पापी मनुष्यों का रक्षण करो, रक्षण करो ।

25. प्रा. **पाणिवहो धम्माय न सिया ।**
सं. प्राणिवधो धर्माय न स्यात् ।
हि. जीवहिंसा धर्म के लिए न हो ।

26. प्रा. **कासइ न वीससे ।**
सं. कस्यचित् न विश्वसेत् ।
हि. किसी का विश्वास नहीं करना चाहिए ।

27. प्रा. सच्चं, पियं च परलोयहियं च वएज्जा नरा ।

सं. सत्यं, प्रियं च परलोकहितं च वदेयुर्नराः ।

हि. मनुष्य सत्य, प्रिय और परलोक में हितकारी वचन बोले ।

28. प्रा. जइ न हुज्जइ आयरिया, को तया जाणिज्ज सत्थस्स सारं ?

सं. यदि न भवेयुराचार्याः कस्तदा जानीयाच्छास्त्रस्य सारम् ?

हि. जो आचार्य भ. न हों तो शास्त्र के सार को कौन जाने ?

29. प्रा. [1]होज्जा [1]जले वि [2]जलणो, होज्जा [5]खीरं पि [4]गोविसाणाओ ।
[7]अमयरसो वि [6]विसाओ, [10]न य [8]पाणिवहा [11]हवइ [9]धम्मो ॥1॥

सं. जलेऽपि ज्वलनो भवेत्, गोविषाणात् क्षीरमपि भवेत्
विषादप्यमृतरसः, प्राणिवधाद् धर्मो न च भवति ॥1॥

हि. कदाचित् पानी में से भी अग्नि हो, कदाचित् गाय के सींग में से दूध हो, कदाचित् विष में से भी अमृत हो किन्तु जीवहिंसा से धर्म नहीं होता है ॥1॥

30. प्रा. [2]वरिसंतु [1]घणा [3]मा वा, [5]मरंतु [4]रिऊणो [6]अहं [7]निवो [8]होज्जा ।
[9]सो [10]जिणउ [11]परो [12]भज्जउ, [13]एवं [14]चिंतणमव [15]ज्झाणं ॥2॥

सं. घना वर्षन्तु मा वा, रिपवो म्रियन्तां, अहं नृपो भवेयम् ।
स जयतु, परो भनक्तु, एवं चिंतनमपध्यानम् ॥2॥

हि. बरसात (पानी की वृष्टि) हो अथवा न हो, शत्रु मरें, मैं राजा बनूँ, उसकी जीत हो, दूसरे हार जाये, इस प्रकार का चिंतन करना वह दुर्ध्यान है ॥2॥

31. प्रा. [1]गुणिणो [2]गुणेहिं [4]विहवेहि, [3]विहविणो [7]होंतु [5]गव्विआ [6]नाम ।
[9]दोसेहि [8]नवरि [10]गव्वो, [11]खलाण [12]मग्गो च्चि अ [13]अउव्वो ॥3॥

सं. गुणिनो गुणैः, विभवैर्विभविनो गर्विता नाम भवन्तु ।
नवरं दोषैर्गर्वः, खलानां मार्गो अपूर्व एव ॥3॥

हि. गुणवान पुरुष गुणों से, धनवान पुरुष धन से (कदाचित्) गर्वित बने, किन्तु दोषों से गर्व करना यह दुर्जनों का मार्ग अपूर्व ही है ॥3॥

32. प्रा. [5]जइ वि [6]दिवसेण [7]पयं, [11]धरेह [8]पक्खेण [9]वा [10]सिलोगद्धं ।
[12]उज्जोगं [13]मा [14]मुंचह, [1]जइ [4]इच्छह [3]सिक्खिउं [2]नाणं ।।4।।

सं. यदि ज्ञानं शिक्षितुमिच्छत, यद्यपि दिवसेन पदं धारयत ।
पक्षेण वा श्लोकार्द्धम्, उद्योगं मा मुञ्चत ।।4।।

हि. जो तुम ज्ञान पढ़ने = प्राप्त करने की इच्छा रखते हो तो एक दिन में एक पद अथवा पक्ष = पन्द्रह दिन में आधा श्लोक याद करो, किन्तु प्रयत्न नहीं छोड़ो ।।4।।

33. प्रा. [2]कुणउ [1]तवं [4]पालउ, [3]संजमं [6]पढउ [5]सयलसत्थाइं ।
[7]जाव [9]न [10]झायइ [8]जीवो, [11]ताव [13]न [12]मुक्खो [14]जिणो [15]भणइ ।।5।।

सं. तपः करोतु, संयमं पालयतु, सकलशास्त्राणि पठतु ।
यावज्जीवो न ध्यायति, तावन् मोक्षो न, जिनो भणति ।।5।।

हि. तप करे, संयम का पालन करे, सर्वशास्त्र पढ़े, लेकिन जब तक जीव शुभ ध्यान नहीं करता है तब तक मोक्षप्राप्ति नहीं है, इस प्रकार श्रीजिनेश्वर परमात्मा कहते हैं ।।5।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. प्रभात में स्तोत्रों द्वारा प्रभु की स्तुति करनी चाहिए और बाद में अध्ययन करना चाहिए ।

प्रा. पच्चूसे थोत्तेहिं पहुं स्तुयात्, पश्चाच्चाऽध्ययनं भणेत् ।

सं. प्रत्यूषे स्तोत्रैः प्रभुं स्तुयात्, पश्चाच्चाऽध्ययनं भणेत् ।

2. हि. व्यापार की तरह मनुष्य को हमेशा धर्म में भी उद्यम करना चाहिए ।

प्रा. वावारंमि इव जणो सया धम्मंमि वि उज्जमेउ ।

सं. व्यापार इव जनः सदा धर्मेऽप्युद्यच्छतु ।

3. हि. विद्याधर विमानों द्वारा गमन करें ।

प्रा. विज्जाहरा विमाणेहिं गच्छन्तु ।

सं. विद्याधराः विमानैर्गच्छन्तु ।

4. हि. इन्द्र ने कुबेर को हुकम किया कि ज्ञातपुत्र के घर द्रव्य की वृष्टि करो ।

प्रा. हरी वेसमणं आदिसीअ, णायपुत्तस्स गेहम्मि दव्वं वरिसेज्जहि ।

सं. हरिर्वैश्रमणमादिशत्, ज्ञातपुत्रस्य गृहे द्रव्यं वर्ष ।

5. हि. **तुम सब धर्म से जीओ और सत्य से सुखी बनो ।**
प्रा. तुब्भे धम्मेण जीवेह, सच्चेण य सुहिणो होएज्जाह ।
सं. यूयं धर्मेण जीवत, सत्येन व सुखिनो भवत ।

6. हि. **गुरु का आदेश उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।**
प्रा. गुरुणो आएसं माइ अइक्कमेज्ज ।
सं. गुरोरादेशं माऽतिक्रमेत ।

7. हि. **हे बालक ! तुम व्यर्थ ही राख (भस्म) में घी मत डालो ।**
प्रा. हे बाल ! तुं मुहा भस्सम्मि घयं मा पक्खिवसु ।
सं. हे बाल ! त्वं मुधा भस्मनि घृतं मा मुञ्चेः ।

8. हि. **तुम सभी को उपाध्याय के पास व्याकरण सीखना चाहिए ।**
प्रा. तुम्हे उवज्झायस्स समीवे वागरणं पढेह ।
सं. यूयमुपाध्यायस्य समीपे व्याकरणं पठेत ।

9. हि. **जवानी में धर्म करना चाहिए ।**
प्रा. जोव्वणंमि धम्मं करेज्जा ।
सं. यौवने धर्मं कुर्यात् ।

10. हि. **करणीय कार्य में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।**
प्रा. कायव्वे कज्जे न पमज्जेज्ज ।
सं. कर्तव्ये कार्ये न प्रमाद्येत ।

11. हि. **साधुओं को दिन में ही विहार करना चाहिए ।**
प्रा. साहवो दिणम्मि चेव विहरेन्तु ।
सं. साधवो दिने चैव विहरेयुः ।

12. हि. **तुम मिथ्या (झूठा) कोप मत करो, हित को सुनो ।**
प्रा. तुं मिच्छा कोवं मा करसु, हियं च सुणसु ।
सं. त्वं मिथ्या कोपं मा कुरु, हितं च श्रृणु ।

13. हि. **तुम सब पंडित हो इसलिए तत्त्व का विचार करो ।**
प्रा. तुब्भे पंडिआ अत्थि, तत्तो तत्ताइं चिन्तेह ।
सं. यूयं पण्डिताः स्थ, ततस्तत्त्वानि चिन्तयत ।

14. हि. **तुम लोभ को संतोष द्वारा छोड़ो ।**
प्रा. लोहं संतोसेण मुंचहि ।
सं. लोभं संतोषेण मुञ्च ।

15. हि. सभी तीर्थों में शत्रुंजय तीर्थ उत्तम है इसलिए तुम वहाँ जाओ, कल्याण करो और पापों का क्षय करो ।

प्रा. सव्वेसुं तित्थेसुं सत्तुंजयं तित्थं उत्तिमं अत्थि, तत्तो तुं तहिं गच्छसु, कल्लाणं कुणसु, पावाइं च निज्जरसु ।

सं. सर्वेषु तीर्थेषु शत्रुञ्जयं तीर्थमुत्तममस्ति, ततस्त्वं तत्र गच्छ, कल्याणं कुरु, पापानि च निर्जृणीहि ।

16. हि. संतोष में जैसा सुख है, वैसा सुख अन्य में नहीं है अतः संतोष धारण करना चाहिए ।

प्रा. संतोसंमि जारिसं सुहं अत्थि, तारिसं सुहं अन्नंमि नत्थि, तत्तो संतोसं धरेज्ज ।

सं. सन्तोषे यादृशं सुखमस्ति, तादृशं सुखमन्यस्मिन् नाऽस्ति, ततः सन्तोषं धारयेत ।

17. हि. जीव वृद्धावस्था में धर्म करने के लिए समर्थ नहीं होता है ।

प्रा. जीवो वुड्ढत्तणंमि धम्मस्स करणाय समत्थो न होइ ।

सं. जीवो वृद्धत्वे धर्मस्य करणाय समर्थो न भवति ।

18. हि. अच्छी तरह पका हुआ धान्य खाना चाहिए ।

प्रा. सुपक्कं धन्नं खाएज्ज ।

सं. सुपक्वं धान्यं खादेत् ।

19. हि. प्रतिदिन जिनेश्वर का दर्शन करना और गुरु का उपदेश सुनना चाहिए ।

प्रा. सया जिणस्स दंसणं (करेज्ज), गुरुणो य उवएसं सुणेज्ज ।

सं. सदा जिनस्य दर्शनं (कुर्यात्), गुरोरुपदेशं च श्रृणुयात् ।

20. हि. जो संसार से तारनेवाला है उस ईश्वर की निन्दा मत करो ।

प्रा. जो संसारत्तो तारगो अत्थि, तं ईसरं मा निंदहि ।

सं. यः संसारात्तारकोऽस्ति तमीश्वरं मा निन्द ।

पाठ-16

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **जस्स जओ आइच्चो उदेइ, सा तस्स होइ पुव्वा दिसा, जत्तो अ अत्थमेइ सा उ अवरादिसा नायव्वा, दाहिणपासम्मि य दाहिणा दिसा, उत्तरा उ वामेण ।**

   सं. यस्य यत आदित्य उदेति, सा तस्य भवति पूर्वा दिग्, यतश्चाऽस्तेमेति, सा त्वपरा दिग् ज्ञातव्या, दक्षिणपार्श्वे च दक्षिणा दिग्, उत्तरा तु वामेन ।

   हि. जिसके जिस ओर से सूर्य उगता है, वह उसकी पूर्व दिशा जाननी, जिस तरफ अस्त होता है, वह पश्चिम दिशा जाननी, दायीं तरफ दक्षिण दिशा और बायीं तरफ उत्तर दिशा जाननी चाहिए ।

2. प्रा. **किवाए विणा को धम्मो ? ।**

   सं. कृपया विना को धर्मः ? ।

   हि. दया बिना कौनसा धर्म है ? ।

3. प्रा. **पंडवाणं सेणाइ दुज्जोहणस्स सेणाए सह जुज्झं होत्था, तम्मि जुद्धे पंडवाणं जयो आसि ।**

   सं. पाण्डवानां सेनायाः दुर्योधनस्य सेनया सह युद्धमभवत्, तस्मिन् युद्धे पाण्डवानां जय आसीत् ।

   हि. पाण्डवों की सेना का दुर्योधन की सेना के साथ युद्ध हुआ, उस युद्ध में पाण्डवों की जय (जीत) हुई ।

4. प्रा. **कोसा वेसा सव्वासु कलासु निउणा, नच्चम्मि उ विसेसेण कुसला ।**

   सं. कोशा वेश्या सर्वासु कलासु निपुणा, नृत्ये तु विशेषेण कुशला ।

   हि. कोशा वेश्या सभी कलाओं में कुशल (थी), परन्तु नृत्य कला में विशेष कुशल (थी) ।

5. प्रा. **सव्वा कला धम्मकला जएइ ।**

   सं. सर्वाः कलाः धर्मकला जयति ।

   हि. धर्मकला सभी कलाओं को जीतती है ।

6. प्रा. **सव्वा कहा धम्मकहा जिणेइ ।**
   सं. सर्वाः कथाः धर्मकथा जयति ।
   हि. धर्मकथा सभी कथाओं को जीतती है ।

7. प्रा. **जस्स जीहा वसीहूआ, सो परमो पुरिसो ।**
   सं. यस्य जिह्वा वशीभूता स परमः पुरुषः ।
   हि. जिसकी जीभ वश में है, वह उत्तम पुरुष है ।

8. प्रा. **नारीओ जोण्हाए रमेन्ति ।**
   सं. नार्यो ज्योत्स्नायां रमन्ते ।
   हि. नारियाँ चाँदनी में खेलती हैं ।

9. प्रा. **छुहाए समाणा वेयणा नत्थि ।**
   सं. क्षुधया समाना वेदना नास्ति ।
   हि. भूख समान कोई वेदना नहीं है ।

10. प्रा. **पंडवाणं भज्जा दोवई सव्वासु इत्थीसुं उत्तमा महासई अहेसि ।**
    सं. पाण्डवानां भार्या द्रौपदी सर्वासु स्त्रीषूत्तमा महासत्यासीत् ।
    हि. पांडवों की पत्नी द्रौपदी सभी स्त्रियों में उत्तम महासती थी ।

11. प्रा. **वाणस्सईणं पि सन्ना अत्थि तओ दगं मट्टिआणं रसं च आहरेज्जा ।**
    सं. वनस्पतीनामपि संज्ञाः सन्ति, तत उदकं मृत्तिकायाः रसं चाऽऽहरेयुः ।
    हि. वनस्पतियों में भी संज्ञाएँ होती हैं, अतः पानी और मिट्टी के रस का आहार करती हैं ।

12. प्रा. **सज्जणा पइण्णाहिंतो कहंपि न चलन्ति ।**
    सं. सज्जनाः प्रतिज्ञाभ्यः कथमपि न चलन्ति ।
    हि. उत्तम पुरुष प्रतिज्ञा से किसी भी प्रकार से विचलित नहीं होते हैं ।

13. प्रा. **इत्थीओ सज्जाहिन्तो उट्ठंति, आवासयाइं च किच्चाइं कुणंति ।**
    सं. स्त्रियः शय्याभ्यः उत्तिष्ठन्ति, आवश्यकानि च कृत्यानि कुर्वन्ति ।
    हि. स्त्रियाँ शय्या में से उठती हैं और आवश्यक कार्य करती हैं ।

14. प्रा. **सासूए ण्हूसाए उवरि, वहूइ य सासूअ अवरिं अईव पीई अत्थि ।**
    सं. श्वश्र्वाः स्नूषायाः उपरि, वध्वाश्च श्वश्र्वा उपर्यतीव प्रीतिरस्ति ।
    हि. सासू का पुत्रवधू (बहू) पर और बहू का सासू पर अतीव स्नेह है ।

15. प्रा. दिवहो निसं, निसा य दिणं अणुसरेह ।

सं. दिवसो निशां, निशा च दिनमनुसरति ।

हि. दिन रात्रि का, रात्रि दिन का अनुसरण करती है ।

16. प्रा. जणा रिद्धीए गव्विट्ठा पाएण हवंति ।

सं. जना ऋद्ध्या गर्विष्ठाः प्रायो भवन्ति ।

हि. मनुष्य प्रायः ऋद्धि से अभिमानी बनते हैं ।

17. प्रा. जोव्वणं असारं, लच्छी वि असारा, संसारो असारो, तओ धम्मम्मि मइं दढं कुज्जा ।

सं. यौवनमसारं, लक्ष्मीरप्यसारा, संसारोऽसारस्ततो धर्मे मतिं दृढां कुर्यात् ।

हि. यौवन असार है, लक्ष्मी भी असार है, संसार असार है इसलिए धर्म में दृढ़बुद्धि करनी चाहिए ।

18. प्रा. थी एगाए बाहाए भारं नेहीअ ।

सं. स्त्र्येकेन बाहुना भारमनयत् ।

हि. स्त्री एक हाथ से भार को ले गयी ।

19. प्रा. कामे सत्ताओ इत्थीओ कुलं सीलं च न रक्खंति ।

सं. कामे सक्ताः स्त्रियः कुलं शीलं च न रक्षन्ति ।

हि. काम (भोग) में आसक्त स्त्रियाँ कुल और शील का रक्षण नहीं करती हैं ।

20. प्रा. उअ थीणं सरूवं संसारा य उव्विवेसु ।

सं. पश्य स्त्रीणां स्वरूपं, संसाराच्चोद्विङ्धि ।

हि. स्त्रियों के स्वरूप (चरित्र) को देख और संसार से वैराग्य पा ।

21. प्रा. जो संघस्स आणं अइक्कमेइ, सो सिक्खं अरिहेइ ।

सं. यः संघस्याऽऽज्ञामतिक्राम्यति, स शिक्षामर्हति ।

हि. जो संघ की आज्ञा का उल्लंघन करता है, वह दंड का पात्र है ।

22. प्रा. जउंणाए उदगं किण्हं, गंगाअ य दगं सुक्कमत्थि ।

सं. यमुनाया उदकं कृष्णं, गंगायाश्चोदकं शुक्लमस्ति ।

हि. यमुना का पानी काला और गंगा का पानी सफेद है ।

23. प्रा. सिरिहेमचंदो सरस्सइं देविं आराहीअ ।

सं. श्रीहेमचन्द्रः सरस्वतीं देवीमाराधयत् ।

हि. श्री हेमचन्द्रसूरि ने सरस्वती देवी की आराधना की ।

24. प्रा. **सासू वहूणं देवालए गमणाय कहेइ ।**
सं. श्वश्रूर्वधूभ्यो देवालये गमनाय कथयति ।
हि. सास बहुओं को मन्दिर जाने के लिए कहती है ।

25. प्रा. **जो हिरिं नीइं धिइं च धरेइ, सो सिरिं लहेइ ।**
सं. यो ह्रियं नीतिं धृतिं च धारयति, सः श्रियं लभते ।
हि. जो लज्जा, नीति और धीरता को धारण करता है, वह लक्ष्मी को प्राप्त करता है ।

26. प्रा. **अहिणो दाढाए विसं झरेइ ।**
सं. अहेर्दंष्ट्राया विषं क्षरति ।
हि. सर्प की दाढ़ा में से जहर टपकता है ।

27. प्रा. **तिण्हा आगासेण समा विसाला ।**
सं. तृष्णाऽऽकाशेन समा विशाला ।
हि. तृष्णा आकाश के समान विशाल है ।

28. प्रा. **तरुस्स छाहीए थीओ गाणं कुणंति ।**
सं. तरोश्छायायां स्त्रियो गानं कुर्वन्ति ।
हि. वृक्ष की छाया में स्त्रियाँ गायन करती हैं ।

29. प्रा. **विक्कमो निवो पिच्छीए सुठ्ठु पालगो आसि** ।
सं. विक्रमो नृपः पृथ्व्याः सुष्ठु पालक आसीत् ।
हि. विक्रमराजा पृथ्वी का अच्छा पालक था ।

30. प्रा. **कुमारो सव्वासु कलासु पहुप्पइ ।**
सं. कुमारः सर्वासु कलासु प्रभवति ।
हि. कुमार सभी कलाओं में समर्थ है ।

31. प्रा. **पहुणो महावीरस्स अतुल्लाए सेवाए गोयमो गणहरो संसारं तरीअ ।**
सं. प्रभोर्महावीरऽस्याऽतुल्यया सेवया गौतमो गणधरः संसारमतरत् ।
हि. प्रभु महावीर की असाधारण सेवा द्वारा गौतम गणधर संसार को तिर गये ।

32. प्रा. **धन्नाओ ताओ बालियाउ जाहिं सुमिणे वि न पत्थिओ अन्नो पुरिसो ।**
सं. धन्यास्ताः बालिकाः, याभिः स्वप्नेऽपि न प्रार्थितोऽन्यः पुरुषः ।

हि. वे बालिकाएँ धन्य हैं कि जिनके द्वारा स्वप्न में भी अन्य पुरुष प्रार्थित नहीं किया गया ।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. **बड़ों की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।**
प्रा. गुरूणं मज्जायं न लंघेज्ज ।
सं. गुरूणां मर्यादां न लङ्घेत ।

2. हि. **चोर ने ब्राह्मण की लक्ष्मी छीन ली ।**
प्रा. चोरो बंभणस्स लच्छिं उद्दालीअ ।
सं. चौरो ब्राह्मणस्य लक्ष्मीमाच्छिनत् ।

3. हि. **बहू सास के सभी कार्य विनयपूर्वक करती है ।**
प्रा. ण्हूसा सासूअ सव्वाइं कज्जाइं विणएण करेइ ।
सं. स्नुषा श्वश्र्वाः सर्वाणि कार्याणि विनयेन करोति ।

4. हि. **जब व्यक्ति की ऋद्धि नष्ट होती है, तब उसके साथ बुद्धि और धीरता भी नष्ट होती है ।**
प्रा. जया जणस्स इड्ढी नस्सइ, तया ताए सह बुद्धी धिई य नस्सइ ।
सं. यदा जनस्यर्द्धिर्नश्यति, तदा तया सह बुद्धिर्धृतिश्च नश्यति ।

5. हि. **धर्मीजन धन की वृद्धि में धर्म का त्याग नहीं करता है ।**
प्रा. धम्मिओ जणो धणस्स वुड्ढिए धम्मं न चयइ ।
सं. धार्मिको जनो धनस्य वृद्ध्यां धर्मं न त्यजति ।

6. हि. **सरस्वती और लक्ष्मी के विवाद में कौन जीते ?**
प्रा. सरस्सईए सिरीए य विवाए का जिणइ ?
सं. सरस्वत्याः लक्ष्म्याश्च विवादे का जयति ?

7. हि. **मनुष्य पीड़ा में बहुत मोहित होता है ।**
प्रा. लोगो वेयणाए अईव मुज्झइ ।
सं. लोको वेदनायामतीव मुह्यति ।

8. हि. **सभी जीव सुख की इच्छा करते हैं और दुःख की इच्छा नहीं करते हैं ।**
प्रा. सव्वे जीवा सायं इच्छंति, असायं य न इच्छंति ।
सं. सर्वे जीवाः सातमिच्छन्ति, असातं च नेच्छन्ति ।

9. हि. **उत्तम पुरुष जिस कार्य का प्रारम्भ करते हैं, उसको अवश्य पूरा करते हैं।**
   प्रा. उत्तमो पुरिसो जं कज्जं आढवेइ, तं अवस्सं पारं गच्छइ।
   सं. उत्तम पुरुषो यत्कार्यमारभते, तदवश्यं पारं गच्छति।

10. हि. **ग्रीष्म काल में सभी पशु वृक्षों की छाया में विश्रान्ति लेते हैं।**
   प्रा. गिम्हे सव्वे पसवो रुक्खाणं छाहीए विस्समंति।
   सं. ग्रीष्मे सर्वे पशवो वृक्षाणां छायायां विश्राम्यन्ति।

11. हि. **दक्षिण दिशा में चोर गये।**
   प्रा. दाहिणाए दिशाए चोरा गच्छीअ।
   सं. दक्षिणस्यां दिशि चौरा अगच्छन्।

12. हि. **सभी जगह सुखियों को सुख और दुःखियों को दुःख होता है।**
   प्रा. सव्वत्थ सुहीणं सुहं, दुहीणं च दुहं होइ।
   सं. सर्वत्र सुखिनां सुखं, दुःखिनां च दुःखं भवति।

13. हि. **मैं जिनेश्वर की प्रतिमाओं की स्तुतियों द्वारा स्तुति करता हूँ।**
   प्रा. हं जिणाणं पडिमाओ थुईहिं थुणामि।
   सं. अहं जिनानां प्रतिमाः स्तुतिभिः स्तवीमि।

14. हि. **साँप जीभ से दूध पीते हैं।**
   प्रा. सप्पा जिब्भाहिं दुद्धं पाएंति।
   सं. सर्पाः जिह्वाभिर्दुग्धं पिबन्ति।

15. हि. **स्त्रियाँ बाग में घूमती हैं और पुष्पों को सूंघती हैं।**
   प्रा. इत्थीओ उज्जाणंसि विहरेंति, पुप्फाइं च आइग्घंति।
   सं. स्त्रिय उद्याने विहरन्ति, पुष्पाणि चाऽऽजिघ्रन्ति।

16. हि. **वह तीर्थंकरों की कहानियों से बोध पाया।**
   प्रा. सो तित्थयराणं कहाहिं बोहीअ।
   सं. सः तीर्थकराणां कथाभिरबोधत्।

17. हि. **पहले पृथ्वी पर बहुत राक्षस थे।**
   प्रा. पुरी पिच्छीए बहवो रक्खसा अहेसि।
   सं. पुरा पृथिव्यां बहवो राक्षसा अभवन्।

18. हि. दुर्जन की जीभ में अमृत है, लेकिन हृदय में विष (जहर) है।
प्रा. दुज्जणस्स जिब्भाए अमयमत्थि, हियंमि उ विसमत्थि।
सं. दुर्जनस्य जिह्वायाममृतमस्ति, हृदये तु विषमस्ति।

19. हि. मैंने बहनों को बहुत धन दिया।
प्रा. अहं भइणीणं बहुधणं दाहीअ।
सं. अहं भगिनीभ्यो बहुधनमददाम्।

20. हि. कृष्ण की स्त्री रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न है।
प्रा. कण्हस्स भज्जाइ रुप्पिणीइ पुत्रः प्रद्युम्नोऽस्ति।
सं. कृष्णस्य भार्यायाः रुक्मिण्याः पुत्रः प्रद्युम्नोऽस्ति।

21. हि. सास बहुओं पर कोप करती है।
प्रा. सासू वहूणं कुप्पइ।
सं. श्वश्रूर्वधूभ्यः क्रुध्यति।

22. हि. वर्षावास में मुनि एक ही स्थल में रहते हैं।
प्रा. वासाए मुणओ एगाए च्चिअ वसहीए वसंति।
सं. वर्षायां मुनय एकस्यां चैव वसत्यां वसन्ति।

23. हि. रात्रि में स्त्रियाँ चन्द्र के प्रकाश में नृत्य करती हैं।
प्रा. रत्तीए इत्थीओ जोण्हाए नच्चंति।
सं. रात्रौ स्त्रियो ज्योत्स्नायां नृत्यन्ति।

24. हि. प्रभु की सेवा और कृपा से कल्याण होता है।
प्रा. पहुणो सेवाए किवाए य कल्लाणं होइ।
सं. प्रभोः सेवया कृपया च कल्याणं भवति।

25. हि. साधु प्राणान्त में भी असत्य नहीं बोलते हैं।
प्रा. साहवो जीवियंते वि असच्चं न भासन्ते।
सं. साधवो जीविताऽन्तेऽप्यसत्यं न भाषन्ते।

26. हि. बालक गद्दी में लोटता है।
प्रा. बालो सेज्जाए पलोट्टइ।
सं. बालः शय्यायां प्रलुट्यति।

27. हि. स्त्री, लता और पंडित आश्रय बिना शोभा नहीं देते हैं।
प्रा. इत्थी, लया, पंडिया य आहारं विणा न छज्जंते।
सं. स्त्री, लता, पण्डिताश्चाऽऽश्रयं विना न शोभन्ते।

पाठ-17

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. अज्ज साहवो नयराओ विहरिस्संति ।**
   सं. अद्य साधवो नगराद् विहरिष्यन्ति ।
   हि. आज साधु भ. नगर से विहार करेंगे ।
2. **प्रा. गोवाल पए धेणूओ दोहिहिंति ।**
   सं. गोपाला: प्रगे धेनूर्धोक्ष्यन्ति ।
   हि. गोपाल सुबह गायों को दोहेंगे ।
3. **प्रा. अहं सीसाणमुवएसं करिस्सं ।**
   सं. अहं शिष्याणामुपदेशं करिष्यामि ।
   हि. मैं शिष्यों को उपदेश दूंगा ।
4. **प्रा. मक्खिआ महुं लेहिस्सइ ।**
   सं. मक्षिका मधु लेक्ष्यति ।
   हि. मक्खी मधु चाटेगी ।
5. **प्रा. पारद्धिणो अरण्णे वच्चिहिंते, तहिं च वीणाए झुणिणा हरिणीओ वसीकरिस्संते, पच्छा य ताओ हिंसिहिरे ।**
   सं. पापर्द्धयोऽरण्ये व्रजिष्यन्ति, तत्र व वीणाया ध्वनिना हरिणीर्वशीकरिष्यन्ति, पश्चाच्च ता हिंसिष्यन्ति ।
   हि. शिकारी जंगल में जायेंगे और वहाँ वीणा की ध्वनि से हिरनों को वश में करेंगे और उसके बाद उनको मारेंगे ।
6. **प्रा. तुं रण्णे जाज्जाहिसे, तया सिंघो चवेडाए पहरेहिए ।**
   सं. त्वमरण्ये यास्यसि, तदा सिंहश्चपेटया प्रहरिष्यति ।
   हि. तुम जंगल में जाओंगे तब सिंह तमाचे से प्रहार करोंगे ।
7. **प्रा. लोद्धओ मोग्गरेण जणे हणीअ ।**
   सं. लुब्धको मुद्गरेण जनानहन् ।
   हि. लोभी मनुष्य ने मुद्गर से लोगों को मारा ।
8. **प्रा. तुम्हे गुरु भत्तीए सेवेह, ताणं किवाए कल्लाणं भविस्सइ ।**
   सं. यूयं गुरून् भक्त्या सेवध्वम्, तेषां कृपया कल्याणं भविष्यति ।
   हि. तुम सब भक्ति से गुरुओं (बड़ों) की सेवा करो, उनकी कृपा से कल्याण होगा ।

9. प्रा. **कन्नाओ अज्ज पहुणो पुरओ नच्चिस्संति, गाणं च काहिन्ति ।**
सं. कन्या अद्य प्रभोः पुरतो नर्तिष्यन्ति, गानं च करिष्यन्ति ।
हि. कन्याएँ आज स्वामी के आगे नृत्य करेंगी और गायन करेंगी ।

10. प्रा. **उज्जाणे अज्जा जाइस्सामो, तत्थ य सरंसि जायाइं सरोयाणि जिणिंदाणं अच्चणाए गिण्हिहिस्सा ।**
सं. उद्यानेऽद्य यास्यामः तत्र च सरसि जातानि सरोजानि जिनेन्द्राणामर्चनाय ग्रहीष्यामः ।
हि. आज हम बगीचे में जायेंगे और वहाँ सरोवर में उगे हुए कमलों को श्री जिनेश्वर भगवंतों की पूजा हेतु ग्रहण करेंगे ।

11. प्रा. **अज्ज अहं तत्ताणं चिंताए रत्तिं नेस्सं ।**
सं. अद्य अहं तत्त्वानां चिन्तया रात्रिं नेष्यामि ।
हि. आज मैं तत्त्वों के चिन्तन द्वारा रात्रि पूर्ण करूंगा ।

12. प्रा. **तं कज्जं काहिसि, तो दव्वं दाहं ।**
सं. त्वं कार्यं करिष्यसि, ततो द्रव्यं दास्यामि ।
हि. तुम काम करोंगे, उसके बाद मैं द्रव्य (धन) दूंगा ।

13. प्रा. **कलिम्मि नरिंदा धम्मेण पयं न पालिहिरे ।**
सं. कलौ नरेन्द्राः धर्मेण प्रजां न पालयिष्यन्ति ।
हि. कलियुग में राजा धर्म से (नीतिपूर्वक) प्रजा का पालन नहीं करेंगे ।

14. प्रा. **जइ सो दुज्जणो होहि, तया परस्स निंदाए तूसेहिइ ।**
सं. यदि स दुर्जनो भविष्यति, तदा परस्य निन्दया तोक्ष्यति ।
हि. यदि वह दुर्जन होगा, तो वह दूसरों की निन्दा से आनन्दित होगा ।

15. प्रा. **पुत्ताणं सलाहं न काहं ।**
सं. पुत्राणां श्लाघां न करिष्यामि ।
हि. मैं पुत्रों की प्रशंसा नहीं करूंगा ।

16. प्रा. **तीए मालाए सप्पो अत्थि, जइं मालं फासिहिसे तया सो डसिस्सइ ।**
सं. तस्यां मालायां सर्पोऽस्ति, यदि मालां स्प्रक्ष्यसि तदा से दंक्ष्यति ।।16।।
हि. उस माला में साँप है, जो तुम माला का स्पर्श करोंगे तो वह डंख देगा ।

17. **प्रा. कल्ले पुण्णिमाए मयंको अईव विराइहिइ ।**
सं. कल्ये पूर्णिमायां मृगाङ्कोऽतीव विराजिष्यति ।
हि. कल पूर्णिमा को चन्द्रमा अत्यन्त शोभा देगा ।

18. **प्रा. विज्जत्थिणो अज्झयणाय पाढसालं जाज्जाहिरे ।**
सं. विद्यार्थिनोऽध्ययनाय पाठशालां यास्यन्ति ।
हि. विद्यार्थी पढ़ने के लिए पाठशाला में जायेंगे ।

19. **प्रा. अहुणा अम्हे पवयणस्स आलावे गणिहित्था ।**
सं. अधुना वयं प्रवचनस्याऽऽलापान् गणयिष्यामः ।
हि. अब हम सिद्धान्त के आलापक गिनेंगे ।

20. **प्रा. अम्हे वाणिज्जेण धणिणो होइहिमो, तुम्हे नाणेण पंडिआ होस्सह ।**
सं. वयं वाणिज्येन धनिनो भविष्यामः, यूयं ज्ञानेन पण्डिता भविष्यथ ।
हि. हम व्यापार से धनवान बनेंगे, तुम ज्ञान से पण्डित बनोंगे ।

21. **प्रा. धम्मेण नरा सग्गं सिवं वा लहिस्संति ।**
सं. धर्मेण नराः स्वर्गं शिवं वा लप्स्यन्ते ।
हि. धर्म से मनुष्य स्वर्ग अथवा मोक्ष प्राप्त करेंगे ।

22. **प्रा. अज्ज समोसरणे सिरिवद्धमाणो जिणिंदो देसणं काही, तत्थ य बहुणो भव्वा बोहिं अदुवा देसविरइं अदुवा सव्वविरइं च गिण्हेहिरे ।**
सं. अद्य समवसरणे श्रीवर्धमानो जिनेन्द्रो देशनां करिष्यति, तत्र च बहवो भव्या बोधिमथवा देशविरतिमथवा सर्वविरतिं च ग्रहीष्यन्ति ।
हि. आज समवसरण में श्रीवर्धमान जिनेन्द्र देशना देंगे और वहाँ बहुत भव्यजीव सम्यक्त्व देशविरति अथवा सर्वविरति धर्म ग्रहण करेंगे ।

23. **प्रा. जइ तुम्हे सुत्ताणि भणिज्जा, तया गीयत्था होज्जाहित्था ।**
सं. यदि यूयं सूत्राणि भणिष्यथ, तदा गीतार्थाः भविष्यथः ।
हि. जो तुम सूत्रों को पढ़ोंगे, तो गीतार्थ बनोंगे ।

24. **प्रा. कल्लम्मि धम्मं काहामि त्ति सुविणतुल्लम्मि जियलोए को णु मन्नइ ?**
सं. कल्ये धर्मं करिष्यामि, इति स्वप्नतुल्ये जीवलोके को न मुन्यते ?
हि. मैं कल धर्म करूंगा, इस प्रकार स्वप्नसमान जगत् में कौन मानेगा ?

25. प्रा. **जिणधम्माओ अन्नह सम्मं जीवदयं न पासेस्सह ।**
सं. जिनधर्मादन्यत्र सम्यग् जीवदयां न द्रक्ष्यथ ।
हि. जिनधर्म से अन्यत्र सम्यक् जीवदया नहीं देखी जाती ।

26. प्रा. **कलिम्मि पविट्ठे, मुणीणं आगमत्था गलिहिंति ।**
सं. आयरिया वि सीसाणं, सम्मं सुअं न दाहिंति ।
हि. कलौ प्रविष्टे मुनीनामागमार्था गलिष्यन्ति ।

27. प्रा. **नरवइणो कुडुंबिणा सह जुज्झिस्संति ।**
सं. नरपतयः कुटुम्बिना सह योत्स्यन्ते ।
हि. राजा कुटुम्ब के साथ युद्ध करेंगे ।

28. प्रा. **जे जिणपडिमं सिद्धालयं वा पूइस्सन्ति ताण घरं थिरं होही ।**
सं. ये जिनप्रतिमां सिद्धालयं वा पूजयिष्यन्ति, तेषां गृहं स्थिरं भविष्यति ।
हि. जो लोग जिनप्रतिमा अथवा सिद्धालय की पूजा करेंगे, उनका घर स्थिर होगा ।

29. प्रा. **न वि अत्थि न वि होही, पाएण तिहुयणम्मि सो जीवो ।**
जो जुव्वणमणुपत्तो, वियाररहिओ सया होइ ॥1॥
सं. प्रायस्त्रिभुवने स जीवो नाप्यस्ति नापि भविष्यति ।
यो यौवनमनुप्राप्तः, विकाररहितस्सदा भवति ॥1॥
हि. प्रायः तीन भुवन में वैसा कोई भी जीव नहीं है और होगी भी नहीं कि जो यौवन को प्राप्त करके हमेशा विकाररहित हो ॥1॥

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. **तुम पापों की निन्दा करोगे तो सुखी होंगे ।**
प्रा. जइ तुं पावाइं निंदिहिसि तया सुही होहिसि ।
सं. यदि त्वं पापानि निन्दिष्यसि, तदा सुखी भविष्यसि ।

2. हि. **हम नाव में बैठेंगे और सरोवर में क्रीड़ा करेंगे ।**
प्रा. अम्हे नावाए उवविसिस्सामो, सरंमि य कीलिस्सामो ।
सं. वयं नाव्युपविक्ष्यामः, सरसि च क्रीडिष्यामः ।

3. हि. **हम स्वामी के लिए माला गूंथेंगे (बनायेंगे) ।**
प्रा. अम्हे पहुणो मालं गंठिस्सामो ।
सं. वयं प्रभवे मालां ग्रन्थिष्यामः ।

4. हि. **वह लोभी है इसलिए ब्राह्मणों को धन नहीं देगा ।**

प्रा. स लोद्धओ अत्थि, तत्तो बंभणाणं धणं न दाहिइ ।

सं. स लुब्धकोऽस्ति, ततो ब्राह्मणेभ्यो धनं न दास्यति ।

5. **हि. स्वप्न में चन्द्र ने मुख में प्रवेश किया, इसलिए तुम राज्य प्राप्त करोगे ।**

प्रा. सुमिणम्मि चंदो मुहं पविसीअ, तत्तो तुं रज्जं पाविहिसि ।

सं. स्वप्ने चन्द्रो मुखं प्राविशत्, ततस्त्वं राज्यं प्राप्स्यसि ।

6. **हि. बोधि के लिए हम जिनेश्वर के चरित्र सुनेंगे ।**

प्रा. बोहीए अम्हे जिणेसराणं चरित्ताइं सोच्छामो ।

सं. बोधये वयं जिनेश्वराणां चरित्राणि श्रोष्यामः ।

7. **हि. गिरनार में बहुत वनस्पतियाँ हैं,
जब मैं वहाँ जाऊँगा तब देखूँगा ।**

प्रा. उज्जयंते बहूओ वणप्फईओ संति,
जया हं तहिं गच्छिस्सं तया पासिस्सं ।

सं. उज्जयन्ते बहवो वनस्पतयः सन्ति, यदाहं तत्र गमिष्यामि तदा द्रक्ष्यामि ।

8. **हि. वह त्यागी है, इस कारण गरीबों को दान देगा ।**

प्रा. सो चाई अत्थि, तत्तो दीणाणं दाणं दाहिइ ।

सं. स त्यागी अस्ति, ततो दीनेभ्यो दानं दास्यति ।

9. **हि. वह तापस है, अतः फलों का आहार करेगा ।**

प्रा. सो तावसो अत्थि, तत्तो फलाइं आहरिस्सइ ।

सं. स तापसोऽस्ति, ततः फलान्याहरिष्यति ।

10. **हि. तुम क्षमा धारण करोंगे तो दुर्जन क्या करेगा ?**

प्रा. तुं खंतिं धरिस्ससि, तया दुज्जणो किं काही ?

सं. त्वं शान्तिं ग्रहीष्यसि, तदा दुर्जनः किं करिष्यति ?

11. **हि. वसंते पउरा उज्जाणंसि गच्छिहिंति, तया सा कन्ना सहीहिं सह अवस्सं आगच्छिहिइ ।**

प्रा. वसंते पउरा उज्जाणंसि गच्छिाहिंति, तया सा कन्ना सहीहिं सह अवस्सं आगच्छिहिइ ।

सं. वसन्ते पौरा उद्याने गमिष्यन्ति, तदा सा कन्या सखीभिः सहाऽवश्यमागमिष्यति ।

12. **हि. तापस वन में उग्र तप करता है और तप के प्रभाव से इन्द्र की ऋद्धि प्राप्त करेगा ।**

प्रा. वणंमि तावसो उग्गं तवं करेइ, तवस्स य पहावेण इंदस्स इड्ढिं पाविहिइ ।

सं. वने तापस उग्रं तपः करोति, तपसश्च प्रभावेणेन्द्रस्यर्द्धिं प्राप्स्यति ।

13. हि. **तुम बड़ों की सेवा करोंगे तो सुखी होंगे ।**
प्रा. तुं गुरूणं सेवं करिस्ससि, तया सुही होहिसि ।
सं. त्वं गुरूणां सेवां करिष्यसि, तदा सुखी भविष्यसि ।

14. हि. **तुम सब सार्थ के साथ विहार करोंगे, तो जंगल में भय नहीं रहेगा ।**
प्रा. तुब्भे सत्थेण सह विहरिस्सह, तया अरण्णे भयं न होस्सइ ।
सं. यूयं सार्थेन सह विहरिष्यथ, तदाऽरण्ये भयं न भविष्यति ।

15. हि. **मैं संसार के दु:खों से डरता हूँ, इसलिए दीक्षा ग्रहण करूँगा ।**
प्रा. हं संसारस्स दुहेहिन्तो बीहेमि, तत्तो दिक्खं गहिस्सामि ।
सं. अहं संसारस्स दु:खेभ्यो बिभेमि, ततो दीक्षां ग्रहीष्यामि ।

16. हि. **तुम जीवहिंसा मत करो, नहीं तो दु:खी होंगे ।**
प्रा. तुं जीवहिंसं मा कुणसु, अन्नहा दुही होस्ससि ।
सं. त्वं जीवहिंसा मा कुरु, अन्यथा दु:खी भविष्यसि ।

17. हि. **क्रोध प्रीति का नाश करता है, माया मित्रों का नाश करती है, मान विनय का नाश करता है और लोभ सभी गुणों का नाश करता है, इसलिए उनका त्याग करेंगे ।**
प्रा. कोहो पीइं पणासेइ, माया मित्ताणि नासेइ, माणो विणयं नासेइ, लोहो य सव्वे गुणे नासइ, तत्तो ते चइस्सामु ।
सं. क्रोध: प्रीतिं प्रणाशयति माया मित्राणि नाशयति, मानो विनयं नाशयति, लोभश्च सर्वान् गुणान् नाशयति, ततस्तांस्त्यक्षाम: ।

18. हि. **चोर दक्षिण दिशा में गये हैं, किन्तु उनकी अवश्य तलाश करूंगा ।**
प्रा. चोरा दाहिणाए दिसाए गच्छीअ, किन्तु ते अवस्सं मग्गिस्सामि ।
सं. चौरा: दक्षिणस्यां दिश्यगच्छन्, किन्तु तानवश्यं मार्गयिष्यामि ।

19. हि. **तुम सरोवर में जाओंगे, तो अवश्य डूब जाओंगे ।**
प्रा. तुं सरंमि गच्छिहिसि, तया अवस्सं णुमज्जिहिसि ।
सं. त्वं सरसि गमिष्यसि, तदाऽवश्यं निमङ्क्ष्यसि ।

20. हि. **वह कुत्ता भौंकेगा, किन्तु काटेगा नहीं ।**
प्रा. स साणो बुक्किहिइ, किन्तु न डंसिहिइ ।
सं. स श्वा भषिष्यति, किन्तु न दंक्ष्यति ।

21. हि. **जीवदया समान धर्म नहीं है और जीवहिंसा समान अधर्म नहीं है ।**
प्रा. जीवदयाए समाणो धम्मो नत्थि, जीवहिंसाए य समाणो अहम्मो नत्थि ।
सं. जीवदयया समानो धर्मो नाऽस्ति, जीवहिंसया च समानोऽधर्मो नाऽस्ति ।

पाठ-18

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. हं वच्छाणं पण्णाणि छेच्छं ।**
   सं. अहं वृक्षाणां पर्णानि छेत्स्यामि ।
   हि. मैं वृक्षों के पत्ते काटूँगा ।
2. **प्रा. अन्हे साहुणो सगासे तत्ताइं सोच्छिस्सामो ।**
   सं. वयं साधोः सकाशे तत्त्वानि श्रोष्यामः ।
   हि. हम साधु के पास तत्त्व सुनेंगे ।
3. **प्रा. जइ माआ जत्ताए गच्छिइ, तो वच्छो दुहिया य रोच्छिहिंति ।**
   सं. यदि माता यात्रायै गमिष्यति, ततो वत्सो दुहिता च रोदिष्यतः ।
   हि. जो माता यात्रा के लिए जायेगी, तो पुत्र और पुत्री रोयेंगे ।
4. **प्रा. अम्हे किर सच्चं वोच्छिस्सामो ।**
   सं. वयं किल सत्यं वक्ष्यामः ।
   हि. हम सचमुच सत्य बोलेंगे ।
5. **प्रा. सव्वण्णू झत्ति सिवं गच्छिहिरे ।**
   सं. सर्वज्ञा झटिति शिवं गमिष्यन्ति ।
   हि. सर्वज्ञ जल्दी मोक्ष में जायेंगे ।
6. **प्रा. हं सत्तुजयं गच्छिस्सं, तहिं गिरिस्स सोहं दच्छं, तह सेत्तुंजीए नईए ण्हहिस्सं, पच्छा य तित्थयराणं पडिमाओ चंदणेण पुप्फेहिं च अच्चिहिमि, गिरिणो य माहप्पं सोच्छिमि, पावाइं च कम्माइं छेच्छिहिमि, जीविअं च सहलं करिस्सं ।**
   सं. अहं शत्रुंजयं गमिष्यामि, तत्र गिरेः शोभां द्रक्ष्यामि, तथा शत्रुंजय्यां नद्यां स्नास्यामि, पश्चाच्च तीर्थकराणां प्रतिमाश्चन्दनेन पुष्पैश्चाऽर्चिष्यामि, गिरेश्च माहात्म्यं श्रोष्यामि, पापानि च कर्माणि छेत्स्यामि, जीवितं च सफलं करिष्यामि ।
   हि. मैं शत्रुंजय जाऊँगा, वहाँ गिरिराज की शोभा को देखूँगा, शत्रुंजय नदी में स्नान करूँगा, उसके बाद तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की चन्दन और पुष्पों द्वारा पूजा करूँगा, गिरिराज की महिमा सुनूँगा, पापकर्मों को छेदूंगा और जीवन सफल करूँगा ।

7. प्रा. **जइ असोगचंदो नरिंदो दियासु परिमाणं कुणंतो, ता निरए नेव निवडंतो ।**

सं. यद्यशोकचंद्रो नरेन्द्रो दिक्षु परिमाणमकरिष्यत्, ततो नरके नैव न्यपतिष्यत् ।

हि. जो अशोकचन्द्र राजा ने दिशाओं का परिमाण किया होता, तो नरक में नहीं जाता ।

8. प्रा. **सो आयारंगं भणेज्जा, ता गीयत्थो होंतो ।**

सं. स आचाराङ्गमभणिष्यत्, ततो गीतार्थोऽभविष्यत् ।

हि. उसने आचारांग सूत्र पढ़ा होता तो गीतार्थ बन जाता ।

9. प्रा. **जइ हं सत्तुं निगिण्हंतो, तया एरिसं दुहं अहुणा किं लहमाणो ?**

सं. यद्यहं शत्रुं न्यग्रहीष्यम् तदेदृशं दुःखमधुना किमलप्स्ये ?

हि. जो मैंने शत्रु का निग्रह किया होता, तो ऐसा दुःख अब क्यों पाता ?

10. प्रा. **जइ धम्मस्स फलं हविज्ज, तया परलोए सुहं लहेज्जा ।**

सं. यदि धर्मस्य फलमभविष्यत्, तदा परलोके सुखमलप्स्यत ।

हि. जो धर्म का फल होगा, तो वह परलोक में सुख पायेगा ।

11. प्रा. **साहम्मिआणं वच्छल्लं सइ कुज्जत्ति वीयरायस्स आणा ।**

सं. साधर्मिकानां वात्सल्यं सदा कुर्यादिति वीतरागस्याऽऽज्ञा ।

हि. साधर्मिकों की भक्ति हमेशा करनी चाहिए ऐसी वीतराग प्रभु की आज्ञा है ।

12. प्रा. **तिसलादेवी देवाणंदा य माहणी पहुणो महावीरस्स माऊओ आसि ।**

सं. त्रिशलादेवी देवानंदा च ब्राह्मणी प्रभोर्महावीरस्य मातारावास्ताम्।

हि. त्रिशलादेवी और देवानंदा ब्राह्मणी प्रभु महावीर की माताएँ थी ।

13. प्रा. **सिरिवद्धमाणस्स पिआ सिद्धत्थो नरिंदो होत्था ।**

सं. श्रीवर्धमानस्य पिता सिद्धार्थो नरेन्द्रोऽभवत् ।

हि. श्रीवर्धमान के पिता सिद्धार्थ राजा थे ।

14. प्रा. **पुव्वण्हे अक्कस्स तावो थोवो, मज्झण्हे य अईव चित्थो, अवरण्हे य थोक्को अइथेवो वा ।**

सं. पूर्वाह्णेऽर्कस्य तापः स्तोकः, मध्याह्ने चाऽतीवतीक्ष्णः, अपराह्णे च स्तोकोऽतिस्तोको वा ।

हि. दिन के पूर्व भाग में सूर्य का ताप अल्प, मध्याह्न में अति तीक्ष्ण और अपराह्न में अल्प अथवा अत्यल्प होता है ।

15. प्रा. **सकम्मेहिं इह संसारे भमंताणं जंतूणं सरणं माआ पिआ भाउणो सुसा धूआ अ न हवंति, एक्को एव धम्मो सरणं ।**

सं. स्वकर्मभिरिह संसारे भ्रमतां जन्तूनां शरणं माता पिता भ्रातरः स्वसा दुहिता च न भवन्ति, एक एव धर्मः शरणम् ।

हि. अपने कर्म से इस संसार में परिभ्रमण करते हुए प्राणियों के शरण माता-पिता, भाई-बहन और पुत्र नहीं हैं (लेकिन) एक धर्म ही शरणभूत है ।

16. प्रा. **जो बाहिरं पासइ, सो मूढो, अंतो पासेइ, सो पंडिओ णेओ ।**

सं. यो बाह्यं पश्यति स मूढः, अन्तः पश्यति स पण्डितो ज्ञेयः ।

हि. जो बाह्य देखता है वह मूढ़ है, अन्दर देखता है वह पंडित है ।

17. प्रा. **पिउणो ससा पिउसिअत्ति, तह माऊए य ससा माउसिआ इइ कहेइ ।**

सं. पितुः स्वसा पितृश्वसेति तथा मातुश्च स्वसा मातृश्वसेति कथयति ।

हि. पिता की बहन बूआ और माता की बहन मौसी कहते हैं ।

18. प्रा. **नणंदा भाउस्स जायाए सिणिज्झइ ।**

सं. ननान्दा भ्रातुर्जायायां स्निह्यति ।

हि. ननन्द, भाभी पर स्नेह रखती है ।

19. प्रा. **धूआ माअरं पिअरं च सिलेसइ ।**

सं. दुहिता मातरं पितरं च श्लिष्यति ।

हि. पुत्री, माता और पिता को आलिंगन करती है ।

20. प्रा. **रामस्स वासुदेवस्स य पिअरम्मि माऊसुं अ परा भत्ती अत्थि ।**

सं. रामस्स वासुदेवस्य च पितरि मातृषु च परा भक्तिरस्ति ।

हि. बलदेव और वासुदेव की पिता और माता के प्रति श्रेष्ठ भक्ति है ।

21. प्रा. **सासू जामाऊणं पडिवयाए पाहुडं दाहिन्ति ।**

सं. श्वश्र्वो जामातृभ्यः प्रतिपदि प्राभृतं दास्यन्ति ।

हि. सासुएँ दामादों को प्रतिपदा के दिन उपहार देंगी ।

22. प्रा. **जा नारी भत्तारम्मि पउस्सेइ, सा सुहं न पावेइ ।**

सं. या नारी भर्तरि प्रद्वेष्टि, सा सुखं न प्राप्नोति ।

हि. जो स्त्री पति पर द्वेष करती है, वह सुख नहीं पाती है ।

23. प्रा. कुलबालियाणं भत्तवो चेव देवा ।

सं. कुलबालिकानां भर्तार एवं देवाः ।

हि. कुलांगनाओं का पति ही देव है ।

24. प्रा. माआ धूआणं पुत्ताणं च बहुं धणं अप्पेइ ।

सं. माता दुहितृभ्यः पुत्रेभ्यश्च बहुधनमर्पयति ।

हि. माता पुत्रियों और पुत्रों को बहुत धन देती है ।

25. प्रा. जे नरा भत्तूणमाएसे न वट्टंते, ते दुहिणो हवंति ।

सं. ये नराः भर्तृणामादेशे न वर्तन्ते, ते दुःखिनो भवन्ति ।

हि. जो लोग स्वामी के आदेशानुसार वर्तन नहीं करते हैं, वे दुःखी होते हैं ।

26. प्रा. आवयासु जे सहेज्जा हुंति, ते च्च भाऊणो ।

सं. आपत्सु ये साहाय्या भवन्ति, त एव भ्रातरः ।

हि. दुःख (आपत्ति) में जो सहायक बनते हैं, वे ही भाई हैं ।

27. प्रा. धूआए माआए य परुप्परं अईव नेहो अत्थि ।

सं. दुहितुर्मातुश्च परस्परमतीव स्नेहोऽस्ति ।

हि. पुत्री और माता में परस्पर अत्यंत स्नेह है ।

28. प्रा. सासूणं जामाउणो अईव पिआ हवंति ।

सं. श्वश्रूणां जामातरोऽतीवप्रियाः भवन्ति ।

हि. सासुओं को दामाद अत्यंत प्रिय होते हैं ।

29. प्रा. अहं माअराए य पिउणा य भायरेहिं च ससाहिं च सह सिद्धगिरिस्स जत्ताए जाएज्जा ।

सं. अहं मात्रा च पित्रा च भ्रातृभिश्च स्वसृभिश्च सह सिद्धगिरेर्यात्रायै यास्यामि ।

हि. मैं माता, पिता, भाइयों और बहनों के साथ सिद्धाचल की यात्रा हेतु जाऊँगा ।

30. प्रा. दायाराणं मज्झे कण्णो निवो पढमो होत्था ।

सं. दातृणां मध्ये कर्णो नृपः प्रथमोऽभवत् ।

हि. दाताओं में कर्ण राजा प्रथम हुआ ।

31. प्रा. रामस्स भाया लक्खणो निएण चक्केण रावणस्स सीसं छिन्दीअ ।

सं. रामस्य भ्राता लक्ष्मणो निजेन चक्रेण रावणस्य शीर्षमच्छिनत् ।

हि. राम के भाई लक्ष्मण ने अपने चक्र से रावण का मस्तक छेदा ।

32. प्रा. सतेसु जायते सूरो, सहस्सेसु य पंडिओ ।
वत्ता सयसहस्सेसु, दाया जायति वा न वा ।।1।।

सं. शतेषु शूरो जायते, सहस्रेषु च पण्डितः ।
शतसहस्रेषु वक्ता, दाता जायते वा न वा ।।1।।

हि. सौ मनुष्यों में एक शूरवीर होता है, हजारों में एक पण्डित होता है, लाखों में एक वक्ता होता है, दाता तो होता है अथवा नहीं भी होता हैं । ।।1।।

33. प्रा. इंदियाणं जए सूरो, धम्मं चरति पंडिओ ।
वत्ता सच्चवओ होइ, दाया भूयहिए रओ ।।2।।

सं. इन्द्रियाणां जये शूरः, धर्मं चरति पण्डितः ।
सत्यवदो वक्ता भवति, भूतहिते रतो दाता ।।2।।

हि. इन्द्रियों का जय=इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करे वह शूरवीर, धर्म का आचरण करे वह पण्डित, सत्यवादी हो वह वक्ता और प्राणियों के हित में रत हो वह दाता (कहलाता) है ।।2।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. यदि उसने जहरवाला भोजन किया होता, तो वह मृत्यु प्राप्त करता ।

प्रा. जइ सो विसमिसिअं अन्नं भुंजंतो तया सो मरंतो ।

सं. यदि स विषमिश्रितमन्नमभोक्ष्यत, तदा सोऽमरिष्यत् ।

2. हि. यदि तुम सबने जिनेश्वर के चरित्र सुने होते, तो धर्म पाते ।

प्रा. जइ तुब्भे जिणेसरस्स चरित्ताइं सुणंता, तया धम्मं पावंता ।

सं. यदि यूयं जिनेश्वरस्य चरित्राण्यश्रोष्यथ, तदा धर्मं प्राप्स्यथ ।

3. हि. अभिमन्यु जिन्दा होता, तो कौरवों की पूरी सेना को जीत लेता ।

प्रा. अहिमन्नू जीवंतो, तया कउरवाणं सव्वं सेणं जिणंतो ।

सं. अभिमन्युरजीविष्यत्, तदा कौरवाणां सर्वां सेनामजेष्यत् ।

4. हि. यदि उसको तत्त्वों का ज्ञान होता तो वह धर्म प्राप्त करता ।

प्रा. जह तस्स तत्ताणं नाणं हुंतं, तया सो धम्मं लहंतो ।

सं. यदि तस्य तत्त्वानां ज्ञानमभविष्यत्, तदा स धर्ममलप्सयत ।

5. **हि. यदि तुम उस समय बन्धन में से मुझे छोड़ते, तो मैं सत्य बोलता ।**

प्रा. जइ तुब्भे तंमि समयंमि बंधणत्तो मुंचंता, तया हं सच्चं कहेंतो ।

सं. यदि यूयं तस्मिन् समये बन्धनादमोक्ष्यत, तदाऽहं सत्यमकथयिष्यम् ।

6. **हि. रावण ने परस्त्री का त्याग किया होता, तो वह मृत्यु नहीं पाता ।**

प्रा. रावणो परनारिं चयंतो, तया सो मच्चुं न पावंतो ।

सं. रावणः परनारीमत्यक्ष्यत्, तदा स मृत्युं न प्राप्स्यत् ।

7. **हि. ज्ञाता से उसने तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त किया ।**

प्रा. णायारत्तो सो तत्ताणं नाणं लहीअ ।

सं. ज्ञातुः स तत्त्वानां ज्ञानमलभत ।

8. **हि. मैं तालाब में से कमल के फूल ग्रहण करूँगा और माता और बहन को दूँगा ।**

प्रा. हं कासारत्तो कमलाइं गहिस्सामि, माआए ससाए य दाहिस्सं ।

सं. अहं कासारात् कमलानि ग्रहीष्यामि, मात्रे स्वस्रे च दास्यामि ।

9. **हि. माता और पिता के साथ जिनालय में जाऊँगा और चैत्यवंदन करूँगा ।**

प्रा. माअराए पिअरेण य सह जिणालए गच्छिस्सामि, चिइवंदणं च करिस्सामि ।

सं. मात्रा पित्रा च सह जिनालये गमिष्यामि, चैत्यवन्दनं च करिष्यामि ।

10. **हि. लक्ष्मण के भाई राम ने दीक्षा ली और मोक्ष प्राप्त किया ।**

प्रा. लक्खणस्स भाई रामो पवज्जीअ, मोक्खं च लहीअ ।

सं. लक्ष्मणस्य भ्राता रामः प्राव्रजत्, मोक्षं चाऽलभत् ।

11. **हि. बहू को ननन्द पर अतिस्नेह है ।**

प्रा. वहूए नणंदाए अईव णेहो अत्थि ।

सं. वध्वा ननान्दर्यतीव स्नेहोऽस्ति ।

12. **हि. गरीबों को पालने वाले थोड़े ही होते हैं ।**

प्रा. दीणाणं रक्खिआरा थेवा च्चिय हवंति ।

सं. दीनानां रक्षितारः स्तोका एव भवन्ति ।

13. हि. विधाता के लेख का कोई भी उल्लंघन नहीं करता है ।

प्रा. धायारस्स लेहं को वि न अइक्कमइ ।

सं. धातुर्लेखं कोऽपि नाऽतिक्राम्यति ।

14. हि. कुरूप बालकों पर भी माता का अतीव स्नेह होता है ।

प्रा. विरुवेसुं बालेसुं वि माआए अईव णेहो होइ ।

सं. विरूपेषु बालेष्वपि मातुरतीव स्नेहो भवति ।

15. हि. जैसे बधिर के आगे गान निरर्थक होता है, वैसे मूर्ख के आगे तत्त्वों की बातें निरर्थक होती है ।

प्रा. जहा बहिरस्स अग्गे गाणं निरत्थयं होइ, तहा मुरुक्खस्स अग्गे तत्ताणं वत्ता निरत्थया अत्थि ।

सं. यथा बधिरस्याऽग्रे गायनं निरर्थकं भवति, तथा मूर्खस्याऽग्रे तत्वानां वार्ता निरर्थकाऽस्ति ।

16. हि. प्रतिदिन बहुत प्राणी मरते हैं, तो भी अज्ञानी हम नहीं मरेंगे ऐसा मानते हैं, इससे अन्य क्या आश्चर्य हो ?

प्रा. पइदिणं बहवो पाणिणो मरेंति, तहवि अन्नाणिणो अम्हे न मरिस्सामो इइ मन्नंति, तत्तो अन्नं किं अच्छेरं होज्ज ?

सं. प्रतिदिनं बहवः प्राणिनो म्रियन्ते, तथाप्यज्ञानिनो वयं न मरिष्याम इति मन्यन्ते, ततोऽन्यत् किमाश्चर्यं भवेत् ?

17. हि. नैमित्तिक ने उसके ललाट में श्रेष्ठ लक्षण देखे और कहा कि तुम राजा बनोंगे ।

प्रा. नेमित्तिओ तस्स ललाडंमि सोहणाइं लक्खणाइं देक्खीअ, कहीअ य तुं राया होहिसि ।

सं. नैमित्तिकस्तस्य ललाटे शोभनानि लक्षणान्यपश्यत्, अकथयच्च त्वं राजा भविष्यसि ।

18. हि. वह वेश्या में आसक्त नहीं होता, तो धर्म से पतित नहीं होता ।

प्रा. सो वेसाए आसत्तो न हुंतो, तया सो धम्मत्तो न पडंतो ।

सं. स वेश्यायामासक्तो नाऽभविष्यत्, तदा स धर्मान्नाऽपतिष्यत् ।

19. हि. मूर्ख भी धीरे-धीरे उद्यम करने से होशियार बनता है ।

प्रा. मुरुक्खो वि सणियं सणियं उज्जमेण पउणो होइ ।

सं. मूर्खोऽपि शनैः शऽैरुद्यमेन प्रगुणो भवति ।

पाठ-19

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **जे भावा पुव्वण्हे दीसीअ, ते अवरण्हे न दीसंति ।**
   सं. ये भावा पूर्वाह्णेऽदृश्यन्त, तेऽपराह्णे न दृश्यन्ते ।
   हि. जो भाव (पदार्थ) दिन के पूर्वभाग में दिखाई दिये, वे दिन के पिछले भाग में दिखाई नहीं देते हैं ।
2. प्रा. **जह पवणस्स रउद्देहिं गुंजिएहिं मंदरो न कंपिज्जइ, तह खलाणं असब्भेहिं वयणेहिं सज्जणाणं चित्ताइं न कंपीइरे ।**
   सं. यथा पवनस्य रौद्रैर्गुञ्जितैर्मन्दरो न कम्प्यते, तथा खलानामसभ्यैर्वचनैः सज्जनानां चित्तानि न कम्प्यन्ते ।
   हि. जिस तरह पवन के भयंकर गुंजारव से मेरुपर्वत कंपायमान नहीं होता है, उसी तरह दुर्जनों के असभ्य वचनों से सज्जनों के चित्त कंपायमान नहीं होते हैं ।
3. प्रा. **धम्मेण सुहाणि लब्भंति, पावाइं च नस्संति ।**
   सं. धर्मेण सुखानि लभ्यन्ते, पापानि च नश्यन्ते ।
   हि. धर्म से सुख प्राप्त होते हैं और पाप नष्ट होते हैं ।
4. प्रा. **समणोवासएहिं चेइएसु जिणिंदाणं पडिमाओ अच्चिज्जीअ ।**
   सं. श्रमणोपासकैश्चैत्येषु जिनेन्द्राणां प्रतिमा आर्च्यन्त ।
   हि. श्रावकों द्वारा चैत्यों में जिनेश्वरों की प्रतिमा पूजी गई ।
5. प्रा. **विउसाणं परिसाए मुरुक्खेहिं मउणं सेवीअउ, अन्नह मुक्खत्ति नज्जिहिंति ।**
   सं. विदुषां पर्षदि मूर्खैर्मौनं सेव्यताम्, अन्यथा मूर्खा इति ज्ञास्यन्ते ।
   हि. विद्वानों की पर्षदा में मूर्खों द्वारा मौन रखा जाय, अन्यथा वे मूर्ख हैं, ऐसा सिद्ध होगा । (जाना जायेगा) ।
6. प्रा. **देवेहिं सीयलेण सुहफासेण सुरहिणा मारुएण जोयणपरिमंडला भूमी सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ ।**
   सं. देवैः शीतलेन सुखस्पर्शेण सुरभिणा मारुतेन योजनपरिमंडला भूमिः सर्वतः समन्तात् संप्रमृज्यन्ते ।
   हि. देवों द्वारा शीतल, सुखदायी स्पर्शवाले, सुगन्धित पवन से एक योजन गोलाकार भूमि सर्वत्र चारों ओर से स्वच्छ की जाती है ।

7. **प्रा. अग्गिणा नयरं डज्झीअ ।**
सं. अग्निना नगरमदह्यत ।
हि. अग्नि द्वारा नगर जलाया गया ।

8. **प्रा. गुरूणं भत्तीए सत्थाणं तत्ताइं णव्विहिरे ।**
सं. गुरूणां भक्त्या शास्त्राणां तत्त्वानि ज्ञास्यन्ते ।
हि. गुरु भगवंतों की भक्ति से शास्त्रों के तत्त्व जाने जायेंगे ।

9. **प्रा. अज्जवि अउज्झाए परिसरे उच्चेसु रुक्खेसु ठिएहिं जणेहिं निम्मले नहयले धवला सिहरपरंपरा तस्स गिरिणो दीसइ ।**
सं. अद्याप्ययोध्यायाः परिसरे उच्चेषु वृक्षेषु स्थितैर्जनैर्निर्मले नभस्तले धवला शिखरपरंपरा तस्य गिरेःदृश्यते ।
हि. आज भी अयोध्या के परिसर में ऊँचे वृक्षों पर रहे लोगों द्वारा निर्मल आकाशतल में उस पर्वत की सफेद शिखरों की परंपरा देखी जाती है ।

10. **प्रा. गुरूणमुवएसेण संसारो तीरइ ।**
सं. गुरूणामुपदेशेन संसारस्तीर्यते ।
हि. गुरु भगवंतों के उपदेश से संसार पार किया जाता है ।

11. **प्रा. भद्दे का तुमं देविव्व दीससि ?**
सं. भद्रे ! का त्वं देवीव दृश्यसे ?
हि. हे भद्रे ! देवी जैसी दिखाई देती तुम कौन हो ?

12. **प्रा. सहा केरिसी वुच्चए ?**
सं. सभा कीदृशी उच्यते ?
हि. सभा किस प्रकार की कहलाती है ?

13. **प्रा. जत्थ थेरा अत्थि सा सहा ।**
सं. यत्र स्थविराः सन्ति सा सभा ।
हि. जहाँ वृद्ध पुरुष होते हैं, वह सभा कहलाती है ।

14. **प्रा. कलिम्मि अकाले मेहो वरिसइ, काले न वरिसेज्ज, असाहू पूइज्जंति, साहवो न पूईइरे ।**
सं. कलावकाले मेघो वर्षति, काले न वर्षति, असाधवः पूज्यन्ते, साधवो न पूज्यन्ते ।
हि. कलियुग में मौसम बिना मेघ बरसता है, मौसम में नहीं बरसता है, असाधु पूजे जाते हैं, साधु नहीं पूजे जाते हैं ।

15. प्रा. वेसाओ धणं चिय गिण्हंति, न हु धणेण ताओ घिप्पंति ।

सं. वेश्या: धनमेव गृह्णन्ति, न धनेन ता: गृह्यन्ते ।

हि. वेश्याएँ धन को ही ग्रहण करती है, परंतु वे धन से ग्रहण नहीं की जाती हैं ।

16. प्रा. पूइज्जंति दयालू जइणो, न हु मच्छवहगाइ ।

सं. पूज्यन्ते दयालवो यतयो न खु मत्स्यवधकादय:।

हि. दयालु साधु पूजे जाते हैं, लेकिन मच्छीमार आदि नहीं ।

17. प्रा. होइ गुरुयाण गरुयं वसणं लोयम्मि, न उण इयराणं ।
जं ससिरविणो घेप्पंति, राहुणा न उण ताराओ ।।1।।

सं. लोके गुरुकाणां गुरुकं, व्यसनं भवति न पुनरितरेषां ।
यच्छशिरवी राहुणा गृह्येते, पुनस्तारा न ।।1।।

हि. जगत् में बडों=महापुरुषों को ज्यादा दु:ख (कष्ट) होता है, अन्य को नहीं, जिस कारण चन्द्र और सूर्य राहु द्वारा ग्रसित होते हैं लेकिन तारे नहीं ।।1।।

18. प्रा. जलणो वि घेप्पइ सुहं, पवणो भुयगो वि केणइ नएण ।
महिलामणो न घेप्पइ, बहुएहिं नयसहस्सेहिं ।।2।।

सं. ज्वलनोऽपि सुखं गृह्यते, पवनो भुजगोऽपि केनापि नयेन ।
बहुकैर्नयसहस्त्रै:, महिलामनो न गृह्यते ।।2।।

हि. अग्नि भी सुखपूर्वक ग्रहण किया जाता है, पवन और साँप भी किसी उपाय द्वारा ग्रहण किये जाते हैं, लेकिन हजारों उपायों द्वारा स्त्री का मन ग्रहण नहीं किया जाता है ।।2।।

19. प्रा. को कस्स एत्थ जणगो ?, का माया ? बंधवो य को कस्स ?
कीरंति सकम्मेहिं, जीवा अन्नुन्नरूवेहिं ।।3।।

सं. अत्र क: कस्य जनक: ? का माता ?, क: कस्य बान्धवश्च ?
जीवा: स्वकर्मभिरन्योन्यरूपै: क्रियन्ते ।।3।।

हि. इस जगत् में कौन किसका पिता, कौन माता, कौन किसका भाई है ? जीव अपने कर्मों से ही अलग-अलग स्वरुपवाले किये जाते हैं ।।3।।

20. प्रा. सव्वस्स उवयरिज्जइ, न पम्हसिज्जइ परस्स उवयारो ।
विहलो अवलंबिज्जइ, उवएसो एस विउसाणं ।।4।।

सं. सर्वस्योपक्रियेत, परस्योपकारो न विस्मर्येत
विह्वलोऽवलम्ब्येत, एष विदुषामुपदेश: ।।4।।

हि. सब पर उपकार करना, अन्य के उपकार को नहीं भूलना, दु:खी व्यक्ति को आश्रय देना, यह विद्वानों का उपदेश है ।।4।।

21. प्रा. **रिउणो न वीससिज्जइ, कयावि वंचिज्जइ न वीसत्थो ।**
न कयग्घेहि हविज्जइ, एसो नाणस्स नीसंदो ।।5।।

सं. रिपवो न विश्वस्येरन्, विश्वस्त: कदापि न वच्येत ।
कृतघ्नैर्न भूयेत, एष ज्ञानस्य नि:ष्यन्द: ।।5।।

हि. शत्रुओं का विश्वास नहीं करना, विश्वासु व्यक्ति को कभी भी ठगना नहीं, कृतघ्न नहीं बनना, यह ज्ञान का झरना=निचोड़ है ।।5।।

22. प्रा. **वन्निज्जइ भिच्चगुणो, न य वन्निज्जइ सुअस्स पच्चक्खे ।**
महिलाओ नोभया वि हु, न नस्सए जेण माहप्पं ।।6।।

सं. भृत्यगुणो वर्ण्येत, सुतस्य प्रत्यक्षे न च वर्ण्येत ।
महिला नोभयादपि खु, येन माहात्म्यं न नश्येत ।।6।।

हि. सेवक के गुण की प्रशंसा करनी चाहिए, पुत्र के गुण उसके (पुत्र के) सामने नहीं कहने चाहिए, स्त्रियों की दोनों प्रकार से (प्रत्यक्ष या परोक्ष) प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, (क्योंकि) जिससे (उसका= पुरुष का) माहात्म्य नष्ट न हो ।।6।।

23. प्रा. **जीवदयाइ रमिज्जइ, इंदियवग्गो दमिज्जइ सयावि ।**
सच्चं चेव चविज्जइ, धम्मस्स रहस्समिणमेव ।।7।।

सं. जीवदयायां रम्येत, सदापीन्द्रियवर्गो दम्येत ।
सत्यमेव कथ्येत, इदमेव धर्मस्य रहस्यम् ।।7।।

हि. जीवदया में आनन्दित होना, हमेशा इन्द्रियों के समूह का दमन करना, सत्य ही बोलना, यही धर्म का रहस्य है ।।7।।

24. प्रा. **दीसइ विविहचरित्तं, जाणिज्जइ सुयणदुज्जणविसेसो ।**
धुत्तेहिं न वंचिज्जइ, हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ।।8।।

सं. विविधचरित्रं दृश्यते, सुजनदुर्जनविशेषो ज्ञायते ।
धूर्तैर्न वंच्यते, तेन पृथ्व्याम् हिण्ड्यते ।।8।।

हि. विविध प्रकार के चरित्र देखा जाँए सज्जन और दुर्जन का भेद जाना जाय, धूर्तों से न ठगा जाय इसलिए पृथ्वी पर घूमना चाहिए ।।8।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. **हि. लक्ष्मण द्वारा शत्रु का मस्तक काटा गया ।**
   प्रा. लक्खणेण सत्तुणो सिरं छिंदीअईअ ।
   सं. लक्ष्मणेन शत्रोश्शिरोऽच्छिन्द्यत ।
2. **हि. श्रावकों से गुरु भगवंतों के वचनों की श्रद्धा की जाती है ।**
   प्रा. सावगेहिं गुरूणं वयणाइं सद्दहिज्जंति ।
   सं. श्रावकैर्गुरूणां वचनानि श्रद्धीयन्ते ।
3. **हि. श्रद्धा से उपाध्याय के पास ज्ञान प्राप्त किया जाता है ।**
   प्रा. सद्धाए उवज्झायत्तो नाणं लब्भइ ।
   सं. श्रद्धयोपाध्यायज्ज्ञानं लभ्यते ।
4. **हि. योगियों द्वारा श्मशान में मन्त्रों का ध्यान किया जाता है ।**
   प्रा. जोगीहिं सुसाणे मंताइं झाइज्जंति ।
   सं. योगिभिः श्मशाने मन्त्राणि ध्यायन्ते ।
5. **हि. नटों द्वारा दरवाजे पर नृत्य किया जाता है ।**
   प्रा. दुवारे नडेहिं नच्चिज्जइ ।
   सं. द्वारे नटैर्नृत्यते ।
6. **हि. प्रजा राजा की आज्ञा का अपमान न करे ।**
   प्रा. पया निवस्स आणं न अइक्कमिज्जउ ।
   सं. प्रजा नृपस्याऽऽज्ञां नाऽतिक्राम्यन्ताम् ।
7. **हि. चोर के ललाट में अग्नि से चिह्न किया जाता है ।**
   प्रा. चोरस्स ललाडे अग्गिणा चिंधं क्रियते ।
   सं. चौरस्य ललाटेऽग्निना चिह्नं क्रियते ।
8. **हि. पहले कोई जल और वनस्पति में जीव नहीं मानते थे, लेकिन अब यन्त्र के प्रयोग से उनमें (जल + वनस्पति में) साक्षात् जीव दिखाई देते हैं ।**
   प्रा. पुरा केवि जलम्मि वणस्सईए य जीवा न मन्नीअ, किंतु अहुणा जंतस्स पओगेण सक्खं तेसु जीवा दीसंति ।
   सं. पुरा केऽपि जले वनस्पतौ च जीवा नाऽमन्यन्त, अधुना तु यन्त्रस्य प्रयोगेण साक्षात्तेषु जीवा दृश्यन्ते ।

9. हि. राजा के पुरुषों द्वारा चोर पकड़ा गया और दण्ड दिया गया ।

प्रा. रायपुरिसेहिं चोरो घेप्पीअ, दंडिज्जईअ य ।

सं. राजपुरुषैश्चौरोऽगृह्यताऽदण्ड्यत च ।

10. हि. जो धन न्यायमार्ग से प्राप्त किया जाता है, वह कभी भी नष्ट नहीं होता है ।

प्रा. जं धणं नायमग्गेण विढप्पइ, तं कयावि न नस्सइ ।

सं. यद् धनं न्यायमार्गेणाऽर्ज्यते, तत्कदापि न नश्यते ।

11. हि. रात्रि में मुनियों द्वारा स्वाध्याय किया जायेगा ।

प्रा. रत्तीए मुणीहिं सज्झाओ करिहिइ ।

सं. रात्रौ मुनिभिः स्वाध्यायः करिष्यते ।

12. हि. शिष्यों को सदा आचार्य की सेवा करनी चाहिए ।

प्रा. सीसा सया आयरियं सेवंतु ।

सं. शिष्याः सदाऽऽचार्यं सेवन्ताम् ।

13. हि. मैं दुष्कर्मों से मुक्त होता हूँ ।

प्रा. हं पावकम्मेहिं मुंचिज्जामि ।

सं. अहं पापकर्मभिर्मुच्ये ।

14. हि. तुम सब मोह से पागल नहीं होते हो ।

प्रा. तुब्भे मोहेण न मुज्झीअह ।

सं. यूयं मोहेन न मुह्यध्वे ।

15. हि. धर्म से तुम्हारा रक्षण किया गया ।

प्रा. तुब्भे धम्मेण रक्खिज्जईअ ।

सं. यूयं धर्मेणाऽरक्ष्यध्वम् ।

16. हि. तुम शत्रु द्वारा जीते गये ।

प्रा. तुमं सत्तुणा जिव्वईअ ।

सं. त्वं शत्रुणाऽजीयत ।

17. हि. यदि हमेशा धर्म सुना जाय, दान दिया जाय, शील धारण किया जाएं, गुरुओं को वन्दन किया जाय, विधिपूर्वक जिनेश्वर की प्रतिमा की पूजा की जाय और तत्त्वों की श्रद्धा की जाय तो यह संसार तैरा जा सकता है ।

प्रा. जइ सया धम्मो सुणिज्जइ, दाणं दिज्जइ, सीलं धरिज्जइ, गुरवो वंदिज्जेइरे, विहिणा जिणाणं पडिमाओ अच्चिज्जेइरे, तत्ताणि च सद्दहीअंते, तया अदम् संसारो तरिज्जइ ।

सं. यदि सदा धर्मः श्रूयते, दानं दीयते, शीलं ध्रियते, गुरवो वन्द्यन्ते, विधिना जिनेश्वराणां प्रतिमा अर्च्यन्ते, तत्त्वानि व श्रद्धीयन्ते, तदाऽयं संसारस्तीर्यते ।

18. हि. थोड़ा भी उपकार किया जाए, तो परलोक में सुखी बनेंगे ।

प्रा. थेवो वि उवयारो करिज्जइ, तया परलोयम्मि सुही होहिइ ।

सं. स्तोकोऽप्युपकारः क्रियते, तदा परस्मिंल्लोके सुखी भविष्यते ।

19. हि. बालक द्वारा पिता की आज्ञा मानी गयी ।

प्रा. बालेण पिउणो आणा मन्निज्जईअ ।

सं. बालकेन पितुराज्ञाऽमन्यत ।

20. हि. उत्तम पुरुषों द्वारा जो कार्य प्रारम्भ किया जाता है, उसमें वे अवश्य पार पाते हैं ।

प्रा. उत्तमेहिं पुरुसेहिं जं कज्जं विढप्पइ, तम्मि ते अवस्सं पारं गच्छंति ।

सं. उत्तमैः पुरुषैर्यत्कार्यमारभ्यते, तस्मिंस्तेऽवश्यं पारङ्गच्छन्ति ।

पाठ-20

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **पाणाणमच्चए वि जीवेहिं अकरणिज्जं न कायव्वं, करणीयं च कज्जं न मोत्तव्वं ।**

   सं. प्राणानामत्ययेऽपि जीवैरकरणीयं न कर्तव्यं, करणीयं च कार्यं न मोक्तव्यम् ।

   हि. प्राणान्ते (प्राणों के विनाश में) भी जीवों को अकार्य नहीं करना चाहिए और करने योग्य कार्य को छोड़ना नहीं चाहिए ।

2. प्रा. **धम्मं कुणमाणस्स सहला जंति राईओ ।**

   सं. धर्मं कुर्वतः सफला यान्ति रात्र्यः ।

   हि. धर्म करनेवाले की रात्रियाँ सफल होती हैं ।

3. प्रा. **जेण इमा पुहवी हिंडिऊण दिट्ठा सो नरो नूणं वत्थूणं परिक्खणे वियक्खणो होइ ।**

   सं. येनेमा पृथ्वी हिण्डित्वा दृष्टा, स नरो नूनं वस्तूनां परीक्षणे विचक्षणो भवति ।

   हि. जिसके द्वारा यह पृथ्वी भ्रमण करके देखी गई, वह मनुष्य सचमुच वस्तुओं की परीक्षा में चतुर = कुशल होता है ।

4. प्रा. **कालसप्पेण खाइज्जन्ती काया केण धरिज्जइ ? नत्थि तत्थ कोवि उवाओ ।**

   सं. कालसर्पेण खाद्यमाना काया केन ध्रियेत ? नास्ति तत्र कोऽप्युपायः ।

   हि. कालरूपी सर्प से भक्षण की जानेवाली काया किसके द्वारा धारण की जाय ?, वहाँ कोई भी उपाय नहीं है ।

5. प्रा. **सव्वे जीवा जीविउं इच्छंति, न मरित्तए, तओ जीवा न हंतव्वा ।**

   सं. सर्वे जीवा जीवितुमिच्छन्ति, न मर्तुम्, ततो जीवा न हन्तव्याः ।

   हि. सभी जीव जीने की इच्छा करते हैं, मरने की नहीं, इस कारण जीवों को नहीं मारना चाहिए ।

6. प्रा. **परस्स पीडा न कायव्वा, इइ जेण न जाणिअं, तेण पढिआए विज्जाए किं ?**

सं. परस्य पीडा न कर्तव्या, इति येन न ज्ञातं, तेन पठितया विद्यया किं ?

हि. अन्य को पीड़ा नहीं करनी चाहिए, यह वचन जिसको (जिसके द्वारा) ज्ञात नहीं है, उसके द्वारा पढ़ी हुई विद्या से क्या ?

7. प्रा. मुक्खत्थीहिं जीवदयामओ धम्मो करेअव्वो ।

सं. मोक्षार्थिभिर्जीवदयामयो धर्मः कर्तव्यः ।

हि. मोक्षार्थियों द्वारा जीवदयामय धर्म करने योग्य है ।

8. प्रा. का सत्ती तीए तस्स पुरओ ठाइउं ?

सं. का शक्तिस्तस्यास्तस्य पुरतः स्थातुम् ?

हि. उसके आगे खड़े रहने के लिए उसकी क्या ताकत है ?

9. प्रा. परिच्चइय पोरुसं, अपासिऊण निययकुलं, अगणिऊण वयणीअं, अणालोइऊण आयइं परिचत्तं तेण दव्वलिंगं ।

सं. परित्यज्य पौरुषमदृष्ट्वा निजककुलमगणयित्वा, वचनीयमनालोच्याऽऽयतिं परित्यक्तं तेन द्रव्यलिङ्गम् ।

हि. पुरुषार्थ का त्याग करके, अपना कुल देखे बिना, निंदा की परवाह किये बिना, भविष्य का विचार किये बिना उसके द्वारा साधुवेष का त्याग किया गया ।

10. प्रा. जं जिणेहिं पन्नत्तं तमेव सच्चं, इअ बुद्धी जस्स मणे निच्चलं तस्स सम्मत्तं ।

सं. यज्जिनैः प्रज्ञप्तं तदेव सत्यमिति बुद्धिर्यस्य मनसि तस्य सम्यक्त्वम् निश्चलं ।

हि. जिनेश्वर भगवंतों ने जो कहा है कि सत्य है, ऐसी बुद्धि जिसके मन में है उसका सम्यक्त्व निश्चल है ।

11. प्रा. चोरो धणिणो धणं हरित्तए घरे पविसीअ ।

सं. चोरो धनिनो धनं हर्तुम् गृहे प्राविशत् ।

हि. चोर ने धनवान का धन हरण (चोरी) करने के लिए घर में प्रवेश किया ।

12. प्रा. पच्चूसे जिणे अच्चिय गुरू य वंदित्ता, पच्चक्खाणं च करित्तु पच्छा य भोयणं कुज्जा ।

सं. प्रत्यूषे जिनानर्चित्वा, गुरूंश्च वन्दित्वा, प्रत्याख्यानं च कृत्वा, पश्चाच्च भोजनं कुर्यात् ।

हि. प्रातः काल में जिनेश्वर भगवंतों की पूजा करके, गुरु भगवंतों को वन्दन करके पच्चक्खाण करने के बाद भोजन करना चाहिए ।

13. प्रा. गुरुणा धम्मं कुणमाणाणं सावगाणं, समायरंतीणं साविगाणं उवएसो दिण्णो ।

सं. गुरुणा धर्मं कुर्वद्भ्यः श्रावकेभ्यः, समाचरन्तीभ्यश्च श्राविकाभ्यः उपदेशो दत्तः ।

हि. धर्म करते हुए श्रावकों और धर्म करती हुई श्राविकाओं को गुरु भगवन्त द्वारा उपदेश दिया गया ।

14. प्रा. पिउणा सिक्खीअमाणो पुत्तो सिक्खिज्जन्ती य पुत्ती गुणे लहेज्ज ।

सं. पित्रा शिक्ष्यमाणः पुत्रः शिक्ष्यमाणा च पुत्री गुणान् लभेते ।

हि. पिता द्वारा हितशिक्षा दिया जाता पुत्र और हितशिक्षा दी जाती पुत्री गुणों को प्राप्त करते हैं ।

15. प्रा. सा महादेवी सुराणं रमणीहिं सलहिज्जंती, किन्नरीहिं गाइज्जंती, बुहेहिं थुव्वंती बंधुणा मित्तेण य अभिनंदिज्जंती गब्भमुव्वहइ ।

सं. सा महादेवी सुराणां रमणीभिः श्लाघ्यमाना, किन्नरीभिर्गीयमाना, बुधैः स्तूयमाना, बन्धुना मित्रेण चाभिनन्द्यमाना गर्भमुद्वहति ।

हि. वह महादेवी देवांगनाओं द्वारा प्रशंसा की जाती, किन्नरियों द्वारा गीतगान की जाती, पण्डितों द्वारा स्तुति की जाती, बन्धु और मित्र द्वारा अभिनन्दन की जाती गर्भ को वहन करती है ।

16. प्रा. एगो जायइ जीवो, एगो मरिऊण तह उवज्जेइ ।
एगो भमइ संसारे, एगो च्चिय पावई सिद्धिं ।।1।।

सं. जीवः एको जायते, तथैको मृत्वोत्पद्यते,
एकः संसारे भ्राम्यति, एक एव सिद्धिं प्राप्नोति ।।1।।

हि. जीव अकेला उत्पन्न होता है तथा अकेला मरकर जन्म लेता है, अकेला संसार में भ्रमण करता है, अकेला ही मोक्ष को प्राप्त करता है ।।1।।

17. प्रा. नाणेणं चिय नज्जइ, करणिज्जं तह य वज्जणिज्जं च ।
नाणी जाणइ काउं, कज्जमकज्जं च वज्जेउं ।।2।।

सं. ज्ञानेनैव करणीयं तथा च वर्जनीयं ज्ञायते च ।
ज्ञानी कार्यं कर्तुम्, अकार्यं च वर्जयितुं जानाति ।।2।।

हि. ज्ञान द्वारा ही करने योग्य तथा न करने योग्य का बोध होता है, ज्ञानी करणीय को करने और अकरणीय को नहीं करने के विषय में जानता है ।।2।।

18. प्रा. जं जेण पावियव्वं, सुहमसुहं वा जीवलोयम्मि ।
तं पाविज्जइ नियमा, पडियारो नत्थि एयस्स ।।3।।

सं. जीवलोके येन यत् सुखमसुखं वा प्राप्तव्यम् ।
तन्नियमात् प्राप्यते, एतस्य प्रतिकारो नाऽस्ति ।।3।।

हि. जीवलोक में जिसके द्वारा सुख अथवा दु:ख प्राप्त करने योग्य है वह नियम से प्राप्त होता है उसका प्रतिकार नहीं हो सकता है ।।3।।

19. प्रा. जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता ।
परिणीआए दंडो, जुवइपिया दुक्खिओ निच्चं ।।4।।

सं. जायमानायां शोक:, वर्द्धमानायां च चिंता वर्द्धते ।
परिणीतायां दण्ड:, युवतिपिता दु:खितो नित्यम् ।।4।।

हि. (पुत्री) उत्पन्न होने पर शोक होता है, बड़ी होने पर चिन्ता बढ़ती है, विवाह होने पर दण्ड मिलता है, इस प्रकार स्त्री का पिता हमेशा दु:खी होता है ।।4।।

20. प्रा. जं चिय खमइ समत्थो, धणवंतो जं न गव्विरो होइ ।
जं च सुविज्जो नमिरो, तिसु तेसु अलंकिया पुहवी ।।5।।

सं. यदेव समर्थ: क्षमते, धनवान् यन्न गर्ववान् भवति ।
यच्च सुविद्यो नम्र:, त्रिभिस्तै: पृथ्व्यलङ्कृता ।।5।।

हि. जो व्यक्ति स्वयं समर्थ होते हुए भी सहन करता है, जो धनवान होते हुए भी अभिमानी नहीं होता है, जो ज्ञानी होते हुए भी नम्र है, इन तीनों द्वारा पृथ्वी सुशोभित है ।।5।।

21. प्रा. लज्जा चत्ता सीलं च खंडिअं, अजसघोसणा दिण्णा ।
जस्स कए पिअसहि ! सो चेअ जणो अजणो जाओ ।।6।।

सं. लज्जा त्यक्ता, शीलं च खंडितम्, अयशोघोषणा दत्ता ।
प्रियसखि ! यस्य कृते से एव जनोऽजनो जात: ।।6।।

हि. हे प्रियसखि ! जिसके लिए लज्जा छोड़ी, शील खण्डित किया और अपयश की घोषणा की, वही मनुष्य (अब) दुर्जन हुआ है ।।6।।

22. प्रा. जत्थ रमणीय रूवं, रमणिज्जं पेच्छिऊण अमरीओ ।
लज्जंतीओ व्व चिंताइ, कहवि निद्दं न पावंति ।।7।।

सं. यत्र रमणीनां रमणीयं रूपं प्रेक्ष्याऽऽमर्यः ।
लज्जमाना इव चिन्तया, कथमपि निद्रां न प्राप्नुवन्ति ।।7।।

हि. जहाँ स्त्रियों के मनोहर रूप को देखकर मानों देवियाँ शर्मिन्दा होती हों वैसी चिन्ता द्वारा किसी भी प्रकार से निद्रा को प्राप्त नहीं करती हैं ।।7।।

23. प्रा. गायंता सज्झायं, झायंता धम्मझाणमकलंकं ।
जाणंता मुणियव्वं, मुणिणो आवस्सए लग्गा ।।8।।

सं. स्वाध्यायं गायन्तः, अकलङ्कं धर्मध्यानं ध्यायन्तः ।
जानन्तो ज्ञातव्यं, मुनय आवश्यके लग्नाः ।।8।।

हि. स्वाध्याय करनेवाले, निष्कलंक धर्मध्यान करनेवाले, जानने योग्य पदार्थों को जाननेवाले मुनि आवश्यक क्रिया में लग गये=(करने लगे) ।।8।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. जम्बूकुमार ने कुमारावस्था में अपनी सब ऋद्धि का त्याग करके चारित्र ग्रहण किया ।

प्रा. जंबूकुमारेण कुमरत्तंमि अप्पकेरं सव्वं इड्ढिं चइत्ता चारित्तं गिण्हीअं ।

सं. जम्बूकुमारेण कुमारत्वे आत्मीयां सर्वामृद्धिं त्यक्त्वा चारित्रं गृहीतम् ।

2. हि. मैं शास्त्र पढ़ने के लिए गुरु भगवान के पास जाता हूँ ।

प्रा. हं सत्थाइं अहिज्जिउं गुरुं गच्छामि ।

सं. अहं शास्त्राण्यध्येतुं गुरु गच्छामि ।

3. हि. गुरुं प्रमाद करते हुए साधु को पढ़ने के लिए कहते है ।

प्रा. गुरुं प्रमज्जंतं मुणिं पढउं कहेइ ।

सं. गुरुः प्रमाद्यन्तं मुनिं पठितुं कथयति ।

4. हि. रात्रि के प्रथम प्रहर में सोकर और अन्तिम प्रहर में जगकर किया जानेवाला अभ्यास स्थिर बनता है ।

प्रा. रत्तीए पढमे जामे सुविऊण चरिमे य जामे जग्गिऊण कीरन्तो अब्भासो थिरो होइ ।

सं. रात्रेः प्रथमे यामे सुप्त्वा, चरमे च यामे जागरित्वा क्रियमाणोऽभ्यासः स्थिरो भवति ।

5. हि. **मनुष्यों में सुवर्णकार, पक्षियों में कौआ और पशुओं में सियार कपटी शठ होता है ।**

प्रा. जणेसु सुवण्णगारो, पक्खीसु वायसो, पसुसुं च सियालो सढो होइ ।

सं. जनेषु सुवर्णकारः पक्षिषु वायसः, पशुषु च शृगालः शठो भवति ।

6. हि. **पाठशाला में अध्ययन करती कन्याओं को तुम इनाम दो ।**

प्रा. पाठसालाए अज्झयणं कुणंतीणं कन्नाणं पाहुडं देह ।

सं. पाठशालायामभ्यासं कुर्वन्तीभ्यः कन्याभ्यः प्राभृतं दत्त ।

7. हि. **मनुष्यों की आधि दूर करने हेतु शास्त्रों के श्रवण बिना अन्य कोई उपाय नहीं है ।**

प्रा. जणाणं आहिं हरित्त सत्थाणं सवणं विणा अन्नो को वि उवाओ नत्थि ।

सं. जनानामाधिं हर्तुं शास्त्राणां श्रवणं विना कोऽप्युपायो नाऽस्ति ।

8. हि. **उसने अग्नि द्वारा जलती हुई स्त्री का रक्षण किया ।**

प्रा. अग्गिणा डज्झंती इत्थी तेण रक्खिआ ।

सं. अग्निना दह्यमाना स्त्री तेन रक्षिता ।

9. हि. **राम द्वारा कही जाती कथा सुनकर उसने वैराग्य प्राप्त किया ।**

प्रा. रामेण कहिज्जंति कहं सुणित्ता सो वेरग्गं पावीअ ।

सं. रामेण कथ्यमानां कथां श्रुत्वा सो वैराग्यं प्राप्नोत् ।

10. हि. **जानने योग्य भावों को तुम जानो ।**

प्रा. जाणियव्वे भावे तुमं जाणसु ।

सं. ज्ञातव्यान् भावांस्त्वं जानीहि ।

11. हि. **मूर्ख व्यक्ति ने अपना वस्त्र अग्नि में डाला और वह जल गया ।**

प्रा. मुरुक्खेण जणेण अप्पकेरं वत्थं अग्गिंसि खित्तं, तं च दड्ढं ।

सं. मूर्खेण जनेनाऽऽत्मीयं वस्त्रमग्नौ क्षिप्तम् तच्च दग्धम् ।

12. हि. **साधुओं की सेवा द्वारा उसके दिन व्यतीत हुए ।।12।।**

प्रा. साहूणं सेवाए तस्स दिणाइं वोलीणाइं ।

सं. साधूनां सेवया तस्य दिनान्यतिक्रान्तानि ।

13. हि. जीवों का वध करता हुआ और मांस का भक्षण करता हुआ मनुष्य राक्षस कहलाता है ।

प्रा. जीवाणं वहं कुणंतो, मंसं च भक्खंतो जणो रक्खसो कहिज्जइ ।

सं. जीवानां वधं कुर्वन् मांसं च भक्षयन्नरो राक्षसः कथ्यते ।

14. हि. वह पापों की आलोचना लेने के लिए गुरु के पास जाते हुए शरमाता है ।

प्रा. सो पावाणं आलोयणं गिण्हउं गुरुं वच्चंतो लज्जइ ।

सं. स पापानामालोचनां गृहीतुं गुरुं व्रजन् लज्जते ।

15. हि. वह समाधिपूर्वक मृत्यु पाकर स्वर्ग में देव हुआ ।

प्रा. सो समाहीए मच्चुं पावित्ता सग्गे देवो हवीअ ।

सं. स समाधिना मृत्युं प्राप्य स्वर्गे देवोऽभवत् ।

16. हि. रोते हुए बालक को तुम हैरान मत करो ।

प्रा. रुवंतं बालं तुं मा पीडय ।

सं. रोदन्तं बालं त्वं मा पीडय ।

17. हि. हँसता हुआ बालक सब को प्रिय लगता है ।

प्रा. हसंतो बालो सव्वस्स पिओ होइ ।

सं. हसन् बालः सर्वस्य प्रियो भवति ।

18. हि. ग्रहण करने योग्य को ग्रहण कर, त्याग करने योग्य का त्याग कर ।

प्रा. घेत्तव्वं गिण्हसु, चइयव्वं चयसु ।

सं. गृहीतव्यं गृहाण, त्यक्तव्यं त्यज ।

पाठ-21

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. देविंदेहिं अच्चिअं सिरिमहावीरं सिरसा मणसा वयसा वंदे ।**
   सं. देवेन्द्रैरर्चितं श्रीमहावीरं शिरसा मनसा वचसा वन्दे ।
   हि. देवेन्द्रों द्वारा पूजित-पूजा हुए श्रीमहावीर को मस्तक से, मन से और वचन से मैं वन्दन करता हूँ ।

2. **प्रा. महासईए सीयाए अप्पाणं सोहंतीए निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ ।**
   सं. महासत्या सीतयाऽऽत्मानं शोधयन्तया निजशीलबलेनाऽग्निजलपूरीकृतः ।
   हि. स्वयं को शुद्ध करती महासती सीता द्वारा अपने शील के प्रभाव से अग्नि को जल से पूर्ण किया गया ।

3. **प्रा. गुरुया अप्पणो गुणे अप्पणा कयाइ न वण्णंति ।**
   सं. गुरुका आत्मनो गुणानात्मना कदापि न वर्णयन्ति ।
   हि. महापुरुष अपने गुणों की स्वयं कभी भी प्रशंसा नहीं करते हैं ।

4. **प्रा. नराणं सुहं वा दुहं वा को कुणइ ? अप्पणच्चिय कयाइं कम्माइं समयंमि परिणमंति ।**
   सं. नराणां सुखं वा दुःखं वा कः करोति ? आत्मनैव कृतानि कर्माणि समये परिणमन्ति ।
   हि. मनुष्यों को सुख अथवा दुःख कौन देता है ? स्वयं किये हुए कर्म ही योग्य समय में परिणमित होते हैं ।

5. **प्रा. जइ उ तुम्हे अप्पणो रिद्धिं इच्छह, तो निच्चंपि जिणेसरं आराहह ।**
   सं. यदि तु यूयमात्मन ऋद्धिमिच्छथ, ततो नित्यमपि जिनेश्वरमाराधयत ।
   हि. जो तुम सब अपनी ऋद्धि की इच्छा रखते हो तो सदा जिनेश्वर भगवन्त की आराधना करो ।

6. **प्रा. जो कोहेण अभिभूओ जीवे हणइ, सो इह जम्मे परम्मि य जम्मणे वि अप्पणो वहाइ होइ ।**

सं. यः क्रोधेनाऽभिभूतो जीवान् हन्ति, स इह जन्मनि परस्मिंश्च जन्मन्यप्याऽऽत्मनो वधाय भवति ।

हि. क्रोध से पराभूत जो (जन) जीवों को मारता है, वह इस जन्म में और पर जन्म में भी अपने वध के लिए होता है ।

7. प्रा. नायपुत्तो भयवं महावीरो सिद्धत्थस्स रण्णो अवच्चं होत्था ।

सं. ज्ञातपुत्रो भगवान् महावीरः सिद्धार्थस्य राज्ञोऽपच्यमभवत् ।

हि. ज्ञातपुत्र भगवान् महावीर सिद्धार्थ राजा के पुत्र थे ।

8. प्रा. अरिहंता मंगलं कुज्जा, अरिहंते सरणं पवज्जामि ।

सं. अर्हन्तो मङ्गल कुर्युः, अर्हतः शरणं प्रपद्ये ।

हि. अरिहन्त मंगल करें, अरिहन्तों की शरण स्वीकारता हूँ ।

9. प्रा. गयणे अच्छरसाणं नच्चं दीसइ ।

सं. गगने ऽप्सरसां नृत्यं दृश्यते ।

हि. आकाश में अप्सराओं का नृत्य दिखाई देता है ।

10. प्रा. भिसया तणुस्स वाहिं अवणेंति, लोगोत्तमा य भगवंता सूरिणो य मणसो आहिणो हरंति ।

सं. भिषजस्तनोः व्याधीनपनयन्ति, लोकोत्तमाश्च भगवन्तस्सूरयश्च मनस आधीन् हरन्ति ।

हि. वैद्य शरीर के रोग दूर करते हैं, लोक में उत्तम-पूज्य भगवान् और आचार्य मन की पीड़ाओं को दूर करते हैं ।

11. प्रा. सरए इत्थीओ घराणं अंगणे अच्छरसाउव्व गाणं कुणंति नच्चंति य ।

सं. शरदि स्त्रियो गृहाणामङ्गणेऽप्सरस इव गानं कुर्वन्ति नृत्यन्ति च ।

हि. शरद् ऋतु में स्त्रियाँ घरों के आंगन में अप्सरा की भाँति गान करती हैं और नृत्य करती हैं ।

12. प्रा. मुणओ पाउसे एगाए वसहीए चिट्ठंति ।

सं. मुनयः प्रावृष्येकस्यां वसत्यां तिष्ठन्ति ।

हि. मुनिजन वर्षाकाल में एक स्थान में रहते हैं ।

13. प्रा. जए दयालवो जणा बहुआ न हवंति ।

सं. जगति दयालवो जना बहवो न भवन्ति ।

हि. जगत् में दयालु व्यक्ति ज्यादा नहीं होते हैं ।

14. प्रा. कलिम्मि सिरिमंता लोगा पायेण गव्विरा निद्दया य संति ।

सं. कलौ श्रीमन्तो लोकाः प्रायो गर्विष्ठाः निर्दयाश्च सन्ति ।

हि. कलियुग में धनवान लोग प्रायः अभिमानी और निर्दय होते हैं ।

15. प्रा. दीनत्तणे वि जो उवयरेइ, सो धम्मवंतो जाणेअव्वो ।

सं. दीनत्वेऽपि य उपकरोति, स धर्मवान् ज्ञातव्यः ।

हि. दीनता (गरीब अवस्था) में भी जो उपकार करता है, उसे धार्मिक जानना ।

16. प्रा. गामिल्लाणं तत्ताइं न रोएंति ।

सं. ग्राम्येभ्यस्तत्वानि न रोचन्ते ।

हि. ग्राम्यजन को तत्त्व नहीं रूचते हैं ।

17. प्रा. पुरिल्ला लोगा तत्ताणं नाणे कुसला संति ।

सं. पौराः लोकास्तत्वानां ज्ञाने कुशलास्सन्ति ।

हि. नगरवासी लोग तत्त्वों के ज्ञान में कुशल होते हैं ।

18. प्रा. दुहिअएसु नरेसु सइ दयं कुज्जा ।

सं. दुःखितकेषु नरेषु सदा दयां कुर्यात् ।

हि. दुःखी व्यक्तियों पर हमेशा दया करनी चाहिए ।

19. प्रा. धणवंताणं पि लच्छी पाउसस्स विज्जुव्व चवला नायव्वा ।

सं. धनवतामपि लक्ष्मी प्रवृषो विद्युदिव चपला ज्ञातव्या ।

हि. धनवानों की लक्ष्मी भी वर्षाकाल की बिजली की तरह चंचल जाननी ।

20. प्रा. इमं भोयणं विसमइयं अत्थि, तओ मा खाएह ।

सं. इदं भोजनं विषमयमस्ति, ततो मा खाद ।

हि. यह भोजन विषमिश्रित है, इसलिए तुम न खाओ ।

21. प्रा. राइक्कं दव्वं पयाए हिआय होइअव्वं ।

सं. राजकीयं द्रव्यं प्रजायाः हिताय भवितव्यम् ।

हि. राजा सम्बन्धी द्रव्य प्रजा के हित के लिए होना चाहिए ।

22. प्रा. जीवाणं अप्पणयं नाणं दंसणं चरित्तं च अत्थि, अन्नं सव्वमणिच्चं, तत्तो ताणि चिय सेविज्जाह ।

सं. जीवानामात्मीयं ज्ञानं दर्शनं चारित्रं च सन्ति, अन्यत् सर्वमनित्यं, ततस्तान्येव सेवध्वम् ।

हि. जीवों का ज्ञान, दर्शन और चारित्र ही स्वयं का अपना है, अन्य सब अनित्य है, इसलिए उनका ही सेवन करो ।

23. प्रा. जे निरत्थयं पाणिवहं कुणंति, ताणं धिरत्थु ।

सं. ये निरर्थकं प्राणिवधं कुर्वन्ति, तेषां धिगस्तु ।

हि. जो निरर्थक जीवहिंसा करते हैं, उनको धिक्कार हो ।

24. प्रा. गावीणं दुद्धं बालयाणं सोहणं ति जणा वयंति ।

सं. गवां दुग्धं बालकानां शोभनमिति जना वदन्ति ।

हि. गायों का दूध बालकों के लिए अच्छा है, इस प्रकार लोग कहते हैं ।

25. प्रा. तं एरिसेहिं कम्मेहिं अप्पं निरए माइं पक्खिवसु ।

सं. त्वमीदृशैः कर्मभिरात्मानं नरके मा प्रक्षिप ।

हि. तुम ऐसे कार्यों द्वारा आत्मा (स्वयं) को नरक में मत डालो ।

26. प्रा. दुज्जणाणं गिराए अमयमत्थि, हियए उ विसं ।

सं. दुर्जनानां गिर्यमृतमस्ति, हृदये तु विषम् ।

हि. दुर्जनों की वाणी में अमृत है, लेकिन हृदय में जहर है ।

27. प्रा. पावा अप्पणो हिअं पि न पिच्छंति, न सुणंति य ।

सं. पापात्मानः स्व हितमपि न प्रेक्षन्ते, न श्रृणवन्ति ।

हि. पापी व्यक्ति अपना हित देखते भी नहीं हैं और सुनते भी नहीं हैं ।

28. प्रा. जो सीलवंतो जिइंदियो य होइ, तस्स तेओ जसो धिई य वड्ढंते ।

सं. यः शीलवान् जितेन्द्रियश्च भवति, तस्य तेजो यशो धृतिश्च वर्धन्ते ।

हि. जो शीलवान और जितेन्द्रिय होता है, उसके तेज, यश और धैर्य बढ़ते हैं ।

29. प्रा. नहस्स सोहा चंदो, सरोयाइं सरस्स य ।
तवसो उवसमो य, मुहस्स य चक्खू नक्को य ।।1।।

सं. नभसः शोभा चन्द्रः, सरोजानि सरसश्च ।
तपस उपशमश्च, मुखस्य च चक्षुषी नासिका च ।।1।।

हि. आकाश की शोभा चन्द्र, सरोवर की (शोभा) कमल, तप की (शोभा) उपशम, मुख की शोभा आँख और नाक हैं ।।1।।

30. प्रा. **राइणा वुत्तं-भयवं वेसासु मणं कयावि न करिस्सं ।**
सं. राज्ञोक्तं-भगवन् वेश्यासु मनः कदापि न करिष्यामि ।
हि. राजा के द्वारा कहा गया-हे भगवन्त ! मैं कभी भी वैश्याओं में आसक्ति नहीं करूँगा ।

31. प्रा. **अप्पस्स इव सव्वेसुं पाणीसुं जो पासइ, सच्चिय पासेइ ।**
सं. आत्मन इव सर्वेषु प्राणीषु यः पश्यति, स एव पश्यति ।
हि. जो स्वयं की तरह सभी प्राणियों को देखता है, वह ही देखता है ।

32. प्रा. **जीवाणं अजीवाणं च सण्हं सरूवं जित्तियं जारिसं च जिणिंदस्स पवयणाए अत्थि, तेत्तिलं तारिसं च सरूवं न अन्नह दंसणे ।**
सं. जीवानामजीवानां च सूक्ष्मस्वरूपं यावद् यादृशं च जिनेन्द्रस्य प्रवचनेऽस्ति, तावत् तादृशं च स्वरूपं नान्यत्र दर्शने ।
हि. जीवों और अजीवों का सूक्ष्म स्वरूप जितना और जैसा जिनेश्वर के सिद्धान्त में है, उतना और वैसा स्वरूप अन्य दर्शन में नहीं है ।

33. प्रा. **एवं जीवंताणं, कालेण कयाइ होइ संपत्ती ।**
जीवाणं मयाणं पुण, कत्तो दींहमि संसारे ? ।।2।।
सं. एवं जीवतां जीवानां कालेन कदाचित् संपत्तिर्भवति ।
मृतानां जीवानां पुनः, दीर्घे संसारे कुतः ? ।।2।।
हि. इस प्रकार जिन्दे प्राणियों को कालक्रम से कदाचित् संपत्ति हो सकती है, लेकिन मेरे हुए प्राणियों को पुनः इस दीर्घ संसार में (संपत्ति) कहाँ से हो ।।2।।

34. प्रा. **पाणेसु धरंतेसु य, नियमा उच्छाहसत्तिममुयंतो ।**
पावेइ फलं पुरिसो, नियववसायाणुरूवं तु ।।3।।
सं. प्राणेषु धरत्सु च, नियमादुत्साहशक्तिममुञ्चन् ।
पुरुषो निजव्यवसायानुरूपं तु फलं प्राप्नोति ।।3।।
हि. प्राण धारण करने पर निश्चय उत्साहशक्ति का त्याग नहीं करते हुए पुरुष अपने व्यवसाय के अनुरूप फल प्राप्त करता है ।।3।।

35. प्रा. **दारं च विवाहंतो, भममाणो मंडलाइ चत्तारि ।**
सूएइ अप्पणो तह, वहूइ चउगइभवे भमणं ।।4।।

सं. दारांश्च विवाहयन्, चत्वारि मण्डलानि भ्रमन् ।
आत्मनस्तथा वध्वाश्चतुर्गतिभवे भ्रमणं सूचयति ।।4।।

हि. स्त्री के साथ शादी करते हुए चार मण्डल (फेरा) घूमते हुए अपने तथा बहू के चार गतिरूप संसार में भ्रमण को सूचित करता है ।।4।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. **हि. प्रभात में गोपाल गायों को दोहता है ।**
   प्रा. पच्चूसे गोवा गावीओ दोहेंति ।
   सं. प्रत्यूषे गोपा गा दुहन्ति ।
2. **हि. शुभ कर्मवाले जीव शुभकार्य करके परलोक में सुखी होते हैं ।**
   प्रा. सुकम्मा जीवा सुहाइं किच्चाइं करित्ता, परलोए सुहिणो हवंति ।
   सं. सुकर्माणो जीवाः शुभानि कृत्यानि कृत्वा, परलोके सुखिनो भवन्ति ।
3. **हि. हे भगवन् ! आप इस असार संसार में से हमारे जैसे दुःखियों का उद्धार करो ।**
   प्रा. भयवं ! भवंतो इमत्तो असारत्तो संसारत्तो अमाहरिसे दुहिणो उद्धरेइ ।
   सं. भगवन् ! भवानस्मादसारात् संसारादस्मादृशान् दुःखिन उद्धरतु ।
4. **हि. शत्रुओं से प्रजा का रक्षण करने के लिए राजपुरुषों ने नगर के बाहर खाई बनाई ।**
   प्रा. सत्तुसुंतो पयं रक्खिउं रायपुरिसा नयरत्तो बहिं परिहं करीअ ।
   सं. शत्रुभ्यः प्रजां रक्षितुं राजपुरुषा नगराद् बहिः परिखामकुर्वन् ।
5. **हि. पत्थर जैसे ह्रदय को धारण करनेवाले ये मनुष्य बैलों को बहुत पीडा देते हैं ।**
   प्रा. गावव्व हिययवंता इमे जणा बइल्ले अईव पीलंति ।
   सं. ग्रावाण इव ह्रदयवन्त इमे जना बलीवर्दानतीव पीडयन्ति ।
6. **हि. मनुष्य अन्धकार में चक्षु द्वारा देखने के लिए समर्थ नहीं होते हैं ।**
   प्रा. मणूसा तमंसि चक्खूहिं देक्खिउं पक्कला न हवंति ।
   सं. मनुष्यास्तमसि चक्षुर्भ्यां द्रष्टुं समर्थाः न भवन्ति ।
7. **हि. लोग अश्विन महीने में प्रतिपदा से प्रारम्भ कर पूर्णिमा पर्यन्त महोत्सव करते हैं ।**

प्रा. जणा आसिणे मासे पाडिवयाए आरब्भ पुण्णमं जाव महूसवं कुणंति ।

सं. जना आश्विने मासे प्रतिपद आरम्य पूर्णिमां यावन् महोत्सवं कुर्वन्ति ।

8. हि. **विद्वान मनुष्य अपने गुणों द्वारा सर्वत्र पूजे जाते हैं ।**

प्रा. विउसा जणा अप्पणो गुणेहिं सव्वत्थ पूइज्जेइरे ।

सं. विद्वांसो जना आत्मनो गुणैः सर्वत्र पूज्यन्ते ।

9. हि. **सोनी कसौटी पर सुवर्ण की परीक्षा करता है ।**

प्रा. सुवण्णगारो निहसंमि सुवण्णं परिक्खइ ।

सं. सुवर्णकारो निकषे सुवर्णं परीक्षते ।

10. हि. **कुशल वैद्य भी त्रुटित आयुष्य को जोड़ने के लिए समर्थ नहीं होता हैं ।**

प्रा. सुविज्जो वि तुट्टिअं आउसं संधिउं पक्कलो न होइ ।

सं. सुवैद्योऽपि त्रुटितमायुः संधातुं पक्वलो न भवति ।

11. हि. **तुम्हारे जैसे स्नेहवाले पुरुषों को हमारे जैसे गरीब पर प्रीति करनी चाहिए ।**

प्रा. तुम्हारिसा नेहालवो पुरिसा अम्हारिसेसुं दीणेसुं पीइं कुज्जा ।

सं. युष्मादृशाः स्नेहालवः पुरुषा अस्मादृशेषु दीनेषु प्रीतिं कुर्यात् ।

12. हि. **सभी इन्द्र तीर्थंकरों के जन्म समय में मेरुपर्वत पर तीर्थंकरों को ले जाकर जन्म महोत्सव करते हैं ।**

प्रा. सव्वे इंदा तित्थयराणं जम्मम्मि तित्थयरे मेरुम्मि नेऊण जम्ममहूसवं कुणंति ।

सं. सर्वे इन्द्रास्तीर्थङ्कराणां जन्मनि तीर्थंकरान् मेरौ नीत्वा जन्मोत्सवं कुर्वन्ति ।

13. हि. **लोगों को सम्पत्ति में गर्विष्ट नहीं बनना चाहिए और आपत्ति में (दुःख में) मुर्झाना नहीं चाहिए ।**

प्रा. जणा संपयाए गव्विरा न हवेज्ज, आवयाए य णाइं मुज्झेज्ज ।

सं. जनाः सम्पदि गर्विष्ठा न भवेयुः आपदि च न मुह्येयुः ।

14. हि. **जीव अपने ही कर्मों द्वारा सुख और दुःख प्राप्त करता है, दूसरा देता है, वह मिथ्या है ।**

प्रा. जीवो अप्पस्स कम्मेहिं चिय सुहं च दुहं च पावइ, अन्नो देइ, तं मिच्छा अत्थि ।

सं. जीव आत्मनः कर्मणैव सुखं दुःखं च प्राप्नोति, अन्यो ददाति तन् मिथ्याऽस्ति ।

15. हि. गुरुओं के आशीर्वाद से कल्याण ही होता है, अतः उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।

प्रा. गुरूणं आसीसा कल्लाणं चिय होइ, तत्तो तेसिं आणा न अवमण्णिअव्वा ।

सं. गुरूणामाशिषा कल्याणं चैव भवति, ततस्तेषामाज्ञा ननाऽवमन्तव्या ।

16. हि. तपश्चर्या से कर्मों की निर्जरा होती है और क्रोध से कर्मों का बन्ध होता हैं ।

प्रा. तवसा कम्माइं निज्जरेंति, कोहेण य कम्माइं बंधिज्जंति ।

सं. तपसा कर्माणि क्षीयन्ते, क्रोधेन च कर्माणि बध्यन्ते ।

17. हि. शास्त्र पढे हुए मूर्ख बहुत होते हैं, लेकिन जो आचारवाले हैं वे ही पण्डित कहलाते हैं ।

प्रा. सत्थं पढिअवंता मुरुक्खा बहवो, किंतु जे आयारवंता संति ते च्चिय अहिण्णउ कहिज्जंति ।

सं. शास्त्रं पठितवन्तो मूर्खा बहवो भवन्ति, किं तु यो आचारवन्तः, ते एवाऽभिज्ञाः कथ्यन्ते ।

18. हि. बन्धु ने राजा को कहा कि–तुम राज्य का त्याग करो और यहाँ मत ठहरो ।

प्रा. बंधु रायं कहीअ, तुं रज्जं चयहि, इत्थ य मा चिट्ठसु ।

सं. बन्धुः राजानमकथयत्त्वं राज्यं त्यज, अत्र च मा तिष्ठ ।

19. हि. अच्छी तरह पालन किया जाता राज्य राजा को बहुत धन और कीर्ति अर्पण करता है ।

प्रा. सुट्ठु पालिज्जंतं रज्जं रायाणस्स बहुं धणं जसं च अप्पेइ ।

सं. सुष्ठु पाल्यमानं राज्यं राज्ञो बहुं धनं यशश्चाऽर्पयति ।

20. हि. वृद्धावस्था में शरीर की सुन्दरता नष्ट होती है ।

प्रा. वुड्ढत्तणे सरीरस्स सुंदरत्तणं नस्सइ ।

सं. वृद्धत्वे शरीरस्य सुन्दरत्वं नश्यति ।

21. हि. दूसरों के दुःख सुनकर महात्माओं का मन दयालु बनता है ।

प्रा. पारकेराइं दुक्खाइं सुणित्ता महप्पाणं चित्तं दयालुं होइ ।

सं. परकीयानि दुःखानि श्रुत्वा महात्मनां चित्तं दयालु भवति ।

पाठ-22

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. पावकम्मं नेव कुज्जा न कारवेज्जा ।**
   सं. पापकर्म नैव कुर्यात् न कारयेत् ।
   हि. पापकर्म नहीं करना और नहीं कराना चाहिए ।
2. **प्रा. पाइयकव्वं लोए कस्स हियय़ं न सुहावेइ ।**
   सं. प्राकृतकाव्यं लोके कस्य हृदयं न सुखयति ।
   हि. प्राकृतकाव्य लोक में किसके हृदय को सुख नहीं देता है ।
3. **प्रा. बलवंता पंडिया य जे केवि नरा संति ते वि महिलाए अंगुलिहिं नच्चाविज्जंति ।**
   सं. बलवन्तः पण्डिताश्च ये केऽपि नरास्सन्ति, तेऽपि महिलाया अंगुलीभिर्नर्त्यन्ते ।
   हि. बलवान और पण्डित जो कोई भी व्यक्ति हैं, वे भी स्त्री की अंगुलियों द्वारा नचाये जाते हैं ।
4. **प्रा. अहं वेज्जोम्हि, फेडेमि सीसस्स वेयणं, सुणावेमि बहिरं, अवणेमि तिमिरं, पणासेमि खसरं, उम्मूलेमि वाहिं, पसमेमि सूलं, नासेमि जलोयरं च ।।4।।**
   सं. अहं वैद्योऽस्मि, स्फेटयामि शीर्षस्य वेदनाम्, श्रावयामि बधिरम्, अपनयामि तिमिरम्, प्रणाशयामि कसरम्, उन्मूलयामि व्याधिम्, प्रशाम्यामि शूलम्, नाशयामि जलोदरं च ।।4।।
   हि. मैं भिषक् वैद्य हूँ, मस्तक की वेदना को दूर करता हूँ, बधिर को सुनाता हूँ (सुनने योग्य करता हूँ), आँख का रोग दूर करता हूँ, विकार को नष्ट करता हूँ, व्याधि (पीड़ा) को उखेड़ता हूँ, (मूल से नष्ट करता हूँ), शूल को शान्त करता हूँ और जलोदर का नाश करता हूँ ।।4।।
5. **प्रा. साहूणं दंसणं पि हि नियमा दुरियं पणासेइ ।**
   सं. साधूनां दर्शनमपि हि नियमाद् दुरितं प्रणाशयति ।
   हि. साधु भगवन्तों का दर्शन भी नियम से पाप का नाश करता है ।
6. **प्रा. रण्णा सुवण्णगारे वाहराविउण अप्पणो मवडम्मि वइराइं वेडुज्जाइं रयणाणि य रयावीअईअ ।**

सं. राज्ञा सुवर्णकारान् व्याहार्याऽऽत्मनो मुकुटे वज्राणि वैडूर्याणि रत्नानि चाऽरच्यन्त ।

हि. राजा ने सुवर्णकारों को बुलाकर अपने मुकुट में वज्र और वैडूर्यरत्नों को मण्डित किया ।

7. प्रा. संपइ नरिंदेण सयलाए पिच्छीए जिणेसराणं चेइयाइं कराविआइं ।

सं. सम्प्रति नरेन्द्रेण सकलायां पृथ्व्यां जिनेश्वराणां चैत्यानि कारितानि ।

हि. सम्प्रति राजा ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर जिनेश्वर भगवंतों के मन्दिर करवाये ।

8. प्रा. तवस्सी भिक्खू ण छिंदे, ण छिंदावए, ण पए, ण पयावए ।

सं. तपस्वी भिक्षुर्न छिन्द्यात्, न छेदयेत्, न पचेत्, न पाचयेत् ।

हि. तपस्वी भिक्षु (किसी का) छेद करे नहीं, (किसी के पास) छेद करवाये नहीं, (स्वयं) पकाये नहीं और (किसी के द्वारा भी) पकवाये नही ।

9. प्रा. समणोवासगो पइट्ठाए महोच्छवे सव्वे साहम्मिए भुंजावेईअ ।

सं. श्रमणोपासकः प्रतिष्ठाया महोत्सवे सर्वान् साधर्मिकानभोजयत् ।

हि. श्रावक ने प्रतिष्ठा के महोत्सव में सभी साधर्मिकों को भोजन करवाया ।

10. प्रा. जइ पिआ पुत्ते सम्मं पढावंतो, तो वुड्ढत्तणे सो किं एवंविहं दुहं लहेंतो ?

सं. यदि पिता पुत्रान् सम्यगपाठयिष्यत्, ततो वृद्धत्वे स किमेवंविधं दुःखमलप्स्यत् ?

हि. जो पिता ने पुत्रों को अच्छी तरह पढाया होता, तो वृद्धावस्था में वह क्या इस प्रकार के दुःख प्राप्त करता ?

11. प्रा. नरिंदेण तत्थ गिरिम्मि चेइअं निम्मविअं ।

सं. नरेन्द्रेण तत्र गिरौ चैत्यं निर्मापितम् ।

हि. राजा द्वारा वहाँ पर्वत पर मन्दिर बनवाया गया ।

12. प्रा. खमियव्वं खमावियव्वं, उवसमियव्वं उवसमावियव्वं, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तओ अप्पणा चेव उवसमियव्वं ।

सं. क्षन्तव्यं क्षमितव्यम्, उपशान्तव्यमुपशमितव्यम्, य उपशाम्यति तस्यास्त्याराधना, यो नोपशाम्यति तस्स नास्त्याराधना, तत आत्मनैवोपशान्तव्यम् ।

हि. क्षमा रखनी चाहिए और क्षमा करनी चाहिए, शान्त बनना चाहिए और शान्त करना चाहिए । जो उपशान्त बनता है उसकी आराधना है, जो उपशान्त नहीं बनता है उसकी आराधना नहीं है अतः स्वयं अवश्य उपशान्त बनना चाहिए ।

13. प्रा. **एरिसा कन्नगा परस्स दाउण अप्पणो गेहाओ किं निस्सारिज्जइ ? सव्वहा न जुत्तमेयं ।**

सं. ईदृशी कन्या परस्मै दत्वाऽऽत्मनो गृहात् किं निस्सार्येत ? सर्वथा न युक्तमेतद् ।

हि. ऐसी कन्या दूसरे को देकर अपने घर से क्यों बाहर निकालें ? यह सर्वथा योग्य नहीं है ।

14. प्रा. **अहो कट्ठं कट्ठं वासुदेवपुत्तो होऊण सयलजणाणं मणवल्लहं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि ।**

सं. अहो कष्टं कष्टं वासुदेवपुत्रो भूत्वा सकलजनानां मनोवल्लभं कनिष्ठं भ्रातरं विनाशयिष्यामि ।

हि. अहो दुःख है दुःख है कि वासुदेव का पुत्र होकर सभी लोगों के मन को प्रिय छोटे भाई (लघु भ्राता) का मैं विनाश करूंगा ।

15. प्रा. **हेमचंदसूरिणो पासे देवाणं सरूवं मुणिउण हं सव्वत्थ वि तित्थयराणं मंदिराइं कराविस्सामि त्ति पइण्णं कुमारवालनरिंदो कासी ।**

सं. हेमचन्द्रसूरे पार्श्वे देवानां स्वरूपं ज्ञात्वाऽहं सर्वत्रापि तीर्थकराणां मन्दिराणि कारयिष्यामीति प्रतिज्ञां कुमारपालनरेन्द्रोऽकार्षीत ।

हि. श्रीहेमचन्द्रसूरिजी के पास देवों का स्वरूप जानकर ``मैं सर्वत्र तीर्थंकरों के मन्दिर करवाऊँगा'' ऐसी प्रतिज्ञा कुमारपाल राजा ने की ।

16. प्रा. **सो पइदिणं अब्भस्संतो जिणधम्मं, पज्जुवासंतो मुणिजाणं, परिचिंतंतो जीवाजीवाइणो नव पयत्थे, रक्खंतो रक्खाविंतो य पाणिगणं, बहुमाणंतो साहम्मिए जणे, सव्वायरेण पभावंती जिणसासणं कालं गमेइ ।**

सं. स प्रतिदिनमभ्यस्यन् जिनधर्मं, पर्युपासमानो मुनिजनं, परिचिन्तयन् जीवाजीवादीन् नव पदार्थान्, रक्षन् रक्षयन् च प्राणिगणं, बहुमानयन्, साधर्मिकान् जनान्, सर्वादरेण प्रभावयन् जिनशासनं कालं गमयति ।

हि. वह प्रतिदिन जिनधर्म का अभ्यास करता, मुनिजन की सेवा करता, जीव-अजीवादि नौ पदार्थों की विचारणा करता, जीवों के समूह की रक्षा करता और रक्षा करवाता, साधर्मिकों का बहुमान करता, सर्व आदरपूर्वक जिनशासन की प्रभावना करता हुआ काल व्यतीत करता है ।

17. प्रा. एसो रज्जस्स जोग्गो ता इत्ति रज्जे ठविज्जउ, अलाहि निग्गुणेहिं अन्नेहिं ?

सं. एष राज्यस्य योग्यस्तस्मात् झटिति राज्ये स्थाप्यतामलं निर्गुणैरन्यैः ?

हि. यह राज्य के योग्य है इसलिए शीघ्र राज्य पर स्थापित करो, गुणरहित अन्य से क्या ?

18. प्रा. गिहं जहा को वि न जाणइ तह पवेसेमि नीसारेमि य ।

सं. गृहं यथा कोऽपि न जानाति, तथा प्रवेशयामि निस्सारयामि च ।

हि. जैसे कोई न जाने उस तरह (वैसे) मैं धर में प्रेवश कराता हूँ और बाहर निकालता हूँ ।

19. प्रा. जो सावज्जे पसत्तो सयंपि अतरंतो कहं तारए अन्नं ?

सं. यः सावद्ये प्रसक्तः स्वयमप्यतरन् कथं तारयेदन्यम् ?

हि. जो पाप में आसक्त है वह स्वयं नहीं तिरता (तो) दूसरे को कैसे तारेगा ?

20. प्रा. गुरुणा पुणरुत्तं अणुसासिओ वि न कुप्पेज्जा ।

सं. गुरुणा पुनः पुनरनुशासितोऽपि न कुप्येत् ।

हि. गुरु द्वारा बारबार शिक्षा देने पर भी कोप नहीं करना चाहिए ।

21. प्रा. एक्कस्स चेव दुक्खं, मारिज्जंतस्स होइ खणमेक्कं ।
जावज्जीवं सकुडुंबयस्स पुरिसस्स धणहरणे ।।1।।

सं. मार्यमाणस्यैकस्यैवैकं क्षणं दुःखं भवति ।
धणहरणे सकुटुम्बकस्य पुरुषस्य यावज्जीवम् ।।1।।

हि. पुरुष को मारनेवाले अकेले को ही एक क्षण दु:ख होता है, लेकिन धनहरण (चोरी) करने से कुटुम्बसहित पुरुष को यावज्जीवनपर्यन्त दु:ख होता है ।।1।।

22. प्रा. **दूसमसमएवि हु हेमसूरिणो निसुणिऊण वयणाइं ।**
सव्वजणो जीवदयं, कराविओ कुमारवालेण ।।2।।

सं. दु:षमसमयेऽपि खु, हेमसूरेर्वचनानि निश्रुत्य ।
कुमारपालेन सर्वजनो जीवदयां कारित: ।।2।।

हि. दुषमकाल में भी सचमुच श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी के वचन सुनकर कुमारपाल राजा द्वारा सभी लोगों के पास जीवदया करायी गयी ।।2।।

23. प्रा. **रोवंति रुवावंति य, अलियं जंपंति पत्तियावेंति ।**
कवडेण य खंतचि विसं, मरंति न य जंति सब्भावं ।।3।।

सं. रुदन्ति रोदयन्ति च, अलीकं जल्पन्ति प्रत्याययन्ति ।
कपटेन च विषं खादन्ति, म्रियन्ते सद्भावं न च यान्ति ।।3।।

हि. (स्त्री) रोती है, रुलाती है, झूठ बोलती है, विश्वास दिलाती है, मायापूर्वक जहर खाती है, मरती है लेकिन सद्भाव नहीं पाती है ।।3।।

24. प्रा. **मरणभयंमि उवगए, देवा वि सइंदया न तारेन्ति ।**
धम्मो ताणं सरणं, गइत्ति चिंतेहि सरणत्तं ।।4।।

सं. मरणभये उपगते, सेन्द्रा देवा अपि न तारयन्ति ।
धर्मास्त्राणं शरणं, गतिरिति शरणत्वं चिन्तय ।।4।।

हि. मरण का भय प्राप्त होने पर इन्द्रसहित देव भी बचा नहीं सकते हैं, धर्म रक्षण, शरण, गति है इस प्रकार शरणत्व का विचार करे ।।4।।

25. प्रा. **हंतूण परप्पाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं ।**
अप्पाणं दिवसाणं, कए स णासेइ अप्पाणं ।।5।।

सं. परप्राणान् हत्वा य आत्मानं सप्राणं करोति ।
सोऽल्पानां दिवसानां कृते आत्मानं नाशयति ।।5।।

हि. जो अन्य के प्राणों का नाश करके स्वयं को प्राणरान् जीवित रखता है, वह थोड़े दिनों के (जीवन के) लिए आत्मा का नाश करता है ।।5।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. **हि. पिता ने उपाध्याय के पास पुत्रों को तत्त्वों का ज्ञान ग्रहण करवाया ।**

   प्रा. पिअरो उवज्झायत्तो पुत्ते तत्ताणं नाणं घेप्पाविईअ ।

   सं. पितोपाध्यायात् पुत्रांस्तत्त्वानां ज्ञानमग्राह्यत् ।

2. **हि. सिद्धराज ने श्रीहेमचन्द्रसूरि के पास व्याकरण रचवाया इसलिए सिद्धहेम इस प्रकार उसका नाम स्थापित करवाया ।**

   प्रा. सिद्धराओ हेमचंद्रसूरिणा वागरणं रचाविईअ, तत्तो सिद्धहेमं ति तस्स णामं ठविज्जईअ ।

   सं. सिद्धराजो हेमचन्द्रसूरिणा व्याकरणमरचयत्, ततः सिद्धहैममिति तस्याऽभिधानमस्थापयत् ।

3. **हि. अच्छे शिष्य गुरुओं को अपनी भूलें सुनाते हैं और सुनाकर क्षमा माँगते हैं ।**

   प्रा. सुसीसा गुरूणं अप्पकेराइं खलिआइं सुणावेंति, सुणावित्ता य पच्छा ते खामेंति ।

   सं. सुशिष्या गुरुभ्य आत्मीयानि स्थलितानि श्रावयन्ति, श्रावयित्वा च पश्चात्ते क्षमयन्ति ।

4. **हि. जो पुस्तकों का विनाश करते हैं, वे परलोक में गुंगे अन्धे और बहरे होते हैं ।**

   प्रा. जे पोत्थयाइं विणासेंति, ते परलोए मूगे अंधा बहिरा य हवंति ।।4।।

   सं. ये पुस्तकानि विनाशयन्ति, ते परलोके मूका अन्धा बधिराश्च भवन्ति ।

5. **हि. आचार्य शिष्यों को रात्रि के अन्तिम प्रहर में उठाकर हमेशा स्वाध्याय करवाते हैं ।**

   प्रा. आयरियो सीसे रत्तीए चरमे जामे उट्ठाविऊण सया सज्झायं करावेई ।

   सं. आचार्यश्शिष्यान् रात्रेश्चरमे यामे उत्थाप्य सदा स्वाध्यायं कारयति।

6. **हि. नट ने राजा और पर्षदा के लोगों को भरतराजा का नाटक दिखाया और वह (नाटक) दिखलाते नट ने केवलज्ञान प्राप्त किया ।**

प्रा. नडो राइणं परिसाए लोए य भरहरायस्स नाड्यं दक्खवीअ, तं च दक्खावन्तो नट्टओ केवलनाणं पावीअ ।

सं. नटो राजानं पर्षदो लोकांश्च भरतराजस्य नाट्यमदर्शयत्, तच्च दर्शयन्नर्तकः केवलज्ञानं प्राप्नोत् ।

7. हि. पिता पुत्रों को विद्वान गुरु द्वार शिक्षा (बोध) दिलाते हैं ।

प्रा. पिआ पुत्ते विउसेण गुरुणा अणुसासेइ ।

सं. पिता पुत्रान् विदुषा गुरुणाऽनुशासयति ।

8. हि. राजा के बुद्धिशाली मन्त्री ने अपनी बुद्धि से नगर के प्रति आते हुए शत्रुओं का नाश करवाया ।

प्रा. रण्णो धीमंतो मंती अप्पकेराए बुद्धीए नयरं पइ आगच्छंते सत्तुणो नासवीअ ।

सं. राज्ञो धीमान् मन्त्री आत्मीयया बुद्ध्या नगरं प्रत्यागच्छतः शत्रूननाशयत् ।

9. हि. राजा ने उपाध्याय को बुलाकर कहा कि तुम राजपुत्रों को नीतिशास्त्र और व्याकरणशास्त्र पढाओ ।

प्रा. नरवई उवज्झायं बोल्लवित्ता कहीअ, तुब्भे रायपुत्ते नीइसत्थं वागरणसत्थं च पाढेह ।

सं. नरपतिरुपाध्यायमाह्वायाऽकथयद् यूयं राजपुत्रान् नीतिशास्त्रं व्याकरणशास्त्रं च पाठ्यत ।

10. हि. राम ने उस समय उसको जहर खिलाया होता तो वह जरूर मर जाता ।

प्रा. रामो तया तं विसं भक्खावंतो, तया सो नूणं मरंतो ।

सं. रामस्तदा तं विषमभोजयिष्यत्, तदा स नूनममरिष्यत् ।

11. हि. माता छोटे बालकों को नहीं डराए ।

प्रा. माआ कणिट्ठे सिसुणो न बीहावेज्ज ।

सं. माता कनिष्ठान् शिशून् न भापयतु ।

12. हि. तीर्थंकर भव्य जीवों को संसार के बन्धन में से मुक्तकर के शाश्वत सुख दिलाते हैं ।

प्रा. तित्थयरा भव्वे जीवे संसारस्स बंधणत्तो मोयावित्ता सासयं सोक्खं अप्पावेंति ।

सं. तीर्थकरा भव्यान् जीवान् संसारस्य बन्धनान् मोचयित्वा शाश्वतं सौख्यमर्पयन्ति ।

13. हि. **जिनके द्वारा चोरी की गई उनको राजा ने सजा दिलवाई ।**

प्रा. जेहिं चोरियं कयं, ते निवई दंडावीअ ।

सं. यैश्चौर्यं कृतं तान् नृपतिरदण्डयत् ।

14. हि. **कुमार ने घर से निकलकर सब का त्याग करके बगीचे में आचार्य भगवन्त के पास संयम ग्रहण किया और बहुत कुमारों को (संयम) ग्रहण करवाया ।**

प्रा. कुमारो गेहत्तो अभिनिक्खमिऊण सव्वं चइत्ता उज्जाणे आयरियस्स समीवं संजमं गिण्हीअ बहू य कुमारे घेप्पाविईअ ।

सं. कुमारो गृहादभिनिष्क्रम्य सर्वं त्यक्त्वोद्याने आचार्यस्य समीपं संयममगृहणाद्, बहून् कुमारांश्चाऽग्राह्यत् ।

15. हि. **संयम में रहे साधु भगवन्त सुखपूर्वक दिन बिताते हैं ।**

प्रा. संजमंमि ठिआ साहवो सुहेण दिणाइं जावेंति ।

सं. संयमे स्थिताः साधवः सुखेन दिनानि यापयन्ति ।

16. हि. **जो भाइयों और मित्रों को परस्पर लड़ाता है और वक्त पर मनुष्य के पास अपना मस्तक भी कटवाता है, वह अदृष्ट ही है ।**

प्रा. जं भाऊणो मित्ताणि य परुप्परं जुज्झावेइ समयंमि य जणेण अप्पणो सीसंपि छिंदावेइ तं दइव्वं अत्थि ।

सं. यद् भ्रातृन् मित्राणि च परस्परं योधयति, समये च जनेनाऽऽत्मनः शीर्षमपि छेदयति तद् दैवमस्ति ।

17. हि. **सन्तुष्ट रानी ने चोर को अपने घर ले जाकर सुन्दर भोजन करवाया, उसके बाद वस्त्र और आभूषण देकर अनुज्ञा दी ।**

प्रा. तुट्ठा महिसी चोरं अप्पणो गेहम्मि नेऊण सुट्ठु भोयणं करावीअ, तत्तो वत्थाइं भूसणाइं च दाऊण अणुजाणीअ ।

सं. तुष्टा महिषी चौरमात्मनो गेहे नीत्वा सुष्ठु भोजनमकारयत्, ततो वस्त्राणि भूषणानि च दत्वाऽन्वजानात् ।

18. हि. **ज्ञातपुत्र समवसरण में बैठकर मनुष्यों और देवों को जन्म और मरण का कारण समझाते है ।**

प्रा. नायपुत्तो समोसरणंमि उववविसीय जम्मणो मरणस्स य कारणं मणूसे देवे य बोहावेइ ।

सं. ज्ञातपुत्र: समवसरणे उपविश्य जन्मनो मरणस्य च कारणं मनुष्यान् देवांश्च बोधयति ।

19. हि. सज्जन पुरुष कहते हैं कि पापकर्म जीवों को सदा संसारचक्र में भ्रमण करवाते हैं ।

प्रा. साहवो पुरिसा कहेंति पावकम्माइं जीवे सया संसारचक्कंमि भमाडेइरे ।

सं. साधव: पुरुषा: कथयन्ति-पापकर्माणि जीवान् सदा संसार चक्रे भ्रामयन्ति ।

20. हि. सभी धर्म का त्याग करके एक वीतरागदेव की तुम सेवा करो, वही सभी पापों से तुझे छुडायेगा ।

प्रा. सव्वे धम्मे चइत्ता एगं वीयरागं तुं भजसु, सो च्चिय सर्वेसुन्तो मोयाविहिइ ।

सं. सर्वान् धर्मांस्त्यक्त्वैकं वीतरागं त्वं भज, स एक सर्वेभ्य: पापेभ्य: मोचयिष्यति ।

पाठ-23

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **साहवो मणसा वि न पत्थेंति बहुजीवाउलं जलारंभं ।**

समास विग्रह :– बहुणो य एए जीवा बहुजीवा (कर्मधारयः) । बहुजीवेहिं आउलो बहुजीवाउलो तं बहुजीवउलं (तृतीया तत्पुरुषः) जलाणं आरंभो जबारंभो तं जलारंभं (षष्ठी-तत्पुरुष) ।

सं. साधवो मनसापि न प्रार्थयन्ति बहुजीवाकुलं जलारम्भम् ।

हि. साधु भगवन्त बहुत जीवों से व्याप्त पानी के आरम्भ की मन से भी इच्छा नहीं करते हैं ।

2. प्रा. **खंतिसूरा अरिहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ।**

समास विग्रह :– खंतिए सूरा खंतिसूरा । तवम्मि सूरा तवसूर । दाणे सूरो दाणसूरे । जुद्धंमि सूरो जुद्धसूरे । (सर्वत्र सप्तमी तत्पुरुषः) । न अगारं जेसिं ते अणगारा (नञर्थ बहुव्रीहिः) ।

सं. क्षान्तिशूरा अर्हन्तः, तपः शूरा अनगाराः, दानशूरो वैश्रमणः, युद्धशूरो वासुदेवः ।

हि. क्षमापना में शूरवीर अरिहन्त भगवन्त हैं, तप में शूरवीर साधु भगवन्त हैं, दान में शूरवीर कुबेर है, युद्ध में शूरवीर वासुदेव है ।

3. प्रा. **ते सत्तिमंतो पुरिसा जे अब्भत्थणावच्छला समावडियकज्ज न गणेइरे आयइं, अब्भुद्धरेंति दीणयं, पूरेंति परमणोरहे, रक्खंति सरणागयं ।**

समास विग्रहः– अब्भत्थणाइ वच्छला अब्भत्थणावच्छला (सप्तमी तत्पुरुषः) ।

समावडियं कज्जं जेसिं ते समावडियकज्जा (षष्ठ्यर्थे बहुव्रीहिः) ।

मणाइं च्चिय रहा मणोरहा (अवधारणपूर्वपदकर्मधारयः) परेसिं मणोरहा परमणोरहा (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

सरणं आगओ सरणागओ तं सरणागयं (द्वितीया तत्पुरुषः) ।

सं. ते शक्तिमन्तः पुरुषा येऽभ्यर्थनावत्सलाः समापतितकार्या न गणयन्ति आयतिम्, अभ्युद्धरन्ति दीनकम्, पूरयन्ति परमनोरथान्, रक्षन्ति शरणागतम् ।

हि. वे शक्तिमान पुरुष हैं कि, जो प्रार्थना में प्रेम=स्नेहवाले हैं, कार्य आने पर भविष्य को नहीं गिनते हैं (भविष्य की चिन्ता नहीं करते हैं), गरीबों का उद्धार करते हैं, दूसरो के मनोरथ पूर्ण करते हैं, शरण में आये हुए का रक्षण करते हैं ।

4. प्रा. जे निद्दुज्जणाइं तवोवणाइं सेवंति ते जणा सुधन्ना ।

समास विग्रह :– निग्गआ दुज्जणा जेहिंतो ताइं निद्दुज्जणाइं ताणि (पञ्चम्यर्थे बहुव्रीहिः) ।

तवसे वणाइं तवोवणाइं (चतुर्थ्यर्थे तत्पुरुषः) ।

सुट्ठु धन्ना सुधन्ना (कर्मधारयः) ।

सं. ये निर्दुर्जनानि तपोवनानि सेवन्ते, ते जनाः सुधन्याः ।

हि. जो दुर्जनरहित तपोवनों की सेवा करते हैं वे मनुष्य अतिधन्य हैं ।

5. प्रा. अहो णु खलु नत्थि दुक्करं सिणेहस्स, सिणेहो नाम मूलं सव्वदुक्खाणं, निवासो अविवेयस्स, अग्गला निव्वुईए, बंधवो कुगइवासस्स, पडिवक्खो कुसलजोगाणं, देसओ संसाराडवीए, वच्छलो असच्चववसायस्स, एएण अभिभूआ पाणिणो न गणेंति आयइं, न जायेंति कालोइअं, न सेवंति धम्मं, न पेच्छंति परमत्थं, महालोहपंजरगया केसरिणो विव समत्था वि विसीयंति त्ति ।

समास विग्रह :– सव्वाइं य ताइं दुक्खाइं सव्वदुक्खाइं, तेसिं सव्वदुक्खाणं (कर्मधारयः)

न विवेयो अविवेयो, तस्स अविवेयस्स (नञ् तत्पुरुषः) ।

कुच्छिआ गई कुगई, कुगइए वासो कुगइवासो, तस्स कुगइवासस्स (कर्मधारय-षष्ठी तत्पुरुषौ) ।

कुसला य एए जोगा कुसलजोगा, तेसिं कुसलजोगाणं (कर्मधारयः) नत्थि सच्चं जत्थ सो असच्चो, असच्चो य एसो ववसायो असच्चववसायो, तस्स असच्चववसायस्स (बहुव्रीहि-कर्मधारय) । कालम्मि उइअं कालोइअं, तं कालोइअं (सप्तमी

तत्पुरुषः) । परमो य एसो अत्थो परमत्थो, तं परमत्थं (कर्मधारयः) लोहमयो पंजरो लोहपंजरो (उत्तरपदलोपि) महंतो य एसो अत्थो लोहपंजरो (उत्तरपदलोपि) महंतो य एसो लोहपंजरो महालोहपंजरो (कर्मधारय), महालोहपंजरं गआ महालोहपंजरगआ (द्वितीयातत्पुरुषः) ।

सं. अहो नु खलु नास्ति दुष्करं स्नेहस्य, स्नेहो नाम मूलं सर्वदुःखानाम्, निवासोऽविवेकस्य, अर्गला निर्वृत्याः, बान्धवः कुगतिवासस्य, प्रतिपक्षः कुशलयोगानाम्, देशकः संसाराटव्याः, वत्सलोऽसत्यव्यवसायस्य, एतेनाऽभिभूताः प्राणिनो न गणयन्त्यायतिम्, न पश्यन्ति कालोचितम्, न सेवन्ते धर्मम्, न प्रेक्षन्ते परमार्थम्, महालोहपञ्जरगताः केसरिण इव, समर्था अपि विषीदन्तीति ।

हि. अहो स्नेह को सचमुच कुछ दुष्कर नहीं है, स्नेह सभी दुःखों का मूल है, अविवेक का निवास है, मोक्ष के लिए शृंखला (अर्गला) है, कुगतिवास का बन्धु है, कुशल योगों का शत्रु है, संसाररूपी वन को बतानेवाला है, असत्य व्यवसाय का प्रेमी है, इससे (स्नेह से) पराभूत प्राणी भविष्य का विचार नहीं करते हैं, अवसरोचित को नहीं देखते हैं, धर्म का सेवन नहीं करते हैं, परमार्थ को नहीं देखते हैं, बड़े लोहे के पिंजर में रहे सिंह की तरह समर्थ होते हुए भी उद्वेग पाते हैं ।

6. प्रा. उत्तिमपुरिसा न सोवंति संझाए ।

समास विग्रह :– उत्तिमा य एए पुरिसा उत्तिमपुरिसा । (कर्मधारयः) ।

सं. उत्तमपुरुषाः न स्वपन्ति सन्ध्यायाम् ।

हि. उत्तम पुरुष सन्ध्याकाल में नहीं सोते हैं ।

7. प्रा. नेव वसणवसगएणं बुद्धिमया विसाओ कायव्वो ।

समास विग्रह :– वसणस्स वसो वसणवसो । वसणवसं गओ वसणवसगओ तेणं वसणवसगएणं । (षष्ठी-द्वितीयातत्पुरुषौ) ।

सं. नैव व्यशनवशगतेन बुद्धिमत्ता विषादः कर्तव्यः ।

हि. संकट के वश रहे बुद्धिमान को खेद नहीं ही करना चाहिए ।

8. प्रा. अम्हे पच्चोणिं गंतूण पिऊणं चरणेसुं पडिआ ।

समास विग्रह :– माया य पिया य पियरा । तेसिं पिऊणं । (एकशेषः) ।

सं. वयं सम्मुखं गत्वा पित्रोः चरणयोः पतिताः ।

हि. हम सन्मुख जाकर माता-पिता के चरणों में गिरे ।

9. प्रा. अह निण्णासिअतिमिरो, विओगविहुराण चक्कवायाण ।
संगमकरणेक्करसो, वियंभिओ अरुणकिरणोहो ॥1॥

समास विग्रह :– निण्णासिओ तिमिरो जेण सो निण्णासिअ-तिमिरो । (तृतीयार्थे बहुव्रीहिः) ।
विओगेण विहुरा विओगविहुरा, तेसिं विओगविहुराण । (तृतीयातत्पुरुषः) । चक्कवायी अ चक्कवाओ य चक्कवाया तेसिं चक्कवायाण । (एकशेषः) । संगमस्स करणं संगमकरणं । संगमकरणे एक्को रसो जस्स सो संगमकरणैक्करसो । (षष्ठी तत्पुरुषः, षष्ठ्यर्थे त्रिपदबहुव्रीहिश्च) । अरुणस्स किरणा अरुणकिरणा । अरुणकिरणाणं ओहो अरुणकिरणोहो (उभयत्र षष्ठीतत्पुरुषः) ।

सं. अथ निर्नाशिततिमिरो, वियोगविधुराणां चक्रवाकानाम् ।
संगमकरणैकरसोऽरुणकिरणौघो विजृम्भितः ॥1॥

हि. अब नष्ट किया है अन्धकार जिसने, वियोग से दुःखी और चिड़ियाओं को इकट्ठे करने में एक रसवाले अरुण (सूर्य) की किरणों का समूह विस्तृत हो ॥1॥

10. प्रा. पुत्ता ! तुम्हे वि संजमे नियमे य उज्जमं करिज्जाह,
अमयभूएण य जिणवयणेण अप्पाणं भाविज्जाह ॥2॥

समास विग्रह :– अमयं भूयं अमयभूयं तेण अमयभूएण (कर्मधारयः) । जिणस्स वयणं जिणवयणं तेण जिणवयणेण (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

सं. पुत्राः ! यूयमपि संयमे नियमे चोद्यमं कुरुत,
अमृतभूतेन च जिनवचनेनाऽऽत्मानं भावयत ॥2॥

हि. हे पुत्रो ! तुम भी संयम और नियम में उद्यम करो और अमृतसमान जिनवचन से आत्मा को भावित करो ।

11. प्रा. देवदाणवगंधव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्हयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति ते ॥3॥

समास विग्रह:-देवा य दाणवा य गंधव्वा य देवदाणवगंधव्वा । (द्वन्द्वसमासः)

जक्खा य रक्खसा य किन्नरा य जक्खरक्खसकिन्नरा । (द्वन्द्वसमास:)

सं. देवदानवगन्धर्वा:, यक्षराक्षसकिन्नरा: ।
ये दुष्करं कुर्वन्ति, तान् ब्रह्मचारिणो नमस्यन्ति ।।3।।

हि. देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नरदेव, जो दुष्कर= ब्रह्मचर्यपालन करते हैं, उन ब्राह्मचारियों को नमस्कार करते हैं ।।3।।

12. प्रा. विरला जाणंति गुणे, विरला जाणंति ललियकव्वाइं ।
सामन्नधणा विरला, परदुक्खे दुक्खिआ विरला ।।4।।

समास विग्राह :– ललियाइं च ताइं कव्वाइं ललियकव्वाइं, ताइं ललियकव्वाइं (कर्मधारय:)

सामन्नं धणं जेसिं ते सामन्नधणा (षष्ठ्यर्थे बहुव्रीहि:) ।

परेसिं दुक्खं परदुक्खं तम्मि परदुक्खे (षष्टी तत्पुरुष:) ।

सं. विरला गुणान् जानन्ति, विरला ललितकाव्यानि जानन्ति ।
सामान्यधना विरला:, परदुक्खे दु:खिता विरला: ।।4।।

हि. अल्प पुरुष गुणों को जानते हैं, अल्प पुरुष मनोहर काव्यों को जानते हैं, सामान्य (प्रत्येक के उपयोग में आनेवाला) धनवाले पुरुष अल्प होते हैं (और) अन्य के दु:ख में दु:खी व्यक्ति विरल (अल्प) होते हैं ।।4।।

13. प्रा. गलइ बलं उच्छाहो, अवेइ सिढिलेइ सयलवावारे ।
नासइ सत्तं अरई, विवड्ढए असणरहिअस्स ।।5।।

समास विग्रह:–सयलो य एसो वावारो सयलवावारो (कर्मधारय:)।

न रई अरई (नञ्तत्पुरुष:) ।

असणेण रहिओ असणरहिओ तस्स असणरहिअस्स (तृतीयातत्पुरुष:) ।

सं. अशनरहितस्य बलं गलति, उत्साहोऽपैति, सकलव्यापार: शिथिलयति, सत्त्वं नश्यति, अरतिर्विवर्धते ।।5।।

हि. भूखे प्राणी का बल नष्ट होता है, उत्साह दूर होता है, सभी व्यापार (कार्य) शिथिल बनते हैं, सत्त्व नष्ट होता है, अरति बढ़ती है ।।5।।

14. प्रा. सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी,
तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ।

रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ।।6।।

समास विग्रह:-सोमा य एए गुणा सोमगुणा, तेहिं सोमगुणेहिं (कर्मधारय:) ।
सरयो य एसो ससी सरयससी, नवो य एसो सरयससी नवसरयससी (उभयत्र कर्मधारय:)
रूवस्स गुणा रूवगुणा तेहिं रूवगुणेहिं (षष्ठी तत्पुरुष:) ।
तिअसाणं गणा तिअसगणा, तिअसगणाणं वई तिअसगणवई (उभयत्र षष्ठी तत्पुरुष:)
सारस्स गुणा सारगुणा तेहिं सारगुणेहिं (षष्ठी तत्पुरुष:) ।
धरणिधराणं वई धरणिधरवई (षष्ठी तत्पुरुष:) ।

सं. नवशारदशशी सौम्यगुणै: तं न प्राप्नोति,
नवशारदरवि: तेजोगुणै: तं न प्राप्नोति ।
त्रिदशगणपती रूपगुणैस्तं न प्राप्नोति,
धरणिधरपति: सारगुणै: तं न प्राप्नोति ।।6।।

हि. नया शरद्ऋतु का चन्द्र सौम्यगुणों के द्वारा उन (अजितनाथ म.) की सौम्यता को पार नहीं कर सकता है । नया शरद्ऋतु का सूर्य तेज के गुणों द्वारा उनकी तेजस्विता की तुलना नहीं कर सकता है, देवों के समूह का स्वामी= इन्द्र रूप के गुणों के द्वारा उनके रुप की तुलना नहीं कर सकता है । पर्वतों का स्वामी=मेरु पर्वत पराक्रम के गुणों के द्वारा उनके पराक्रम की तुलना नहीं कर सकता है ।।6।।

15. प्रा. जस्सत्थो तस्स सुहं, जस्सत्थो पंडिओ य सो लोए ।
जस्सत्थो सो गुरुओ, अत्थविहूणो य लहुओ य ।।7।।

समास विग्रह:–अत्थेण विहूणो अत्थविहूणो (तृतीयातत्पुरुष)।

सं. यस्यार्थस्तस्य सुखं, यस्यार्थ: स लोके पण्डितश्च ।
यस्यार्थ : स गुरुकोऽर्थविहीनश्च लघुकश्च ।।7।।

हि. जिसके पास धन है उसको सुख है, जिसके पास धन है वह लोक में पण्डित है, जिसके पास धन है वह बड़ा है और धनरहित मनुष्य छोटा है ।।7।।

16. प्रा. वंचइ मित्तकलत्ते, नाविक्खए मायपिअसयणे अ ।
मारेइ बंधवे वि हु, पुरिसो जो होइ धणलुद्धो ।।8।।

समास विग्रहः-मित्ता य कलत्ता य मित्तकलत्ता, ते मित्तकलत्ते (द्वन्द्व समासः)
माया य पिया य सयणा य मायपियसयणा ते मायपियसयणे (द्वन्द्वसमासः)
धणम्मि लुद्धो धणलुद्धो (सप्तमीतत्पुरुषः) ।

सं. यः पुरुषो धनलुब्धो भवति, (स) मित्रकलत्राणि वञ्चयति, मातापितृस्वजनांश्च नाऽपेक्षते, बान्धवानपि खु मारयति ।।8।।

हि. जो पुरुष धन का लोभी होता है वह मित्र और स्त्री को ठगता है, माता-पिता और स्वजनों की अपेक्षा नहीं रखता है, भाइयों को भी मारता है ।।8।।

17. प्रा. गणंति कुलं, न गणंति पावयं पुण्णमवि न गणंति ।
इस्सरिएण हि मत्ता, तहेव परलोगमिहलोयं ।।9।।

समास विग्रहः-परो य एसो लोयो परलोयो, तं परलोयम् (कर्मधारयः) ।
इह य एसो लोयो इहलोयो, तं इहलोयं (कर्मधारय) ।

सं. ऐश्वर्येण हि मत्ताः कुलं न गणयन्ति, पापकं न गणयन्ति, पुण्यमपि, तथैव इहलोकं परलोकं च न गणयन्ति ।।9।।

हि. ऐश्वर्य से अभिमानी (मनुष्य) कुल की परवाह नहीं करते हैं, पाप को नहीं स्वीकारते हैं, पुण्य को भी (नहीं गिनते हैं) उसी तरह इहलोक और परलोक को नहीं स्वीकारते हैं ।।9।।

18. प्रा. न गणंति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोयअववायं ।
न य भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाए आयत्ता ।।10।।

समास विग्रहः–पुव्वस्स नेहो पुव्वनेहो, तं पुव्वनेहं (षष्ठीतत्पुरुषः)।
लोयाणं अववाओ लोयअववाओ, तं लोयअववायं (षष्ठीतत्पुरुषः)।
भाविओ आवयाओ भाविआवयाओ, ताओ भाविआवयाओ (कर्मधारयः) ।

सं. महिलायामायत्ताः पुरुषाः पूर्वस्नेहं न गणयन्ति,
नीतिं न च, लोकापवादं न च, भाव्यापदो न च गणयन्ति ।।10।।

हि. स्त्री के आधीन पुरुष पूर्व (माता-पिता) के स्नेह को नहीं गिनते हैं, न्यायमार्ग को नहीं स्वीकारते हैं, लोकनिन्दा की परवाह नहीं करते हैं और भविष्य में आनेवाली आपत्तियों की भी परवाह नहीं करते हैं ।।10।।

19. प्रा. मेरू गरिट्ठो जह पव्वयाणं, एरावणो सारबलो गयाणं ।
सिंहो बलिट्ठो जह सावयाणं, तहेव सीलं पवरं वयाणं ।।11।।

समास विग्रह :— सारं बलं जस्स सो सारबलो (बहुव्रीहिः) ।

सं. यथा पर्वतानां मेरुर्गरिष्ठः, गजानामैरावणः सारबलः ।
यथा श्वापदानां सिंहो बलिष्ठः, तथैव व्रतानां शीलं प्रवरम् ।।11।।

हि. जैसे पर्वतों में मेरुपर्वत सबसे बड़ा है, हाथियों में ऐरावण हाथी श्रेष्ठ बलवान है, जैसे शिकारी पशुओं में सिंह सर्वश्रेष्ठ बलवान है उसी प्रकार व्रतों में शीलव्रत सर्वश्रेष्ठ है ।।11।।

20. प्रा. बालत्तमम्मि जणओ, जुर्वणपत्ताइ होइ भत्तारो ।
वड्ढत्तणेण पुत्तो, सच्छंदत्तं न नारीणं ।।12।।

समास विग्रह :— जुव्वणं पत्ता जुव्वणपत्ता, ताइ जुव्वणपत्ताइ (द्वितीया-तत्पुरुषः) ।

सस्स छंदत्तं सच्छदत्तं (षष्ठीतत्पुरुषः) ।

सं. बालत्वे जनकः यौवनप्राप्तायां भर्ता भवति ।
वृद्धत्वे पुत्रः, नारीणां स्वच्छन्दत्वं न ।।12।।

हि. नारी बाल्यावस्था में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र के आधीन होती है, इस प्रकार (किसी भी अवस्था में) स्त्रियों को स्वच्छन्दता नहीं है ।।12।।

21. प्रा. (पसिणं) किं होइ रहस्स वरं, बुद्धिपसाएण को जणो जयइ ।
किं च कुणंती बाला, नेउरसद्दं, पयासेह ।।13।।

समास विग्रह :— बुद्धीए पसाओ बुद्धिपसाओ, तेणं बुद्धिपसाएण (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

नेउरस्स सद्दो नेफरसद्दो तं नेउरसद्दं (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

सं. (प्रश्नं) रथस्य वरं किं भवति ? बुद्धिप्रसादेन को जनो जयति ?
किं च कुर्वन्तीा बाला नुपूरसद्दं प्रकाशयति ? ।।13।।

हि. (प्रश्न) रथ में श्रेष्ठ क्या हैं ? (चक्क=चक्र), बुद्धि की महेरबानी से कौन-सा मनुष्य जीतता है ? (मंती=मन्त्री) क्या करती हुई बालिका झांझर (नुपूर) के शब्द को प्रकाशित करती है ? (चक्कमंती= भ्रमण करती) ।

उत्तर=चक्कमंती ।।13।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. **राम और लक्ष्मण ने रावण की सेना को जीती और लक्ष्मण के चक्र से मारा गया रावण मरकर नरक में गया।**

प्रा. रामलक्खणा रावणस्स सेणं जिणीअ, लक्खणस्स य चक्कहओ रावणो मरिय नरयं गच्छीअ।

समास विग्रह :– रामो य लक्खणो य रामलक्खणा (द्वन्द्वसमास:)। लक्खणस्स चक्कं लक्खणचक्कं (षष्ठीतत्पुरुष:)। लक्खणचक्केणं हओ लक्खणचक्कहओ (तृतीयातत्पुरुष:)।

सं. रामलक्ष्मणौ रावणस्य सेनां जित्वा लक्ष्मणचक्रहतो रावणो मृत्वा नरकमगच्छत्।

2. हि. **सज्जन पुरुष आपत्ति में भी असत्यवचन नहीं बोलते हैं।**

प्रा. सज्जणा दुहपडिया वि असच्चवयणं न भासंति।

समास विग्रह :– दुहं पडिया दुहपडिया (द्वितीया तत्पुरुष:)। असच्चं य तं वयणं असच्चवयणं (कर्मधारय:)।

सं. सज्जना: दु:खपतिता अप्यसत्यवचनं न ब्रुवन्ति।

3. हि. **विद्यार्थियों को प्रभात में जल्दी उठकर मातापिता अथवा गुरु को नमस्कार करके अपना अध्ययन करना चाहिए।**

प्रा. विज्जत्थिणो पच्चूसे सिग्घं उट्ठिऊण पियरे गुरुं वा नमंसित्ता अप्पकेरं अज्झयणं पढेज्ज।

समास विग्रह :– माया य पिया य पियरा, ते पियरे (एकशेष:)।

सं. विद्यार्थिन: प्रत्यूषे शीघ्रमुत्थाय पितरौ गुरुं वा नमस्कृत्याऽऽत्मीयमध्ययनं पठेयु:।

4. हि. **संसार के दु:खों को देखकर वह संसार से निर्वेद पाता है।**

प्रा. संसारदुहाइं पासित्ता सो संसारत्तो निव्विज्जइ।

समास विग्रह :– संसारस्स दुहाइं संसारदुहाइं, ताइं संसारदुहाइं (षष्ठीतत्पुरुष:)।

सं. संसारदु:खानि दृष्टवा स संसारान् निर्विद्यते।

5. हि. **उस बालिका ने हाथरूपी कमल द्वारा राजा के भाल में तिलक किया।**

प्रा. सा बाला हत्थकमलेण रायस्स ललाडे तिलयं करीअ।

समास विग्रह :– हत्थो एव कमलं हत्थकमलं, तेण हत्थकमलेण (अवधारणपूर्वपदकर्मधारय:)।

सं. सा बाला हस्तकमलेन राज्ञो ललाटे तिलकमकरोत् ।

6. हि. **किया है निदान जिसने उनको बोधि की प्राप्ति कहाँ से होगी ?**

प्रा. कयनियाणाणं तेसिं बोहिलाहो कत्तो हवेज्जा ?

समास विग्रह :– कयं नियाणं जेहिं ते कयनियाणा, तेसिं कयनियाणाणं (बहुव्रीहिः) ।

बोहिणो लाहो बोहिलाहो (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

सं. कृतनिदानानां तेषां बोधिलाभः कथं भवेत् ?

7. हि. **तीर्थंकर गम्भीर वाणी द्वारा समवसरण में देव–दानव और मनुष्यों की सभा में देशना देते है और वह (देशना) सुनकर भव्यजीव दर्शन, ज्ञान और चारित्र ग्रहण करते हैं और आहाररहित (अणाहारी) मोक्षपद प्राप्त करते हैं ।**

प्रा. तित्थयरो गंभीरवायाए समोसरणंमि देवदाणवमणूसपरिसाए देसणं देइ, तं च सुणित्ता भव्वा जीवा दंसणनाणचरित्ताइं गिण्हंति, अणाहारं च मोक्खपयं पावंति ।

समास विग्रह :– गंभीरा य ऐसा वाया गंभीरवाया ताए गंभीरवायाए (कर्मधारयः) ।

देवा य दाणवा य मणूसा य देवदाणवमणूसा, तेसिं परिसा देवदाणवमणूसपरिसा, ताए देवदाणवमणूसपरिसाए (द्वन्द्वषष्ठीत-त्पुरुषौ) ।

दंसणं य नाणं य चरित्तं य दंसणनाणचरित्ताइं, ताइं-दंसणनाणचरि-त्ताइं (द्वन्द्वः) ।

नत्थि आहारो जम्मि तं अणाहारं, (नञ्बहुव्रीहिः) ।

मुक्खं य एयं पयं मुक्खपयं, तं मुक्खपयं (कर्मधारयः) ।

सं. तीर्थंकरो गम्भीरवाचा समवसरणे देवदानवमनुष्यापर्षदि देशनां ददाति, तां च श्रुत्वा भव्या जीवा दर्शनज्ञानचारित्राणि गृह्णन्ति, अनाहारं च मोक्षपदं प्राप्नुवन्ति ।

8. हि. **जिसके हाथों में पुष्प हैं ऐसी नगर की कन्याओं ने मनुष्यों में उत्तम ऐसे राजा पर पुष्पों की वृष्टि की ।**

प्रा. पुप्फहत्थाओ पउरकन्नाओ जणुत्तमे रायंमि पुप्फवुट्ठिं करीअ ।

समास विग्रह :– पुप्फाइं हत्थे जासिं ता पुप्फहत्थाओ (बहुव्रीहिः)।

पउरा य एआ कन्नाओ पउरकन्नाओ (कर्मधारयः) ।

जणेसु उत्तमो जणुत्तमो, तम्मि जणुत्तमे (सप्तमी तत्पुरुषः) ।
पुप्फाणं वुड्ढि पुप्फवुड्ढि, तं पुप्फवुड्ढिं (षष्ठी तत्पुरुषः) ।

सं. पुष्पहस्ताः पौरकन्याः जनोत्तमे राज्ञि पुष्पवृष्टिमकुर्वन् ।

9. हि. तीन भुवन में सभी जीवों से तीर्थंकर अनन्तरूपवाले होते हैं ।

प्रा. तिहुअणम्मि सव्वजीवेहिन्तो तित्थयरा अणंतरूवा हवंति ।

समास विग्रह :– तिण्हं भुवणाणं समाहारो तिहुअणं, तम्मि तिहुयणम्मि (समाहारद्विगुः)
सव्वे य एए जीवा सव्वजीवा, तेहिन्तो सव्वजीवेहिंतो (कर्मधारयः)।
अणंतं रूवं जेसिं ते अणंतरूवा (बहुव्रीहिः) ।

सं. त्रिभुवने सर्वजीवेभ्यस्तीर्थकरा अनन्तरूपाः भवंति ।

10. हि. संयमरूपी धनवान साधुओं को परलोक का भय नहीं है ।

प्रा. संजमधणाणं साहूणं परलोयभयं नत्थि ।

समास विग्रह :– संजमो च्चिय धणं जेसिं ते संजमधणा, तेसिं संजमधणाणं (बहुव्रीहिः)
परो य एओ लोयो परलोयो । परलोयत्तो भयं परलोयभयं (कर्मधारय-पञ्चमीतत्पुरुषौ) ।

सं. संयमधनानां साधूनां परलोकभयं नाऽस्ति ।

11. हि. सिद्ध भगवंतों को आहार, देह, आयुष्य और कर्म नहीं है इसलिए ही वे अनन्तसुखवाले हैं ।

प्रा. अणाहारदेहाउसकम्मा सिद्धा भगवंता अणंतसुहा हवंति ।

समास विग्रह :– आहारो य देहो य आउस य कम्मं य आहारदेहाउस-कम्माणि (द्वन्द्वः) ।
नत्थि आहारदेहाउसकम्माणि जेसिं ते अणाहारदेहाउसकम्मा (नञर्थबहुव्रीहिः)
अणंतं सुहं जेसिं ते अणंतसुहा । (बहुव्रीहिः) ।

सं. अनाहारदेहाऽऽयुः कर्माणः सिद्धाः भगवन्तोऽनन्तसुखा भवन्ति ।

12. हि. जो विधि अनुसार मन्त्रों की आराधना करता है, वह जरुर फल पाता है ।

प्रा. जो जहविहिं मंताई आराहेइ, सो अवस्स फलं पावेइ ।

समास विग्रहः–विहिं अणइक्कमिय त्ति जहविहिं (अव्ययीभावः) ।

सं. यो यथाविधि मन्त्राण्याराधयति, सोऽवश्यं फलं प्राप्नोति ।

13. हि. शक्ति का उल्लंघन किये बिना जो अहिंसा, संयम और तपरूपी धर्म में उद्यम करता है, वह संसार समुद्र से तिर जाता है।

प्रा. जो जहसत्तिं अहिंसासंजमतवधम्मंमि उज्जमेइ, सो संसारसागराओ तरेइ ।

समास विग्रह :– सत्तिं अणइक्कमीअ त्ति जहसत्तिं (अव्ययीभाव:) ।

अहिंसा य संजमो य तवं य अहिंसासंजमतवाइं । ताइं च्चिअ धम्मो अहिंसासंजमतवधम्मो, तम्मि अहिंसासंजमतवधम्मंमि । (द्वन्द्वकर्म-धारयौ) ।

संसारो एव सागरो संसारसागरो, तत्तो संसारसागराओ (कर्मधारय:) ।

सं. ये यथाशक्ति अहिंसासंयमतपोधर्मे उद्यच्छन्ति, ते संसारसागरा-त्तरन्ति ।

14. हि. अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्ध जन के लिए ज्ञान ही उत्तम अंजन है ।

प्रा. अन्नाणतिमिरंधाणं नाणं चेव उत्तमं अंजणं अत्थि ।

समास विग्रह :– अण्णाणं चिअ तिमिरं अण्णाणतिमिरं ।

अण्णाणतिमिरेण अंधा अण्णाणतिमिरंधा, तेसिं अण्णाणतिमिरंधाणं (कर्मधारय-तृतीतत्पुरुषौ) ।

सं. अज्ञानमितिराऽन्धानां ज्ञानं चैवोत्तममञ्जनमस्ति ।

15. हि. जो कुमारपाल पहले सिद्धराज के भय से भटकता था, उसने श्रीहेमचन्द्रसूरि की मदद से भय से मुक्त होकर राज्य पाया ।

प्रा. जो कुमारवालो पुरा सिद्धरायभयत्तो भमिअंतो, सो पच्छा श्रीहेमचंद्रसूरि साहज्जेण भयमुत्तो होउण रज्जं पावीअ ।

समास विग्रह :– सिद्धरायओ भयं सिद्धरायभयं, तत्तो सिद्धरायभयत्तो (पञ्चमी तत्पुरुष:) ।

सिरिहेमचंद्रसूरिणां साहज्जं हेमचंदसूरिसाहज्जं, तेण सिरिहेमचंदसूरिसाहज्जेण (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

भयाउ मुत्तो भयमुत्तो (पञ्चमीतत्पुरुष:) ।

सं. य: कुमारपाल: पुरा सिद्धराजभयाद् भ्रमितवान्, स पश्चा श्रीहेमचन्द्रसूरिसाहाय्येन भयमुक्तो भूत्वा राज्यं प्राप्नोत् ।

16. हि. जिनके पास बहुत धन है, इस पर्वत पर सुन्दर जिनालय बनवाकर लोगों को सन्तुष्ट करके जिन्होंने महायश प्राप्त किया है, वे ये वस्तुपाल और तेजपाल महामंत्री हैं।

प्रा. बहुधणा एयंमि गिरिम्मि सुंदरजिणालए निम्मविअ, जणे य संतोसिऊण लद्धमहाजसा एए वत्थुवालतेयवाला महामंतिणो संति।

समास विग्रह :– बहुं धणं जेसिं ते बहुधणा (बहुव्रीहिः)।

जिणाणं अलया जिणालया । सुंदर य एए जिणालया सुंदरजिणालया, एए सुंदरजिणालए (षष्ठीतत्पुरुष-कर्मधारयौ) महंतो य एसो जसो महाजसो । लद्धो महाजसो जेहिं ते लद्धमहाजसा (कर्मधारय-बहुव्रीहिः)।

वत्थुवालो य तेयवालो य वत्थुवालतेयवाला (द्वन्द्वः)।

महंता मंतिणो महामंतिणो (कर्मधारयः)।

सं. बहुधनावेतस्मिन् गिरौ सुन्दरजिनालयान् निर्माप्य, जनांश्च संतोष्य लब्धमहायशसावेतौ वस्तुपालतेजपालौ महामन्त्रिणौ स्तः।

पाठ-24

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. **प्रा. जइ से पिया न पव्वइओ होंतो तो लट्ठं होंतं ।**
   सं. यदि तस्स पिता न प्रव्रजितोऽभविष्यत् ततः सुन्दरमभविष्यत् ।
   हि. जो उसके पिता प्रव्रजित न हुए होते तो अच्छा होता ।
2. **प्रा. तइयच्चिय पव्वज्जं गिण्हंतो, ता इण्हिं एरिसं पराभवं नेव पाविंतो ।**
   सं. तदैव प्रव्रज्यामग्रहीष्यत्, तत इदानीमीदृशं पराभवं नैव प्राप्स्यत् ।
   हि. तभी (उस समय) ही उसने प्रव्रज्या ग्रहण की होती, तो अब इस प्रकार का पराभव प्राप्त नहीं होता ।
3. **प्रा. सव्वेसिं गुणाणं बम्हचेरं उत्तममत्थि ।**
   सं. सर्वेषां गुणानां ब्रह्मचर्यमुत्तममस्ति ।
   हि. सभी गुणों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है ।
4. **प्रा. गुरवो सया अम्ह रक्खंतु ।**
   सं. गुरवस्सदाऽस्मान् रक्षन्तुं ।
   हि. गुरुजन हमेशा हमारी रक्षा करे ।
5. **प्रा. कण्हेण भयवं पुच्छिओ, सामि ! कत्तो मे मरणं भविस्सइ ? सामिणा कहियं, जो एस ते जेट्ठभाया वसुदेवपुत्तो जरादेवीए जाओ जराकुमारो नाम, इमाओ ते मच्चू, तओ जायवाण जराकुमारे सविसाया सोएण निवडिया दिट्ठी, चिंतिअं इमिणा 'अहो ! कट्ठं, अहं वसुदेवपुत्तो होऊण सयलजणिट्ठं कणिट्ठं भायरं विणासेहामि' त्ति, तओ आपुच्छिऊण जादवजणं जणद्दणरक्खणत्थं गओ वणवासं जराकुमारो ।**

   समास विग्रह :– जेट्ठो य एसो भाया जेट्ठभाया (कर्मधारयः) ।
   वसुदेवस्स पुत्तो वसुदेवपुत्तो (षष्ठीतत्पुरुषः) ।
   विसायेण सह सविसाया (सहार्थे तत्पुरुषः) ।
   सयला य एए जणा सयलजणा । सयलजणाणं इट्ठो सयलजणिट्ठो, तं सयलजणिट्ठं (कर्मधारय-षष्ठीतत्पुरुषौ) ।
   जादवो य एसो जणो जादवजणो, तं जादवजणं (कर्मधारयः) ।

जणद्दणस्स रक्खणं जणद्दणरक्खणं । जणद्दणरक्खणायत्ति जणद्दणरक्खणत्थं (षष्ठी-चतुर्थीतत्पुरुषौ) ।
वणे वासो वणवासो, तं वणवासं (सप्तमीतत्पुरुषः) ।

सं. कृष्णेन भगवान् पृष्टः, स्वामिन् ! कुतो मे मरणं भविष्यति ?, स्वामिना कथितम्-य एष ते ज्येष्ठभ्राता वसुदेवपुत्रो जरादेव्या जातो जराकुमारो नाम, अस्मात्तव मृत्युस्ततो यादवानां जराकुमारे सविषादा शोकेन निपतिता दृष्टिः, चिन्तितमनेन, अहो कष्टम्, अहं वसुदेवपुत्रो भूत्वा सकलजनेष्टं कनिष्ठं भ्रातरं विनाशयिष्यामीति, तत आप्रच्छ्य यादवजनं जनार्दनरक्षणार्थं गतो वनवासं जराकुमारः ।

हि. कृष्ण द्वारा भगवान् पूछे गए, हे स्वामी ! मेरी मृत्यु किससे होगी ? स्वामी ने कहा – यह तेरा बड़ा भाई, वसुदेव का पुत्र, जरादेवी से उत्पन्न जराकुमार नामक है, उससे तेरी मृत्यु होगी । इससे जराकुमार पर यादवों की खेदसहित शोकवाली दृष्टि गिरी । तब जराकुमार ने विचार किया कि-अहो दुःख है कि मैं वसुदेव का पुत्र होकर सभी लोगों को इष्ट छोटे भाई का विनाश करूँगा, अतः यादवों की अनुमति लेकर कृष्ण के रक्षण हेतु जराकुमार वनवास को चला गया ।

6. प्रा. जइं रूवं होन्तं, ता सव्वगुणसंपया होंता ।

समास विग्रह :– सव्वे य एए गुणा सव्वगुणा । सव्वगुणाणं संपया सव्वगुणसंपया (कर्मधारय-षष्ठीतत्पुरुषौ) ।

सं. यदि रूपमभविष्यत् ततः सर्वगुणसम्पदभविष्यत् ।

हि. जो रूपवान् होता तो सब गुणसम्पत्ति होती ।

7. प्रा. हे वीरजिणेसर ! तह कुणसु अम्ह पसायं, जह न संसारे अम्ह निवडिमो ।

समास विग्रह :– जिणाणं ईसरो जिणेसरो । वीरो य एसो जिणेसरो वीरजिणेसरो, संबोहणे हे वीरजिणेसर ! (षष्ठीतत्पुरुष-कर्मधारयौ) ।

सं. हे वीरजिनेश्वर ! तथा कुरु अस्माकं प्रसादं यथा न संसारे वयं निपतामः ।

हि. हे वीरजिनेश्वर ! हम पर ऐसी कृपा करो कि जिससे हम संसार में न रहें ।

8. प्रा. **चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ ।**

समास विग्रह :– बहु फलं जम्मि सो बहुफलो (बहुव्रीहि:) ।

सं. तिष्ठतु दूरे मन्त्रस्तव प्रणामोऽपि बहुफलो भवति ।

हि. मन्त्र तो दूर रहो, आपको (किया हुआ) प्रणाम भी अत्यधिक फलवाला होता है ।

9. प्रा. **न मं मोत्तुं अन्नो उचिओ इमीए, ता मुंच एयं, जुद्धसज्जो वा होहि ।**

समास विग्रह:–जुद्धाय सज्जो जुद्धसज्जो (चतुर्थीतत्पुरुष:) ।

सं. न मां मुक्त्वाऽन्य उचितोऽस्यास्तस्माद् मुञ्चैतां, युद्धसज्जो वा भव ।

हि. मेरे सिवाय अन्य इस (स्त्री) के लिए योग्य नहीं है, अत: इसको छोड़ दे अथवा युद्ध के लिए सज्ज बन ।

10. प्रा. **साहूहिं वुत्तं जइ ते अइनिब्बंधो, तो संघसहिए अम्हे मेरुम्मि नेऊण चेइयाइं वंदावेह, तीए (देवीए) भणियं, तुम्हे दो जणे अहं देवे तत्थ वंदावेमि ।**

समास विग्रह :– संघेण सहिआ संघसहिआ, ते संघसहिए । (तृतीया-तत्पुरुष:) ।

सं. साधुभ्यामुक्तं, यदि तेऽतिनिर्बन्धस्तत: संघसहितौ नौ मेरौ नीत्वा चैत्यानि वन्दय, तया (देव्या) भणितं, युवां द्वौ जनौ अहं देवान् तत्र वन्दयामि ।

हि. दो साधुओं ने कहा कि ``जो तुम्हारा अत्याग्रह है तो संघसहित हम दोनों को मेरुपर्वत पर ले जाकर परमात्मा को वन्दन करवाओ'' देवी ने कहा कि मैं तुम दोनों को वहाँ (मेरुपर्वत पर) परमात्मा को वन्दन करवाती हूँ ।

11. प्रा. **अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए अणगारियं पव्वइहिसि ।**

समास विग्रह :– कालं गया कालगया तेहिं कालगएहिं (द्वितीयातत्पुरुष:) ।

परिणयं य एअं वयं परिणयवयं, तम्मि परिणयवए (कर्मधारय:)।

नत्थि अगारो जस्स सो अणगारो (नञर्थे बहुव्रीहि:) ।

सं. अस्मासु कालगतेषु सत्सु परिणतवया अनगारितां प्रव्रजिष्यसि ।

हि. हमारी मृत्यु होने पर परिपक्व उम्रवाला तू साधु जीवन का स्वीकार करना ।।11।।

12. प्रा. किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?, किं च सक्कणिज्जं न समायरामित्ति पच्चूहे सया झाएयव्वं ।

समास विग्रह :– किच्चस्स सेसो किच्चसेसो, तं किच्चसेसं (षष्ठी-तत्पुरुष:) ।

सं. किं मे (मया) कृतं ?, किं च मे कृत्यशेषं ?, किं च शक्यं न समाचरामीति प्रत्यूषे सदा ध्यातव्यम् ।

हि. मेरे द्वारा क्या किया गया ? मेरे करने योग्य क्या बाकी है ?, शक्य ऐसा मैं क्या नहीं करता हूँ ? इस प्रकार सुबह हमेशा चिन्तन करना चाहिए ।

13. प्रा. जं जेण जया जत्थ, जारिसं कम्मं सुहमसुहं उवज्जियं ।
तं तेण तया तत्थ, तारिसं कम्मं दोरियनिबद्धं व्व संपज्जइ।

समास विग्रह:दोरियेण निबद्धं दोरियनिबद्धं (तृतीयातत्पुरुष:) ।

सं. यें यदा यत्र यादृशं, यत् शुभमशुभं कर्मोपार्जितम् ।
तेन तदा तत्र तादृशं, तत् कर्म दवरिकानिबद्धमिव संपद्यते ।

हि. जिसके द्वारा जब जहाँ जिस प्रकार का जो शुभ अथवा अशुभ कर्म उपार्जन किया गया हो, उसके द्वारा तब वहाँ उसी प्रकार का वह कर्म रस्सी से बँधे हुए की तरह प्राप्त किया जाता है ।

14. प्रा. तं कुण धम्मं, जेण सुहं सो च्चिय चिंतेइ तुह सव्व ।

सं. त्वं कुरु धर्मं, येन सुखं स एव चिन्तयति तव सर्वम् ।

हि. तू धर्म कर, जिससे वह धर्म ही तेरे सब सुख का विचार करता है ।

15. प्रा. खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ।।1।।

समास विग्रह :– सव्वे य एए जीवा सव्वजीवा, ते सव्वजीवे (कर्म-धारय:) ।

सव्वाइं च ताइं भूयाइं सव्वभूयाइं, तेसु सव्वभूएसु (कर्म-धारय:) ।

सं. सर्वजीवान् क्षमयामि, सर्वे जीवा मां क्षाम्यन्तु ।
मे सर्वभूतेषु मैत्री, मम केनचिद् वैरं न ।।1।।

हि. मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा करें, मेरी सभी जीवों के साथ मित्रता है, मेरी किसी के साथ शत्रुता नहीं है ।।1।।

16. प्रा. **सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।**
सव्वं खमाइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।2।।

समास विग्रह :– समणपहाणो संघो समणसंघो तस्स समण-संघस्स (उत्तरपदलोपी तत्पुरुष:) ।

सं. भगवत: सर्वस्य श्रमणसङ्घस्य शीर्षेऽअलिं कृत्वा ।
सर्वं क्षमयित्वा, अहमपि सर्वस्य क्षाम्यामि ।।2।।

हि. पूज्य सभी श्रमण संघ को मस्तक पर दो हाथ जोड़कर, सभी को क्षमा करके, मैं भी सभी के पास क्षमा माँगता हूँ ।।2।।

17. प्रा. **जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।**
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ।।3।।

समास विग्रह :– दंसणं य नाणं य दंसणनाणाइं, तेहिं दंसणनाणेहिं (द्वन्द्वसमास:) ।
चरणेण सहिआइं चरणसाहिआइं तेहिं चरणसाहिएहिं (तृतीयातत्पुरुष:) ।
मुक्खस्स मग्गो मुक्खमग्गो तं मुक्खमग्गं (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. यस्या: क्षेत्रे साधव:, चारित्रसहितैर्दशनज्ञानै: ।
मोक्षमार्गं साध्नुवन्ति, सा देवी दुरितानि हरतु ।।3।।

हि. जिसके क्षेत्र में साधु भगवन्त चारित्रसहित दर्शन और ज्ञान द्वारा मोक्षमार्ग की साधना करते हैं, वह देवी पापों को दूर करे ।।3।।

18. प्रा. **हसउ अ रमउ अ तुह सहिजणो, हसामु अ रमामु अ अहंपि ।**
हससु अ रमसु अ तंपि, इअ भणिही मह पिओ इण्हि ।।4।।

समास विग्रह :– सहीणं जणो सहिजणो (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. तव सखिजनो हसतु रमतां च, अहमपि हसानि रमै च ।
त्वमपि इस रमस्व च, इति मम प्रिय इदानीमभणत् ।।4।।

हि. तेरा मित्रवर्ग हँसे और खेले, मैं भी हँसू और खेलूं, तुम भी हँसों और खेलों इस प्रकार मेरे प्रिय न अब कहा ।।4।।

19. प्रा. **सामाइयंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।**
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ।।5।।

सं. सामायिके तु कृते, यस्मात् श्रावकः श्रमण इव भवति ।
एतेन कारणेन, बहुशः सामायिकं कुर्यात् ।।5।।

हि. जिस कारण से सामायिक करने पर श्रावक साधु के समान बनता है, इस कारण से बहुत बार सामायिक करना चाहिए ।।5।।

20. प्रा. जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाई रयणीए ।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ।।6।।

समास विग्रह :– उवही य देहो ते तेसिं समाहारो उवहिदेहं (समाहारद्वन्द्वः) ।

सं. यदि मे देहस्याऽस्यां रजन्यां प्रमादो भवेत् ।
आहारमुपधिदेहं, सर्वं त्रिविधेन व्युत्सृष्टम् ।।6।।

हि. जो मेरे इस शरीर की इस रात्रि में मृत्यु हो जाय, तो आहार, उपधि और देह इन सबका त्रिविध (मन-वचन-काया) से त्याग किया ।।6।।

21. प्रा. एगो हं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ।।7।।

समास विग्रह :– अदीणं मणं जस्स सो अदीणमणसो (बहुव्रीहिः) ।

सं. अहमेकः, मे कोऽपि नाऽस्ति, अहमन्यस्य कस्यचिन्न ।
एवमदीनमना आत्मानमनुशास्ति ।।7।।

हि. मैं अकेला हूँ, मेरा कोई नहीं है, मैं अन्य किसी का नहीं हूँ, इस प्रकार दीनतारहित मनवाला आत्मा को शिक्षण देता है ।।7।।

22. प्रा. एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिराभावा, सव्वे संजोगलक्खणा ।।8।।

समास विग्रह :– नाणं च दंसणं च नाणदंसणाइं, नाणदंसणेहिं संजुओ नाणदंसणसंजुओ (द्वन्द्व-तृतीयातत्पुरुषौ) ।
संजोगो लक्खणं जेसिं ते संजोगलक्खणा (बहुव्रीहिः) ।

सं. ज्ञानदर्शनसंयुक्त एको मे आत्मा शाश्वतः ।
शेषा मे भावा बाह्याः, सर्वे संयोगलक्खणा ।।8।।

हि. ज्ञानदर्शनसहित ऐसी एक मेरी आत्मा ही नित्य है, शेष मेरे सब भाव बाह्य हैं=मेरे स्वयं के नहीं हैं और वे सब संयोग लक्षणवाले हैं ।।8।।

23. प्रा. संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ।।9।।

समास विग्रह :– संजोगो मूलं जाए सा संजोगमूला (बहुव्रीहि:) ।
दुक्खाणं परंपरा दुक्खपरंपरा (षष्ठीतत्पुरुष:) ।
संजोगाणं संबंधं संजोगसंबंधं (षष्ठी तत्पुरुष:) ।

सं. संयोगमूला दुक्खपरंपरा जीवेन प्राप्ता ।
तस्मात् सर्वं संयोगसंबंन्धं, त्रिविधेन व्युत्सृष्टम् ।।9।।

हि. संयोगमूलक=संयोग के कारण से दु:खों की परम्परा जीव द्वारा प्राप्त की गई है, अत: सभी संयोग के सम्बन्ध का त्रिविध=मन-वचन-काया से त्याग किया है ।।9।।

24. प्रा. अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहूणो गुरुणो ।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ।।10।।

समास विग्रह :– जीवं सम्मत्तं जावज्जीवं (अव्ययीभाव:) ।
जिणेहिं पन्नत्तं जिणपन्नत्तं (तृतीयातत्पुरुष:) ।

सं. अर्हन् मम देवो, यावज्जीवं सुसाधवो गुरव: ।
जिनप्रज्ञप्तं तत्त्वमिति, सम्यक्त्वं मया गृहीतम् ।।10।।

हि. अरिहन्त मेरे देव हैं, जीवनपर्यन्त सुसाधु भगवन्त मेरे गुरु हैं, श्री जिनेश्वर ने जो कहा वह तत्त्व है इस प्रकार का सम्यक्त्व मेरे द्वारा ग्रहण किया गया है ।।10।।

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. देवों और असुरों के समुह से वन्दित जिनेश्वर हमारा रक्षण करें ।

प्रा. सुरासुरविंदवंदिया जिणीसरा अम्हे रक्खंतु ।

समास विग्रह :– सुरा य असुरा य सुरासुरा । सुरासुराणं विंदं सुरासुरविंदं । सुरासुरविंदेण वंदिया सुरासुरविंदवंदिया । (द्वन्द्व-षष्ठी तृतीयातत्पुरुषा:) ।
जिणाणं ईसरा जिणीसरा (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. सुरासुरवृन्दवन्दिता जिनेश्वरा अस्मान् रक्षन्तु ।

2. हि. जो विह्वल (मनुष्य) को शान्ति देता है, दु:ख प्राप्त (दु:खी) का उद्धार करता है, शरण में आये हुए का रक्षण करता है, उन पुरुषों द्वारा पृथ्वी अलंकृत है ।

प्रा. जे विहलिअजणे संतिं देंति, दुहपडिए उद्धरेंति, सरणागए य रक्खेइरे, तेहिं पुरिसेहिं इमा पुहुवी अलंकिया अत्थि ।

समास विग्रह :– विहलिआ य ते जणा विहलिअजणा, ते विहलिअजणे (कर्मधारय:) ।

दुहं पडिआ दुहपडिआ, ते दुहपडिए (द्वितीयातत्पुरुष:) ।

सरणं आगया सरणागया, ते सरणागए (द्वितीयातत्पुरुष:) ।

सं. ये विह्वलितजनान् शान्ति ददति, दु:खपतितानुद्धरन्ति, शरणाऽऽगतांश्च रक्षन्ति, तै: पुरुषैरियं पृथ्व्यलङ्कृताऽस्ति ।

3. हि. अहिंसा, संयम और तपस्वरूप धर्म जिनके हृदय में है, उनको देव भी नमस्कार करते हैं ।

प्रा. अहिंसासंजमतवधम्मो जेसिं हिययंमि होइ, ते देवा वि नमंसंति ।

समास विग्रह :– अहिंसा य संजमो य तवो य अहिंसासंजमतवाइं (द्वन्द्व:) ।

अहिंसासंजमतवाइं च्चिय धम्मो अहिंसासंजमतवधम्मो । (कर्मधारय:) ।

सं. अहिंसासंयमतपोधर्मो येषां हृदये भवति, तान् देवा अपि वन्दन्ते ।

4. हि. जो मनुष्य धर्म का त्याग करके मात्र काम और भोगों का सेवन करता है, वह किसी भी काल में सुख नहीं पाता है ।

प्रा. जो जणो धम्मं चइत्ता केवलं कामभोए सेवइ, सो कयावि सुहं न पावेइ ।

समास विग्रह :– कामो य भोया य कामभोया, ते कामभोए (द्वन्द्व:) ।

सं. यो जनो धर्मं त्यक्त्वा केवलं कामभोगान् सेवते, स कदापि सुखं न प्राप्नोति ।

5. हि. सभी मंगलों में प्रथम मंगल कौन-सा है ?

प्रा. मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं मंगलं किमत्थि ?

सं. मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं मङ्गलं किमस्ति ?

6. हि. हे भगवन् ! धर्म का उपदेश देकर आपने मुझ पर अनुग्रह किया है ।

प्रा. भयवं ! धम्मुवएसदाणेण तुब्भे मइ अणुग्गहं करीअ ।

समास विग्रह :– धम्मस्स उवएसो धम्मुवएसो । धम्मुवएसस्स दाणं धम्मुवएसदाणं तेण धम्मुवएसदाणेण (उभयत्र षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. हे भगवन्त ! धर्मोपदेशदानेन यूयं मय्यनुग्रहमकुरुत ।

7. हि. स्वामी की आज्ञा में रहने में ही तुम्हारा कल्याण है ।

प्रा. सामिणो आणाए वासे चेव तुम्हाणं कल्लाणं अत्थि ।

सं. स्वामिन आज्ञायां वासे चेव युष्माकं कल्याणमस्ति ।

8. हि. जब पुण्य का नाश होता है, तब सब विपरीत होता है ।

प्रा. जया पुण्णं नस्सई, तया सव्वं विवरीअं होइ ।

सं. यदा पुण्यं नश्यति, तदा सर्वं विपरीतं भवति ।

9. हि. हे प्रभो ! तुम्हारे चरणो की शरण लेकर, कौन-सा मनुष्य संसार नहीं तरेगा ? ।

प्रा. हे पहू ! तुम्ह चरणाणं सरणं गहिऊण को जणो संसारं न तरिहिइ ?

सं. हे प्रभो ! तव चरणानां शरणं गृहीत्वा को जनः संसारं न तरिष्यति ?

10. हि. इस लोक (भव) में जो शुभ अथवा अशुभ कर्म किया है, वही परलोक में साथ में आता है, (इसलिए) तुम शुभकर्म का संचय करो ।

प्रा. इमंसि लोगंसि जं सुहासुहकम्मं कयं, तं चेव परम्मि लोगम्मि सह आगच्छेइ, तओ तुं सुहकम्मं संचिणसु ।

समास विग्रह :– सुहं य असुहं य सुहासुहं । सुहासुहं य तं कम्मं सुहासुहकम्मं (द्वन्द्व-कर्मधारयौ) ।

सुहं य तं कम्मं सुहकम्मं (कर्मधारयः) ।

सं. अस्मिंल्लोके यच्छुभाशुभकर्म कृतं, तच्चैव परस्मिंल्लोके सहाऽऽगच्छति, ततस्त्वं शुभकर्म संचिनु ।

11. हि. इस संसार में किसका जीवन सफल है ?

प्रा. अमुम्मि संसारंमि कस्स जीविअं सहलं अत्थि ?

सं. अमुष्मिन् संसारे कस्य जीवितं सफलमस्ति ?

12. हि. जिसके जीवित रहने पर सज्जन और मुनि जीते हैं और जो हमेशा परोपकारी हैं, उसका जीवन सफल है ।

प्रा. जाहे जीवंते सज्जणा मुणिणो य जीवंति यश्च सदा परोपकारी भवति, तस्य जीविअं सहलं अत्थि ।

समास विग्रह :– संता य ते जणा सज्जणा (कर्मधारयः) ।

परेसिं उवयारी परोवयारी (षष्ठीतत्पुरुषः) ।

सं. यस्मिञ् जीवति सज्जना मुनयश्च जीवन्ति, यश्च सदा परोपकारी भवति, तस्स जीवितं सफलमस्ति ।

13. हि. यह मेरा है और यह तुम्हारा है, इस प्रकार की वृत्ति तुच्छ मनवालो को होती है लेकिन महात्माओं को तो सम्पूर्ण जगत् अपना ही है ।

प्रा. इमं मज्झ अत्थि, इमं च तुज्झ अत्थि, इह लहुचेयाणं होइ, महप्पाणं तु सव्वं जगं अप्पकेरं चिय होइ ।

समास विग्रह :– लहुं चेयं जेसिं ते लहुचेया, तेसिं लहुचेयाणं (बहुव्रीहिः) । महंतो अप्प जेसिं ते महप्पाणो, तेसिं महप्पाणं (बहुव्रीहिः) ।

सं. इदं मम अस्ति, इदं च तवाऽस्ति, इति लघुचेतसां भवति, महात्मानां तु सर्वं जगद् आत्मीयं चैव भवति ।

14. हि. तू कहता है कि यह पुस्तक मेरी है और तेरा मित्र कहता है कि यह पुस्तक उसकी है, तो तुम्हारे में सत्यवादी कौन है ?

प्रा. तुं कहेसि इमं पुत्थयं मम अत्थि, तव मित्तं च कहेइ अमुं पुत्थयं तस्स अत्थि, ता तुम्हेसु सच्चवओ को अत्थि ?

समास विग्रह :– सच्चं च्चिय वयं जस्स सो सच्चवओ (बहुव्रीहिः) ।

सं. त्वं कथयसि, इदं पुस्तकं ममाऽस्ति, तव मित्रं च कथयति, अदः पुस्तकं तस्याऽस्ति, ततो युवयोः सत्यव्रतः कोऽस्ति ?

15. हि. उस मनुष्य ने इन बालकों को और उन बालिकाओं को सभी फल दे दिये ।

प्रा. सो जणो इमेसि बालाणं अमूणं च कन्नगाणं सव्वफलाइं दाहीअ ।

समास विग्रह :– सव्वाइं च ताइं फलाइं सव्वफलाइं (कर्मधारयः) ।

सं. सः जन एभ्यो बालेभ्यः, अमूभ्यश्च कन्यकाभ्यः सर्वफलान्यददत् ।

16. हि. राजा एकाएक बोला कि वे मनुष्य कौन हैं ? कहाँ से आये हैं ? और मेरे पास उनका क्या काम है ?

प्रा. राया सहसा बोल्लीअ, इमे जणा के संति ? कत्तो आगच्छंति ? मम समीवे तेसिं किं कज्जं अत्थि ?

सं. राजा सहसाऽब्रवीद्, इमे जनाः के सन्ति ?, कुत आगच्छन्ति, मम समीपे तेषां किं कार्यमस्ति ?

पाठ-25

प्राकृत वाक्यों का संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद

1. प्रा. **उवज्झायो चउण्हं समणाणं सुत्तस्स वायणं देह ।**
   सं. उपाध्यायश्चतुर्भ्य: श्रमणेभ्यो वाचनां ददाति ।
   हि. उपाध्याय चार साधुओं को सूत्र की वाचना देते हैं ।
2. प्रा. **पंच पंडवा सिद्धगिरिम्मि निव्वाणं पावीअ ।**
   सं. पञ्च पाण्डवा: सिद्धगिरौ निर्वाणं प्राप्नुवन् ।
   हि. पाँच पाण्डव सिद्धगिरि पर निर्वाण को प्राप्त हुए ।
3. प्रा. **कामो कोहो लोहो मोहो मओ मच्छरो य छ वियारा जीवाणमहियगरा ।**
   सं. काम: क्रोधो लोभो मोहो मदो मत्सरश्च षड् विकरा: जीवानामहितकरा: ।
   हि. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और ईर्ष्या ये छह विकार जीवों का अहित करनेवाले हैं ।
4. प्रा. **अरिंस उज्जाणे पणवीसा अंबा, छत्तीसा य लिंबा, एगासीई केलीओ, सडसट्ठी चंपआ अत्थि ।**
   सं. अस्मिन्नुद्याने पञ्चविंशतिराम्रा:, षट्त्रिंशच्च निम्बा:, एकाशीति: केल्य:, सप्तषष्टिश्चम्पकास्सन्ति ।
   हि. इस बगीचे=बाग में आम्र के पच्चीस वृक्ष, नीम के छत्तीस वृक्ष, केले के इक्यासी वृक्ष और सड़सठ चंपक वृक्ष हैं ।
5. प्रा. **सो समणो पव्वइओ अद्धुट्ठेहिं सह खंडियसएहिं ।**
   समास विग्रह :– खंडियाण सयाइँ खंडियसयाइं, तेहि खंडियसएहिं (षष्ठीतत्पुरुष: ।) ।
   सं. स श्रमण: प्रव्रजितोऽर्द्धचतुर्थै: सह खण्डिकशतै: ।
   हि. उस साधु ने साढ़े तीन सौ विद्यार्थियों के साथ दीक्षा ग्रहण की ।
6. प्रा. **नहे सत्तण्हं रिसीणं सत्त तारा दीसंति ।**
   सं. नभसि सप्तानामृषीणां सप्त तारकाणि दृश्यन्ते ।
   हि. आकाश में सात ऋषियों के सात (सप्तर्षि) तारे दिखाई देते हैं ।
7. प्रा. **समोसरणे भयवं महावीरो देवदाणवमणुअपरिसाए चउहिं मुहेहिं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।**

समास विग्रह :– देवा य दाणवा य मणुआ य देवदाणवमणुआ । देवदाणवमणुआणं परिसा देवदाणवमणुअपरिसा, ताए देवदाणवमणुअपरिसाए (द्वन्द्व-षष्ठीतत्पुरुषौ) ।

सं. समवसरणे भगवान् महावीरो देवदानवमनुजपर्षदि चतुर्भिर्मुखैरर्धमागध्या भाषया धर्ममाचष्टे ।

हि. समवसरण में भगवान् महावीर देव, दानव और मनुष्यों की पर्षदा में चार मुख्य द्वारा अर्धमागधी भाषा से धर्म कहते है ।

8. **प्रा. तिसलादेवी चइत्तमासस्स सुक्कपक्खे तेरसीए तिहीए महावीरं पुत्तं पयाही ।**

समास विग्रह :– चइत्तो य एसो मासो चइत्तमासो, तस्स चइत्तमासस्स (कर्मधारयः) ।

सुक्को य एसो पक्खो सुक्कपक्खो, तम्मि सुक्कपक्खे (कर्मधारयः) ।

सं. त्रिशलादेवी चैत्रमासस्य शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथै महावीरं पुत्रं प्रजायत ।

हि. त्रिशलादेवी ने चैत्र महीने के शुक्ल पक्षी की त्रयोदशी तिथि में पुत्र महावीर को जन्म दिया ।

9. **प्रा. दसहिं दसेहिँ सयं होइ, दसहिं सएहिं सहस्सं ।**
दसहिं सहस्सेहिँ अजुयं, दसहि अजुएहिं लक्खं च ॥1॥

सं. दशभिर्दशभिः शतं भवति, दशभिः शतैः सहस्रम् ।
दशभिः सहस्रैरयुतं, दशभिरयुतैर्लक्षं च ॥1॥

हि. दस को दस से गुणा करने पर सौ होता है, दस को सौ से गुणा करने पर हजार, दस को हजार से गुणा करने पर अयुत=दस हजार और दस को अयुत से गुणा करने पर लाख होता है ॥1॥

10. **प्रा. उसभे अरिहा कोसलिए पढमराया, पढमभिक्खायरिए, पढमतित्थयरे, वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासे वसित्ता, तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जमणुपालेमाणे लेहाइयाओ सउणरुअपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ, चोवट्ठिं महिलागुणे, सिप्पाणमेगसयं, एए तिन्नि पयाहियट्ठाए उवदिसइ, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिंचइ, तत्तो पच्छा लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए संवच्छरियं दाणं दाऊण परिव्वइओ ।**

समास विग्रह :– पढमो य एसो राया पढमराया (कर्मधारय:) ।

पढमो य एसो भिक्खायरिओ पढमभिक्खायरिए (कर्मधारय:) ।

पढमो य एसो तित्थयरो पढमतित्थयरे (कर्मधारय:)।

सयाणं सहस्साइं सयसहस्साइं, पुव्वाणं सयसहस्साइं पुव्वसयसहस्साइं (उभयत्र षष्ठी तत्पुरुष:) ।

कुमारे वासो कुमारवासो, तम्मि कुमारवासे (सप्तमीतत्पुरुष:) ।

लेहो आई जासुं ताउ लेहाइयाओ (बहुव्रीहि:)

सउणाणं रुआइं सउणरुआइं । सउणरुआइं पज्जवसाणे जासु ताओ सउणरुअपज्जवसाणाओ (षष्ठीतत्पुरुष-बहुव्रीहि:) ।

महिलाणं गुणा महिलागुणा, ते महिलागुणे (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

एकं च्चिय सयं एगसयं (कर्मधारय:) ।

पयाणं हियं पयाहियं । पयाहियाय त्ति पयाहियट्ठं, से पयाहियट्ठाए (षष्ठीतत्पुरुष: – चतुर्थ्यर्थे तत्पुरुषश्च) ।

पुत्ताणं सयं पुत्तसयं (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

रज्जाणं सयं रज्जसयं, तम्मि रज्जसए (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. ऋषभोऽर्हन् कौशलिक: प्रथमराज:, प्रथमभिक्षाचरक:, प्रथमतीर्थंकरो विंशतिं पूर्वशतसहस्राणि कुमारवासे उषित्वा, त्रिषष्टिं पूर्वशतसहस्राणि राज्यमनुपाल्यमानो लेखादिका: शकुनरुतपर्यवसाना द्वासप्ततिं कला:, चतुष्षष्टिं महिलागुणान् शिल्पानामेकशतमेतानि त्रीणि प्रजाहितार्थायोपदिशति, उपदिश्य पुत्रशतं राज्यशतेऽभिषिञ्चति, तत: पश्चाल्लोकान्तिकदेवै: संबोधित: सांवत्सरिकं दानं दत्वा परिव्रजित: ।

हि. अयोध्या नगरी में उत्पन्न प्रथम राजा, प्रथम साधु, प्रथम तीर्थंकर, अरिहन्त श्रीऋषभदेव ने बीस लाख पूर्वपर्यन्त कुमारावस्था में रहकर, त्रेसठ लाख पूर्व राज्य का पालन करते हुए, लेख इत्यादि पक्षी के शब्द पर्यन्त बहोत्तर कला, स्त्रियों के चौसठ गुण, एक सौ शिल्प, ये तीन प्रजा के हित हेतु बताते हैं । बताकर सौ पुत्रों का सौ राज्य पर अभिषेक करते हैं, उसके बाद लौकान्तिक देवों द्वारा सम्बोधित सांवत्सरिक दान देकर दीक्षा ली ।

11. प्रा. जिणमए एगादस अंगाणि, बारस उवंगाणि, छ छेयगंथा, दस, पइन्नगाइं, चत्तारि मूलसुत्ताइं, नंदिसुत्तअणुओगदाराइं च दोण्णि त्ति पणयालीसा आगमा संति ।

समास विग्रहः—जिणस्स मयं जिणमयं, तम्मि जिणमए (षष्ठीतत्पुरुषः) ।
छेयस्स गंथा छेयगंथा (षष्ठीतत्पुरुषः) ।
मूलाइं च ताइं सुत्ताइं मूलसुत्ताइं (कर्मधारयः) ।
नंदिसुत्तं य अणुओगदाराइं च नंदीसुत्तअणुओगदाराइं (द्वन्द्वः) ।

सं. जिनमते एकादशाङ्गानि, द्वादशोपाङ्गानि, षट् छेदग्रन्थाः दश प्रकीर्णकानि, चत्वारि मूलसूत्राणि नन्दिसूत्रानुयोगद्वारे च द्वे इति पञ्चचत्वारिंशदागमास्सन्ति ।

हि. जिनमत में ग्यारह अंग, बारह उपांग, छह छेदग्रन्थ, दश पयन्ना चार मूलसूत्र, नन्दिसूत्र और अनुयोगद्वार ये दो, इस प्रकार पैंतालीस आगम हैं ।

12. प्रा. भंते ! नाणं कइविहं पन्नत्तं ? गोयमा ! नाणं पंचविहं पन्नत्तं, तं जहा-मइनाणं, सुअनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं च ।

सं. भगवन् ! ज्ञानं कतिविधं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! ज्ञानं पञ्चविधं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा-मतिज्ञानं, श्रुतज्ञानमवधिज्ञानं, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञानं च ।

हि. हे भगवन् ! ज्ञान कितने प्रकार के कहे है ? हे गौतम ! ज्ञान पाँच प्रकार के कहे है । वह इस प्रकार है - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान ।

13. प्रा. चत्तारि लोगपाला, सत्त य अणियाइं तिण्णि परिसाओ ।
एरावणो गइंदो, वज्जं च महाउहं तस्स (सक्कस्स) ॥2॥

समास विग्रह :— गयाणं इंदो गइंदो (षष्ठीतत्पुरुषः) ।
महंतं च तं आउहं महाउहं (कर्मधारयः) ।

सं. तस्य (शक्रस्य) चत्वारो लोकपालाः, सप्त चाऽनिकानि, तिस्रः पर्षदः, ऐरावणो गजेन्द्रो, महायुधं च वज्रम् ॥2॥

हि. उस इन्द्र के चार लोकपाल, सात सैन्य, तीन पर्षदा, ऐरावण हाथी और महायुध वज्र होता है ॥2॥

14. प्रा. बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलाए, अट्ठावीसं मुणेयव्वा ॥3॥

समास विग्रह :– कुच्छिणो पूरओ कुच्छिपूरओ (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. पुरुषस्य कुक्षिपूरक आहारो, द्वात्रिंशत् कवला: किल भणित: ।
महिलाया अष्टाविंशतिर्ज्ञातव्या: ॥3॥

हि. सचमुच पुरुष का पेट भरनेवाला आहार बत्तीस कवल कहा है और स्त्री का अठ्ठाईस कवल जानना ॥3॥

15. प्रा. अट्ठावीसं लक्खा, अडयालीसं च तह सहस्साइं ।
सव्वेसिं पि जिणाणं, जईण माणं विणिद्दिट्ठं ॥4॥

सं. सर्वेषामपि जिनानां यतीनां मानम्, अष्टाविंशतिर्लक्षाण्यष्टचत्वा-रिंशच्च तथा सहस्राणि विनिर्दिष्टम् ॥4॥

हि. सभी जिनेश्वर भगवन्तों के साधुओं का प्रमाण अट्ठाईस लाख और अड़तालीस हजार बताया है ॥4॥

16. प्रा. पढमे न पढिआ विज्जा, बिईए नज्जिअं धणं ।
तईए न तवो तत्तो, चउत्थे किं करिस्सए ? ॥5॥

सं. प्रथमे विद्या न पठिता, द्वितीये धनं नाऽर्जितम् ।
तृतीये तपो न तप्तं, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥5॥

हि. (जिसने) प्रथम वय में विद्या नहीं पढ़ी, दूसरी वय में धन उपार्जन नहीं किया, तीसरी वय में तप नहीं किया, (वह) चौथी वय में क्या करेगा ? ॥5॥

17. प्रा. सत्तो सद्दे हरिणो, फासे नागो रसे य वारियरो ।
किवणपयंगो रूवे, भसलो गंधेण विणट्ठो ॥6॥

समास विग्रह :– किवणो य एसो पयंगो किवणपयंगो (कर्मधारय:) ।

सं. शब्दे सक्तो हरिण:, स्पर्शे नागो, रसे च वारिचर: ।
रूपे कृपणपतङ्गो, गन्धेन भ्रमरो विनष्ट: ॥6॥

हि. शब्द (गीत) में आसक्त हिरन, स्पर्श में आसक्त हाथी, रस में आसक्त मछली, रूप में आसक्त कृपण पतङ्गा और गन्ध में आसक्त भौंरा नष्ट हुआ ॥6॥

18. प्रा. पंचसु सत्ता पंच वि, णट्ठा जत्थागहिअपरमट्ठा ।
एगो पंचसु सत्तो, पजाइ भस्संतयं मूढो ॥7॥

समास विग्रह :– परमो य एसो अट्ठो परमट्ठो (कर्मधारयः) ।
णाइं गहिओ परमट्ठो जेहिं ते अगहियपरमट्ठा । (बहुव्रीहिः) ।
भस्सं अंते जस्स तं भस्संतं, तस्स भावो भस्संतय, तं भस्संतयं (बहुव्रीहिः) ।

सं. यत्राऽगृहीतपरमार्थाः पंचसु सक्ताः पञ्चापि नष्टाः ।
पञ्चसु सक्तः, एको मूढो भस्मान्ततां प्रयाति ॥7॥

हि. जहाँ परमार्थ को ग्रहण नहीं करनेवाले पाँच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त पाँच प्राणी विनष्ट हुए, तो पाँचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त ऐसा एक मूढ़ अवश्य मृत्यु पाता है ॥7॥

19. प्रा. **कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं,**
तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो ।
जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई,
बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो ॥
चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई,
चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, छन्नवइगामकोडिसामी
आसी जो भारहंमि भयवं ॥ वेड्ढओ ॥8॥

समास विग्रह :– कुरूणं जणवयं कुरुजणवयं । कुरुजणवयम्मि हत्थिणाउरं कुरुजणवयहत्थिणाउरं । कुरुजणवयहत्थिणाउरस्स नरीसरो कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो । नराणं ईसरो नरीसरो । (षष्ठी-सप्तमी-षष्ठीतत्पुरुषाः) ।
महंतो य एसो चक्कवट्टी महाचक्कवट्टी । महाचक्कवट्टिणो भोओ जस्स सो महाचक्कवट्टिभोए । (कर्मधारय-बहुव्रीहिः)
महंतो पहावो जस्स सो महप्पभावो (बहुव्रीहिः) ।
पुराणं वराइं पुरवराइं । पुरवराणं सहस्सं पुरवरसहस्सं । बावत्तरिगुणियाइं पुरवरसहस्साइं बावत्तरिपुरवरसहस्साइं । नगराइं य निगमा य जणवयाइं य नगरनिगमजणवयाइं । वराइं च ताइं नगरनिगमजणवयाइं वरनगरनिगमजणवयाइं बावत्तरिपुरवर-सहस्साइं च ताइं वरनगरनिगमजणवयाइं बावत्तरिपुरवरसह-स्स-वरनगरनिगमजणवयाइं । तेसिं वई बावत्तरिपुरवरसहस्सवर-नगरनिगमजणवयवई । (षष्ठीउत्तरपदलोपितत्पुरुष-द्वन्द्व-कर्मधारय-षष्ठीतत्पुरुषाः) ।

रायाणं वराइं रायवराइं। रायवराणं सहस्साइं रायवरसहस्साइं। बत्तीसगुणियाइं रायवरसहस्साइं बत्तीसारायवरसहस्साइं। तेहिं अणुयायो मग्गो जस्स सो बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो (षष्ठीउत्तरपदलोपितत्पुरुष-बहुव्रीहयः)

वराइं च ताइं रयणाइं वररयणाइं। चउदस य ताइं वररयणाइं चउदसवररयणाइं। महंता य एए निहिणो महानिहिणो। नव य एए महानिहिणो नवमहानिहिणो। चउसट्ठिगुणियाइं सहस्साइं चउसाट्ठिसहस्साइं। पवरा जुवईआ पवरजुवईआ। चउसट्ठिसहस्साइं च एआओ पवरजुवईआ चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईआ। चउदसवररयणइंच नवमहानिहिणो य चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईआ य। चउदसवररयण-नवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईआ। तासिं चउदसवररयण-नवमहा-निहि-चउसट्ठि-सहस्सपवरजुवईण (कर्मधारयउत्तरपदलोपितत्पुरुष-कर्मधारय-द्वन्द्वाः)।

सुंदरो य एसो वई सुंदरवई (कर्मधारयः)।

हया य गया य रहा य हयगयरहा। सयाणं सहस्साइं सयसहस्साइं। हयगयरहाणं सयसहस्साइं हयगयरहसयसहस्साइं। चुलसी-गुणियाइं ताइं चुलसीहयगय रहसयसहस्साइं। तेसिं सामी चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी (द्वन्द्व-षष्ठी-उत्तरपदलोपि-षष्ठीत-त्पुरुषाः)। गामाणं कोडी गामकोडी। छन्नवइगुणिआ गामकोडी छन्नवइगामकोडी। ताए सामी छन्नवइगामकोडीसामी (षष्ठी-उत्तरपदलोपि-षष्ठीतत्पुरुषाः)।

सं. कुरुजनपदहस्तिनापुरनरेश्वरः, प्रथमं, ततो महाचक्रवर्तिभोगो महाप्रभावः। यो द्वासप्ततिपुरवरसहस्त्रवरनगरनिगमनजनपदपतिः, द्वात्रिंशद्-राजवरसहस्त्रानुयातमार्गः।
चतुर्दशवररत्ननमहानिधि-चतुःषष्टिसहस्त्रप्रवरयुवतीनां सुन्दरपतिः। चतुरशीतिहयगजरथशतसहस्त्रस्वामी, षण्णवतिग्रामकोटिस्वामी यो भगवान् भारते आसीत् ।।वेष्टकः।। ।।8।।

हि. कुरुदेश में हस्तिनापुर नगर में प्रथम राजा, महान् चक्रवर्ती के भोगवाले, अतिप्रभावशाली, बहत्तर हजार श्रेष्ठ पुर, श्रेष्ठ नगर-

निगम और जनपद के स्वामी, बत्तीस हजार उत्तम राजाओं द्वारा अनुसरित मार्ग है जिनका, चौदह श्रेष्ठ रत्न, नौ महानिधि और चौंसठ हजार श्रेष्ठ युवतियों के सुन्दर स्वामी, चौरासी लाख घोड़े, हाथी और रथ के स्वामी तथा छियानवे करोड़ गाँवों के स्वामी, जो भगवन्त भारत में थे। (वेष्टक छन्द) ।।8।।

20. प्रा. तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया।
संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे। रासानंदियं ।।9।। (युग्मम्)

समास विग्रह :–सव्वं च एअं भयं सव्वभयं, तत्तो सव्वभया (कर्मधारयः)

सं. तं शान्तिं शान्तिकरं, सर्वभयात् संतीर्णम्।
शान्तिं जिनं स्तौमि, मे शान्तिं विदधातु ।। रासानन्दितम् ।।9।।

हि. शान्तिस्वरूप, शान्ति करनेवाले, सभी भय को पार करनेवाले शान्तिनाथ जिन की मैं स्तुति करता हूँ, मुझे शान्ति दो। (रासानन्दित छन्द) ।।9।। (दो गाथाएँ साथ में है)

हिन्दी वाक्यों का प्राकृत एवं संस्कृत अनुवाद

1. हि. वह इक्कीस वर्ष चारित्रपालन करके समाधिपूर्वक मृत्यु पाकर बारहवें देवलोक में देव हुआ।

प्रा. सो एगवीसं वरिसाइं चारित्तं पालित्ता ससमाहिं मच्चुं पावित्ता दुवालसे कप्पे देवो हवीअ।

समास विग्रह :– समाहिणा सह ससामाहिं। (सहार्थे तृतीयातत्पुरुषः)।

सं. स एकविंशतिं वर्षाणि चारित्रं पालयित्वा ससमाधिमृत्युं प्राप्य द्वादशमे कल्पे देवोऽभवत्।

2. हि. भगवान महावीर अश्विन महीने की अमावस्या की रात्रि में आठ कर्मों का क्षय करके मोक्ष में गये, उसके बाद कार्तिक मास की प्रतिपदा को गौतमस्वामी को केवलज्ञान हुआ, इसलिए ये दो दिन जगत् में श्रेष्ठ माने जाते हैं।

प्रा. भयवं महावीरो आसिणामावासाए रत्तीए अट्ठण्हं कम्माणं खयं करित्ता मोक्खं गच्छीअ, तत्तो पच्चूसे कत्तिअपाडिवयाए गोयमसामी केवलनाणं पावीअ, तत्तो इमाइं दोण्णि दिणाइं जगम्मि सिट्ठाइं मन्निज्जंति।

समास विग्रह :– आसिणस्स अमावस्सा आसिणामावस्सा, ताए आसिणामावासाए (षष्ठीतत्पुरुष)

कत्तिअस्स पाडिवया कत्तिअपाडिवया, ताए कत्तिअपाडिवयाए (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. भगवान् महावीर आश्विनाऽमावस्याया रात्रावष्टानां कर्मणा क्षयं कृत्वा मोक्षमगच्छत्, तत: प्रत्यूषे कार्तिकप्रतिपदि गौतमस्वामी केवलज्ञानं प्राप्नोत्, तत इमे द्वे दिने जगति श्रेष्ठे मन्येते ।

3. हि. जैन छह द्रव्य, आठ कर्म, जीवादि नौ तत्त्व, दस यतिधर्म और चौदह गुणस्थानक मानते हैं ।

प्रा. जइणा छ दव्वाइं, अट्ठ कम्माइं, जीवाइनवतत्ताइं, दह जइधम्मे, चोद्दस य गुणट्ठाणाइं मंन्नंति ।

समास विग्रह :– जीवो आई जेसिं ताइं जीवाइइं । नवाइं च ताइं तत्ताइं नवतत्ताइं ।

जीवाइइं च ताइं नवतत्ताइं जीवाइनवतत्ताइं (बहुव्रीहि-कर्मधारयौ) ।

जईणं धम्मा जइधम्मा, ते जइधम्मे (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. जैना: षड् द्रव्याणि, अष्टकर्माणि, जीवादिनवतत्त्वानि दश यतिधर्मान्, चतुर्दश च गुणस्थानकानि मन्यन्ते ।

4. हि. श्रावकों को जिनालयों की चौरासी आशातना और गुरुओं की तैतीस आशातनाओं का त्याग करना चाहिए ।

प्रा. सावगा जिणालयाणं चुलसिं आसायणाओ गुरूणं च तेतीसं आसायणाओ वज्जंतु ।

समास विग्रह :– जिणाणं आलया जिणालया, तेसिं जिणालयाणं (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. श्रावका: जिनालयानां चतुरशीतिमाशातना:, गुरूणां च त्रयस्त्रिंशदाशातना वर्जेयु: ।

5. हि. जो भरतक्षेत्र के तीन खण्ड जीतता है वह वासुदेव और छह खण्ड जीतता है वह चक्रवर्ती होता है ।

प्रा. जो भरहवासस्स तिण्णि खंडाइं जिणइ, सो वासुदेवो होइ, छह खंडाइं च जयति सो चक्कवट्टी होइ ।

सं. यो भरतवर्षस्य त्रीणि खण्डानि जयति स वासुदेवो भवति, षट् खण्डानि च जयति स चक्रवर्ती भवति ।

6. **हि. तीर्थंकरों को चार अतिशय जन्म से होते हैं तथा कर्मक्षय से ग्यारह अतिशय और देवकृत उन्नीस अतिशय, इस प्रकार तीर्थंकर चौंतीस अतिशयों से बिराजित होते हैं ।**

प्रा. तित्थयराणं चत्तारि अइसया जम्मत्तो हवंति, तहेव कम्मक्खयत्तो एगारह अइसया, देवकया य एगुणवीसं अइसया, इइ चउत्तीसअइसयविराइया तित्थयरा हवंति ।

समास विग्रह :– कम्माणं खयो कम्मक्खयो, तत्तो कम्मक्खयत्तो (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

देवेन कया देवकया (तृतीयातत्पुरुष:) ।

चउत्तीसा य एए अइसया चउत्तीसअइसया । चउत्तीसअइसएहिं विराइया चउत्तीसअइसयविराइया । (कर्मधारय-तृतीयातत्पुरुषौ) ।

सं. तीर्थकराणां चत्वारोऽतिशया जन्मतो भवन्ति, तथैव कर्मक्षयत एकादशाऽतिशया:, देवकृताश्चैकोनविंशतिरतिशया:, इति चतुस्त्रिंशदतिशयविराजितास्तीर्थकरा भवन्ति ।

7. **हि. सभी अंग और उपांगादि सूत्रों में पाँचवाँ भगवती अंग श्रेष्ठ और सबसे बड़ा है ।**

प्रा. सव्वेसुं अंगोवंगाइसुं सुत्तेसु पंचमं भगवईअंगं सिट्ठं वड्डयरं च अत्थि ।

समास विग्रह :– अंगाइं च उवंगाइं च अंगोवंगाइं । अंगोवंगाइं आइम्मि जेसु ताइं अंगोवंगाइइं, तेसु अंगोवंगाइसुं (द्वन्द्व-बहुव्रीहि:) । भगवई च्चिय अंगं भगवईअंगं (कर्मधारय:) ।

सं. सर्वेष्वङ्गोपाङ्गादिषु सुत्रेषु पञ्चमं भगवत्यङ्गं, श्रेष्ठं बृहत्तरं चाऽस्ति ।

8. **हि. चौंसठ इन्द्र मेरुपर्वत पर तीर्थंकर का जन्ममहोत्सव करते हैं ।**

प्रा. चउसट्ठी इंदा मेरुम्मि तित्थयरस्स जम्ममहूसवं करेंति ।

समास विग्रह :– जम्मणो महूसवो जम्ममहूसवो, तं जम्ममहूसवं (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. चतु: षष्टिरिन्द्रा मेरौ तीर्थंकरस्य जन्ममहोत्सवं कुर्वन्ति ।

9. **हि. सिद्ध भगवन्त आठ कर्मों से रहित होते हैं ।**

प्रा. सिद्धा भगवंता अट्ठकम्मरहिया हवंति ।

समास विग्रह :– अट्ठाइं च ताइं कम्माइं अट्ठकम्माइं । अट्ठकम्मेहिं रहिया अट्ठकम्मरहिया (कर्मधारय-तृतीयातत्पुरुषौ) ।

सं. सिद्धा भगवन्तोऽष्टकर्मरहिता: भवन्ति ।

10. हि. कुमारपाल राजा ने अठारह देशों में जीवदया का पालन करवाया था ।

प्रा. कुमारवालो निवो अट्ठारससुं देसेसुं जीवदयं पालावीअ ।

समास विग्रह :— जीवाणं दया जीवदया, तं जीवदयं (षष्ठीतत्पुरुष:) ।

सं. कुमारपालो नृपोऽष्टादशसु देशेषु जीवदयामपालयत् ।

11. हि. श्री हेमचन्द्रसूरिजी ने सिद्धहेमव्याकरण के आठवें अध्याय में प्राकृत व्याकरण दिया है ।

प्रा. सिरिहेमचंदसूरिणो सिद्धहेमवागरणस्स अट्ठमे अज्झाए पाइयवागरणं दासी ।

समास विग्रह :— सिरीए जुत्ता हेमचंदसूरिणो सिरिहेमचंदसूरिणो (उत्तरपदलोपिसमास:) । सिद्धहेमं च्चिअ वागरणं सिद्धहेमवागरणं तस्स सिद्धहेमवागरणस्स (कर्मधारय:) । पाइयं वागरणं पाइयवागरणं (कर्मधारय:) ।

सं. श्री हेमचन्द्रसूरिणा सिद्धहैमव्याकरणस्याष्टमेऽध्याये प्राकृतव्या-करणमददु: ।

12. हि. इस जम्बूद्वीप में छह वर्षधर पर्वत और भरतादि सात क्षेत्र हैं ।

प्रा. एयम्मि जंबूदीवम्मि छ वासहरा पव्वया, भरहाइ य सत्त वासा संति ।

समास विग्रह :— भरहो आई जेसु ते भरहाइ (बहुव्रीहि:) ।

सं. एतस्मिन् जम्बूद्वीपे षड् वर्षधरा: पर्वता:, भरतादयश्च सप्त वर्षा: सन्ति ।

13. हि. जीव दो प्रकार के, गति चार प्रकार की, व्रत पाँच प्रकार के और भिक्षु की प्रतिमा बारह प्रकार की हैं ।

प्रा. जीवा दुविहा, गई चउव्विहा, वयाइं पंचविहाइं, भिक्खुपडिमा य दुवालसविहा हवंति ।

समास विग्रह :— भिक्खुणो पडिमा भिक्खुपडिमा (षष्ठीतत्परुष:) ।

सं. जीवा द्विविधा:, गतयश्चतुर्विधा:, व्रतानि पञ्चविधानि, भिक्षुप्रतिमाश्च द्वादशविधा भवन्ति ।

14. हि. इस पण्डित ने इस व्याकरण के आठ अध्याय बनाये हैं और प्रत्येक अध्याय के चार-चार पाद हैं, मैंने सात अध्याय और आठवें अध्याय के दो पाद पढ़े हैं ।

प्रा. अयं पंडिओ इमस्स वागरणस्स अट्ठ अज्झाए विहेसी, पइअज्झायं य चत्तारि चत्तारि पाया संति, अहं तस्स सत्त अज्झाए, अट्ठमस्स य अज्झायस्स दुवे पाए भणीअ ।

समास विग्रह :– अज्झायं अज्झायं त्ति पइअज्झायं (अव्ययीभाव:) ।

सं. अयं पण्डितोऽस्य व्याकरणस्याऽष्टावध्यायान् व्यदधात्, प्रत्यध्यायं च चत्वारः चत्वारः पादाः सन्ति, अहं तस्स सप्ताऽध्यायान्, अष्टमस्य चाऽध्यायस्य द्वौ पादावभणम् ।

15. हि. उस यक्ष के दो मुख हैं और चार हाथ हैं, उसमें एक हाथ में शंख हैं, दूसरे हाथ में गदा है, तीसरे हाथ में चक्र है और चौथे हाथ में बाण है ।

प्रा. तस्स जक्खस्स दोण्णि मुहाइं, चत्तारि य हत्था संति, तेसुं एगम्मि हत्थम्मि संखो अत्थि, बिईये हत्थे गया अत्थि, तईये हत्थे चक्कं, चउत्थे य हत्थे सरो अत्थि ।

सं. तस्स यक्षस्य द्वे मुखे, चत्वारश्च हस्ताः सन्ति, तेष्वेकस्मिन् हस्ते शङ्खोऽस्ति, द्वितीये हस्ते गदाऽस्ति, तृतीये हस्ते चक्रं, चतुर्थे च हस्ते शरोऽस्ति ।

16. हि. इस पुस्तक के मैंने पच्चीस पाठ पढ़े, इसके चार हजार शब्द याद किये, हजार वाक्य किये, अब मुझे प्राकृत सुलभ बने, उसमें आश्चर्य क्या ?

प्रा. इमस्स पुत्थयस्स हं पणवीसं पाढे पढीअ, एअस्स चत्तारि सहस्साइं सद्दे सुमरीअ, सहस्सं वक्काइं करीअ, अहुणा मज्झ पाइयं सुलहं हवे तम्मि किं अच्छेरं ?

सं. अस्य पुस्तकस्याऽहं पञ्चविंशतिं पाठानपठम्, एतस्य चत्वारि सहस्त्राणि शब्दान् अस्मरम्, सहस्त्राणि वाक्यान्यकरोम्, अधुना मह्यं प्राकृतं सुलभं भवेत् तस्मिन् किमाश्चर्यम् ?

|| श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः ||
|| अनन्तलब्धिनिधानश्री गौतमस्वामिने नमः ||
परमोपास्यश्रीविजयनेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरिभ्यो नमः ||

।। सिरि पाइयगज्ज-पज्जमाला ।।

|| नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीर-वद्धमाणसामिस्स ||

(1) मंगलं

|| पंचनमुक्कारमहामंतो ||

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं ।
नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ||

|| श्री प्राकृतगद्य-पद्यमाला संस्कृतछायान्विता ||

। नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीर-वर्द्धमानाय ।

(1) मङ्गलम्

|| पञ्चनमस्कारमहामन्त्रः ||

नमोऽर्हद्भ्यः । नमः सिद्धेभ्यः ।
नम आचार्येभ्यः । नम उपाध्यायेभ्यः । नमो लोके सर्वसाधुभ्यः ।
एषः पञ्चनमस्कारः सर्वपापप्रणाशनः ।
मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ||

प्राकृतगद्य-पद्यमाला-हिन्दी अनुवाद

श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी-वर्धमानस्वामी को नमस्कार हो ।

(1) मंगल :– पंच नमस्कारमहामन्त्र

अरिहन्त भगवन्तों को नमस्कार हो । सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार हो । आचार्य भगवन्तों को नमस्कार हो । उपाध्याय भगवन्तों को नमस्कार हो । लोक में रहे सभी साधु भगवन्तों को नमस्कार हो । यह पंच नमस्कार (मंत्र) सभी पापों का नाश करनेवाला है और सभी मंगलों में प्रथम मंगल है ।

प्राकृत

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ।।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।।

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।।

संस्कृत अनुवाद

चत्वारि मङ्गलानि, अर्हन्तो मङ्गलम्, सिद्धा मङ्गलम्, साधवो मङ्गलम्, केवलिप्रज्ञप्तो धर्मो मङ्गलम् ।।

चत्वारो लोकोत्तमा, अर्हन्तो लोकोत्तमाः, सिद्धा लोकोत्तमाः, साधवो लोकोत्तमाः, केवलिप्रज्ञप्तो धर्मो लोकोत्तमाः ।.

चत्वारि शरणानि प्रपद्ये, अर्हतः शरणं प्रपद्ये, सिद्धान् शरणं प्रपद्ये, साधून् शरणं प्रपद्ये, केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं शरणं प्रपद्ये ।।

हिन्दी अनुवाद

चार (पदार्थ) मंगल स्वरूप हैं (1) अरिहन्त भ. मंगल हैं, (2) सिद्ध भ. मंगल हैं, (3) साधु भ. मंगल हैं और (4) केवली भगवन्त द्वारा बताया हुआ धर्म मंगल है ।

चार (पदार्थ) लोक में उत्तम हैं (1) अरिहन्त भ. लोक में उत्तम हैं, (2) सिद्ध भ. जगत् में उत्तम हैं, (3) साधु भ. लोक में उत्तम हैं, और (4) केवली भ. द्वारा बताया हुआ धर्म जगत् में उत्तम है ।

मैं चार (पदार्थों) की शरण स्वीकार करता हूँ (1) अरिहन्त भगवन्तों की शरण स्वीकार करता हूँ, (2) सिद्ध भगवन्तों की शरण स्वीकार करता हूँ, (3) साधु भगवन्तों की शरण स्वीकार करता हूँ और (4) केवली भगवन्तों द्वारा बताये हुए धर्म की शरण स्वीकार करता हूँ ।

(2) सीयावण्णणं (प्राकृत)

सीया उवणीया जिण-वरस्स जर-मरणविप्पमुक्कस्य ।
ओसत्तमल्लदामा, जल-थलय-दिव्वकुसुमेहिं ॥1॥

सिबियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेंचइयं ।
सीहासणं महरिहं, सपादपीठं जिणवरस्स ॥2॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी ।
खोमियवत्थणियत्थो, जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥3॥

छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सुंदरेण जिणो ।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहई उत्तमं सीयं ॥4॥

(2) (शिबिकावर्णनम्) संस्कृत अनुवाद

जरामरणविप्रमुक्तस्य जिनवरस्य जलस्थलकदिव्यकुसुमैः ।
अवसक्तमाल्यदामा शिबिकोपनीता ॥1॥

शिबिकाया मध्ये जिनवरस्य दिव्यं वररत्नरूपमण्डितम् ।
सपादपीठं महार्हं सिंहासनम् (अस्ति) ॥2॥

आलगितमालामुकुटो भास्वरशरीरो वराभरणधारी ।
यस्य च मूल्यं शतसहस्रं, परिहितक्षौमिकवस्त्रः ॥3॥

षष्ठेन तु भक्तेन, सुन्दरेणाऽध्यवसानेन ।
लेश्याभिर्विशुद्ध्यमानो जिन उत्तमां शिबिकामारोहति ॥4॥

(2) हिन्दी अनुवाद

प्रभु श्रीमहावीरस्वामी की दीक्षा के प्रसंग में शिबिका वर्णन :–

वृद्धावस्था और मृत्युरहित ऐसे श्रीजिनेश्वर प्रभु की, पानी और पृथ्वी पर उत्पन्न दिव्यपुष्पों से संलग्न मालावाली शिबिका ले जायी जाती है। (1)

शिबिका के मध्यभाग में श्री जिनेश्वर प्रभु का, दिव्य, श्रेष्ठ रत्नों के रूप से सुशोभित पादपीठसहित अतिकीमती सिंहासन है। (2)

पुष्पों की माला का मुकुट धारण करनेवाले, देदीप्यमान (देहवाले), श्रेष्ठ आभूषण धारण करनेवाले, जिसका मूल्य एक लाख सोनामोहर है वैसे रेशमी वस्त्र परिधान किये है जिन्होंने, दो उपवास (छट्ठ) के तप द्वारा, सुन्दर अध्यवसाय और लेश्या (=आत्मा के परिणामों) द्वारा विशुद्ध बनते प्रभु उत्तम शिबिका में आरूढ होते हैं (3-4)

(प्राकृत)

सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं ।
वीयंति चामराहिं, मणि-रयणविचित्तदंडाहिं ।।5।।
पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं, साहट्ठ रोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति देवा, सुर-असुरा गरुल-णागिंदा ।।6।।
पुरओ सुरा वहंति, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ।।7।।
वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं ।।8।।

(संस्कृत अनुवाद)

सिंहासने निविष्टः शक्रेशानौ च द्वाभ्यां पार्श्वाभ्याम् ।
मणिरत्नविचित्रदण्डैश्चामरैर्वीजयतः ।।5।।
पूर्वं संहृष्टरोमकूपैर्मनुष्यैरुत्क्षिप्ता ।
पश्चात् सुराऽसुरा, गरुडनागेन्द्रा देवा वहन्ति ।।6।।
सुराः पुरतो वहन्ति, पुनरसुरा दक्षिणे पार्श्वे ।
गरुडा अपरान् वहन्ति, नागाः पुनरुत्तरान् पार्श्वान् ।।7।।
कुसुमितं वनखण्डमिव, यथा वा शरत्काले पद्मसरः
कुसुमभरेण शोभते, इति सुरगणैर्गगनतलं ।।8।।

(हिन्दी अनुवाद)

सिंहासन पर बिराजमान प्रभु को दोनों ओर शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र मणि और रत्नजड़ित दण्डवाले चामरों द्वारा वींझते हैं (5)

(वह शिबिका) सर्वप्रथम सानन्द रोमांचित मनुष्यों द्वारा उठायी गयी । तत्पश्चात् देव, दानव, गुरुड़ेन्द्र और नागेन्द्रादि देव उठाते हैं । (6)

(उस शिबिका को) देव पूर्व की ओर से तथा दानव दक्षिण की ओर से उठाते हैं । गरुड़ेन्द्र पश्चिम की ओर से और नागेन्द्र उत्तर की ओर से उठाते हैं । (7)

जिस प्रकार पुष्पों से विकसित वनखण्ड शोभा देता है, अथवा जिस प्रकार शरदऋतु में पुष्पों के समूह से पद्मसरोवर शोभा देता है उसी प्रकार सम्पूर्ण आकाश देवों के समूह से देदीप्यमान बनता है । (8)

(प्राकृत)

सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं ।।9।।
वरपडह-भेरि-झल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।
गयणयले धरणियले, तूरणिणाओ परमरम्मो ।।10।।
ततवितत्तं घणझुसिरं, आउज्जं चउव्विहं बहुविहियं ।
वाइंति तत्थ देवा, बहूहिं आनट्टगसएहिं ।।11।।

आचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धे ।

(संस्कृत अनुवाद)

यथा वा सिद्धार्थवनं, कर्णिकारवनं चम्पकवनं वा ।
कुसुमभरेण शोभते, इति गगनतलं सुरगणैः ।।9।।
गगनतले धरणितले, वरपटह-भेरी-झल्लरी-
शङ्खशतसहस्त्रैः तूर्यैस्तूर्यनिनादः परमरम्यः ।।10।।
तत्र देवा बहुभिरानर्तकशतैः ततविततं घनझुषिरं (शुषिरं),
चतुर्विधमातोद्यं बहुविधिकं वादयन्ति ।।11।।

(हिन्दी अनुवाद)

जिस प्रकार सरसव का वन, कनेरवृक्षों का वन या चम्पकवन पुष्पों के समूह से शोभता है उसी प्रकार सम्पूर्ण आकाश देवों के समूह से देदीप्यमान बनता है । (9)

आकाशतल और पृथ्वीतल पर उत्तम पटह, भेरी, झल्लरी और शंख इत्यादि लाखों वाजिंत्रों द्वारा अतिमधुर आवाज आ रही है । (10)

वहाँ देव भी सैकड़ों नृत्यकारों के साथ तत-वितत-घन-सुषिर स्वरूप वीणा आदि चारों प्रकार के वाद्ययंत्र विधिपूर्वक-तालबद्ध बजा रहे हैं । (11)

(3) इंदियविसयभावणा

(प्राकृत)

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोत्तविसयमागया ।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ।।1।।
 ण सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खूविसयमागतं ।
 राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ।।2।।
ण सक्का ण गंधमग्घाउं, नासाविसयमागतं ।
राग-दोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ।।3।।

(इन्द्रियविषयभावना) (संस्कृत अनुवाद)

श्रोत्रविषयमागतान्, शब्दान् श्रोतुं न शक्नुयान् न ।
तत्र तु यौ रागद्वेषौ, तौ भिक्षुः परिवर्जयेत् ।।1।।
 चक्षुर्विषयमागतं, रूपमद्रष्टुं न शक्नुयात् ।
 तत्र तु यौ रागद्वेषौ, तौ भिक्षुः परिवर्जयेत् ।।2।।
नासिकाविषयमागतं, गन्धमाघ्रातुं न शक्नुयान्न ।
तत्र तु यौ रागद्वेषौ, तौ भिक्षुः परिवर्जयेत् ।।3।।

(हिन्दी अनुवाद)

इन्द्रियविषयभावना में कान, आँख नाक, जिह्वा और स्पर्श (त्वचा) इन पाँचों इन्द्रियों के विषय की भावना बतायी है ।

कान के विषय में आये हुए शब्दों को नहीं सुनना, यह शक्य नहीं है परन्तु उनके सम्बन्धी जो राग (अनुकूल विषय में राग) और द्वेष (प्रतिकूल विषय में द्वेष) करना, उसका संयमी आत्मा त्याग करे । (1)

आँख के विषय में आये रूप को नहीं देखना, यह शक्य नहीं है (अर्थात् दिखाई देता ही है), परन्तु संयमी आत्मा को राग-द्वेष का त्याग करना चाहिए । (2)

नाक के विषय में आयी हुई गन्ध को नहीं सूंघना, यह शक्य नहीं है, परन्तु संयमी आत्मा उसमें राग या द्वेष का त्याग करे । (3)

(प्राकृत)

[5]ण [6]सक्का [3]रसमणा [4]सातुं, [1]जीहाविसयमा[2]गतं ।
[9]राग-दोसा उ [8]जे [7]तत्थ, [10]ते [11]भिक्खू [12]परिवज्जए ॥4॥
[6]ण [7]सक्का [4]ण [5]संवेदेतुं, [3]फासं [1]विसय[2]मागतं ।
[10]राग-दोसा उ [9]जे [8]तत्थ, [11]ते [12]भिक्खू [13]परिवज्जए ॥5॥

(आचाराङ्ग द्वितीय श्रुतस्कन्धे)

(संस्कृत अनुवाद)

जिह्वाविषयमागतं, रसमस्वादितुं न शक्नुयात् ।
तत्र तु यौ रागद्वेषौ, तौ भिक्षुः परिवर्जयेत् ॥4॥
विसयमागतं स्पर्शं, न संवेदयितुं न शक्नुयात् ।
तत्र तु यौ रागद्वेषौ, तौ भिक्षुः परिवर्जयेत् ॥5॥

(हिन्दी अनुवाद)

जिह्वा के विषय में आये हुए रस का स्वाद नहीं लेना, शक्य नहीं है, (अर्थात् स्वाद आता है) परन्तु उसमें राग या द्वेष का संयमी आत्मा त्याग करे । (4)

स्पर्शनेन्द्रिय के विषय में आये हुए स्पर्श का अनुभव नहीं करना, यह शक्य नहीं है अर्थात् अनुभव हो ही जाता है । परंतु उसमें राग और द्वेष का संयमी आत्मा त्याग करें । (5)

(4) निम्ममो भिक्खू चरे

(प्राकृत)

[3]कयरे [4]मग्गे [5]अक्खाते, [1]माहणेण [2]मतीमता ? ।
[7]अंजु [8]धम्मं [9]जहातच्चं, [6]जिणाणं [10]तं [12]सुणेह भे[11] ॥1॥
[1]माहणा [2]खत्तिया [3]वेस्सा, [4]चंडाल [5]अदु [6]बोक्कसा ।
[7]एसिया [8]वेसिया [9]सुद्दा, [10]जे य [11]आरंभणिस्सिया ॥2॥
[12]परिग्गहनिविट्ठाणं, [14]वेरं [13]तेसिं [15]पवड्ढई ।
[17]आरंभसंभिया [18]कामा, [20]न [16]ते [19]दुक्खविमोयगा ॥3॥

निर्ममो भिक्षुश्चरेत्

(संस्कृत अनुवाद)

माहनेन मतिमता, कतरे मार्गा आख्याताः ? ।
जिनानामृजुं धर्मं, याथातत्थं तं भो ! श्रृणु ॥1॥
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वेश्याः, चाण्डाला अथवा वर्णसङ्कराः ।
एषिका वैशिकाः क्षुद्राः, ये चाऽऽरम्भनिश्रिताः ॥2॥
परिग्रहनिविष्टानां, तेषां वैरं प्रवर्धते ।
ते आरम्भसम्भृताः कामाः, दुःखविमोचका न ॥3॥

(हिन्दी अनुवाद)

पूज्य श्रीसुधर्मास्वामीजी श्रीजंबूस्वामी को उद्देशकर उपदेश देते हैं कि ``आरम्भ-परिग्रहादि में आसक्त लोगों का संग छोड़कर साधुओं को निर्ममत्व भाव में रहना चाहिए ।

माहन=मारो नहीं इस प्रकार कहनेवाले केवलज्ञानी श्रीमहावीरस्वामी ने कितने मार्ग बताये हैं ? अरिहंत भगवन्तों का ऋजु=सरलता रूप धर्म सत्यार्थ है, हे भविक ! तुम उसे सुनो । (1)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, चाण्डाल अथवा वर्णसंकर जातिविशेष, शिकारी आदि जीवहिंसक, वणिक्, क्षुद्र और जो आरंभ में आसक्त हैं, परिग्रह में तल्लीन हैं, उन लोगों की वैरभावना बढ़ती है, अतः पापारम्भ से पुष्ट इच्छाएँ दुःख में से मुक्त करानेवाली नहीं होती हैं । (2-3)

(प्राकृत)

[1]आघायकिच्च [2]माहेउं, [5]नाइओ [3]विसएसिणो ।
[4]अन्ने [8]हरंति [6]तं [7]वित्तं, [9]कम्मी [10]कम्मेहिं [11]किच्चति ।।4।।
[1]माया [2]पिया [3]ण्हुसा [4]भाया, [5]भज्जा [7]पुत्ता य [6]ओरसा ।
[13]नालं [6]ते [11]तव [12]ताणाय, [10]लुप्पंतस्स [6]सकम्मुणा ।।5।।
एयमट्ठं संपेहाए, परमट्ठाणुगामियं ।
निम्ममो निरहंकारो, चरे भिक्खू जिणाहियं ।।6।।

(सूत्रकृताङ्ग-द्वितीय श्रुतस्कन्धे)

(संस्कृत अनुवाद)

आघातकृत्यमाधाय, विषयैषिणोऽन्ये ज्ञातयः ।
तद् वित्तं हरन्ति, कर्मवान् कर्मभिः कृत्यते ।।4।।
माता पिता स्नुषा भ्राता, भार्या औरसाश्च पुत्राः ।
ते स्वकर्मणा लुम्पतस्तव त्राणायाऽलं न ।।5।।
परमार्थानुगामिकमेतदर्थं सम्प्रेक्ष्य ।
निर्ममो निरहङ्कारो, भिक्षुर्जिनाऽऽहितं (जिनाख्यातं) चरेत् ।।6।।

(हिन्दी अनुवाद)

अग्निसंस्कार, जलांजलिदान-पितृपिंड इत्यादि मृत्युक्रिया करके विषयसुख के अभिलाषी अन्य स्वजन उसका धन ले लेते हैं, इस प्रकार पापारम्भवाला जीव अपने कर्मों से ही दुःखी बनता है (4)

माता, पिता, पुत्रवधू, भाई, पत्नी और अपने सगे पुत्र, अपने ही कर्मों से दुःखी बनते हैं, तुझे बचाने के लिए ये सब समर्थ नहीं होते हैं । (5)

सम्यग्दर्शनादि मोक्ष और संयम में साथ मे रहनेवाले हैं इस प्रकार विचार करके ममता और अहंकाररहित साधु को जिनेश्वर भ. के बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए । (6)

(5) पुक्खरिणीवण्णं

(प्राकृत)

से जहाणामए पुक्खरिणी सिया, बहुउदगा बहुसेया बहुपुक्खला लद्धट्ठा पुंडरीकिणी पासादिया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया, आणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला वण्णमंता गंधमंता फासमंता पासादिया दरिसणीया अभिरुवा पडिरुवा, तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए, बुइए, अणुपुव्वुट्ठिए उस्सिए रुइले वन्नमंते गंधमंते रसमंते पासादीए जाव पडिरूवे ।

(पुष्करिणीवर्णनम्) (संस्कृत अनुवाद)

तद् यथानामका पुष्करिणी स्यात्, बहूदका, बहुसेया, बहुपुष्कला, लब्धार्था पुण्डरीकिणी, प्रासादिका, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा, तस्या नु पुष्करिण्यास्तत्र तत्र देशे देशे तस्मिंस्तस्मिन् बहूनि पद्मवरपौण्डरीकाण्युक्तानि । अनुपूर्व्युत्थितानि, उच्छ्रितानि, रुचिलानि, वर्णवन्ति, गन्धवन्ति, स्पर्शवन्ति, प्रासादितानि, दर्शनीयानि, अभिरूपाणि, प्रतिरूपाणि, तस्या नु पुष्करिण्या बहुमध्यदेशभागे एकं महत् पद्मवरपौण्डरीकमुक्तम्, आनुपूर्व्युत्थितमुच्छ्रितं, रुचिलं, वर्णवद्, गन्धवद्, रसवत्, प्रासादितं यावत् प्रतिरूपम् ।

(हिन्दी अनुवाद)

पुष्करिणी के वर्णन में बहुत कमलों से विभूषित जलाशय का वर्णन:–

दूसरे अंग श्रीसूत्रकृतांग सूत्र के दूसरे श्रुतस्कंध के प्रथम पुंडरीक नामक अध्ययन के प्रथम सूत्र में बताते हैं कि जैसे कोई बहुत कमलोंवाला यथार्थ सरोवर हो कि जो प्रचुर जलवाला, प्रचुर कीचड़वाला, प्रभूत कमलोंवाला, उससे ही `पुष्करिणी' इस प्रकार सार्थक नामवाला, प्रचुर श्वेत कमलोंवाला, निर्मल जलवाला अथवा देवमन्दिर जिसके नजदीक है वैसा, देखने योग्य, राजहंस आदि पक्षियों से शोभित, स्वच्छ पानी के कारण जहाँ प्रतिबिम्ब गिरता है वैसा, उसके प्रत्येक प्रदेश में प्रत्येक स्थान में उत्तम श्वेत कमल (पुंडरीक) शोभते हैं, वे सब विशिष्ट रचनापूर्वक कीचड़ और पानी का त्याग करके ऊपर रहे हुए हैं ।

(प्राकृत)

सव्वावंति च णं तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला जाव पडिरूवा, सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगं महं पउमवरपोंडरीए बुइए अणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे ।

सूत्रकृताङ्ग-द्वितीयश्रुतस्कन्धे, प्रथमाध्ययने-सूत्र (1)

(संस्कृत अनुवाद)

सर्वस्याश्च नु तस्याः पुष्करिण्यास्तत्र तत्र देशे देशे तस्मिंस्तस्मिन् बहूनि पद्मवरपौण्डरीकान्युक्तानि, आनुपूर्व्युत्थितान्युच्छितानि, रुचिलानि यावत् प्रतिरूपाणि, सर्वस्याश्च तस्याः पुष्करिण्या बहुमध्यदेशभागे एकं महत् पद्मवरपौण्डरीकमुक्तम्, आनुपूर्व्युत्थितं यावत् प्रतिरूपम् ॥

(हिन्दी अनुवाद)

उत्तम कान्तिवाले, उत्तम रंग के, श्रेष्ठ गन्धवाले, शुभ स्पर्शवाले, प्रसन्नतादायक, देखने योग्य, सुन्दर, अतिशय रूपवान है, उस जलाशय के प्रायः मध्यभाग में एक बड़ा श्रेष्ठ श्वेत कमल है, जो रमणीय, रचनायुक्त, जल और कीचड़ से ऊपर रहा हुआ उत्तम वर्ण, उत्तम गन्ध, उत्तम रस, प्रसन्नतादायक यावत् अतिशय रूपवान है ।

उस सम्पूर्ण जलाशय के उन-उन स्थानों में उत्तम श्वेत कमल प्रचुर मात्रा में हैं, जो विशेष रचनायुक्त, जल और कीचड़ से ऊपर रहे हुए, देदीप्यमान यावत् अतिशय रूपवान है और उस पूरे जलाशय के मध्य भागमें एक विशाल सुन्दर कमल है, जो विशिष्ट रचनायुक्त यावत् मनोहर रूपवान है ।

(6) नमिपव्वज्जा (प्राकृत)

[2]चइऊण [1]देवलोगाओ, [5]उववन्नो [3]माणुसम्मि [4]लोगम्मि ।
[6]उवसंतमोहणिज्जो, [9]सरई [7]पोराणियं [8]जाइं ।।1।।
[1]जाइं [2]सरित्तु [3]भयवं, [6]सयंबुद्धो [4]अणुत्तरे [5]धम्मे ।
[8]पुत्तं [9]ठवेत्तु [7]रज्जे, [12]अभिनिक्खमइ [10]नमी [11]राया ।।2।।
[2]से [5]देवलोगसरिसे, [1]अन्तेउरवरगओ [6]वरे [7]भोए ।
[8]भुंजित्तु [3]नमी [4]राया, [9]बुद्धो [10]भोगे [11]परिच्चयइ ।।3।।
[2]मिहिलं [1]सपुरजणवयं, [3]बल [4]मोरोहं च [6]परियणं [5]सव्वं ।
[7]चिच्चा [8]अभिनिक्खंतो, [10]एगंतमहिट्ठिओ [9]भयवं।।4।।

(नमिप्रव्रज्या) (संस्कृत अनुवाद)

देवलोकाच्च्युत्वा, मानुषे लोके उपपन्नः ।
उपशान्तमोहनीयः पौराणिकीं जातिं स्मरति ।।1।।
जातिं स्मृत्वा स्थापयित्वा, अनुत्तरे धर्मे स्वयंबुद्धः ।
राज्ये पुत्रं स्थापयित्वा, नमिराजाऽभिनिष्क्रामति ।।2।।
अन्तः पुरवरगतः स नमिराजा, देवलोकसदृशान् वरान् भोगान् ।
भुक्त्वा बुद्धो, भोगान् परित्यजति ।।3।।
सपुरजनपदां मिथिलां, बलमवरोधं सर्वं च परिजनम् ।
त्यक्त्वाऽभिनिष्क्रान्तो, भगवान् एकान्तमधिष्ठितः ।।4।।

(हिन्दी अनुवाद)

नमिप्रव्रज्या में स्वयंसंबुद्ध बने नमिराजर्षि के साथ शक्रेन्द्र का संवादः—

देवलोक में से च्यवकर मनुष्यलोक में उत्पन्न हुए और मोहनीय कर्म जिनका उपशान्त हुआ है, वैसे नमिराजर्षि अपने पूर्वभव के जन्म का स्मरण करते हैं। (1)

पूर्वभव के जन्म का स्मरण करके, लोकोत्तर संयमधर्म के विषय में खुद (स्वयं) ही संबुद्ध बने हुए, राज्य पर पुत्र को स्थापित करके नमिराजर्षि निकलते हैं। (2)

श्रेष्ठ अन्तःपुर में रहे हुए वे नमिराजा स्वर्गलोक जैसे उत्तम भोगसुखों को भोगकर (स्वयं) बोध पाये हुए भोगसुखों का त्याग करते हैं। (3)

पुर और जनपदसहित मिथिला नगरी, सैन्य, अन्तःपुर और सभी परिजन का त्याग करके वे पूज्य (नमिराजर्षि) एकान्त=`द्रव्य से निर्जन उद्यानादिस्थान में, भाव से=मैं अकेला ही हूँ, मेरा कोई नहीं है, मैं किसी का नहीं हूँ'—इस प्रकार रहे हुए हैं। (4)

(प्राकृत)

[7]कोलाहलगभूयं [8]आसी [3]मिहिलाए [4]पव्वयंतंमि ।
[6]तइया [1]रायरिसिम्मि, [3]नमिम्मि [5]अभिणिक्खमंतंमि ।5।।
[3]अब्भुट्ठियं [4]रायरिसिं, [3]पव्वज्जाठाण [1]मुत्तमं ।
[5]सक्को [6]माहणरूवेण, [7]इमं [8]वयण [9]मब्बवी ।।6।।
किण्णु [1]भो [2]अज्ज [3]मिहिलाए, [6]कोलाहलगसंकुला ।
[9]सुव्वन्ति [7]दारुणा [8]सद्दा, [4]पासाएसु [5]गिहेसु य ।।7।।
[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[7]तओ [5]नमी [6]रायरिसी, [8]देविन्दं [9]इणम [10]ब्बवी ।।8।।

(संस्कृत अनुवाद)

राजर्षौ नमौ मिथिलायां प्रव्रजति (सति), अभिनिष्क्रामति ।
तदा कोलाहलकभूतमासीत् ।।5।।
उत्तमप्रव्रज्यास्थानमभ्युत्थितं राजर्षिम् ।
शक्रो ब्राह्मणरूपेण, इदं वचनमब्रवीत् ।।6।।
भो आर्य ! मिथिलायां प्रासादेषु गृहेषु च ।
कोलाहलकसङ्कुला दारुणाः शब्दाः किं नु श्रूयन्ते ? ।।7।।
एतमर्थं निशम्य हेतुकारणनोदितः ।
नमी राजर्षिस्ततो, देवेन्द्रमिदमब्रवीत् ।।8।।

(हिन्दी अनुवाद)

जब नमिराजर्षि मिथिला नगरी में संयम ले रहे थे और निकल रहे थे तब वातावरण कोलाहलमय हो गया । (5)

उत्तम संयमस्थान को प्राप्त नमिराजर्षि को, ब्राह्मण के वेष में इन्द्र महाराजा इस प्रकार के वचन कहते हैं । (6)

हे आर्य ! मिथिला नगरी में महल और घरों में कोलाहल से व्याप्त भयंकर शब्द क्या सुनाई नहीं देते हैं ? (7)

इस प्रकार के शब्दों को सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित नमिराजर्षि ने उसके बाद शक्रेन्द्र को इस प्रकार कहा । (8)

(प्राकृत)

[2]मिहिलाए [11]चेइए [11]वच्छे, [3]सीयच्छाए [4]मणोरमे ।
[5]पत्तपुप्फफलोवेए, [7]बहूणं [8]बहुगुणे [6]सया ।।9।।
[13]वाएण [14]हीरमाणम्मि, [10]चेइयम्मि [9]मणोरमे ।
[15]दुहिया [16]असरणा [17]अत्ता, [18]एए [20]कंदंति [1]भो [19]खगा ।।10।।
[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[6]तओ [7]नमिं [8]रायरिसिं, [5]देविंदो [9]इणम [10]ब्बवी ।।11।।
[2]एस [3]अग्गी य [4]वाऊ [5]य, [6]एयं [8]डज्झइ [7]मन्दिरं ।
[1]भयवं [10]अन्तेउरं [9]तेणं, [11]कीस णं [11]नावपेक्खह ।।12।।

(संस्कृत अनुवाद)

भो ! मिथिलायां शीतच्छाये, मनोरमे, पत्रपुष्पफलोपेते,
सदा बहूनां बहुगुणे, चैत्ये वृक्षे;
मनोरमे चैत्ये वातेन ह्रियमाणे
दु:खिता अशरणा आर्ता एते खगा: क्रन्दन्ति ।।9-10।।
एतमर्थं निशम्य हेतुकारणनोदितो देवेन्द्रो;
नमिं राजर्षिं तत इदमब्रवीत् ।।11।।
भगवन् ! एषोऽग्निश्च वायुश्च, एतन् मन्दिरं दह्यते,
तेन अन्त:पुरं कस्मान् नावप्रेक्षसे ? ।।12।।

(हिन्दी अनुवाद)

हे भाग्यवन्त ! मिथिला नगरी में शीतल छायावाला, मनोहर, पत्ते, पुष्प और फल से युक्त, अनेक लोगों को अत्यधिक गुणकारी रमणीय चैत्यवृक्ष पवन से हिलने पर, दु:खी, शरणरहित और पीडित ये पक्षी आक्रन्द कर रहे हैं । (9-10)

इस बात को सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित शक्रेन्द्र महाराजा ने नमिराजर्षि को उसके बाद यह कहा । (11)

हे भगवन् ! यह आग और पवन इस महल को जला रहे हैं, तो आप जलते हुए अन्त:पुर का ध्यान क्यों नहीं रखते हो ? (12)

(प्राकृत)

[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[7]तओ [5]नमि [6]रायरिसी, [8]देविंद [9]इणम [10]ब्बवी ।।13।।
[5]सुहं [6]वसामो [7]जीवामो, [1]जेसिं [2]मो [4]नत्थि [3]किं च णं ।
[8]मिहिलाए [9]डज्झमाणीए, [12]न [10]मे [13]डज्झइ [11]किं च णं ।।14।।
[1]चत्तपुत्तकलत्तस्स, [2]निव्वावारस्स [3]भिक्खुणो ।
[5]पियं [6]न [7]विज्जइ [4]किंचि, [8]अप्पियं पि [9]न [10]विज्जइं ।।15।।
[8]बहुं खु [7]मुणिणो [9]भद्दं, [1]अणगारस्स [2]भिक्खुणो ।
[3]सव्वओ [4]विप्पमुक्कस्स, [5]एगन्तमणु [6]पस्सओ ।।16।।

(संस्कृत अनुवाद)

एतमर्थं निशम्य हेतुकारणनोदितः ।
नमी राजर्षिस्ततो देवेन्द्रमिदमब्रवीत् ।।13।।
येषां नः किञ्चन नाऽस्ति, सुखं वसामो जीवामः ।
मिथिलायां दह्यमानायां, मे किञ्चन न दह्यते ।।14।।
त्यक्तपुत्रकलत्रस्य, निर्व्यापारस्य भिक्षोः ।
किञ्चित् प्रियं न विद्यते, अप्रियमपि न विद्यते ।।15।।
अनगारस्य भिक्षोः, सर्वतो विप्रमुक्तस्य ।
एकान्तमनुपश्यतो, मुनेर्बहु खलु भद्रम् ।।16।।

(हिन्दी अनुवाद)

यह बात सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित नमिराजर्षि ने उसके बाद इन्द्र महाराजा को इस प्रकार कहा । (13)

हमारा कुछ भी नहीं है, अतः हम सुखपूर्वक रहते हैं और जीते हैं, इसलिए मिथिला नगरी जलते हुए भी मेरा कुछ भी जलता नहीं है । (14)

जिन्होंने पुत्रों और स्त्रियों का त्याग किया है तथा व्यापर रहित हैं ऐसे साधु भ. को कुछ भी प्रिय नहीं है और कुछ भी अप्रिय नहीं है ।(15)

घर रहित, भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करनेवाले, सर्वतः संसार से मुक्त, `मैं अकेला हूँ' इस प्रकार एकान्त को देखनेवाले संयमी का सचमुच अत्यधिक कल्याण होता है । (16)

(प्राकृत)

[2]हिरण्णं [3]सुवण्णं [4]मणिमुत्तं, [5]कसं [6]दूसं च [7]वाहणं ।
[8]कोसं [9]वड्ढावइत्ताणं, [10]तोओ [11]गच्छसि [1]खत्तिया ! ।।46।।
[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[7]तओ [5]नमो [6]रायरिसी, [8]देविन्दं [9]इणम [10]ब्बवी ।।47।।
[1]सुवण्ण-रुप्पस्स उ [2]पव्वया [3]भवे,
[6]सिया हु [4]केलाससमा [5]असंखया ।
[8]नरस्स [7]लुद्धस्स [10]न [9]तेहिं [1]किंचि,
[12]इच्छा हु [13]आगाससमा [14]अणंतया ।।48।।
[1]पुढवी [2]साली [3]जवा चेव, [6]हिरण्णं [4]पसुभि [5]स्सह ।
[7]पडिपुण्णं [9]नालमे [8]गस्स, [10]इइ [11]विज्जा [11]तवं [13]चरे ।।49।।

(संस्कृत अनुवाद)

क्षत्रिय ! हिरण्यं सुवर्णं मणिमुक्तं कांस्यं दूष्यं वाहनम् ।
कोश च वर्धयित्वा ततो गच्छसि ।।46।।
एतमर्थं निशम्य हेतुकारणनोदितः ।
नमी राजर्षिस्ततो देवेन्द्रमिदमब्रवीत् ।।47।।
सुवर्णस्य रुप्यस्य तु पर्वता भवेयुः, खलु कैलाससमा असङ्खकाः स्युः ।
लुब्धस्य नरस्य तैर्न किञ्चिद्, इच्छा खु आकाशसमा अनन्तकाः ।।48।।
पृथिवी शालिर्यवाश्चैव, पशुभिः सह हिरण्यम् ।
प्रतिपूर्णमेकस्मै नाऽलमिति विदित्वा तपश्चरेत् ।।49।।

(हिन्दी अनुवाद)

हे क्षत्रिय ! हिरण्य (=सोने से बने आभूषण, चांदी), सुवर्ण=मात्र सोना, इन्द्रनील इत्यादि मणि, मोती, कांसा, विविध वस्त्र, वाहन तथा भण्ड़ार की वृद्धि करके जाओ । (46)

यह बात सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित नमि राजर्षि ने उसके बाद देवेन्द्र (शक्रेन्द्र) को इस प्रकार कहा । (47)

सोने और चाँदी के पर्वत हों और शायद वे कैलास=हिमालय जैसे असंख्य हों, तो भी लोभी मनुष्य को उससे अल्प भी सन्तोष नहीं होता है, क्योंकि इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त = अपार हैं । (48)

खेत, चावल, जौ और पशुओं के साथ सुवर्ण प्रचुर मात्रा में हो तो भी एक व्यक्ति के लिए पूरा (सन्तोषकारक) नहीं है, इस प्रकार जानकर तप का आचरण करना चाहिए । (49)

(प्राकृत)

[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[6]तओ [7]नमि [8]रायरिसिं, [5]देविंदो [9]इणम [10]ब्बवी ।।50।।
[2]अच्छेरग [3]मब्भुदये, [4]भोए [5]चयसि [1]पत्थिवा !
[6]असंते [7]कामे [8]पत्थेसि, [9]संकप्पेण [10]विहंमसि ।।51।।
[1]एय [2]मट्ठं [3]निसामित्ता, [4]हेउकारणचोइओ ।
[7]तओ [5]नमी [6]रायरिसी, [8]देविंद [9]इणम [10]ब्बवी ।।52।।
[2]सल्लं [1]कामा [4]विसं [3]कामा, [5]कामा [6]आसीविसोवमा ।
[7]कामे [8]पत्थेमाणा, [9]अकामा [11]जन्ति [10]दोग्गइं ।।53।।

(संस्कृत अनुवाद)

एतमर्थं निशम्य, हेतुकारणनोदितः ।
देवेन्द्रस्ततो नमिं राजर्षिमिदमब्रवीत् ।।50।।
पार्थिव ! आश्चर्यकम्, अद्भुतान् भोगांस्त्यजसि ।
असतः कामान् प्रार्थयसे, सङ्कल्पेन विहन्यसे ।।51।।
एतमर्थं निशम्य, हेतुकारणनोदितः ।
नमी राजर्षिस्ततो, देवेन्द्रमिदमब्रवीत् ।।52।।
कामाः शल्यं कामा विषं, कामा आशीविषोपमाः ।
कामान् प्रार्थ्यमानाः, अकामा दुर्गति यान्ति ।।53।।

(हिन्दी अनुवाद)

इस बात को सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित शक्रेन्द्र ने उसके बाद नमि राजर्षि को इस प्रकार कहा । (50)

हे राजन् ! आश्चर्य है कि तुम प्राप्त हुए अद्भुत भोगों का त्याग करते हो और अप्राप्त भोगों की इच्छा करते हो, इस प्रकार तुम संकल्प से ही नष्ट होते हो । (51)

यह बात सुनकर हेतु और कारण से प्रेरित नमि राजर्षि ने उसके बाद शक्रेन्द्र को इस प्रकार कहा । (52)

कामनाएँ शल्य जैसी हैं, इच्छाएँ जहर समान हैं, अभिलाषाएँ आशीविष सर्प के समान हैं, अतः भोगों की इच्छा करते-करते, वे इच्छाएँ पूरी नहीं होने पर प्राणी दुर्गति में जाते हैं । (53)

(प्राकृत)

[2]अहे [3]वयंति [1]कोहेणं, [4]माणेण [5]अहमा [6]गई ।
[7]माया [8]गइपडिग्घाओ, [9]लोभाओ [10]दुहओ [11]भयं ।।54।।
[2]अवउज्झिऊण [1]माहण-रूवं, [4]विउव्विऊण [3]इन्दत्तं ।
[9]वंदइ [8]अभित्थुणंतो, [5]इमाहि [6]महुराहिं [7]वग्गुहिं ।।55।।
[1]अहो [2]ते [4]निज्जिओ [3]कोहो, [5]अहो [6]माणो [7]पराजिओ ।
[8]अहो [11]निरक्किया [9]माया, [11]अहो [12]लोभो [13]वसीकओ ।।56।।
[1]अहो [2]ते [3]अज्जवं [4]साहु, [5]अहो [6]ते [8]साहु [7]मद्दवं ।
[9]अहो [10]ते [12]उत्तमा [11]खंती, [13]अहो [11]ते [15]मुत्ति [16]उत्तमा ।।57।।

(संस्कृत अनुवाद)

क्रोधेनाऽधो व्रजन्ति, मानेनाऽधमा-गतिः ।
मायया गतिप्रतिघातो, लोभाद् द्विधातो भयम् ।।54।।
ब्राह्मणरूपमपोह्य, इन्द्रत्वं विकृत्य ।
अभिर्मधुराभिर्वाग्भिरभिष्टुवन् वन्दते ।।55।।
अहो त्वया क्रोधो निर्जितः, अहो मानः पराजितः ।
अहो माया निराकृता, अहो लोभो वशीकृतः ।।56।।
अहो ते आर्जवं साधु, अहो ते मार्दवं साधु ।
अहो तव क्षान्तिरुत्तमा, अहो ते मुक्तिरुत्तमा ।।57।।

(हिन्दी अनुवाद)

प्राणी क्रोध से अधोगति में जाते हैं, अभिमान से भी अधमगति=दुर्गति होती है, माया से सद्गति रुकती है तथा लोभ से इहलोक और परलोक दोनों में भय रहता है । (54)

(उसके बाद) ब्राह्मण के रुप का त्यागकर, इन्द्र का रुप प्रकट करके ऐसी मधुर वाणी द्वारा स्तुति करते हुए (इन्द्र महाराजा नमिराजर्षि को) वन्दन करते हैं ।(55)

``अहो ! आपने क्रोध को जीत लिया है, अहो ! आपने मान को पराजित किया है, अहो ! आपने माया को दूर किया है और अहो ! आपने लोभ को स्वाधीन (अपने आधीन) किया है । (56)

अहो ! आपकी ऋजुता = सरलता उत्तम है, आपकी मृदुता श्रेष्ठ है, अहो ! आपकी क्षमा उत्तम है और आपकी मुक्ति (निर्लेपता) भी सुन्दर है । (57)

(प्राकृत)

[2]इहं [4]सि [3]उत्तमो [1]भंते, [5]पच्छा [7]होहिसि [6]उत्तमो ।
[9]लोगुत्तमुत्तमं [10]ठाणं, [11]सिद्धिं [12]गच्छसि [8]नीरओ ॥58॥
[1]एवं [5]अभित्थुणंतो, [2]रायरिसिं [3]उत्तमाए [4]सद्धाए ।
[6]पयाहिणं [7]करेंतो, [9]पुणो पुणो [10]वंदइ [8]सक्को ॥59॥
[1]तो [5]वंदिऊण [4]पाए, [3]चक्कंकुसलक्खणे [2]मुणिवरस्स ।
[7]आगासेणु[8]प्पइओ, [6]ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥60॥
[4]नमी [6]नमेइ [5]अप्पाणं, [1]सक्खं [2]सक्केण [3]चोइओ ।
[8]चइऊण [7]गेहं च [9]वेदेही, [10]सामण्णे [11]पज्जुवट्ठिओ ॥61॥

उत्तराध्ययन सूत्र

(संस्कृत अनुवाद)

भगवन् ! इहोत्तमोऽसि, पश्चादुत्तमो भविष्यसि ।
नीरजा लोकोत्तमोत्तमं, स्थानं सिद्धिं गच्छसि ॥58॥
एवं राजर्षिमुत्तमया श्रद्धयाऽभिष्टुवन् ।
प्रदक्षिणां कुर्वन्, शक्रः पुनः पुनर्वन्दते ॥59॥
ततो मुनिवरस्य चक्राङ्कुशलक्षणौ पादौ वन्दित्वा ।
ललितचपलकुण्डलकिरीटी आकाशेनोत्पतितः ॥60॥
साक्षाच्छक्रेण नोदितो नमिरात्मानं नमयति ।
गृहं च त्यक्त्वा वैदेही, श्रामण्ये पर्युपस्थितः ॥61॥

(हिन्दी अनुवाद)

हे भगवन् ! आप इस भव में उत्तम हो, उसके बाद परभव में भी उत्तम बनोगे, उससे कर्मरज रहित बनकर चौदह राजलोक में उत्तमोत्तम स्थानरूप सिद्धिपद को प्राप्त करोगे । (58)

इस प्रकार नमिराजर्षि की अनुपम श्रद्धापूर्वक स्तुति करते और प्रदक्षिणा देते हुए शक्रेन्द्र बारबार उनको वन्दन करते हैं । (59)

उसके बाद मुनिपुंगव नमिराजर्षि के चक्र और अंकुश के चिह्नवाले चरणों को नमस्कार करके, मनोहर और चंचल कुण्डल तथा मुकुट को धारण करनेवाले इन्द्र महाराजा आकाश मार्ग से चले गये । (60)

इस प्रकार साक्षात् शक्रेन्द्र (इन्द्र महाराजा) द्वारा स्तुति किये गए नमिराजर्षि आत्मा को भावित करते हैं और घर का त्याग करके विदेह देश के राजवी (राजा) चारित्र के विषय में उद्यमवान बनते हैं । (61)

(7) वयछक्कं (प्राकृत)

[1]तत्थि [3]पढमं [5]ठाणं, [2]महावीरेण [6]देसिअं ।
[8]अहिंसा [7]निउणा [9]दिट्ठा, [10]सव्वभूएसु [11]संजमो ।।1।।
[2]जावंति [1]लोए [3]पाणा, [4]तसा [5]अदुव [6]थावरा ।
[7]ते [8]जाणम[9]जाणं वा, [10]न् [11]हणे णोवि[12] [13]घायए ।।10।।
[1]सव्वे [2]जीवा वि [4]इच्छंति, [3]जीविउं [5]न [6]मरिज्जिउं ।
[7]तम्हा [10]पाणिवहं [8]घोरं, [11]निग्गंथा [12]वज्जयंति [9]णं ।।11।।
[1]अप्पणट्ठा [2]परट्ठा वा, [3]कोहा वा [4]जइ वा [5]भया ।
[6]हिंसगं [8]न [7]मुसं [8]बूआ, [10]नो वि [11]अन्नं [12]वयावए ।।12।।

(व्रतषट्कम्) (संस्कृत अनुवाद)

तत्र महावीरेणेदं प्रथमं स्थानं देशितम् ।
अहिंसा निपुणा दुष्टा, सर्वभूतेषु संयम ।।1।।
लोके यावन्तः प्राणिनः, त्रसा अथवा स्थावराः ।
तान् जानन्नजानन् वा, न हन्यान्नोऽपि घातयेत् ।।10।।
सर्वे जीवा अपि जीवितुमिच्छन्ति न मर्तुम् ।
तस्माद् घोरं तं प्राणिवधं, निर्ग्रन्था वर्जयन्ति ।।11।।
आत्मार्थं परार्थं वा, क्रोधाद्वा यदि वा भयात् ।
हिंसकं मृषां न ब्रूयाद्, नाऽप्यन्यं वादयेत् ।।12।।

(हिन्दी अनुवाद)

व्रतषट्क में प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ये पाँच और छठे रात्रिभोजन के त्याग के उपदेश पूर्वक छह व्रतों का वर्णन है ।

वहाँ (छह व्रतों में) श्रीवीर प्रभु ने यह प्रथम स्थान=व्रत बताया है, (उन्होंने) अनुपम अहिंसा देखी है और वह सभी प्राणियों के विषय में `संयम' है । (1)

जगत् में जितने भी त्रस (स्वेच्छानुसार घूमने-फिरनेवाले) अथवा स्थावर (स्थिर=स्वेच्छानुसार घूम-फिर न सके) प्राणी हैं, उनकों जानबूझकर या अनजान में मारना नहीं और दूसरों के द्वारा भी नहीं मरवाना चाहिए (10)

सभी जीव जीने की इच्छा रखते हैं परन्तु मरने की नहीं, अतः भयंकर उस जीवहिंसा का साधु भगवंत त्याग करते हैं । (11)

स्वयं अथवा अन्य के लिए, क्रोध अथवा भय से दूसरों को दु:ख पहुँचे वैसा असत्य वचन नहीं बोलना चाहिए और दूसरों के पास नहीं बुलवाना चाहिए ।(12)

(प्राकृत)

[3]मुसावाओ य [1]लोगम्मि, [2]सव्वसाहूहिं [4]गरिहिओ ।
[6]अविस्सासो य [5]भूआणं, [7]तम्हा [8]मोसं [9]विवज्जए ।।13।।
[1]चित्तमंत[2]मचित्तं वा, [3]अप्पं वा [4]जइ वा [5]बहुं ।
[6]दंतसोहणमित्तं पि, [7]उग्गंहसि [8]अजाइया ।।14।।
[9]तं [11]अप्पणा [12]न [13]गिण्हंति, [14]नो वि [16]गिण्हावए [15]परं ।
[18]अन्नं वा [17]गिण्हमाणं वा, [19]नाणु [30]जाणंति [10]संजया ।।15।।
[7]अबंभचरियं [4]घोरं, [5]पमायं [6]दुरहिट्ठियं ।
[8]नाय[9]रंति [3]मुणी [1]लोए, [2]भेयाययणवज्जिणो ।।16।।

(संस्कृत अनुवाद)

लोके सर्वसाधुभिर्मृषावादश्च गर्हितः ।
भूतानामविश्वास्यश्च, तस्मान् मृषां विवर्जयेत् ।।13।।
चित्तवदचित्तं वा, अल्पं वा यदि बहु ।
दन्तशोधनमात्रमपि, अवग्रहेऽयाचित्वा ।।14।।
तत् संयता आत्मना न गृह्णान्ति, नाऽपि परं ग्राहयन्ति ।
गृह्णन्तमपि वाऽन्यं नाऽनुजानन्ति ।।15।।
लोके भेदाऽऽयतनवर्जिनो मुनयो, घोरं,
प्रमादं दुरधिष्ठितम्, अब्रह्मचर्यं नाऽऽचरन्ति ।।16।।

(हिन्दी अनुवाद)

जगत् में सभी सज्जनों द्वारा मृषावाद=असत्यवचन की गर्हा की गई है और मृषावादी अविश्वासपात्र बनता है अतः मृषावाद का त्याग करना चाहिए (13)

सचित्त=जीवसहित (फल-फूलादि) या अचित्त=जीवरहित (सोना-चांदी आदि) थोड़ा अथवा ज्यादा, दाँत साफ करने की सली=दन्तशोधनी जितनी भी, जिनकी वसति में रहे हो उस मालिक की अनुमति बिना साधु भ. स्वयं ग्रहण करते नहीं हैं, दूसरों के द्वारा ग्रहण करवाते नहीं हैं और ग्रहण करनेवाले की अनुमोदना भी नहीं करते हैं । (14-15)

लोक में संयमघातक स्थान का त्याग करनेवाले मुनि भयंकर, (दुःखदायी) प्रमाद के स्थानरुप, अनन्तसंसार के कारणरूप, दुष्टाश्रयरूप (दुराचार) अब्रह्म का सेवन नहीं करते हैं । (16)

(प्राकृत)

[3]मूलमेय[2]महम्मस्स, [4]महादोससमुस्सयं ।
[5]तम्हा [8]मेहुणसंसग्गं, [6]निग्गंथा [9]वज्जयंति [7]णं ॥17॥
[3]बिड[4]मुब्भेइयं [5]लोणं, [6]तिल्लं [7]सप्पिं च [8]फाणिअं ।
[10]न [1]ते [9]सन्निहिमि[11]च्छंति, [2]नायपुत्तवओरया ॥18॥
[2]लोहस्से[1]स [3]अणुफासे, [4]मन्ने [5]अन्नयरामवि ।
[6]जे [7]सिया [8]सन्निहिं [9]कामे, [11]गिही [13]पव्वइए [12]न [10]से ॥19॥
जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ॥20॥

(संस्कृत अनुवाद)

एतदधर्मस्य मूलं, महादोषसमुच्छ्रयम् ।
तस्मान्निर्ग्रन्थास्तं, मैथुनसंसर्गं वर्जयन्ति ॥17॥
ते ज्ञातपुत्रवचोरताः, बिडमुद्भेद्यं लवणं ।
तैलं सर्पिः फाणितं च, सन्निधिं नेच्छन्ति ॥18॥
एष लोभस्याऽनुस्पर्शः, मन्येऽन्यतरामपि ।
यः स्यात् सन्निधिं कामयेत्, स गृही, न प्रव्रजितः ॥19॥
यदपि वस्त्रं च पात्रं वा, कम्बलं पादप्रोञ्छनम् ।
तदपि संयमलज्जार्थं, धारयन्ति परिहरन्ति च ॥20॥

(हिन्दी अनुवाद)

यह अब्रह्मचर्य अधर्म (पाप) का मूल है, महादोषों का स्थान है, अतः साधु भगवंत इस मैथुन के सम्बन्ध का त्याग करते हैं। (17)

ज्ञातपुत्र श्रीवीरप्रभु के वचनों में तत्पर साधु प्रासुक=गोमूत्रः अग्नि आदि से शुष्क किया हुआ नमक अथवा अप्रासुक=समुद्र आदि का नमक, तेल, घी, नरम गुड़ इत्यादि (सन्निधि) अपने पास नहीं रखते हैं। (18)

यह सब (सन्निधि) लोभ का ही कुछ अंश (स्वरूप) है, श्री तीर्थंकर और गणधर भगवंत कहते हैं कि जो (उपर्युक्त) अल्प वस्तुओं को अपने पास रखने की इच्छा करते हैं वे गृहस्थ हैं साधु नहीं। (19)

जो भी वस्त्र, पात्र, कम्बल और रजोहरण इत्यादि रखते हैं वे भी संयम और लज्जा के कारण धारण किये हैं और उनका उपभोग करते हैं। (20)

(प्राकृत)

[5]न [3]सो [4]परिग्गहो [6]वुत्तो, [2]नायपुत्तेण [1]ताइणा ।
[7]मुच्छापरिग्गहो [8]वुत्तो, [9]इइ [11]वुत्तं [10]महेसिणा ।।21।।
[7]संति [1]मे [2]सुहुमा [6]पाणा, [3]तसा [4]अदुव [5]थावरा ।
[8]जाइं [9]राओ [10]अपासंतो, [11]कहमे [12]सणिअं [13]चरे ।।24।।
[1]एअं च [2]दोसं [3]दट्ठूणं, [4]नायपुत्तेण [5]भासियं ।
[7]सव्वाहारं [9]न [10]भुंजंति, [6]निग्गंथा [8]राइभोयणं ।।25।।

दशवैकालिकसूत्रे अध्ययन–6

(संस्कृत अनुवाद)

त्रायिणा ज्ञातपुत्रेण स परिग्रहो नोक्तः ।
मूर्च्छापरिग्रह उक्तः, इति महर्षिणोक्तम् ।।21।।
इमे सूक्ष्माः त्रसा अथवा स्थावराः प्राणिनः सन्ति ।
यान् रात्रावपश्यन्, एषणीयं कथं चरेत् ? ।।24।।
एतं च दोषं दृष्ट्वा, ज्ञातपुत्रेण भाषितम् ।
निर्ग्रन्थाः सर्वाऽऽहारं रात्रिभोजनं न भुञ्जते ।।25।।

(हिन्दी अनुवाद)

रक्षण करनेवाले=तारक ज्ञातपुत्र श्रीवीर प्रभु ने उसे (संयमोपकरण को) परिग्रह नहीं बताया है, परन्तु मूर्च्छा=ममता को ही परिग्रह बताया है, इस प्रकार महापुरुषों ने (गणधर भ. ने सूत्र में) कहा है। (21)

ये सब सूक्ष्म (=आँखों से न दिखनेवाले), त्रस अथवा स्थावर जीव रहे हुए हैं, जिनको (जीवों को) रात्रि में नहीं देखने से एषणीय (निर्दोष आहार हेतु) गवेषणा (शोध) किस प्रकार करें ? (24)

दोष को देखकर ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर प्रभु ने कहा है कि निर्ग्रन्थ मुनि अशन-पान-खादिम-स्वादिम सभी प्रकार के आहार स्वरूप रात्रिभोजन को नहीं करते हैं। (25)

(8) रावणस्स पच्छायावो

(प्राकृत)

[4]दट्ठूण [6]जणयतणया, [3]सेन्नं [1]लङ्काहिवस्स [2]अइबहुयं ।
[7]चिन्तेइ [5]वुण्णहियया, [10]न य [11]जिणइ [8]इमं [9]सुरिंदो वि ।।21।।
[2]सा एव [3]उस्सुयमणा, [4]सीया [5]लङ्काहिवेण [1]तो [6]भणिया ।
[8]पावेण [9]मए [7]सुन्दरि !, [12]हरिया [10]छम्मेण [11]विलवंती ।।22।।
[5]गहियं [4]वयं [1]किसोयरि ! [2]अणंतविरियस्स [3]पायमूलम्मि ।
[6]अपसन्ना [7]परमहिला, [10]न [11]भुञ्जियव्वा [8]मए [9]निययं ।।23।।

(रावणस्य पश्चात्तापः)

(संस्कृत अनुवाद)

लङ्काधिपस्याऽतिबहुकं, सैन्यं दृष्ट्वा त्रस्तहृदया ।
जनकतनया चिन्तयति, इमं सुरेन्द्रोऽपि न च जयति ।।21।।
ततः सैवोत्सुकमनाः सीता, लङ्काधिपेन भणिता ।
हे सुन्दरि ! पापेन मया छद्मना विलपन्ती हृता ।।22।।
हे कृशोदरि ! अनन्तवीर्यस्य पादमूले व्रतं गृहीतम् ।
अप्रसन्ना परमहिला मया नियतं न भोक्तव्या ।।23।।

(हिन्दी अनुवाद)

लंकानरेश रावण के बड़े सैन्य को देखकर घबराये हुए हृदयवाली जनकराजा की पुत्री सीता विचार करती है, इसको (रावण को) तो इन्द्र महाराजा भी नहीं जीत सकते हैं । (21)

उसके बाद उत्सुक मनवाली सीता को लंका के राजा रावण ने कहा, कि हे सुन्दरि ! पापी ऐसे मैंने विलाप करती हुई तेरा हरण करवाया । (22)

हे कृशोदरि ! श्री अनन्तवीर्य केवली भगवंत के चरणों में मैंने व्रत लिया है कि अपनी प्रसन्नता बिना=अप्रसन्न परस्त्री के साथ मैं कभी भी भोग नहीं करूंगा । (23)

(प्राकृत)

[4]सुमरंतेण [3]वयंतं[2], [8]न [5]मए [7]रमिया [6]तुम [1]विसालच्छी !
[14]रमिहामि [10]पुणो [9]सुन्दरि ! [11]संपइ [12]आलम्बणं [13]छेत्तुं ।।24।।
[1]पुप्फविमाणारूढा, [5]पेच्छसु [3]सयलं [2]सकाणणं [4]पुहइं ।
[10]भुञ्जसु [9]उत्तमसोक्खं, [7]मज्झ [8]पसाएण [6]ससिवयणे ! ।।25।।
[2]सुणिऊण [1]इमं [3]सीया, [4]गग्गरकण्ठेण [6]भणइ [5]दहवयणं ।
[13]निसुणेहि [11]मज्झ [12]वयणं, [7]जइ [8]मे [9]नेहं [10]समुव्वहसि ।।26।।
[2]घणकोववसगएण वि, [4]पउमो [5]भामण्डलो य [3]संगामे ।
[6]एए [8]न [9]घाइयव्वा, [1]लङ्काहिव ! [7]अहिमुहावडिया ।।27।।

(संस्कृत अनुवाद)

हे विशालाक्षि ! तद् व्रतं स्मरता मया त्वं न रता ।
हे सुन्दरि ! पुनः सम्प्रत्यालम्बनं छेत्तुं रमिष्यामि ।।24।।
पुष्पविमानाऽऽरूढा सकाननां सकलां पृथिवीं पश्य ।
हे शशिवदने ! मम प्रसादेनोत्तमसौख्यं भुङ्ग्ध ।।25।।
इदं श्रुत्वा सीता गद्गदकण्ठेन दशवदनं भणति ।
यदि मयि स्नेहं समुद्वहसि, मम वचनं निश्रृणु ।।26।।
लङ्कधिप ! घनकोपवशगतेनाऽपि सङ्ग्रामे पद्मो ।
भामण्डलश्चैतावभिमुखाऽऽपतितौ न हन्तव्यौ ।।27।।

(हिन्दी अनुवाद)

हे विशाल नेत्रवाली ! उस व्रत को याद करते मेरे द्वारा तेरे साथ किसी भी प्रकार की क्रीड़ा नहीं की गई । परन्तु हे सुन्दरी ! अब उस आलम्बन को दूर करने के लिए तेरी प्रसन्नता हेतु मैं क्रीड़ा करूँगा । (24)

पुष्पक विमान में चढ़कर तुम उद्यानसहित सम्पूर्ण पृथ्वी को देखो, हे चन्द्रवदने ! (चन्द्रसमान मुखवाली) मेरी कृपा से तुम अनुपम सुख का भोग करो । (25)

यह (बात) सुनकर सीता गद्गदकण्ठ से दस मस्तकवाले रावण को कहती है, यदि मुझ पर स्नेह रखते हो तो मेरे वचन ध्यानपूर्वक सुनो । (26)

हे लंकेश रावण ! भयंकर गुस्से के आधीन बने हुए तुम्हारे द्वारा, युद्ध में भामण्डल तथा श्रीराम और लक्ष्मण दोनों सामने आये तो भी उनको मारना योग्य नहीं है । (27)

(प्राकृत)

[1]ताव य [3]जीवामि [2]अहं, [4]जाव य [6]एयाण [5]पुरिससीहाणं ।
[10]न [11]सुणेमि [9]मरणसद्दं, [7]उच्चयणिज्जं [8]अयण्णसुहं ।।28।।
[1]सा [3]जंपिऊण [2]एवं, [5]पडिया [4]धरणीयले [7]गया [5]मोहं ।
[11]दिट्ठा य [8]रावणेणं, [9]मरणावत्था [10]पयलियंसू ।।29।।
[2]मिउमाणसो [1]खणेणं, [3]जाओ [4]परिचिन्तिउं [5]समाढत्तो ।
[7]कम्मोयएण [8]बद्धो, [9]कोवि [11]सिणेहो [6]अहो [10]गुरुओ ।।30।।
[1]धिद्धित्ति [4]गरहणिज्जं, [2]पावेण [3]मए इमं [6]कयं [5]कम्मं ।
[8]अन्नोन्नपीइपमुहं, [11]विओइयं [7]जेणिमं [10]मिथुणं ।।31।।

(संस्कृत अनुवाद)

तावच्चाऽहं जीवामि, यावच्च पुरुषसिंहयोरेतयोः ।
उत्त्यजनीयमकर्णसुखं, मरणशब्दं न शृणोमि ।।28।।
सैवं जल्पित्वा धरणीतले, पतिता मोहं गता ।
रावणेन च मरणाऽवस्था, प्रगलिताक्षुः दृष्टा ।।29।।
क्षणेन मृदुमानसो जातः, परिचिन्तयितुं समारब्धः ।
अहो, कर्मोदकेन बद्धः, कोऽपि गुरुकः स्नेहः ।।30।।
धिग् धिगिति, पापेन मयेदं गर्हणीयं कर्म कृतं ।
येनाऽन्योन्यप्रीतिप्रमुखमिदं, मिथुनं वियोजितम् ।।31।।

(हिन्दी अनुवाद)

क्योंकि तभी तक ही मैं जीवित रहूँगी, जब तक पुरुषों में सिंहसमान इन दोनों के त्याग करने योग्य और कर्ण को प्रिय न लगे वैसे मरण के शब्द को नहीं सुनूँगी । (28)

इस प्रकार बोलकर सीताजी पृथ्वी पर गिर गईं और मूर्च्छित हो गयीं रावण ने भी मरणावस्था के नजदीक तथा आँसू गिरते हुए उन (सीताजी) को देखा । (29)

एक क्षण में रावण कोमल मनवाले बने और विचार करना प्रारम्भ किया, अहो ! कर्मरुपी जल से बद्ध (इनका) कोई गाढ़ स्नेह है । (30)

धिक्कार है कि पापी ऐसे मेरे द्वारा ऐसा निंदनीय कार्य किया गया, जिससे एक दूसरे पर अतिस्नेह रखनेवाले इस युगल का मैंने वियोग किया । (31)

(प्राकृत)

[4]ससिपुण्डरीयधवलं, [6]नियय‌कुलं [5]उत्तमं [8]कयं [7]मलिणं ।
[2]परमहिलाए [3]कएणं, [1]वम्मह अणियत्तचित्तेणं ।।32।।
[3]धिद्धि [1]अहो [2]अकज्जं, [7]महिला [4]जं [5]तत्थ [6]पुरिससीहाणं ।
[10]अवहरिऊण [9]वणाओ, [11]इहाणि[12]या [8]मयणमूढेण ।।33।।
[1]नरयस्स [2]महावीही, [3]कढिणा [4]सग्गग्गला [5]अणयभूमि ।
[6]सरियव्व [7]कुडिलहियया, [9]वज्जेयव्वा [10]हवइ [8]नारी ।।34।।
[1]जा [2]पढमदिट्ठ [3]संती, [6]अमएण व [4]मज्झ [7]फुसइ [5]अङ्गाइं ।
[9]सा [8]परमसत्तचित्ता, [11]उच्चयणिज्जा [10]इहं [12]जाया ।।35।।

(संस्कृत अनुवाद)

मन्मथाऽनिवृत्तचित्तेन, परमहिलायाः कृते ।
शशिपुण्डरीकधवलमुत्तमं, निजककुलं मलीनं कृतम् ।।32।।
अहो अकार्यं धिग् धिग्, यत्तत्र पुरुषसिंहानां महिला ।
मदनमूढेन वनादपहृत्येहाऽऽनीता ।।33।।
नरकस्य महावीथिः, कठिना स्वर्गाऽर्गलाऽनयभूमिः ।
सरिदिव कुटिलहृदया, नारी वर्जयितव्या भवति ।।34।।
सा प्रथमदृष्टा सती, ममाङ्गान्यमृतेनेव स्पृशति ।
परमसत्त्वचित्ता सेहोत्त्यजनीया जाता ।।35।।

(हिन्दी अनुवाद)

काम के आधीन चित्त से मैंने परस्त्री हेतु चन्द्र और पुण्डरीक=श्वेतकमल-समान निर्मल, उत्तम अपने कुल को कलंकित किया । (32)

अहो ! मेरे दुष्कृत्य को धिक्कार हो, पुरुषों में सिंहसमान उन पूज्य की स्त्री (=सीताजी) को काम से मोहित मैं वन में से अपहरण करके यहाँ लाया । (33)

नरक के राजमार्ग समान, स्वर्ग के द्वार बंद करने में मजबूत श्रृंखला समान, नदी के समान कुटिल हृदयवाली स्त्री त्याग करने योग्य है । (34)

जो प्रथम नजर में देखने पर मेरे अंगों को मानों अमृत से स्पर्श करती हो वैसा अनुभव होता था, परन्तु परमसात्त्विक चित्तवाले वे सीताजी अब मुझे त्याग करने योग्य हुए हैं । (35)

(प्राकृत)

[1]जइ वि य [6]इच्छेज्ज [5]ममं, [2]संपइ [4]एसा [3]विमुक्कसब्भावा ।
[7]तह वि य [10]न [11]जायइ [9]धिई, [8]अवमाणसुदुमियस्स ।।36।।
[3]भाया [2]मे [8]आसि [1]जया, [4]बिभीसणो [5]निययमेव [6]अणुकूलो ।
[7]उवएसपरो [9]तइया, [13]न [10]मणो [11]पीइं [12]समल्लीणो ।।।37।।
[2]बद्धा य [1]महासुहडा, [3]अन्ने वि [5]विवाइया [4]पवरजोहा ।
[7]अवमाणिओ य [6]रामो, [8]संपइ [9]मे [10]केरिसी [11]पीई ? ।।38।।
[1]जइ वि [6]समप्पेमि [2]अहं, [3]रामस्स [4]किवाए [5]जणयनिवतणया ।
[8]लोओ [7]दुग्गहहियओ, [10]असत्तिमन्तं [11]गणेही [9]मे ।।39।।

(संस्कृत अनुवाद)

यद्यपि च सम्प्रति, विमुक्तसद्भावैषा मामिच्छेत् ।
तथापि चाऽपमानसुदूनस्य, धृतिर्न जायते ।।36।।
यदा मे भ्राता बिभीषणो, नियतमेवाऽनुकूल उपदेशपर आसीत् ।
तदा मनः प्रीतिं न समालीनम् ।।37।।
महासुभटाश्च बद्धाः, अन्येऽपि प्रवरयोधा विपादिता ।
रामश्चऽपमानितः, सम्प्रति मम कीदृशी प्रीतिः ? ।।38।।
यद्यप्यहं रामस्य कृपया जनकनृपतनया समर्पयामि ।
दुर्ग्रहहृदयो लोकः, मामशक्तिमन्तं गणिष्यति ।।39।।

(हिन्दी अनुवाद)

यद्यपि अब सद्भाव-सदाचार का त्यागकर वे सीताजी मेरी इच्छा करें तो भी अपमान से दुःखी मुझे धीरज नहीं रहा है । (36)

जब मेरा भाई बिभीषण मुझे सदा अनुकूल (सत्य) उपदेश देता था तब मुझे उसकी बात पसन्द नहीं आती थी । (37)

मैंने उसके महान् सुभटों को कैद किया, दूसरे भी उत्तम योद्धाओं को मार डाला और राम का भी अपमान किया, तो अब मुझ पर प्रीति कैसे होगी ? (38)

यद्यपि मैं राम के प्रति स्नेह से जनकराजा की पुत्री सीताजी को वापिस लौटा दूँ तो दुराग्रही लोक मुझे शक्तिहीन गिनेंगे । (39)

(प्राकृत)

[1]इह [3]सीहागरुडकेऊ, [2]संगामे [4]रामलक्खणे [5]जिणिउं ।
[9]परमविभवेण [10]सीया, [6]पच्छा [8]ताणं [11]समप्पे [7]हं।।40।।
[2]न य [1]पोरुसस्स [3]हाणी, [4]एव [5]कए [7]निम्मला य [6]मे [8]कित्ती ।
[10]होह(हि) इ [9]समत्थलोए, [11]तम्हा [13]ववसामि [12]संगामं ।।41।।

(संस्कृत अनुवाद)

इह सङ्ग्रामे सिंहगरुडकेतू, रामलक्ष्मणौ जित्वा ।
पश्चादहं ताभ्यां परमविभवेन सीता समर्पयामि ।।40।।
पौरुषस्य च न हानिरेवं कृते च निर्मला कीर्तिः ।
समस्तलोके भविष्यति, तस्मात् सङ्ग्रामं व्यवस्यामि ।।41।।

(हिन्दी अनुवाद)

अतः इस युद्ध में सिंह और गरुड़ चिह्नवाले राम और लक्ष्मण को जीतकर बाद में मैं उनको परमसमृद्धिसहित सीताजी समर्पित करुंगा । (40)

इस प्रकार करने पर पुरुषार्थ की हानि नहीं होगी और समग्र जगत् में मेरा उज्ज्वल यश होगा, अतः मैं युद्ध करुंगा । (41)

(9) दयावीरमेहरहनरिंदो

(प्राकृत)

अन्नया य मेहरहो उम्मुक्कभूसणाऽहरणो पोसहसालाए पोसहजोग्गासणनिसण्णो–

(दयावीरमेघरथनरेन्द्रः) (संस्कृत अनुवाद)

अन्यदा च मेघरथ उन्मुक्तभूषणाऽऽभरणः पौषधशालायां पौषधयोग्याऽऽसन-निषण्णः ।

(हिन्दी अनुवाद)

एक बार मेघरथ राजा आभूषण का त्यागकर पौषधशाला में पौषध के योग्य आसन पर बैठे ।

(प्राकृत)

[3]सम्मत्तरयणमूलं, [4]जगजीवहियं [5]सिवालयं [6]फलयं ।
[2]राईणं [9]परिकहेइ, [7]दुक्खविमुक्खं [1]तहिं [8]धम्मं ।।1।।
[1]एयम्मि [2]देसयाले, [3]भीओ [5]पारेवओ [4]थरथरंतो ।
[6]पोसहसाल [7]मइगओ, [8]रायं ! [9]सरणं ति [10]सरणं ति ।।2।।
[2]अभओ त्ति [3]भणइ [1]राया, [4]मा [5]भाहि त्ति [6]भणिए [9]ठ्ठिओ [7]अह [8]सो ।
[10]तस्स य [11]अणुमग्गओ [13]पत्तो, [12]भिडिओ [14]सो वि [15]मणुयभासी ।।3।।
नहयलत्थो रायं भणइ-मुयाहि एयं पारेवयं, एस मम भक्खो ।
मेहरहेण भणियं-न एस दायव्वो सरणागतो ।

(संस्कृत अनुवाद)

तत्र राजानं सम्यक्त्वरत्नमूलं, जगज्जीवहितं शिवाऽऽलयं फलदम् ।
दु:खविमोक्षं धर्मं परिकथयति ।।1।।
एतस्मिन् देशकाले, भीत: कम्पमान: पारापत: ।
पौषधशालामतिगत:, ``राजन् ! शरणमिति शरणमिति ।।2।।
राजा **`अभयं'** इति भणति, **``मा बिभीहि''** इति भणितेऽथ स स्थित: ।
तस्य चाऽनुमार्गत: श्येन: प्राप्त: सोऽपि मनुजभाषी ।।3।।
नभस्तलस्थो राजानं भणति-मुञ्चैतं पारापतम्, एष मम भक्ष्य:
मेघरथेन भणितम्-नैष दातव्य: शरणाऽगत: ।

(हिन्दी अनुवाद)

वहाँ राजा को सम्यग्दर्शनरूपी रत्न जिसका मूल है, जगत् के जीवों को हितकारी, मोक्षालयरूपी फल देनेवाला, दु:खों से मुक्त करनेवाला धर्म कहते हैं (1)

वहाँ उसी समय भयभीत (और) काँपता हुआ कबूतर अचानक पौषधशाला में आया, ``हे राजन् ! शरण, शरण'' इस प्रकार कहने लगा । (2)

राजा `अभय' इस प्रकार बोलते हैं, `डर नहीं' इस प्रकार कहने पर वह (कबूतर) वहीं खड़ा रहता है, उसके पीछे क्रॉच (बाज) पक्षी आता है, वह भी मनुष्य की भाषा बोलनेवाला है । (3)

आकाश में रहा हुआ बाज राजा को कहता है कि–इस कबूतर को छोड़ दो, यह मेरा भक्ष्य है । (4)

मेघरथ राजा के द्वारा कहा गया–मेरी शरण में आया हुआ यह देने योग्य नहीं है (अर्थात् मैं इसको नहीं दूँगा क्योंकि यह मेरी शरण में आया हुआ है ।)

(प्राकृत)

भिडिएण भणियं-नरवर ! जइ न देसि मे तं, खुहिओ कं सरण-मुवगच्छामि ! त्ति ।

मेहरहेण भणियं-जइ जीवियं तुब्भं पियं निस्संसयं तहा सव्वजीवाणं । भणियं च-[2]हंतूण [1]परप्पाणे, [3]अप्पाणं [4]जो [6]करेइ [5]सप्पाणं ।

[1]अप्पाणं [8]दिवसाणं, [9]कएण [11]नासेइ [10]अप्पाणं ॥4॥

[1]दुक्खस्स [2]उव्वियंतो, [4]हंतूण [3]परं [6]करेइ [5]पडियारं ।

[11]पाविहिति [10]पुणो [9]दुक्खं, [8]बहुययरं [7]तन्निमित्तेण ॥5॥

एवं अणुसिट्ठो भिडिओ भणइ-कत्तो मे धम्ममणो भुक्खदुक्खद्दियस्स !

(संस्कृत अनुवाद)

श्येनेन भणितम्-नरवर ! यदि न ददासि मह्यं तम्, क्षुधितः कं शरणमुपगच्छामि ? इति

मेघरथेन भणितम्-यथा जीवितं तुभ्यं प्रियं, निस्संशयं तथा सर्वजीवानाम् ।

भणितं च-परप्राणान् हत्वा, आत्मानं यः सप्राणं करोति ।

अल्पानां दिवसानां कृते आत्मानं नाशयति ॥4॥

दुःखाद् उद्विजन्, परं हत्वा, प्रतिकारं करोति ।

तन्निमित्तेम बहुकतरं, दुःख पुनः प्राप्स्यति ।॥5॥

एवमनुशिष्टः श्येनो भणाति-कुतो मे धर्ममनः बुभुक्षादुःखार्दितस्य !

(हिन्दी अनुवाद)

श्येन (बाज) पक्षी ने कहा—हे राजन् ! जो तू उसे (कबूतर को) नहीं देगा, तो भूखा ऐसा मैं किसकी शरण में जाऊँगा ?

मेघरथ राजा ने कहा—जिस प्रकार तुझे जीवन प्रिय है, उसी प्रकार निःशंक सभी जीवों को जीवन प्रिय है ।

कहा है कि—दूसरों के प्राणों का नाश करके जो स्वयं जिन्दा रहता है, वह कुछ दिनों के लिए अपना (स्वयं का) ही नाश करता है । (4)

(भूख के) दुःख से दुःखी, दूसरों को मारकर, (दुःख का) प्रतिकार करता है, वह इस निमित्त द्वारा पुनः अधिकतर दुःख प्राप्त करेगा । (5)

इस प्रकार हितशिक्षा प्राप्त बाज पक्षी कहता है—भूख के दुःख से पीड़ित मेरा मन धर्म में कैसे रहेगा !

(प्राकृत)

मेहरहो भणइ-अण्णं मंसं अहं तुहं देमि भुक्खपडिघायं, विसज्जेह पारेवयं, भिडिओ भणइ-नाहं सयं मयं मंसं खामि, फुरफुरेंतं सत्तं मारेउं मंसं अहं खामि। मेहरहेण भणियं—

जत्तिय पारावओ तुलइ तत्तियं मंसं मम सरीराओ गेण्हाहि।

एवं भवउ, तित्ति भणइ (भिडिओ)

भिडियवयणेण य राया पारेवयं तुलाए चडावेऊण, बीयपासे नियय मंसं छेत्तूण चडावेइ।

(संस्कृत अनुवाद)

मेघरथो भणति-अन्यं मांसमहं तुभ्यं ददामि बुभुक्षाप्रतिघातम्, विसृज पारापतम्।

श्येनो भणति-नाऽहं स्वयं मृतं मांसं खादामि, पोस्फुरायमाणं सत्यं मारयित्वा मांसमहं खादामि।

मेघरथेन भणितम्-यावतिकं पारापतस्तुल्यते, तावतिकं मांसं मम शरीराद् गृहाण।

'एवं भवतु' इति भणति (श्येनः)

श्येनवचनेन च राजा पारापतं तुलायामारुह्य, द्वितीयपार्श्वे निजकं मांसं छेत्त्वाऽऽरोहयति।

(हिन्दी अनुवाद)

मेघरथ राजा कहता है—भूख को शांत (दूर) करने के लिए तुझे मैं दूसरा मांस देता हूँ, परन्तु कबूतर को छोड़ दो।

बाजपक्षी कहा है—मैं स्वयं मृत्यु प्राप्त जीव का मांस नहीं खाता हूँ, लेकिन मैं काँपते हुए जीव को मारकर उसका मांस खाता हूँ।

मेघरथ राजा ने कहा-तराजू में जितना कबूतर का वजन होगा, उतना मांस मेरे शरीर में से तू ग्रहण कर।

'हाँ ! मुझे मंजूर है।' बाजपक्षी ने कहा।

बाजपक्षी के वचन से राजा कबूतर को एक तराजू में एक ओर रखकर, दूसरी ओर अपना मांस निकालकर (काटकर) रखते हैं।

(प्राकृत)

[1]जह [2]जह [4]छुभेइ [3]मंसं, [5]तह [6]तह [7]पारावओ [8]बहु [9]तुलेइ ।
[10]इअ [11]जाणिऊण [12]राया, [15]आरुहइ [13]सयं [14]तुलाए उ ।।6।।
[1]हा ! हा ! [2]त्ति [3]नरवरिंदा ! [4]कीस [5]इमं [6]साहसं [7]ववसियं ? ति ।
[8]उप्पाइयं खु [9]एयं, [12]न [13]तुलइ [10]पारेवओ [11]बहुयं ।।7।।

एयम्मि देसयाले देवो दिव्वरूवधारी दरिसेइ अप्पाणं,
भणइ-रायं ! लाभा हु ते सुलद्धा जंसि एवं दयावंतो, पूयं काउं खमावेत्ता गतो ।

वासुदेवहिंडीए प्रथमखण्डे द्वितीयभागे

(संस्कृत अनुवाद)

यथा यथा मांसं क्षिपति, तथा तथा पारापतो बहु तोलयति ।
इत्ति ज्ञात्वा राजा, स्वयं तु तुलायामारुह्यति ।।6।।
हा हा ! इति नरवरेन्द्रा ! कस्मादिमं साहसं व्यवसितमिति ? ।
औत्पातिकं खल्वेतत्, पारापतो न तोलयति बहुकम् ।।7।।

एतस्मिन् देशकाले देवो दिव्यरूपधारी दर्शयत्यात्मानम्,
भणति राजन् ! लाभाः खलु तव सुलब्धाः यस्मिन्नेवं दयावान्, पूजां कृत्वा क्षमायित्वा गतः ।।

(हिन्दी अनुवाद)

जैसे-जैसे मांस रखते जाते हैं, वैसे-वैसे कबूतर का वजन बढ़ता जाता है, यह जानकर राजा स्वयं ही तराजू में बैठ जाते हैं । (6)

अहो अहो ! हे राजन् ! आपने ऐसा साहस कैसे किया ? इस प्रकार (सभी लोग बोलने लगे), सचमुच यह तो आकस्मिक है, अतः अतिभारी कबूतर तराजू में तुलता नहीं है । (7)

उसी समय वहाँ दिव्यरूप धारण करनेवाले देव ने अपने स्वरूप को प्रकट किया । कहा—हे राजन् ! आप दयालु हो इसलिए आपने सभी लाभ प्राप्त किए हैं, इस प्रकार पूजा करके क्षमायाचना करके (देव) गया ।

(10) महेसरदत्तकहा

(प्राकृत)

तामलित्तीनयरीए महेसरदत्तो सत्थवाहो। तस्स पिया समुद्दनामो वित्तसंचय-सारक्खणपरिवुड्डिलोभाभिभूओ मओ, मायाबहुलो महिसो जाओ तम्मि चेव विसए। मायावि से उवहिनियडिकुसला बहुला नाम चोक्खवाइणी पइसोगेण मया सुणिया जाया तम्मि चेव नयरे।

महेसरदत्तस्स भारिया गंगिला गुरुजणविरहिए घरे सच्छंदा इच्छिएण पुरिसेण सह कयसंकेया पओसे त्तं उदिक्खमाणी चिट्ठइ। सो य तं पएसं साउहो उवगओ मेंसरदत्तस्स चक्खुभागे पडिओ। तेण पुरिसेण अत्तसंरक्खण-निमित्तं महेसरदत्तो तक्किओ विवाडेउं।

(महेश्वरदत्तकथा) (संस्कृत अनुवाद)

ताम्रलिप्तीनगर्यां महेश्वरदत्तः सार्थवाहः। तस्य पिता समुद्रनामा वित्तसञ्चय-संरक्षणपरिवृद्धिलोभाभिभूतो मृतः, मायाबहुलो महिषो जातस्तस्मिंश्चैव विषये। माताऽपि तस्योपधिनिकृति कुशला बहुला नाम्नी चोक्षवादिनी प्रतिशोकेन मृता शुनी जाता तस्मिंश्चैव नगरे।

महेश्वरदत्तस्य भार्या गङ्गिला गुरुजनविरहिते गृहे स्वच्छन्दा, इष्टेन पुरुषेण सह कृतसङ्केता प्रदोषे तमुदीक्षमाणा तिष्ठति। स च तं प्रदेशं सायुध उपगतो महेश्वरदत्तस्य चक्षुर्भागे पतितः। तेन पुरुषेणाऽऽत्मसंरक्षणनिमित्तं महेश्वरदत्त-स्सतर्कितो विपातयितुम्।

(हिन्दी अनुवाद)

ताम्रलिप्ती नगरी में महेश्वरदत्तनामक सार्थवाह था। धन के संग्रह, रक्षण और बुद्धि के लोभ से अभिभूत उसके समुद्रनामक पिता पर गए और अत्यंत मायावी वह उसी नगर (गाँव) में महषि (पाडा) बना। माया-कपट करने में कुशल, शौचधर्म को माननेवाली उसकी माता, पति के शोक से मृत्यु प्राप्त कर उसी नगरी में कुतिया हुई। महेश्वरदत्त की पत्नी गंगिला माता-पिता रहित घर में स्वच्छंद बनी और मनोवांछित पुरुष के साथ संकेत करके सन्ध्या समय उसकी प्रतीक्षा करती है। वह पुरुष भी उसी स्थान पर शस्त्ररहित आया हुआ महेश्वरदत्त की नजर में आया। उस पुरुष ने स्वयं के बचाव हेतु महेश्वरदत्त को मारने का विचार किया।

(प्राकृत)

तेण लहुहत्थयाए गाढप्पहारीकगओ नाइदूरं गंतूण पडिओ। चिंतेइ अहो ! अणायारस्स फलं पत्तो अहं मंदभागो। एवं च अप्पाणं निंदमाणो जायसंवेगो मतो गंगिलाए उयरे दारगो जाओ। संवच्छरजायओ च महेसरदत्तस्स पिओ पुत्तो ति।

तम्मि य समए पिउकिच्चे सो महिसोणेण किणेऊण मारिओ। सिद्धाणि य वंजणाणि, पिउमंसाणि, दत्ताणि जणस्स। बितीयदिवसे तं मंसं मज्जं च आसाए-माणो पुत्तमुच्छंगे काऊणे तीसे माउसुणिगाए मंसखंडाणि खिवइ। सा वि ताणि परितुट्ठा भक्खइ, साहु य मासखवणपारणए तं गिहमणुपविट्ठो, पस्सइ य महेसरदत्तं परमपीतिसंपउत्तं तदवत्थं च ओहिणा आभोएऊण चिंतिअमणेणं–

(संस्कृत अनुवाद)

तेन लघुहस्तकया गाढप्रहारीकृतो नातिदूरं गत्वा पतितः। चिन्तयति अहो ! अनाचारस्य फलं प्राप्तोऽहं मन्दभागः। एवं चाऽऽत्मानं निन्दन् जातसंवेगो मृतः, गङ्गिलाया उदरे दारको जातः। संवत्सरजातकश्च महेश्वरदत्तस्य प्रियः पुत्र इति।

तस्मिश्च समये पितृकृत्ये च महिषस्तेन क्रीत्वा मारितः। सिद्धानि व व्यञ्जनानि पितृमांसानि, दत्तानि जनाय। द्वितीयदिवसे तं मांसं मद्यं चऽऽस्वादयन् पुत्रमुत्सङ्गे कृत्वा तस्यै मातृशुनिकायै मांसखण्डानि क्षिपति। साऽपि तानि परितुष्टा भक्षयति, साधुश्च मासक्षपणपारणके तद् गृहमनुप्रविष्टः पश्यति च महेश्वरदत्तं परमप्रीतिप्रयुक्तां तदवस्थां चाऽवधिनाऽऽभोग्य चिन्तितमनेन–

(हिन्दी अनुवाद)

उसके द्वारा हल्के हाथ से गाढ़ प्रहार किया हुआ (जार पुरुष) थोड़ी दूर जाकर गिरा और विचार करता है–अहो ! मंदभागी ऐसे मैंने अनाचार का फल पाया। इस प्रकार अपनी निंदा करता संवेगप्राप्त वह मर गया और गंगिला की कुक्षि में पुत्र के रूप में आया। एक वर्ष के बाद महेश्वरदत्त के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ।

उस समय पिता के श्राद्ध हेतु उस महिष को खरीदकर मारा। पिता के मांस का शाक आदि बनाया और लोगों को परोसा (दिया)। दूसरे दिन वह (महेश्वरदत्त) मांस और दारु का आस्वादन करता पुत्र को गोद में लेकर कुतिया बनी माता को मांस के टुकड़े ड़ालता है। वह कुतिया भी वे टुकड़े संतोषपूर्वक खाती है और उसी समय मासक्षमण के पारनेवाले साधु भगवन उस घर में पधारे। महेश्वरदत्त और अतिरागयुक्त उस परिस्थिति को अवधिज्ञान से जानकर उन्होंने विचार किया –

(प्राकृत)

अहो ! अन्नाणयाए एस सत्तुं उच्छंगेण वहइ, पिउमंसाणि य खायइ, सुणिगाए देह मंसाणि । अकज्जंति य वोत्तूण निग्गओ ! महेसरदत्तेण चितियं कीस भन्ते साहू अगहियभिक्खो `अकज्जंति य वोतूण' निग्गओ ? आगओ य साहुं गवेसंतो, विवित्तपएसे दट्ठूण, वंदिऊण पुच्छइ-भयवं ! किं न गहियं भिक्खं मम गेहे ! जं वा कारणमुदीरियं तं कहेह । साहुणा भणिओ-सावग ! ण ते मंतुं कायव्वं । पिउरहस्सं कहियं, भज्जारहस्सं, सत्तुरहस्सं च साभिण्णाणं जहावत्तमक्खायं । तं च सोऊण जायसंसारनिव्वेओ तस्सेव समीवे मुक्कगिहवासो पव्वइओ ॥

वसुदेवहिंडीए प्रथमखण्डे प्रथमभागे

(संस्कृत अनुवाद)

अहो ! अज्ञानतयैष शत्रुमुत्सङ्गेन वहति, पितृमांसानि च खादति, शुनिकायै मांसानि ददाति । अकार्यमिति चोक्त्वा निर्गतः । महेश्वरदत्तेन चिन्तितमकस्माद् भगवान् साधुरगृहीतभिक्षः `अकार्यं' इति चोक्त्वा निर्गतः ? । आगतश्च साधुं गवेषयन्, विविक्तप्रदेशे दृष्ट्वा, वन्दित्वा पृच्छति-भगवन् ! किं न गृहीता भिक्षा मम गृहे ? यद् वा कारणमुदीरितं तत् कथय ! साधुना भणितः श्रावक ! न ते मन्युः कर्तव्यः । पितृरहस्यं कथितं, भार्यारहस्यं शत्रुरहस्यं च साभिज्ञानं यथावृत्तमाख्यातम् । तच्च श्रुत्वा जातसंसारनिर्वेदस्तस्यैव समीपे मुक्तगृहवासः प्रव्रजितः ॥

(हिन्दी अनुवाद)

अहो ! अज्ञान के कारण इस दुश्मन को गोद में लेता है, पिता के मांस को खाता है और कुतिया को मांस देता है । अतः `दुष्कृत्य' इस प्रकार बोलकर निकल गए । महेश्वरदत्त ने विचार किया-पूज्य साधु भगवन्त भिक्षा लिये बिना `दुष्कृत' इस प्रकार बोलकर वापिस क्यों लौट गए ? साधु भगवंत की शोध करता वह उनके पास आया । एकान्त स्थान देखकर वंदन करके पूछता है- भगवन् ! मेरे घर से भिक्षा क्यों ग्रहण नहीं की ? अथवा जो कारण है वह (कहो) बताओ । साधु भगवन्त ने कहा – हे श्रावक ! तुम मेरी बात से गुस्सा नहीं करना । पिता का रहस्य, स्त्री का रहस्य और शत्रु का रहस्य भी निशानी सहित यथार्थ बताया । वह सुनकर संसार ने निर्वेद=वैराग्य प्राप्त किया, गृहवास का त्यागकर उनके पास दीक्षा ली ।

(11) गामेयगोदाहरणं

(प्राकृत)

एगम्मि नगरे एगा महिला, सा भत्तारे मए कट्ठाईणि वि ता विक्कीयाइणि, धिच्छामो त्ति ता अजीवमाणी खुड्डगं पुत्तं घेत्तुं गामं गया, सो दारओ वड्ढंतो मायरं पुच्छइ-कहिं मम पिया ? तीए सिट्ठं जहा मओ इति, तओ सो पुणो पुच्छइ-केण पगारेण सो जीवियाइओ ? सा भइण ओलग्गाए, तो खाइं अहंपि ओलग्गामि, सा भणइ-न जाणिहिसि ओलग्गिउं, तओ पुच्छइ कहं ओलग्गिज्जइ ? भणिओ विणयं कूरेज्जासि केरिसो विणओ ? भणइ जोक्कारो कायव्वो, नीयं चंकमियव्वं छंदाणुवत्तिणा होयव्वं, तओ सो नगरं पहाविओ,

(संस्कृत अनुवाद)

एकस्मिन् नगरे एका महिला सा भर्तरि मृते काष्ठादीन्यपि सा विक्रीतवती, गर्हितास्म इति साऽजीवन्ती क्षुल्लकं पुत्रं गृहीत्वा ग्रामं गता, स दारको वर्द्धमानो मातरं पृच्छति-क्व मम पिता ? तया शिष्टं यथा मृत इति, ततः स पुनः पृच्छति-केन प्रकारेण स जीविकायितः ? सा भणति-अवलगया, ततः खल्वहमप्यबलगामि, सा भणति-न जानास्यवलगितुम्, ततः पृच्छति कथमवलग्यते ? भणितः– विनयं कुर्याः, कीदृशो विनयः ? भणति-जयकारः कर्तव्यः, नीचं चङ्क्रमितव्यम्, छन्दानुवर्तिना भवितव्यम् ततः स नगरं प्रधावितः,

(हिन्दी अनुवाद)

एक नगर में एक स्त्री रहती थी, वह पति के मरने पर लकड़ियाँ आदि बेचती थी, हम निन्दापात्र बनेंगे इसलिए वह आजीविका हेतु अनिच्छा से छोटे बालक को लेकर गाँव में गई, वह पुत्र बड़ा होने पर माता को पूछता है-मेरे पिता कहाँ है ? उसने जिस प्रकार पति की मृत्यु हुई वह सब बताया। उसके बाद वह पुनः पूछता है-वे (पिताजी) किस प्रकार आजीविका चलाते थे ?, वह (माता) कहती है-दूसरों की सेवा करके, तो मैं भी सेवा करूंगा, वह कहती है–तू सेवा करना नहीं जानता है। उसके बाद वह (पुत्र) पूछता है–सेवा कैसे की जाती है ?, माता के द्वारा कहा गया–विनय करना चाहिए। विनय कैसे होता है ? वह बताती है–`जय जय' इस प्रकार बोलना, नीचे देखकर चलना चाहिए और अनुकूल वर्तन करना चाहिए। उसके बाद वह नगर तरफ गया–

(प्राकृत)

अंतरा अणेण वाहा मयणा गहणत्थं निलुक्का दिट्ठा, तओ सो वड्डेणं सद्देणं तेसिं जोक्कारो त्ति भणइ, तेण सद्देण मया पलाया, तओ तेहिं रुट्ठेहिं सो घेत्तुं पहओ, सब्भावो अणेण कहिओ, ततो तेहिं भणियं जया एरिसं पेच्छेज्जासि तया निलुक्कंतेहिं नीयं आगंतव्वं, न य उल्लविज्जइ, सणियं वा, तओ अग्गे गच्छंतेण रयगा दिट्ठा, तओ निलुक्कंतो सणियं सणियं एइ, तेसिं च रयगाणं पोत्तगा हीरंति, ते ठाणं बंधिऊण रक्खंति, सो निलुक्कंतो एइ, एस चोरोत्ति, तेहिं गहिओ बंधिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहियं मुक्को ।

(संस्कृत अनुवाद)

अन्तराऽनेन व्याधा मृगाणां ग्रहणार्थं निलीना दृष्टाः, ततः स बृहता शब्देन तेभ्यो ``जयकार'' इति भणति, तेन शब्देन मृगाः पलायिताः, ततस्तैः रुष्टैः स गृहीत्वा प्रहतः सद्भावोऽनेन कथितः, ततस्तैर्भणितं, यदेदृशं प्रेक्षेथाः तदा निलीयमानैर्नीचमवगन्तव्यम्, न चोल्लपेत्, शनैर्वा, ततोऽग्रे गच्छता रजका दृष्टाः ततो निलीयमानः शनैः शनैरेति, तेषां च रजकानां पोतकानि ह्रियन्ते, ते स्थानं बद्ध्वा रक्षन्ति, स निलीयमान एति, एषः चौर इति तैर्गृहीतो बद्धः पिट्टितश्च, सद्भावे कथिते मुक्तः ।

(हिन्दी अनुवाद)

बीच में उसको पशु=हिरनों को पकड़ने हेतु छिपे शिकारियों को देखा, वह बड़ी आवाज से उनको `जय' इस प्रकार कहता है, उसकी आवाज से हिरन भाग गए, अतः क्रोधित शिकारियों ने उसको पकड़कर मारा, इसने सत्य बात कही, इसलिए उन्होंने (शिकारियों ने) कहा कि जब ऐसा देखो तब छिपते-छिपते नीचे देखकर चलना चाहिए, कुछ भी बोलना नहीं अथवा धीरे-धीरे बोलना । उसके बाद आगे जाने पर धोबी दिखाई दिया इसलिए वह छिपते-छिपते धीरे-धीरे चलता है, उस धोबी के वस्त्र चोरी किये जाते हैं और उस स्थान पर बाँधकर वस्त्र रखे हुए हैं । वह छिपते-छिपते जाता है अतः यह चोर है, ऐसा मानकर धोबियों ने पकड़ लिया, बाँधा और मारा, सत्य बात कहने पर छोड़ दिया ।

(प्राकृत)

तेहिं भणियं, एवं भणिज्जासि-सुद्धं नीरयं निम्मलं च भवतु, ऊसं पडउ, तओ सो नयरसंमुहं एइ, एगत्थ बीयाणि वाविज्जंति, तेण भणियं-भट्टा ! सुद्धं नीरयं भवउ, ऊसो य पडउ, तओ तेहिं किमकारणवेरिओ एवं भासइ ! त्ति, गहिओ बंधिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य-एरिसे कज्जे एवं भण्णइ–बहुं एरिसं भवतु, भंडं भरेह एयस्स, तओ पुणो नयरसंमुहं एइ, एगत्थ मडयं नीणिज्जंतं दट्ठुं भणइ-बहुं एरिसं भवउ, भंडं भरेह एयस्स, तत्थ वि गहिओ पट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणिओ य एरिसेणं अच्चंतवियोगो भवउ, अन्नत्थ विवाहे भणइ–

(संस्कृत अनुवाद)

तैर्भणितम् एवं भणेः– शुद्धं नीरजसं निर्मलं च भवतु, उस्त्रं पततु, ततः स नगरसन्मुखमेति, एकत्र बीजानि वाप्यन्ते, तेन भणितम्-भट्टाः ! शुद्धं नीरजसं भवतु, उस्त्रश्च पततु ततस्तैः किमकारणवैरिक एवं भाषते इति गृहीतः बद्धः पिट्टितश्च, सद्भावे कथिते मुक्तः, भणितश्च, ईदृशे कार्ये एवं भण्यते-बहु ईदृशं भवतु, भाण्डं भ्रियतामेतस्य, ततः पुनः नगरसन्मुखमेति, एकत्र मृतकं नीयमानं दृष्ट्वा भणति-बहु ईदृशं भवतु, भाण्ड भ्रियतामेतस्य, तत्राऽपि गृहीतः पिट्टितश्च, सद्भावे कथिते मुक्तः भणितश्चेदृशे कार्ये एवमुच्यते, ईदृशेनऽत्यन्तवियोगो भवतु, अन्यत्र विवाहे भणति–

(हिन्दी अनुवाद)

उन्होंने (धोबियों ने) कहा–इस प्रकार बोलना-शुद्ध, धूलरहित, निर्मल हो और धूप आये, तत्पश्चात् वह नगर तरफ जाता है, एक जगह बीजों का वपन हो रहा था, उसने कहा–भट्टा ! शुद्ध, धूलरहित हो और धूप आये। निष्कारण शत्रुसमान यह ऐसा क्यों बोलता है ? अतः उन्होंने पकड़ा, बाँधा और प्रहार किया, सत्य बात कहने पर छोड़ दिया और कहा-ऐसे कार्य में इस प्रकार कहना–ऐसा बहुत हो, इनके बर्तन भर जाए, इसके बाद वह नगर तरफ जाता है, एक जगह शव ले जाते देखकर कहता है-ऐसे बहुत हो, इनके बर्तन भर जाए, वहाँ भी उसको पकड़ा और प्रहार किया, सत्य बात करने पर छोड़ दिया और कहा, ऐसे कार्य में इस प्रकार कहना अत्यंत वियोग हो, एक बार विवाह प्रसंग में वह कहता है–अत्यंत वियोग हो, वहाँ भी वह पीटा गया, सत्य बात कहने पर छोड़ा।

(प्राकृत)

अच्चंतविओगो भवइ, तत्थ वि पिट्टिओ, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य एरिसे कज्जे एवं भण्णइ-निच्चं एरिसयाणि पेच्छिंतया होह, सासयं एवं भवउ, ततो गच्छंतो एगत्थ नियलबद्धं दंडियं दट्ठूण एवं भणइ-निच्चं एरिसयाणि पेच्छंतया होह, सासयं च भे एवं हवउ, तत्थ वि गहिओ पिट्टिओ य, सब्भावे कहिए मुक्को, भणितो य एरिसे कज्जे एवं भणिज्जासि-एयाओ भे लहुं मुक्खो हवउ त्ति, ततो गच्छंतो एगत्थ केइ मित्ता संघाडयं करिंते पिच्छइ, तत्थ भणइ–

(संस्कृत अनुवाद)

अत्यन्तवियोगो भवतु, तत्रापि पिट्टितः, सद्भावे कथिते मुक्तः भणितश्च ईदृशे कार्ये एवं भण्यते-नित्यमीदृशकानि प्रेक्षमाणतया भवत, शाश्वतमेतद् भवतु, ततो गच्छन्नेकत्र निगडबद्धं दण्डिकं दृष्ट्वैवं भणति, नित्यमीदृशानि प्रेक्षमाणतया भवत, शाश्वतं च युस्माकमेतद् भवतु, तत्राऽपि गृहीतः पिट्टितश्च, सद्भावे कथिते मुक्तः भणितश्च-ईदृशे कार्ये एवं भणेः–**'एतस्माद् युष्माकं लघुमोक्षो भवतु'** इति, ततो गच्छन्नेकत्र कानिचिन् मित्राणि सङ्घाटकं कुर्वति प्रेक्षते, तत्र भणति–

(हिन्दी अनुवाद)

और बताया ऐसे कार्य में इस प्रकार करना–'ऐसे कार्य सदा देखते ही हो जाए, ये चिरंजीवी बने।' वहाँ से जाते समय एक जगह बेड़ी में बाँधे हुए गाँव के मुखिया को देखकर इस प्रकार कहता है, ऐसे कार्य सदा देखते ही हो जाए और यह तुम्हे सदा हो, वहाँ भी उसे पकड़ा और मारा। सत्य बात कहने पर छोड़ दिया और कहा–'ऐसे कार्य में इस प्रकार बोलना चाहिए–'इससे तुम्हारा जल्दी मोक्ष (मुक्त) हो।' वहाँ से जाते समय एक जगह कुछ मित्र इकट्ठे हुए देखता है, वहाँ बोलता है।'

(प्राकृत)

एयाओ भे लहु मोक्खो भवउ, तओ तत्थ वि पिट्टिओ, सब्भावे कहिए मुक्को, गओ नयरे, तत्थ एगस्स दंडि(ग)–कुलपुत्तस्स अल्लीणो सो सेवंतो अच्छइ, अन्नया दुब्भिक्खे तस्स कुलपुत्तस्स अंबखल्लिया (जवागू) सिद्धिल्लिया, तस्स भज्जाए सो भण्णइ, जाहि महाजणमज्जाओ सद्दावेहि जेण भुंजइ, सीयला अपाओग्गा भविस्सइ, तेण गंतुं महायणमज्झे वड्डेणं सद्देणं भणिओ, एहि एहि सीयली किर होइ अंबखल्लिया, सो लज्जितो, घरं गएण अंबाडिओ भणितो य-एरिसे कज्जे-नीयमागंतूण कण्णे कहिज्जइ ।

(संस्कृत अनुवाद)

एतस्माद् युष्माकं लघु मोक्षो भवतु, ततस्तत्राऽपि पिट्टितः, सद्भावे कथिते मुक्तः, गतो नगरे, तत्रैकस्य दण्डिककुलपुत्रस्याऽऽलीनः स सेवमान आस्ते, अन्यदा दुर्भिक्षे तस्य कुलपुत्रस्य अम्लयवागू सिद्धिमती (सिद्धाः), तस्य भार्यया स भण्यते-याहि, महाजनमध्यात् शब्दायय येन भुज्यते, शीतला अप्रायोग्या भविष्यति, तेन गत्वा महाजनमध्ये बृहता शब्देन भणितः– एहि एहि शीतला किल भवत्यम्लयवागूः स लज्जितः, गृहं गतेन तिरस्कृतो भणितश्च ईदृशे कार्ये नीचमागत्य कर्णे कथयेत्–

(हिन्दी अनुवाद)

'तुम्हारा इससे जल्दी छुटकारा हो ।' वहाँ भी उसे पीटा । सत्य बात कहने पर छोड़ दिया और वह नगर में गया । वहाँ एक मुखिया के पुत्र के घर रहकर उसकी सेवा करता है, एक बार दुष्काल में उस मुखिया के पुत्र के लिए छास से बनी खट्टी राब तैयार हुई, तब उसकी पत्नी उसे कहती है–तुम जाओ और मुखीपुत्र को महाजन के बीच से बुलाकर ले आओ, अतः वह पी सके, ठण्डी होने के बाद पीने योग्य नहीं रहेगी, उसने महाजन के बीच जाकर ऊँची आवाज में कहा– 'चलो, चलो, खट्टी राब ठण्डी हो रही है । वह (मुखीपुत्र) शर्मिन्दा हो गया, घर जाकर उसने (मुखीपुत्रने) उसको धमकाया और कहा-ऐसे प्रसंग में धीरे से आकर कान में कहना चाहिए ।

(प्राकृत)

अन्नथा घरं पलित्तं तस्स भज्जाए भणितो–लहुं सद्दावेह ठक्कुरं ति, ततो सो तत्थ गओ सणियं आसन्नं होऊण कण्णे कहेइ, जाव सो तत्थ गच्चा सणियं सणियं आसन्नं होऊण अक्खाउं पयट्टो, ताव घरं सव्वं झामियं, तत्थ वि अंबाडिओ, भणियो य-एरिसे कज्जे न आगम्मइ, न वि अक्खाइज्जइ, किंतु अप्पणा चेव पाणियं वा गोमुत्तं वा आदिं काउं गोरसं पि छुब्भइ ताव जाव विज्जाइ, अन्नया तस्स दंडिपुत्तगस्स ण्हाइऊण् धूविंतस्स धूमो निग्गच्छइ त्ति गोमुत्तं छूढं गोमूत्ताइयं च ।

(संस्कृत अनुवाद)

अन्यदा गृहं दीप्तं, तस्य भार्यया भणितः–लघु शब्दायेत ठक्कुरमिति, ततः स तत्र गतः शनैः शनैरासन्नं भूत्वा कर्णे कथयति, यावत् स तत्र गत्वा शनैः शनैरासन्नं भूत्वाऽऽख्यातुं प्रवृत्तः, तावद् गृहं सर्वं दग्धम्, तत्राऽपि तिरस्कृतो भणितश्च-ईदृशे कार्ये नाऽगम्यते, नाऽण्याख्यायते, किन्त्वात्मना चैव पानीयं वा गोमुत्रं वाऽऽदिं कृत्वा गोरसमपि क्षुभ्येत (क्षिप्येत) तावद् यावद् विध्यायते, अन्यदा तस्य दण्डिपुत्रकस्य स्नात्वा धूपयती धूमो निर्गच्छति इति गोमूत्रं क्षिप्तं, गोमूत्रादिकं च ।।

(हिन्दी अनुवाद)

एक बार घर जलने लगा, तब उसकी पत्नी ने कहा–मुखिया को जल्दी बुलाओ। उसके बाद वह वहाँ गया, धीरे-धीरे नजदीक जाकर कान में कहता है । जब तक वह धीरे-धीरे नजदीक जाकर कहने का प्रारम्भ करता है तब तक पूरा घर जल गया, वहाँ भी तिरस्कृत हुआ और कहा कि ऐसे प्रसंग में आना और कहना भी नहीं चाहिए परन्तु जब तक आग न बुझे, तब तक स्वयं ही पानी, गोमूत्र अथवा गोरस आदि डाले ।

एक बार वह दंडीपुत्र स्नान करके धूप करता था । तब उसके शरीर में से धूआँ निकलने लगा तब उसने अपने ऊपर गोमूत्रादि डाला ।

(12) सिसुवालकहा

(प्राकृत)

[1]वसुदेवसुसाए [7]सुओ, [3]दमघोसणराहिवेण [2]मद्दीए ।
[8]जाओ [4]चउब्भुओऽब्भुय-बलकलिओ [6]कलहपत्तट्ठो ।।1।।
[6]दट्ठूण [1]तओ [7]जणणी, [2]चउब्भुयं [5]पुत्तम [3]ब्भुयमणग्घं ।
[8]भयहरिसविम्हयमुही, [11]पुच्छइ [10]नेमित्तयं [9]सहसा ।।2।।
[1]णेमित्तिएण [3]मुणिऊण, [5]साहियं [4]तीइ [3]हट्ठहिययाए ।
[6]जह [7]एस [8]तुब्भ [9]पुत्तो, [10]महाबलो [12]दुज्जओ [11]समरे ।।3।।
[3]एयस्स य [1]जं [2]दट्ठूण, [6]होइ, [5]साभावियं [4]भुयाजुगलं ।
[12]होही [7]तओ [8]चिय [11]भयं, [10]सुतस्स [9]ते [14]नत्थि [13]संदेहो ।।4।।

(शिशुपालकथा) (संस्कृत अनुवाद)

वसुदेवस्वसुः माद्रयाः, दमघोषनराधिपेन ।
चतुर्भजोऽद्भुतबलकलितः, कलहप्राप्तार्थः सुतो जात : ।।1।।
ततश्चतुर्भुजमद्भुतमनर्घं पुत्रं दृष्ट्वा जननी ।
भयहर्षविस्मयमुखी सहसा नैमित्तिकं पृच्छति ।।2।।
नैमित्तिकेन ज्ञात्वा हृष्टहृदयायै तस्यै कथितम् ।
यथैष तव पुत्रो महाबलः, समरे दुर्जयः ।।3।।
यं च दृष्ट्वैतस्य भुजायुगलं स्वाभाविकं भवति ।
ततश्चैव तव सुतस्य भयं भविष्यति, संदेहो नाऽस्ति ।।4।।

(हिन्दी अनुवाद)

वसुदेव की बहन माद्री को दमघोष राजा से चार हाथवाला, अद्भुत सामर्थ्यवान और कलह में आसक्त पुत्र उत्पन्न हुआ । (1)

उसके बाद चार हाथवाले, अद्भुत और अमूल्य पुत्र को देखकर भय, हर्ष और विस्मित मुखवाली माता अचानक नैमित्तिक को पूछती है । (2)

नैमित्तिक ने ज्ञान से जानकर प्रसन्नचित्तवाली उसकी माता को कहा कि यह तेरा पुत्र अत्यंत शक्तिशाली और युद्ध में दुर्जेय होगा । (3)

परन्तु जिसको देखकर इसके दो हाथ स्वाभाविक बनेंगे, उससे ही तेरे पुत्र को भय होगा । इस बात में थोडी भी शंका को स्थान नहीं है । (4)

(प्राकृत)

[1]सावि [2]भयवेविरंगी, [5]पुत्तं [6]दंसेइ [3]जाव [4]कण्हस्स ।
[7]ताव च्चिय [8]तस्स [11]ठियं, [10]पयइत्थं [9]वरभुयाजुगलं ।।5।।
[1]तो [2]कण्हस्स [3]पिउच्छा, [5]पुत्तं [7]पाडेइ [6]पायपीढंमि ।
[4]अवराहखामणत्थं, [8]सो वि [10]सयं [9]से [11]खमिस्सामि ।।6।।
[1]सिसुवालो वि हु [2]जुव्वण-मएण [3]नारायणं [4]असब्भेहिं ।
[5]वयणेहिं [6]भणइ [7]सो वि हु, [10]खमइ [8]खमाए [9]समत्थो वि ।।7।।
[1]अवराहसए [2]पुण्णे, [3]वारिज्जंतो [5]ण [6]चिट्ठइ [4]जाहे ।
[8]कण्हेण [7]तओ [12]छिन्नं, [11]चक्केण [10]उत्तमंगं [9]से ।।8।।

सूत्रकृताङ्गसूत्रवृत्तौ

(संस्कृत अनुवाद)

साऽपि भयवेपिराङ्गी यावत् कृष्णस्य पुत्रं दर्शयति ।
तावच्चैव तस्य वरभुजायुगलं प्रकृतिस्थं स्थितम् ।।5।।
ततः कृष्णस्य पितृष्वसा अपराधक्षामणार्थं पुत्रं पादपीठे पातयति ।
सोऽपि तस्य शतं क्षमिष्यामि ।।6।।
शिशुपालोऽपि खलु यौवनमदेन नारायणमसभ्यैः ।
वचनैर्भणति, सोऽपि खलु समर्थोऽपि क्षमया क्षमते ।।7।।
अपराधशते पूर्णे, यदा वार्यमाणोऽपि न तिष्ठति ।
ततः कृष्णेन तस्योत्तमाङ्गं चक्रेण छिन्नम् ।।8।।

(हिन्दी अनुवाद)

वह भी भय से काँपते अंगवाली जब तक कृष्ण के पुत्र को बताती है, तब तक उसके उत्तम दोनों हाथ यथावस्थित हो गए। (5)

अतः कृष्ण की बूआ अपराध क्षमा करने के लिए पुत्र को उसके चरणों में रखती है और वह (कृष्ण) भी उसके सौ अपराध क्षमा करते हैं। (6)

शिशुपाल भी जवानी के भेद से कृष्ण को असभ्य वचनों द्वारा बुलाता है, तो भी वह कृष्ण समर्थ होते हुए भी उसको माफ करता है। (7)

सौ अपराध पूरे होने पर, रोकने पर भी वह रुकता नहीं है, तब कृष्ण ने उसका मस्तक चक्र से छेद दिया। (8)

(13) कमलामेला

(प्राकृत)

बारवईए बलदेवपुत्तस्स निसढस्स पुत्तो सागरचंदो नाम कुमारो, रूवेण य उक्किट्ठो सव्वेसिं संबाईणं इट्ठो। तत्थ य बारवईए वत्थव्वस्स चेव अण्णस्स रण्णो कमलामेला नाम धूआ उक्किट्ठसरीरा। सा य उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स वरिल्लिया। इओ य नारओ सागरचंदस्स कुमारस्स सगासं आगओ। अब्भुट्ठिओ। उवविट्ठं समाणं पुच्छइ-भयवं किंचि अच्छेरयं दिट्ठं। आमं दिट्ठं। कहिं ?। इहेव बारवईए नयरीए कमलामेला नामं दारिया। कस्सइ दिन्निया ?। आमं। कस्स ? उग्गसेणनत्तुस्स धणदेवस्स। तओ सो भणइ-कहं मम ताए समं संजोगो होज्जा ? न याणामुंति भणित्ता गओ।

(संस्कृत अनुवाद)

द्वारवत्यां बलदेवपुत्रस्य निषधस्य पुत्रः सागरचन्दो नाम कुमारो, रूपेण चोत्कृष्टः सर्वेषां शाम्बादीनामिष्टः। तत्र च द्वारवत्यां वास्तव्यस्य चैवाऽन्यस्य राज्ञः कमलामेला नाम दुहितोत्कृष्टशरीरा। सा चोग्रसेननप्तुर्धनदेवस्य वृता। इतश्च नारदः सागरचन्द्रस्य कुमारस्य सकाशमागतः। अभ्युत्थितः। उपविष्टं समानं पृच्छति-भगवन् ! किञ्चिदाश्चर्यं दृष्टम्। आं दृष्टम्। कुत्र ? इहैव द्वारवत्यां नगर्यां कमलामेला नाम दारिका। कस्मैचित् दत्ता ? आम्। कस्मै ? उग्रसेननप्त्रे धनदेवाय। ततः स भणति-कथं मम तया समं संयोगो भवेत् ? **'न जानीमः'** इति भणित्वा गतः।

(हिन्दी अनुवाद)

द्वारिकानगरी में बलदेव के पुत्र निषध का पुत्र सागरचन्द्र नामक कुमार है, वह रूप से श्रेष्ठ और शांब आदि सभी को प्रिय है। उसी द्वारिका नगरी में रहते दूसरे राजा की कमलामेला नाम की उत्तम रूपवती पुत्री थी और उसकी उग्रसेन राजा के पौत्र धनदेव के साथ सगाई की हुई थी। इस तरफ नारद सागरचन्द्र कुमार के पास आया, सागरचन्द्र खड़ा हुआ। बैठते ही पूछा– हे भगवन् ! कुछ आश्चर्यकारी देखा ! हाँ, देखा है। कहाँ ? इसी द्वारिका नगरी में कमलामेला नाम की पुत्री है। किसी को सौंपी हुई है ? हाँ ! किसको ? उग्रसेन राजा के पौत्र धनदेव को। तो वह कहता है–मेरा उसके साथ मिलन कैसा होगा ? वह मैं नहीं जानता हूँ, इस प्रकार कहकर चले गये।

(प्राकृत)

सो य सागरचंदो तं सोउं न वि आसणे, न वि सयणे, धिइं लहइ । तं दारियं फलाए पासंतो, नामं च गिण्हंतो अच्छइ । नारओ वि कमलामेलाए अंतियं गओ । ताए पुच्छिओ किंचि अच्छेरयं दिट्ठं ? नारओ भणइ-दुवे दिट्ठाणि, रूवेण सागरचंदो, विरुवत्तणेण धणदेवो । तओ सागरचंदे मुच्छिया, धणदेवे विरत्ता । नारएण आसासिआ । तेण गंतुं सागरचंदस्य आइक्खियं, जहा `इच्छइ' त्ति । ततो य सागरचंदस्स माया, अन्ने य कुमारा अद्दन्ना, मरति नूणं सागरचंदो । संबो आगओ जाव पिच्छइ सागरचंदं विलवमाणं । ताहे अणेण पच्छओ धाइऊण अच्छीणी दोहि वि हत्थेहिं छाइयाणि ।

(संस्कृत अनुवाद)

स च सागरचन्द्रस्तच्छ्रुत्वा नाऽप्यासने, नाऽपि शयने धृतिं लभते । तां दारिकां फलके पश्यन्, नाम च गृह्णन् आस्ते । नारदोऽपि कमलामेलाया अन्तिकं गतः । तया पृष्टंः- किञ्चिदाश्चर्यं दृष्टम् ?। नारदो भणति-द्वे दृष्टे, रुपेण सागरचन्द्रः, विरूपत्वेन धनदेवः । ततः सागरचन्द्रे मूर्च्छिता, धनदेवे विरक्ता । नारदेनाऽऽश्वस्ता । तेन गत्वा सागरचन्द्रायाऽऽख्यातम्, यथा **'इच्छति'** इति । ततश्च सागरचन्द्रस्य माता, अन्ये च कुमाराः खिन्नाः, म्रियते नूनं सागरचन्द्रः । शाम्ब आगतो यावत् प्रेक्षते सागरचन्द्रं विलपमानम् । तदाऽनेन पश्चात्तो धावित्वाऽक्षिणी द्वाभ्यामपि हस्ताभ्यां छादिते ।

(हिन्दी अनुवाद)

वह सागरचन्द्र इस बात को सुनकर न तो आसन पर, न ही पलंग पर शांतिपूर्वक रहता है । उस स्त्री को चित्रपट में देखता और नाम लेते बैठा रहता है । नारद भी कमलामेला के पास गया । उसने (कमलामेला ने) पूछा- कुछ आश्चर्य देखा ? नारद कहता है–दो आश्चर्य देखे, एक रूप में सागरचन्द्र और दूसरा कुरुप में धनदेव । इससे वह सागरचन्द्र पर मोहित हुई और धनदेव पर राग रहित बनी । नारद ने आश्वासन दिया । उसने (नारद ने) जाकर सागरचन्द्र को इस प्रकार कहा, `वह भी चाहती है' । अतः सागरचन्द्र की माता और दूसरे कुमार व्याकुल बने, सचमुच सागरचन्द्र मरता है । शांब वहां आता है और विलाप करते सागरचन्द्र को देखता है । तब उसने पीछे से दौड़कर उसकी (सागरचन्द्र की) दोनों आँखें दोनों हाथों से ढक दीं ।

(प्राकृत)

सागरचंदेण भणियं कमलामेले ! संबेण भणियं-नाहं कमलामेला, कमलामेलो हं । सागरचंदेण भणियं-आमं, तुमं चेब कमलामेलं दारियं मेलेहिसि । ताहे तेहिं कुमारेहिं संबो भणिओ-कमलामेलं मेलेहि सागर-चंदस्स । न मन्नइ । तओ मज्जं पाएऊण अब्भुवगच्छाविओ । तओ विगयमओ चिंतइ-अहो । मए आलो अब्भुवगओ, किं सक्का इयाणिं निव्वहिउं ? ति, पज्जुन्नं पन्नतिं विज्जं मग्गइ । तेण दिन्ना । तओ जम्मि दिवसे धणदेवस्स विवाहो तम्मि दिवसे विज्जाए पडिरूवं विउव्विऊणं कमलामेला अवहरिया रेवए उज्जाणे नीया ।

(संस्कृत अनुवाद)

सागरचन्द्रेण भणितं कमलामेले ! शाम्बेन भणितम्-नाऽहं कमलामेला, कमलामेलोऽहम् । सागरचन्द्रेण भणितम्—आम्, त्वं चैव कमलामेलां दारिकां मेलिष्यसि । तदा तैः कुमारैः शाम्बो भणितः कमलामेलं मेलय सागरचन्द्रस्य । न मन्यते । ततो मद्यं पायित्वाऽभ्युपगमितः । ततो विगतमदश्चिन्तयति-अहो ! मयाऽऽलोऽभ्युपगतः, किं `शक्य इदानीं निर्वोढुम् ? इति । प्रद्युम्नं प्रज्ञप्तिं विद्यां मार्गयति । तेन दत्ता । ततो यस्मिन् दिवसे धनदेवस्य विवाहस्तस्मिन् दिवसे विद्यया प्रतिरूपं विकुर्व्य कमलामेलाऽपहृता रैवते उद्याने नीता ।

(हिन्दी अनुवाद)

सागरचन्द्र बोला उठा— `कमलामेला !' शांब ने कहा—मैं कमलामेला नहीं कमलामेल हूँ । सागरचन्द्र ने कहा—हाँ बराबर, तू ही कमलामेला स्त्री का मिलाप करायेगा । तब उन कुमारों ने शांब को कहा—सागरचन्द्र को कमलामेला का मिलन करवाओ, वह नहीं मानता है । अतः मदिरा पिलाकर स्वीकार करवाया । उसके बाद नशा उतरने पर विचार करता है-अहो ! मैंने कलंक-दोष का स्वीकार किया । अब उसका निर्वाह करना कैसे शक्य होगा ? प्रद्युम्न के पास प्रज्ञप्ति विद्या मांगता है । उसने (प्रज्ञप्ति विद्या) दी । उसके बाद जिस दिन धनदेव का विवाह था, उसी दिन विद्या के प्रभाव (बल) से कमलामेला जैसा रूप बनाकर कमलामेला का अपहरण किया और उसे रैवताचल उद्यान में लाया ।

(प्राकृत)

संबप्पमुहा कुमारा उज्जाणं गंतुं नारयस्स रहस्सं भिंदित्ता कमलामेलं सागरचंदं परिणावित्ता तत्थ किड्डंता अच्छंति । विज्जापडिरूवगं पि विवाहे वट्टमाणे अट्टहासं काऊणं उप्पइयं । `तओ जाओ खोभो । न नज्जइ' `केणइ हरिय' त्ति ? । नारओ पुच्छिओ भणइ-दिट्ठा रेवइए उज्जाणे केणवि विज्जाहरेण अवहरिया । तओ सबलवाहणो नारायणो निग्गओ । संबो विज्जाहररूवं काऊण जुज्झिउं संपलग्गो । सव्वे दसाराइणो पराइया । तओ नारायणेण सद्धिं लग्गो । तओ जाहे णेणं णायं `रुट्ठो ताउ'त्ति तओ से चलणेसु पडिओ । कण्हेण अंबाडियो । तओ संबेण भणियं एसा अम्हेहिं गवक्खेण अप्पाणं मुयंती दिट्ठा ।

(संस्कृत अनुवाद)

शाम्बप्रमुखाः कुमारा उद्यानं गत्वा नारदस्य रहस्यं भित्वा कमलामेलां सागरचन्द्रं परिणाय्य तत्र क्रीडामाणा आसते । विद्याप्रतिरूपकमपि विवाहे वर्तमाने ऽट्टहासं कृत्वोत्पतितम् । ततो जातः क्षोभः । न ज्ञायते `केनचिद् हृता इति । नारदः पृष्टो भणति-दृष्टा रैवतिके उद्याने केनाऽपि विद्याधरेणाऽ-पहृता । ततः सबलवाहनः नारायणो निर्गतः । शाम्बो विद्याधररूपं कृत्वा योद्धुं सम्प्रलग्नः । सर्वे दशार्हराजानः पराजिताः । ततो नारायणेन सार्द्धं लग्नः । ततो यदा तेन ज्ञातम्–**`रुष्टस्तातः'** इति ततस्तस्य चरणयोः पतितः । कृष्णेन तिरस्कृतः । ततः शाम्बेन भणितम्-एषाऽस्माभिर्गवाक्षेणाऽऽत्मानं मुञ्चन्ती दृष्टा ।

(हिन्दी अनुवाद)

शांब आदि कुमारों ने उद्यान में जाकर नारद के रहस्य को भेदकर कमलामेला का सागरचन्द्र के साथ विवाह कर आनन्दपूर्वक रहते हैं । विद्या से बनाया किमलामेला का प्रतिरूपक भी विवाह समय अट्टहास करके उड गया, अतः कोलाहल हुआ । मालूम नहीं `किसने अपहरण किया' ? इस प्रकार । नारद को पूछने पर बताते हैं-रैवताचल उद्यान में किसी विद्याधर द्वारा अपहरण की गई देखी है । उसके बाद सैन्य और वाहनोंसहित कृष्ण महाराजा निकले । शांब भी विद्याधर का रूप करके युद्ध करने लगा । समुद्रविजय आदि सभी दशार्ह राजा पराजित हुए । उसके बाद कृष्ण के साथ युद्ध हुआ । जब उसने जाना कि पिता **`क्रोधित हुए हैं'** तब उनके चरणों में गिरा । कृष्ण ने तिरस्कार किया । इसलिए शांब ने कहा-इसे (कमलामेला को) हमने गवाक्ष में से स्वयं गिरते देखा है ।

(प्राकृत)

तओ कण्हेण उग्गसेणो अणुगामिओ । पच्छा इमाणि भोगे भुंजमाणाणि विहरंति । अन्नया भयवं अरिट्ठनेमिसामी समोसरिओ । तओ सागरचंदो कमलामेला य सामिसगासे धम्मं सोऊण गहियाणुव्वयाणि संवुत्ताणि । तओ सागरचंदो अट्ठमी–चउद्दसीसु सुन्नघरे वा सुसाणे वा एगराइयं पडिमं ठाइ । धणदेवेणं एयं नाऊणं तंबियाओ सुईओ घडाविआओ । तओ सुन्नघरे पडिमं ठियस्स वीससु वि अंगुलीनहेसु अक्को (क्खो) डियाओ । तओ सम्ममहियासमाणो वेयणाभिभूओ कालगतो देवो जाओ । ततो बिइअदिवसे गवेसिंतेहिं दिट्ठो । अक्कदो जाओ । दिट्ठाओ सूईओ ।

(संस्कृत अनुवाद)

ततः कृष्णेनोग्रसेनोऽनुगमितः पश्चाद् इमौ भोगे भुज्यमानौ विहरतः । अन्यदा भगवानरिष्टनेमिस्वामी समवसृतः । ततः सागरचन्द्रः कमलामेला च स्वामिसकाशे धर्मं श्रुत्वा गृहीतानुव्रतानि संवृत्तानि । ततः सागरचन्द्रोऽष्टमी-चतुर्दशीषु शून्यगृहे वा श्मशाने वैकरात्रिकीं प्रतिमां तिष्ठति । धनदेवेनैतज् ज्ञात्वा ताम्रिकाः शूच्यो घटिताः । ततः शून्यगृहे प्रतिमां स्थितस्य विंशतिष्वप्य-ङ्गुलीनखेष्वाक्षोदिताः । ततः सम्यगध्यायानो वेदनाऽभिभूतः कालगतो देवो जातः । ततो द्वितायदिवसे गवेषयद्भिः दृष्टः । आक्रन्दो जातः । दृष्टाः शूच्यः ।

(हिन्दी अनुवाद)

तत्पश्चात् कृष्ण ने उग्रसेन को वापिस भेजा, बाद में ये दोनों भोगों को भुगतते रहते हैं । एक बार अरिष्ट नेमिनाथ प्रभु समवसरण में पधारे । तब सागरचन्द्र और कमलामेला ने प्रभु के पास धर्म सुनकर ग्रहण किये हुए अणुव्रतों का संक्षेप किया । तब से सागरचन्द्र अष्टमी-चतुर्दशा को निर्जन घर में अथवा श्मशान में एक रात्रि की प्रतिमा धराण करता है । धनदेव ने यह जानकर तांबे की सलाइयाँ (सूइयाँ) बनवायीं । तत्पश्चात् निर्जन घर में प्रतिमा में स्थित सागरचन्द्र की बीस उँगलियों के नाखूनों में (वे सलाइयाँ) चुभा दीं । उसके बाद श्रेष्ठ अध्यवसाय में स्थित, वेदना से पीड़ित पंचत्व प्राप्तकर देव बने । दूसरे दिन ढूंढते हुए आरक्षकों ने देखा । कोलाहल मचा । सलाइयाँ दिखाई दीं ।

(प्राकृत)

गवेसिंतेहिं तंबकुट्टगसगासे उवलद्धं-धणदेवेण काराविायाओ । रूसिया कुमारा धणदेवं मग्गंति । दुण्हं वि बलाणं जुद्धं संपलग्गं । तओ सागरचंदो देवो अंतरे ठाऊणं उवसामेइ । पच्छा कमलामेला भयवओ सगासे पव्वइया ।

(संस्कृत अनुवाद)

गवेषयद्भिः ताम्रकुट्टकसकाशे उपलब्धम्-धनदेवेन कारिताः । रुष्टाः कुमारा धनदेवं मार्गयन्ति । द्वयोरपि बलयोर्युद्धं सम्प्रलग्नम् । ततः सागरचन्द्रो देवोऽन्तरे स्थित्वोपशामयति । पश्चात् कमलामेला भगवतः सकाशे प्रव्रजिता ।

(हिन्दी अनुवाद)

आरक्षकों ने तांबा कूटनेवालों के पास जाना कि धनदेव ने बनवाई थीं । क्रोधित राजकुमार धनदेव को ढूंढते हैं । दोनों के सैन्यों का युद्ध प्रारम्भ हुआ । अतः देव बना सागरचन्द्र (देव) बीच में खड़े रहकर शांत करता है । तत्पश्चात् कमलामेला प्रभु के वरद हस्तों से दीक्षित बनती है ।

(14) वुड्ढा तरुणा च मंतिणो

(प्राकृत)

परिणयबुद्धी वुड्ढा पावायारे नेव पवत्तइ, अत्थ कहा–

एगस्स रन्नो दुविहा मंतिणो, तरुणा वुड्ढा य। तरुणा भणंति एए वुड्ढा मइभंसपत्ता, न सम्मं मंतिन्ति। ता अलमेएहिं। अम्हे चेव पहाणा।

अन्नया तेसिं परिच्छानिमित्तं राया भणइ, भो सचिवा ! जो मम सीसे पण्हिपहारं दलयइ, तस्स को दंडो कीरइ ?। तरुणेहिं भणियं, किमेत्थ जाणियव्वं ?। तस्स सरीरं तिलं तिलं कप्पिज्जइ, सुहुयहुयासणे वा छुब्भइ। तओ रन्ना वुड्ढा पुच्छिया। तेहिं एगंते गंतूण मंतियं, आसंधयप्पहाणा महादेवी चेव एवं करेइ, ता तीए। पया चेव कीरइ।

(संस्कृत अनुवाद)

परिणतबुद्धयो वृद्धाः पापाचारे नैव प्रवर्तन्ते, अत्र कथा–

एकस्य राज्ञो द्विविधा मन्त्रिण, तरुणा वृद्धाश्च। तरुणा भणन्त्येते वृद्धा मतिभ्रंशप्राप्ताः, न सम्यग् मन्त्रयन्ति। तस्मादलमेतैः। वयं चैव प्रधानाः।

अन्यदा तेषां परीक्षानिमित्तं राजा भणति, भो सचिवाः ! यो मम शीर्षे पार्ष्णिप्रहारं दलयति, तस्य को दण्डः क्रियते ?। तरुणैर्भणितम्-किमत्र ज्ञापितव्यम्। तस्य शरीरं तिलं तिलं क्लृप्यते (कृत्यते), सुहुतहुताशने वा क्षिप्यते। ततो राज्ञा वृद्धाः पृष्टाः। तैरेकान्ते गत्वा मन्त्रितम्, स्नेहप्रधाना महादेवी चैवेवं करोति, ततस्तस्या पूजैव क्रियते।

(हिन्दी अनुवाद)

परिपक्व बुद्धिमान वृद्ध पुरुष पापकार्य में कभी प्रवृत्त नहीं होते हैं, यहाँ कहानी है–एक राजा के दो प्रकार के मन्त्री हैं युवान और वृद्ध। युवान कहते हैं–ये वृद्ध बुद्धि से भ्रष्ट हो गए हैं, उचित मन्त्रणा नहीं करते हैं। अतः इन लोगों से बस, हम ही उत्तम हैं।

एक बार उनकी परीक्षा करने के लिए राजा कहते हैं–हे मंत्रियो ! मेरे मस्तक पर पैर का पंजा मारे, उसको क्या दण्ड करना चाहिए ? युवानों ने कहा-इसमें कहने योग्य क्या है ? उसके शरीर के तिल-तिल जितने टुकड़े कर देने चाहिए अथवा भड़कती आग में डालना चाहिए। तत्पश्चात् राजा ने वृद्धों (वृद्ध मंत्रियों) को पूछा। उन्होंने एकान्त में जाकर विचार किया, अधिक अनुरागवाली महारानी ही यह (=लात मारना) कर सकती है, अतः उनकी पूजा ही करनी चाहिए।

(प्राकृत)

एयमेयत्थं वत्तव्वं ति निच्छिऊण भणियं, जं माणुसमेरिसं महासाहसमायरइ, तस्स सरीरं ससीसवायं कंचणरयणालंकारेहिं अलंकिज्जइ । तुट्ठेण भणियं रन्ना, साहु विन्नायं ति, सच्चदंसिणो त्ति रन्ना ते चेव पमाणं कय ति, ``यतो वृद्धा नाहितेषु प्रवर्तन्ते, ततो वृद्धानुगेन भवितव्यम्, सोऽप्येवमेव पापे न प्रवर्तते, केन हेतुना ? इत्याह-साङ्गत्यजनिताः गुणाः प्राणिनां स्युः । अत एवोक्तम्'' ।

[1]उत्तमजणसंसग्गी, [2]सीलदरिद्दं पि [4]कुणइ [3]सीलड्ढं ।

[5]जह [6]मेरुगिरिविलग्गं, [7]तणं पि [8]कणयत्तण [9]मुवेइ ।। **धर्मरत्नप्रकरणे ।**

(संस्कृत अनुवाद)

एवमेतदर्थं वक्तव्यमिति निश्चित्य भणितम्, यो मनुष्य ईदृशं महासाहसमाचरति, तस्य शरीरं सशीर्षपादं काञ्चनरत्नालङ्कारैरलङ्क्रियते । तुष्टेन भणितं राज्ञा, साधु विज्ञातमिति, सत्यदर्शिन इति राज्ञा ते चैव प्रमाणं कृता इति, यतो वृद्धा नाऽहितेषु प्रवर्तन्ते, ततो वृद्धानुगेन भवितव्यम् सोऽप्येवमेव पापे न प्रवर्तते, केन हेतुना ? इत्याह-साङ्गत्यजनिता गुणाः प्राणिनां स्युः । अत एवोक्तम्–

उत्तमजनसंसर्गी शीलदरिद्रमपि शीलाढ्यं करोति ।

यथा मेरुगिरिविलग्नं, तृणमपि कनकत्वमुपैति ।

(हिन्दी अनुवाद)

यहाँ यह बताना चाहिए । इस प्रकार निश्चय करके (राजा को) कहा-जो मनुष्य इतना बड़ा साहस करता है, उसका शरीर चरण से मस्तकपर्यन्त सुवर्ण रत्न के अलंकारों से अलंकृत करना चाहिए । सन्तुष्ट होकर राजा ने कहा, तुमने अच्छा जाना, तुम सत्यदर्शी (सत्य को देखनेवाले) हो, इसलिए राजा ने उनको (वृद्ध पुरुषों को) ही मान्य किया ।

क्योंकि ``वृद्धपुरुष कभी अहित में प्रवृत्ति नहीं करते हैं । अतः वृद्धों का अनुसरण करना चाहिए, वृद्धों का अनुसरण करनेवाले भी पाप में प्रवृत्ति नहीं करते हैं । किस कारण ? तो कहते हैं–जीवों को सहवास से गुण उत्पन्न होते हैं । अतः कहा है–

उत्तम पुरुष का समागम करनेवाले शील-सदाचार से हीन हो तो भी शीलवान बनते हैं, जैसे मेरुपर्वत पर लगा हुआ तृण भी सुवर्णत्व को प्राप्त करता है ।

(15) विणओ सव्वगुणाणं मूलं (प्राकृत)

मगहमंडलमंडणभूओ धणधन्नसमिद्धो सालिग्गमो नाम गामो । तत्थ पुप्फसालगाहावई (तस्स य) फलसालो नाम पुत्तो अहेसि । पयइभद्दओ पयइविणीओ परलोगभीरू य । तेण धम्मसत्थपाढयाओ सुयं । जो उत्तमेसु विणयं पउंजइ सो जम्मंतरे उत्तमुत्तमो होइ । तओ सो ममेस जणओ उत्तमो त्ति सव्वायरेण तस्स विणए पवत्तो । अन्नया दिट्ठो जणओ गामसामिस्स विणयं पउंजतो । तओ एत्तो वि इमो उत्तमो त्ति जणयमापुच्छिऊणं पवत्तो गामसामिमोलग्गिउं । कयाइ तेण सद्धिं गओ रायगिहं । तत्त गामाहिवं महंतस्स पणामाइ कुणमाणमालोइऊणइमाओ वि एस पहाणो त्ति ओलग्गिओ महंतयं ।

(विनयः सर्वगुणानां मूलम्) (संस्कृत अनुवाद)

मगधमण्डलमण्डनभूतो धनधान्यसमृद्धः शालिग्रामो नाम ग्रामः । तत्र पुष्पशालगृहपतिः, (तस्य च) फलशालो नाम पुत्र आसीत् । प्रकृतिभद्रकः प्रकृतिविनीतः परलोकमीरुश्च । तेन धर्मशास्त्रपाठकाच्छ्रुतम् । य उत्तमेषु विनयं प्रयुङ्क्ते स जन्मान्तरे उत्तमोत्तमो भवति । ततः स ममैष जनक उत्तम इति सर्वाऽऽदरेण तस्य विनये प्रवृत्तः । अन्यदा दृष्टो जनको ग्रामस्वामिनो विनयं प्रयुञ्जानः । तत एतस्मादप्ययमुत्तम इति जनकमापृच्छ्य प्रवृत्तो ग्रामस्वामिनम-वलगितुम् । कदापि तेन सार्द्धं गतो राजगृहम् । तत्र ग्रामाधिपं महतः प्रणामादि कुर्वन्तमालोक्याऽस्मादप्येष प्रधान इत्यवलगितो महन्तम् ।

(हिन्दी अनुवाद)

मगधदेश के आभूषण समान, धन-धान्य से समृद्ध शालिग्राम नामक गाँव था । वहाँ पुष्पशाला नाम का गृहस्थ और उसका फलशाल नाम का पुत्र था । स्वभाव से भद्रिक, विनयशील और परलोक से भयभीत था । उसने किसी धर्मशास्त्र पाठक के पास सुना कि-जो बड़ों का विनय करता है, वह भवांतर में श्रेष्ठ बनता है । ``अतः मेरे ये पिताजी बड़े है'' इसलिए संपूर्ण आदरपूर्वक उनके विनय में प्रवृत्त हुआ । एक बार गाँव के मुखी का विनय करते पिताजी को देखा, इसलिए इनसे (पिताजी से) भी यह (मुखी) श्रेष्ठ है, पिताजी को पूछकर गाँव के मुखी की सेवा करने लगा । एक बार उनके (मुखी के) साथ राजगृही नगरी में गया, वहाँ गाँव के मुखी को नगर के मुख्यमंत्री श्रेष्ठी को नमस्कार आदि करते देखकर इनसे (मुखी से) भी ये (मंत्री आदि) बड़े हैं अतः मंत्री आदि की सेवा करने लगा ।

(प्राकृत)

तं पि सेणियस्स विणयपरायणमवलोइऊण सेणियमोलग्गिउमारद्धो, अन्नया तत्थ भगवं वद्धमाणसामी समोसढो । सेणिओ सबलवाहणो वंदिउं निग्गओ । तओ फलसालो भगवंतं समोसरणलच्छीए समाइच्छियं नियच्छंतो पविम्हिओ । नूणमेस सव्वुत्तमो जो एवं नरिंदविंददाणविंदेहिं वंदिज्जइ, ता अलमन्नेहिं । एयस्स चेव विणयं करेमि । तओ अवसरं पाविऊण खग्गखेडमकरो चलणेसु निवडिऊण विन्नविउं पवत्तो । भयवं ! अणुजाणह, अहं भे ओलग्गामि । भगवया भणियं, भद्द ! नाहं खग्गफलगहत्थेहिं ओलग्गिज्जामि, किंतु रओहरण-मुहपोत्तियापाणीहिं । जहा एए अन्ने ओलग्गंति । तेण भणियं जहा तुब्भे आणवेह तहेवोलग्गामि । तओ जोग्गो त्ति भगवया पव्वाविओ, सुगइं च पाविओ । एवं विणीओ धम्मारिहो होइ त्ति ।

धर्मरत्नप्रकरणे ।

(संस्कृत अनुवाद)

तमपि श्रेणिकस्य विनयपरायणमवलोक्य श्रेणिकमवलगितुमारब्धः अन्यदा तत्र भगवान् वर्द्धमानस्वामी समवसृतः । श्रेणिकः सबलवाहनो वन्दितुं निर्गतः । ततः फलशालो भगवन्तं समवसरणलक्ष्म्या समागतं पश्यन् प्रविस्मितः । नूनमेष सर्वोत्तमो य एवं नरेन्द्रवृन्ददानवेन्द्रैर्वन्द्यते, ततोऽलमन्यैः । एतस्यैव विनयं करोमि । ततोऽवसरं प्राप्य खड्गखेटककरश्चरणयोर्निपत्य विज्ञपयितुं प्रवृत्तः, भगवन् ! अनुजानीहि, अहं युष्मान् अवलगामि । भगवता भणितम्-भद्र ! नाऽहं खड्गफलकहस्तैरवलग्ये, किं तु रजोहरणमुखपोतिका । पाणिभिर्यथैते-ऽन्येऽवलगन्ति । तेन भणितं यथा यूयमाज्ञापयत तथैवावलगामि । ततो योग्य इति भगवता प्रव्राजितः, सुगतिं च प्राप्तः । एवं विनीतो धर्मार्हो भवतीति ।

(हिन्दी अनुवाद)

उनको (मंत्री आदि को) भी महाराजा श्रेणिक की सेवा में तत्पर देखकर श्रेणिक महाराजा की सेवा प्रारम्भ की । एक बार वहाँ भगवान वर्द्धमानस्वामी समवसरे (=पधारे) । श्रेणिक महाराजा सैन्य और वाहन सहित वंदन करने निकले । अतः फलशाल समवसरण की समृद्धि से सुशोभित प्रभु को देखकर आश्चर्यचकित हुआ । सचमुच ये ही सर्वश्रेष्ठ हैं, जो इस प्रकार राजाओं के

समूह तथा दानवेनन्द्रों से वंदित हैं, अतः दूसरों से पर्याप्त इनका (प्रभु का) ही विनय करूँ। अतः अवसर देखकर तलवार, ढाल हाथ में लेकर प्रभु के चरणों में गिरकर=झुककर विनती करने लगा। भगवन् ! आप अनुमति प्रदान करो। मैं आपकी सेवा करूँ। प्रभु ने कहा, हे भद्र ! तलवार आदि हाथ में रखकर मेरी सेवा नहीं होती है, परन्तु रजोहरण, मुखवस्त्रिका=मुहपत्ति हाथ में रखकर जैसे ये अन्य सेवा करते हैं। उसने कहा, जैसी आप आज्ञा करोगे वैसे सेवा करुंगा। तत्पश्चात् **'योग्य है'** इसलिए प्रभु ने संयम प्रदान किया और सद्गति पाया। इस प्रकार विनयशील धर्म के योग्य बनता है।

(16) कुमारवालभूवालस्स जीवहिंसाइचाओ

(प्राकृत)

[1]इय [2]जीवदयारूवं, [3]धम्मं [4]सोऊण [5]तुट्ठचित्तेण ।
[6]रन्ना [7]भणियं [8]मुणिनाह !, [11]साहिओ [9]सोहणो [10]धम्मो ।।1।।
[1]एसो [2]मे [3]अभिरुइओ, [4]एसो [6]चित्तंमि [5]मज्झ [7]विणिविट्ठो ।
[8]एसो च्चिय [9]परमत्थेण [11]घडए [10]जुत्तीहिं [13]न हु [12]सेसो ।।2।।
[3]मन्नंति [2]इमं [1]सव्वे, [4]जं [5]उत्तम असणवसणपमुहेसु ।
[4]दिन्नेसु [9]उत्तमाइं, [8]इमाइं [10]लब्भंति [8]परलोए ।।3।।
[1]एवं [5]सुहदुक्खेसु, [6]कीरंतेसु [4]परस्स [2]इह [3]लोए ।
[7]ताइं चिय [8]परलोए, [10]लब्भंति [9]अणंतगुणियाइं ।।।4।।

(कुमारपालभूपालस्य जीवहिंसादित्यागः) (संस्कृत अनुवाद)

इति जीवदयारूपं धर्मं श्रुत्वा तुष्टचित्तेन,
राज्ञा भणितम्-मुनिनाथ ! शोभनो धर्मः शासितः ।।1।।
एष मेऽभिरुचितः, एष मम चित्ते विनिविष्टः ।
एष एव परमार्थेन युक्तिभिर्घटते खलु शेषो न ।।2।।
सर्वे इदं मन्यन्ते, यदुत्तमाऽशनवसनप्रमुखेषु ।
दत्तेषु परलोके इमान्युत्तमानि लभन्ते ।।3।।
एवमिह लोके परस्य सुखदुःखेषु क्रियमाणेषु ।
तान्येव परलोकेऽनन्तगुणितानि लभ्यन्ते ।।4।।

(हिन्दी अनुवाद)

श्री हेमचन्द्राचार्य के पास धर्म सुनने के बाद श्रीकुमारपाल महाराजा जीवहिंसादिक का त्याग करते हैं–

इस प्रकार जीवदयारूप धर्म को सुनकर संतुष्ट मनवाले राजा कुमारपाल ने कहा–हे मुनीश्वर ! आपने सुंदर धर्म कहा । (1)

यह धर्म मुझे बहुत पसन्द आया, यह मेरे मन में उतर गया, यही धर्म परमार्थ से युक्तिपूर्वक घटता है, अन्य कोई धर्म नहीं । (2)

सभी यही मानते हैं कि जो श्रेष्ठ भोजन-वसति आदि दूसरों को दी जाती है, भवांतर में वही उत्तम-(सुंदर) मिलते हैं । (3)

इस प्रकार इस भव में दूसरों को सुख या दुःख देता है, वही सुख या दुःख भवांतर में अनंत गुणा मिलता है । (4)

(प्राकृत)

[1]जो [4]कुणइ [2]नरो [3]हिंसं, [6]परस्स [5]जो [8]जणइ [7]जीवियविणासं ।
[10]विरएइ [9]सोक्खविरहं, [12]संपाडइ [11]संपयाभंसं ।।5।।
[1]सो [2]एवं [3]कुणमाणो, [4]परलोए [10]पावए [5]परेहिंतो ।
[6]बहुसो [7]जीवियनासं, [8]सुहविगमं [9]संपओच्छेयं ।।6।।
[1]जं [2]उप्पइ [3]तं [5]लब्भइ, [4]पभूयतरमत्थ[6] [8]नत्थि [7]संदेहो ।
[10]वविएसु [9]कोद्दवेसुं, [12]लब्भंति हि [11]कोद्दवा चेव ।।7।।
[1]जो [2]उण [4]न [5]हणइ [3]जीवे, [6]तो [7]जेसिं [8]जीवियं [9]सुहं [10]विभवं ।
[11]न [12]हणइ [13]तत्तो [14]तस्स वि, [15]तं [18]न [19]हणइ [16]को वि [17]परलोए।।8।।

(संस्कृत अनुवाद)

यो नरो हिंसां करोति, यः परस्य जीवितविनाशं जनयति ।
सौख्यविरहं विरचयति, सम्पदाभ्रंशं सम्पादयति ।।5।।
स एवं कुर्वन्, परलोके परेभ्याः,
बहुशो जीवितनाशं, सुखविगमं, सम्पदोच्छेदं प्राप्नोति ।।6।।
यदुप्यते तत् प्रभूततरं लभ्यते, अत्र सन्देहो नाऽस्ति ।
कोद्रवेषूप्तेषु हि कोद्रवा एव लभ्यन्ते ।।7।।
यः पुनर्जीवान् न हन्ति, ततस्तेषां जीवितं सुखं विभवम् ।
न हन्ति ततस्तस्याऽपि, तं कोऽपि परलोके न हन्ति ।।8।।

(हिन्दी अनुवाद)

जो मनुष्य हिंसा करता है और जो दूसरों के जीवन का विनाश करता है, उसके सुख का नाश होता है और संपत्ति का भी विनाश होता है । (5)

वह इस प्रकार (जीवहिंसा) करते भवांतर में दूसरों द्वारा बहुत बार जीवन का विनाश, सुख का विरह और संपत्ति का उच्छेद पाता है । (6)

जो वपन करते हैं, वही प्रभूततर (अत्यधिक) मिलता है, इसमें संदेह नहीं है, सचमुच कोद्रव वपन करने पर, कोद्रव ही मिलता हैं (7)

जो जीवों का नाश नहीं करता है, वह उन जीवों के जीवित सुख और वैभव का भी नाश नहीं करता है, अतः कोई भी उसके जीवितादि का परलोक में नाश नहीं करता है । (8)

(प्राकृत)

[1]ता [12]भद्देण व [4]नूनं, [7]कयाणु[6]कंपा [3]मए वि [5]पुव्वभवे ।
[8]जं [10]लंघिऊण [9]वसणाइं, [12]रज्जलच्छी [11]इमा [13]लद्धा ।।9।।
[1]ता [2]संपइ [5]जीवदया, [3]जावज्जीवं [4]मए [6]विहेयव्वा ।
[7]मंसं [8]न [9]भक्खियव्वं, [11]परिहरियव्वा य [10]पारद्धी ।।10।।
[1]जो [2]देवयाण [3]पुरओ, [7]कीरइ [4]आरुग्गसंतिकम्मकए ।
[5]पसुमहिसाण [6]विणासो, [10]निवारियव्वो [9]मए [8]सो वि ।।11।।
[1]बालो वि [3]मुणइ [2]एवं, [4]जीववहेणं [7]लब्भइ [6]न [5]सग्गो ।
[8]किं [9]पन्नगमुहकुहराओ, [11]होइ [10]पीऊसरसवुट्ठी ।।2।।

(संस्कृत अनुवाद)

ततो भद्रेणेव मयाऽपि नूनं पूर्वभवेऽनुकम्पा कृता ।
यद् व्यसनानि लङ्घित्वेयं राज्यलक्ष्मीर्लब्धा ।।9।।
ततः सम्प्रति यावज्जीवं जीवदया मया विधातव्या ।
मांसं न भक्षितव्यं, पापर्द्धिश्च परिहर्तव्या ।।10।।
यो देवतानां पुरत आरोग्यशान्तिकर्मकृते,
पशुमहिषाणां विनाशः क्रियते, सोऽपि मया निवारयितव्यः ।।11।।
बालोऽप्येवं जानाति-जीववधेन स्वर्गो न लभ्यते ।
किं पन्नगमुखकुहरात् पीयूषरसवृष्टिर्भवति ? ।।12।।

(हिन्दी अनुवाद)

अतः भद्र ऐसे मेरे द्वारा पूर्वभव में निश्चय अनुकंपा की गई होगी इसलिए संकटों को दूर करके यह राज्यलक्ष्मी मुझे प्राप्त हुई है । (9)

अतः अब मुझे यावज्जीव जीवदया का पालन करना, मांस नहीं खाना और शिकार का भी त्याग करना चाहिए (अर्थात् त्याग करता हूँ) । (10)

देवों के सम्मुख आरोग्य और शांतिकार्य हेतु जो पशुओं और महिषों (भैंसों) का वध किया जाता है, वह भी मुझे अवश्य रोकना है । (11)

बालक भी यह तो जानता है कि–जीवहिंसा करने से स्वर्गप्राप्ति नहीं होती है, क्या सर्प के मुखरूपी गुफा में से कभी अमृतरस की वृष्टि होती है ?(12)

(प्राकृत)

[1]तो [2]गुरुणा [3]वागरियं, [4]नरिंद ! [5]तुह [7]धम्मबंधुरा [6]बुद्धी ।
[8]सव्वुत्तमो [9]विवेगो, [10]अणुत्तरं [11]तत्तदंसितं ।।13।।

[1]जं [2]जीवदयारम्मे, [4]धम्मे [3]कल्लाणजणणकयकम्मे ।
[5]सग्गापवग्गपुरमग्ग-दंसणे [6]तुह [7]मणं [8]लीणं ।।14।।

तओ रन्ना रायाएसपेसणेण सव्वगामनगरेसु अमारिघोसणापडहवायण-पुव्वं पवत्तिया जीवदया ।

गुरुणा भणिओ राया, महाराय ! दुप्पच्चया पाएण मंसगिद्धी ।
धन्नो तुमं भायणं सकलकल्लाणाणं जेण कया मंसनिवित्ती ।

(संस्कृत अनुवाद)

ततो गुरुणा व्याकृतम्, नरेन्द्र । तव बुद्धिर्धर्मबन्धुरा ।
सर्वोत्तमो विवेकः, अनुत्तरं तत्त्वदर्शित्वम् ।।।13।।

यज्जीवदयारम्ये, कल्याणजननकृतकर्मणि ।
स्वर्गाऽपवर्गपुरमार्गदर्शने धर्मे तव मनो लीनम् ।।।14।।

ततो राज्ञा राजादेशप्रेषणेन सर्वग्रामनगरेष्वमारिघोषणापटहवादनपूर्वं प्रवर्तिता जीवदया ।

गुरुणा भणितो राजा, महाराज ! प्रायेण मांसगृद्धिर्दुष्प्रत्यजा ।
धन्यस्त्वम्, सकलकल्याणानां भाजनम्, येन मांसनिवृत्तिः कृता ।

(हिन्दी अनुवाद)

तत्पश्चात् गुरु भगवंत ने कहा, हे राजन् ! तुम्हारी बुद्धि धर्ममय है, विवेक सर्वोत्तम है और तत्त्वदर्शित्व भी अनुपम है । (13)

जीवदया द्वारा मनोहर, कल्याणकारी उत्तम कार्य, स्वर्ग और अपवर्ग रूपी नगर के मार्ग को बतानेवाले धर्म में तुम्हारा मन लीन बना है । (14)

अतः राजा (कुमारपाल) ने राजा आदेश = फरमान भेजकर प्रत्येक गाँव और नगर में अमारिघोषणा पटह वादनपूर्वक जीवदया का पालन करवाया ।

गुरु भ. ने राजा को कहा, हे राजेश्वर ! प्रायः मांस के प्रति आसक्ति मुश्किल से छूटती है ।

तुम्हें धन्य है, तुम सकल कल्याण के पात्र हो, अतः (तुमने) मांस का त्याग किया ।

(प्राकृत)

संपयं मज्जवसणदोसे सुणसु–

[3]नच्चइ [4]गायइ [5]पहसइ, [6]पणमइ [7]परिभमइ [9]मुयइ [8]वत्थं पि ।
[10]तूसइ [11]रूसइ [2]निक्कारणं पि [1]मइरामउम्मत्तो ।।15।।

[4]जणणिं पि [5]पिययमं, [6]पिययमं पि [7]जणणिं [3]जणो [8]विभावंतो ।
[1]मइरामएण [2]मत्तो, [9]गम्मागम्मं [10]न [11]याणेइ ।।16।।

[2]न हु [2]अप्पपरविसेसं, [4]वियाणए [1]मज्जपाणमूढमणो ।
[6]बहु [7]मन्नइ [5]अप्पाणं, [9]पहुं पि [10]निब्भत्थए [8]जेण ।।17।।

(संस्कृत अनुवाद)

साम्मतं मद्यव्यसनदोषात् शृणु–

मदिरामदोन्मत्तो निष्कारणमपि, नृत्यति, गायति, प्रहसति, प्रणमति, परिभ्राम्यति, वस्त्रमपि मुञ्चति, तुष्यति, रुष्यति ।।15।।

मदिरामदेन, मत्तो जनो जननीमपि प्रियतमां, प्रियतमामपि,
जननीं विभावयन् गम्याऽगम्यां न जानाति ।।16।।

मद्यपानमूढमना आत्मपरविशेषं न खलु विजानाति ।
आत्मानं बहु `मन्यते, येन प्रभुमपि निर्भर्त्सयेत् ।।17।।

(हिन्दी अनुवाद)

अब मद्यपान के व्यसन से होनेवाले दोष सुनो–

मदिरापान से मदोन्मत्त बना व्यक्ति निष्कारण भी नृत्य करता है, गाता है, खड़खड़ाह हँसता है, प्रणाम करता है, भटकता है, कपडा फेंकता है, आनंदित होता है और गुस्सा करता है । (15)

मदिरा के मद से उन्मत्त मानव माता को भी पत्नी, पत्नी को माता स्वरुप मान लेता है, गम्य या अगम्य उसके पास जा सके या नहीं-वह भी नहीं जानता है । (16)

मदिरापान से मूढ मनवाला अपने अथवा पराये के भेद को नहीं जानता है, स्वयं को समर्थ मानता है अतः सेठ का भी तिरस्कार करता है । (17)

(प्राकृत)

[6]वयणे [5]पसारिए [7]साणया, [8]विवरब्भमेण [9]मुत्तंति ।
[2]पहपडियस्स [1]सवस्स व, [4]दुरप्पणो [3]मज्जमत्तस्स ।।18।।
[1]धम्मत्थकामविग्धं, [2]विहणियमइकित्तिकंतिमज्जायं ।
[8]मज्जं [5]सव्वेसिं पि हु, [7]भवणं [6]दोसाण [3]किं [4]बहुणा ? ।।19।।
[1]जं [2]जायवा [3]ससयणा, [4]सपरियणा [5]सविहवा [6]सनयरा य ।
[7]निच्चं [8]सुरापसत्ता, [9]खयं [10]गया [11]तं [12]जए [13]पयडं ।।20।।
[2]एवं [1]नरिंद ! [6]जाओ, [3]मज्जाओ [4]जायवाण [5]सव्वखओ ।
[7]ता [8]रन्ना [9]नियरज्जे, [10]मज्जपवित्ती वि [11]पडिसिद्धा ।।21।।

कुमारपालप्रतिबोधे

(संस्कृत अनुवाद)

शवस्येव पथिपतितस्य, मद्यमत्तस्य दुरात्मनः ।
प्रसारिते वदने श्वानः विवरभ्रमेण मूत्रयन्ति ।।18।।
धर्मार्थकामविघ्नं, विहंतमतिकीर्तिकान्तिमर्यादाम् ।
किं बहुना ? सर्वेषामपि दोषाणां भवनं खलु मद्यम् ।।19।।
यद् यादवाः सस्वजनाः, सपरिजनाः सविभवाः सनगराश्च ।
नित्यं सुराप्रसक्ताः क्षयं गताः, तज्जगति प्रकटम् ।।20।।
नरेन्द्र ! एवं मद्याज्जादवानां सर्वक्षयो जातः ।
ततो राज्ञा निजराज्ये, मद्यप्रवृत्तिरपि प्रतिषिद्धा ।।21।।

(हिन्दी अनुवाद)

शव की तरह रास्ते में पड़े, मदिरा से उन्मत्त दुष्ट पुरुष के खुले मुँह में कुत्ते भी विवर समझकर पेशाल कर लेते हैं । (18)

धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ में विघ्नरूप, बुद्धि, कीर्ति और कांति की सीमा को नष्ट करनेवाला है । अधिक क्या कहना ? सचमुच सभी दोषों का उत्पत्तिस्थान मद्य ही है । (19)

जो यादव स्वजन, परिजन, वैभव और नगरों के साथ हमेशा मदिरा में मशगूल=आसक्त रहने से नष्ट हुए, वे जगत् में प्रसिद्ध ही हैं । (20)

हे नरपति ! इस प्रकार मदिरा से यादवों का सर्वनाश हुआ, अतः राजा ने भी अपने राज्य में मदिरा की प्रवृत्ति पर प्रतिबंध करवाया । (21)

(17) पाइअसुभासिअपज्जाणि

(प्राकृत)

[3]न वि [1]मुंडिएण [2]समणो, [6]न [4]ओंकारेण [5]बम्भणो ।
[9]न [8]मुणी [7]रण्णवासेण, [10]कुसचीरेण [12]न [11]तावसो ॥1॥
[1]समयाए [2]समणो [3]होइ, [4]बम्भचेरेण [5]बंभणो ।
[6]नाणेण य [7]मुणी [8]होइ, [9]तवेणं [11]होइ [10]तावसो ॥2॥
[2]कम्मुणा [2]बम्भणो [3]होइ, [4]कम्मुणा [6]होइ [5]खत्तिओ ।
[8]वइसो [7]कम्मुणा [9]होइ, [11]सुद्दो [12]हवइ [10]कम्मुणा ॥3॥

धम्मो–(धर्मः)

[1]जत्थ य [2]विसयविरागो, [3]कसायचाओ [4]गुणेसु [5]अणुराओ ।
[6]किरियासु [7]अप्पमाओ, [8]सो [9]धम्मो [10]सिवसुहोवाओ ॥4॥

(प्राकृतसुभाषितपद्यानि) (संस्कृत अनुवाद)

मुण्डितेन श्रमणो नाऽपि, ओङ्कारेण ब्राह्मणो न ।
अरण्यवासेन मुनिर्न, कुशचीरेण तापसो न ॥1॥
समतया श्रमणो भवति, ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणः ।
ज्ञानेन च मुनिर्भवति, तपसा तापसो भवति ॥2॥
कर्मणा ब्राह्मणो भवति, कर्मणा क्षत्रियो भवति ।
कर्मणा वैश्यो भवति, कर्मणा शूद्रो भवति ॥3॥
यत्र च विषयविरागः, कषायत्यागो गुणेष्वनुरागः ।
क्रियास्वप्रमादः, स धर्मः शिवसुखोपायः ॥4॥

(हिन्दी अनुवाद)

मुंडन कराने से साधु नहीं बना जाता है, ओंकार के रटण से ब्राह्मण नहीं बना जाता है, जंगल में रहने मात्र से मुनि नहीं बना जाता है और घास के वस्त्र धारण करने से तापस नहीं बना जाता है । (1)

समता धारण करने से साधु बना जाता है, ब्रह्मचर्य के पालन से ब्राह्मण बनते हैं, ज्ञान से मुनि बनते हैं और तपश्चर्या से तापस बनते हैं । (2)

कर्मों से ब्राह्मण होते हैं, कर्म से ही क्षत्रिय बनते हैं, कर्म से ही वैश्य होते हैं और कर्म से ही शूद्र होते हैं (मात्र जन्म से नहीं) । (3)

जहाँ विषयों के प्रति विरक्ति है, कषायों का त्याग है, गुणों के प्रति अनुराग है और क्रिया में अप्रमत्तभाव है वह धर्म ही मोक्षसुख का कारण है । (4)

(प्राकृत)

[2]जाएण [1]जीवलोगे, [4]दो चेव [3]नरेण [5]सिक्खियव्वाइं ।
[7]कम्मेण [6]जेण [8]जीवइ, [9]जेण [10]मओ [11]सुग्गइं [12]जाइ ।।5।।
[1]धम्मेण [2]कुलप्पसूई, [3]धम्मेण य [4]दिव्वरूवसंपत्ती ।
[5]धम्मेण [6]धणसमिद्धी, [7]धम्मेण [8]सवित्थरा [9]कित्ती ।।6।।
[2]मा [3]सुअह [1]जग्गिअव्वे, [4]पलाइअव्वंमि [5]कीस [6]वीसमह ।
[10]तिन्नि [11]जणा [12]अणुलग्गा, [7]रोगो अ [8]जरा य [9]मच्चू अ ।।7।।

(संस्कृत अनुवाद)

जीवलोके जातेन नरेण द्वे चैव शिक्षितव्ये ।
येन कर्मणा जीवति, येन मृतः सुगतिं याति ।।5।।
धर्मेण कुलप्रसूतिः, धर्मेण च दिव्यरूपसम्प्राप्तिः ।
धर्मेण धनसमृद्धिः, धर्मेण सविस्तरा कीर्तिः ।।6।।
जागरितव्ये मा स्वपित, पलायितव्ये कस्माद् विश्राम्यत् ? ।
रोगो जरा मृत्युश्च-त्रयो जना अनुलग्नाः ।।7।।

(हिन्दी अनुवाद)

जगत् में जन्मे हुए मनुष्य को दो बात सीखनेलायक है, एक=स्वयं कर्म से जीता है और दूसरी बात=कर्म के अनुसार सद्गति में जाता है । (5)

धर्म से उत्तम कुल में जन्म होता है, धर्म से ही अनुपम रुप की प्राप्ति होती है, धर्म से धन की समृद्धि मिलती है और धर्म से ही कीर्ति फैलती है । (6)

जागने योग्य स्थान में तुम सोते न रहो और चलने योग्य स्थान में क्यों बैठे हो ? क्योंकि व्याधि, वृद्धावस्था और मृत्यु ये तीनों तुम्हारा पीछा कर रहे हैं । (7)

(दाणं) (प्राकृत)

[7]सग्गो [6]ताण [8]घरंगणे [10]सहयरा, [9]सव्वा [11]सुहा [12]संपया ।
[13]सोहग्गाइगुणावली [16]विरयए [14]सव्वंग [15]मालिंगणं ।।
[17]संसारो [19]न [18]दुरुत्तरो [20]सिवसुहं, [22]पत्तं [21]करंभोरुहे ।
[1]जे [4]सम्मं [3]जिणधम्मकम्मकरणे, [5]वट्टंति [2]उद्धारया ।।8।।
[12]नो [9]तेसिं [10]कुवियं व [8]दुक्खम[7]खिलं, [13]आलोयए [11]सम्मुहं,
[19]नो [20]मिल्लेइ [18]घरं [14]कमंकवडिया, [16]दासिव्व [17]तेसिं [15]सिरी ।
[20]सोहग्गाइगुणा [25]चयंति [24]न [21]गुणा-ऽऽबद्धव्व [22]तेसिं [23]तणुं,
[1]जे [4]दाणंमि [3]समीहियत्थजणणे, [6]कुव्वंति [5]जत्तं [2]जणा ।।9।।

(दानम्) (संस्कृत अनुवाद)

ये उद्धारकाः जिनधर्मकर्मकरणे सम्यग् वर्तन्ते,
तेषां स्वर्गो गृहाङ्गणे, सर्वे सहचराः, शुभाः सम्पदः ।
सौभाग्यादिगुणावलिः सर्वाङ्गमालिङ्गनं विरचयति,
संसारो दुरुत्तरो न, शिवसुखं कराम्भोरुहे प्राप्तम् ।।8।।
ये जनाः समीहितार्थजनने दाने यत्नं कुर्वन्ति,
अखिलं दुःख तेषां सम्मुखं कुपितमिव नाऽऽलोकते ।
क्रमाङ्कपतिता श्रीर्दासीव तेषां गृहं न मेलयति,
सौभाग्यादिगुणा गुणाऽऽबद्धा इव तेषां तनुं न त्यजन्ति ।।9।।

(हिन्दी अनुवाद)

जो आत्मिक उद्धार करनेवाले जिनेश्वर के धर्मकार्य करने में अच्छी तरह प्रयत्नशील होते हैं, स्वर्ग उनके गृहांगण में ही है, हर तरह की सुखसंपत्ति सहचरी है, सौभाग्य आदि गुणों की परंपरा=श्रेणी उनके संपूर्ण शरीर में आलिंगन करती है, संसार से पार उतरना उनके लिए दुष्कर नहीं है और मोक्षसुख भी उनके करकमलों में ही है । (8)

जो लोग मनोवांछित पदार्थों को देनेवाले दान देने में प्रयत्न करते हैं, उनके सामने सभी दुःख, क्रोधित व्यक्ति की तरह देखते भी नहीं है, चरणकमल में आयी लक्ष्मी दासी की तरह उनका घर नहीं छोड़ती है और सौभाग्य आदि गुण भी मानों रस्सी से बंधे न हों, उस तरह उनके शरीर को छोड़ते नहीं है । (9)

लच्छी (प्राकृत)

[1]ववसायफलं [2]विहवो, [3]विहवस्स [4]फलं [5]सुपत्तविणिओगो ।
[6]तयभावे [7]ववसाओ, [8]विहवो वि अ [9]दुग्गइनिमित्तं ॥10॥

[7]विगुणमवि [8]गुणड्ढं, [9]रुवहीणं पि [10]रम्मं,
[11]जडमवि [12]मइमंतं [13]मंदसत्तं पि [14]सूरं ।
[15]अकुलमवि [16]कुलीणं [5]तं [17]पयंपंति [6]लोया,
[1]नवकमलदलच्छी [3]जं [4]पलोएइ [2]लच्छी ॥11॥

[1]जाई [2]रुवं [3]विज्जा, [4]तिण्णि वि [7]निवडंतु [5]कंदरे [6]विवरे ।
[8]अत्थु [9]च्चिअ [10]परिवड्ढउ, [11]जेण [12]गुणा [13]पायडा [14]हुंति ॥12॥

(लक्ष्मी) (संस्कृत अनुवाद)

व्यवसायफलं विभवः, विभवस्य फलं सुपात्रविनियोगः ।
तदभावे व्यवसायो विभवोऽपि च दुर्गतिनिमित्तम् ॥10॥

नवकमलदलाक्षी लक्ष्मीर्यं प्रलोकयति, तं लोका विगुणमपि गुणाढ्यं, रुपहीनमपि रम्यं, जडमपि मतिमन्तं, मन्दसत्त्वमपि शूरं, अकुलमपि कुलीनं प्रजल्पयन्ति ॥11॥

जाती रुपं विद्यास्त्रीण्यपि कन्दरे विवरे निपतन्तु ।
अर्थ एव परिवर्धताम्, येन गुणाः प्रकटा भवन्ति ॥12॥

(हिन्दी अनुवाद)

व्यापार का फल वैभव है और वैभव का फल सुपात्रदान है, उसके=सुपात्रदान बिना व्यापार और वैभव दोनों दुर्गति के कारण स्वरूप हैं। (10)

नये कमलदलसमान नेत्रोंवाली लक्ष्मी जिस व्यक्ति पर नजर करती है, ऐसे निर्गुणी (व्यक्ति) को भी लोग गुणवान, कुरुप को भी रुपवान=रमणीय, मूर्ख को भी बुद्धिशाली, मंद सत्त्वशाली को भी शूरवीर और नीचकुल में उत्पन्न व्यक्ति को भी उच्च कुलवाला कहते हैं। (11)

जाति, रुप और विद्याये तीन गहरे खड्ढे में गिरो, परंतु धन ही वृद्धिंगत बने, जिससे सभी गुण प्रकट होते हैं। (12)

(प्राकृत)

सीलं

[2]अलसा [3]होइ [1]अकज्जे, [4]पाणिवहे [6]पंगुला [5]सया [7]होइ ।
[8]परतत्तिसु [9]बहिरा, [11]जच्चंधा [10]परकलत्तेसु ।।13।।
[1]जो [3]वज्जइ [2]परदारं, [4]सो [8]सेवइ [7]नो [5]कयाइ [6]परदारं ।
[9]सकलत्ते [10]संतुट्ठो, [13]सकलत्तो [11]सो [12]नरो [14]होइ ।।14।।
[3]वरं [1]अग्गिंमि [2]पवेसो, [7]वरं [4]विसुद्धेण [5]कम्मुणा [6]मरणं ।
[8]मा [7]गहिअव्वयभंगो, [11]मा [10]जीअं [9]खलिअसीलस्स ।।15।।

(संस्कृत अनुवाद)

शीलम्

अकार्येऽलसा भवन्ति, प्राणिवधे सदा पङ्गुला भवन्ति ।
परनिन्दासु बधिराः, परकलत्रेषु जात्यन्धाः (भवन्तु) ।।13।।
यो वर्जति परद्वारम्, स कदापि परदारा न सेवते ।
स्वकलत्रे सन्तुष्टः, स नरः सकलत्रो भवति ।।14।।
अग्नौ प्रवेशो वरम्, विशुद्धेन कर्मणा मरणं वरम् ।
मा गृहीतव्रतभङ्गः, भावः मा स्खलितशीलस्य जीवितम् ।।15।।

(हिन्दी अनुवाद)

अकार्य (दूसरों के दोष देखने) में प्रमादी, जीवहिंसा में सदा लूले (लंगड़े), दूसरों के दोष सुनने में बधिर और परायी स्त्रियों के विषय में जन्मांध बनना चाहिए। (13)

जो व्यक्ति दूसरों के गृहद्वार=घर के दरवाजे छोड़ता है वह कभी भी परस्त्री का सेवन नहीं करता है, जो स्वस्त्री में संतुष्ट है वह मानव सबका रक्षक है। (14)

आग में गिर जाना श्रेष्ठ है, निर्मल-उत्तम कार्य द्वारा मरना उत्तम है, परन्तु ग्रहण किये हुए व्रत का भंग अथवा स्खलित शीलवान व्यक्ति का जीवन श्रेष्ठ नहीं है। (15)

(प्राकृत)

भावो

[2]जा [1]दव्वे [4]होइ [3]मई, [5]अहवा [7]तरुणीसु [6]रुववंतीसु ।
[8]सा [9]जइ [10]जिणवरधम्मे, [11]करयलमज्झे [13]ठिआ [12]सिद्धी ।।16।।
[2]तक्कविहूणो [3]विज्जो, [4]लक्खणहीणो अ [5]पंडिओ [1]लोए ।
[6]भावविहूणो [7]धम्मो, [8]तिन्नि वि [9]नूणं [10]हसिज्जंति ।।17।।
[18]वंझं [19]बिंति [1]जहित्थ[2] [5]सत्थपढणं, [3]अत्थावबोहं [4]विणा,
[6]सोहग्गेण [7]विणा [8]मडप्पकरणं, [11]दाणं [10]विणा [9]संभमं ।
[12]सब्भावेण [13]विणा [14]पुरंधिरमणं, [15]नेहं [16]विणा [17]भोयणं,
[20]एवं [25]धम्मसमुज्जमं पि [21]विबुहा, [22]सुद्धं [24]विणा [23]भावणं ।।18।।

(संस्कृत अनुवाद)

या द्रव्ये मतिर्भवति, अथवा रुपवतीषु तरुणीषु ।
सा यदि जिनवरधर्मे, सिद्धिः करतलमध्ये स्थिता ।।16।।
लोके तर्कविहीनो विद्वान्, लक्षणहीनश्च पण्डितः ।
भावविहीनो धर्मः, त्रयोऽपि नूनं हस्यन्ते ।।17।।
यथेहाऽर्थावबोधं विना शास्त्रपठनम्,
सौभाग्येन विनाऽहङ्कारकरणम्, सम्भ्रमं विना दानं,
सद्भावेन विना पुरन्ध्रीरमणं, स्नेहं विना भोजनं,
एवं विबुधाः शुद्धां भावनां विना धर्मसमुद्यममपि (वन्ध्यं) ब्रवीन्ति ।।18।।

(हिन्दी अनुवाद)

धन के प्रति अथवा स्वरूपवान स्त्रियों के प्रति जो बुद्धि है, वह बुद्धि यदि जिनेश्वर के धर्म में हो तो सिद्धि=(मोक्ष) हथेली में ही रही हुई है । (16)

जगत् में तर्करहित विद्वान्, व्याकरण नहीं जाननेवाला पंडित और भाव रहित धर्म-ये तीन सचमुच हँसी के पात्र बनते हैं । (17)

जैसे इस जगत में अर्थ के ज्ञान बिना शास्त्र का अभायस, सौभाग्य बिना अभिमान करना, आदर बिना दान, सद्भाव बिना पत्नी के साथ क्रीड़ा, प्रीति बिना भोजन निष्फल है, वैसे ही पण्डित पुरुष शुद्धभावरहित धर्म के उद्यम को भी निष्फल कहते हैं । (18)

दया

(प्राकृत)

[5]किं [1]ताए [4]पढिआए, [3]पयकोडीए [2]पलालभूआए ।
[6]जत्थित्ति [11]यं [12]न [13]नायं, [7]परस्स [8]पीडा [9]न [10]कायव्वा ॥19॥
[1]इक्कस्स [3]कए [2]निअजीविअस्स, [4]बहुआओ [5]जीवकोडीओ ।
[8]दुक्खे [9]ठवंति [9]जे [7]केइ, [10]ताणं [12]किं [13]सासयं [11]जीअं ? ॥20॥
[1]जं [3]आरुग्ग [3]मुदग्गमप्पडिहयं, [6]आणेसरत्तं [5]फुडं,
[8]रूवं [7]अप्पडिरूव [9]मुज्जलतरा, [10]कित्ती [11]धणं [12]जुव्वाणं ।
[13]दीहं [14]आउ [15]अवंचणो [16]परिअणो, [18]पुत्ता [17]सुपुण्णासया,
[19]तं [20]सव्वं [21]सचराचरंमि वि [22]जए, [23]नूणं [24]दयाए [25]फलं ॥21॥

दया (संस्कृत अनुवाद)

तया पलालभूतया पदकोट्या पठितया किम् ?
यत्र–**'परस्य पीडा न कर्तव्या'** एतावन्न ज्ञातम् ॥19॥
एकस्य निजजीवितस्य कृते बह्व्यो जीवकोट्यः ।
ये केऽपि दुःखे स्थापयन्ति, तेषां जीवितं किं शाश्वतम् ? ॥20॥
यदुदग्रमारोग्यम्, अप्रतिहतं स्फुटमाज्ञेश्वरत्वम्,
अप्रतिरूपं रूपम्, उज्ज्वलतरा कीर्तिः, धनं, यौवनम् ।
दीर्घमायुः, अवञ्चनः परिजनः, सुपुण्याऽऽशयाः पुत्राः,
तत् सर्वं सचराचरेऽपि जगति सत्यम्, नूनं दयायाः फलम् ॥21॥

दया (हिन्दी अनुवाद)

वे छिलके जैसे करोड पद पढ़ने से भी क्या ? कि जिनसे–`दूसरों को पीड़ा=दुःख नहीं देना चाहिए' इतना भी ज्ञान नहीं मिले । (19)

जो एक मात्र अपने जीवन हेतु अनेक करोड़ों जीवों को दुःख देता है, क्या उसका जीवन भी शाश्वत है ? = सदाकाल रहनेवाला है ? (20)

जो सुंदर आरोग्य, जिसका प्रतिकार न किया जा सके वैसी स्पष्ट आज्ञा का स्वामित्व, अनुपम रूप, निर्मलतर कीर्ति, धन, जवानी, दीर्घायु, सरल सेवकवर्ग, पवित्र आशयवाले पुत्र, यह सब इस परिवर्तनशील जगत में मिलता है, सचमुच यह सब दया का फल है । (21)

सच्चं

(प्राकृत)

[1]सच्चेण [3]फुरइ [2]कित्ती, [4]सच्चेण [5]जणंमि [7]होइ [6]वीसासो ।
[9]सग्गापवग्गसुहसंपयाउ [10]जायंति [8]सच्चेण ।।22।।
[1]पलए वि [2]महापुरिसा, [3]पडिवन्नं [4]अन्नहा [5]न हु [6]कुणंति ।
[9]गच्छंति [8]न [7]दीणयं (खलु), [12]कुणंति [11]न हु [10]पत्थणाभंग ।।23।।
[1]जेण [2]परो [3]दूमिज्जइ, [6]पाणिवहो [7]होइ [4]जेण [5]भणिएण ।
[8]अप्पा [10]पडइ [9]अणत्थे, [13]न हु [11]तं [14]जंपंति [12]गीअत्था ।।24।।

(संस्कृत अनुवाद)

सत्येन कीर्तिः सत्यम्, सत्येन जने विश्वासो भवति ।
सत्येन स्वर्गापवर्गसुखसम्पदो जायन्ते ।।22।।
प्रलयेऽपि महापुरुषाः, प्रतिपन्नमन्यथा न खलु कुर्वन्ति ।
दीनतां न गच्छन्ति, प्रार्थनाभङ्गं न खलु कुर्वन्ति ।।23।।
येन परो दूम्यते, येन भणितेन प्राणिवधो भवति ।
आत्माऽनर्थे पतति, तत् खलु गीतार्थ न जल्पन्ति ।।24।।

(हिन्दी अनुवाद)

सत्य के कीर्ति (फैलती) है, सत्य से लोगों में विश्वास उत्पन्न होता है, सत्य से स्वर्ग और अपवर्ग के सुख की संपत्ति भी मिलती है । (22)

प्रलयकाल में भी महापुरुष स्वीकृत बात को पलटते नहीं हैं, दीनता प्राप्त नहीं करते हैं और किसी की भी प्रार्थना को ठुकराते नहीं हैं अर्थात् मांग पूरी करते हैं । (23)

जिस वचन से दूसरों के दिल में परिताप होता है, जिस वचन से जीवहिंसा होती है और स्वयं अनर्थ को प्राप्त करे, वैसे वचन गीतार्थ महापुरुष नहीं बोलते हैं । (24)

(प्राकृत)

पुण्णं

[2]संगामे [1]गयदुग्गमे [4]हुयवहे, [3]जालावलीसंकुले,
[6]कंतारे [5]करिवग्घसीहविसमे, [8]सेले [7]बहुवद्दवे ।
[10]अंबोहिंमि [9]समुल्लसंतलहरी-लंघिज्जमाणंबरे,
[11]सव्वो [13]पुव्वभवज्जिएहि [12]पुरिसो, [14]पुन्नेहि [15]पालिज्जए ।।25।।

(नाणाई) [1]नाणं [2]मोहमहंधयारलहरी-संहारसूरुग्गमो,
[3]नाणं [4]दिट्ठ अदिट्ठइट्ठघडणा-संकप्पकप्पद्दुमो ।
[5]नाणं [6]दुज्जयकम्मकुंजरघडा-पंचत्तपंचाणणो,
[7]नाणं [8]जीवअजीववत्थुविसर-[9]स्सालोयणे [10]लोयणं ।।26।।

(संस्कृत अनुवाद)

(पुण्य) गजदुर्गमे सङ्ग्रामे, ज्वालावलीसङ्कुले हुतवहे,
करिव्याघ्रसिंहविषमे कान्तारे, बहूपद्रवे शैले ।
समुल्लसल्लहरीलङ्घ्यमानाऽम्बरेऽम्भोधौ,
सर्वः पुरुषः पूर्वभवार्जितैः पुण्यैः पाल्यते ।।25।।

(ज्ञानादि) ज्ञानं मोहमहान्धकारलहरीसंहारसूर्योद्गमः,
ज्ञानं दृष्टाऽदृष्टेष्टघटनासङ्कल्पकल्पद्रुमः ।
ज्ञानं दुर्जयकर्मकुञ्जरघटापञ्चत्वपञ्चाननः,
ज्ञानं जीवाऽजीववस्तुसमूहस्याऽऽलोकने लोचनम् ।।26।।

(हिन्दी अनुवाद)

हाथियों के कारण दुर्गम युद्ध में, ज्वालाओं के समूह से धगधगायमान आग में, हाथी-व्याघ्र और सिंह से विकट जंगल में, अत्यधिक संकटवाले पर्वत पर और मानों आकाश को स्पर्श करती उछलती लहरोंवाले समुद्र में भी प्रत्येक पुरुष पूर्वभव में उपार्जित पुण्य से ही रक्षण किया जाता है । (25)

मोहरुपी अंधकार की परंपरा को दूर करने में ज्ञान सूर्य के उदय समान है, ज्ञान दृष्ट (देखे हुए) या अदृष्ट (नहीं देखे हुए) मनपसंद कार्य के संकल्प हेतु कल्पवृक्ष समान है, ज्ञान दुर्जय कर्मरूपी हाथियों के वृन्द का नाश करने में सिंह समान है और ज्ञान जीव-अजीवादि पदार्थों के समूह को देखने के लिए चक्षु समान है । (26)

(प्राकृत)

[1]जहा [3]खरो [2]चंदणभारवाही, [4]भारस्स [5]भागी [7]न हु [6]चंदणस्स ।
[8]एवं खु [11]नाणी [9]चरणेण [10]हीणो, [12]नाणस्स [13]भागी [15]न हु [14]सुग्गईए ।।27।।

[1]सुच्चा [3]जाणए [2]कल्लाणं, [4]सुच्चा [6]जाणइ [5]पावगं ।
[8]उभयं पि [9]जाणइ [7]सोच्चा, [10]जं [11]सेयं [12]तं [13]समायरे ।।28।।

[1]तं [2]रूवं [3]जत्थ [4]गुणा, [5]तं [6]मित्तं [7]जं [9]निरंतरं [8]वसणे ।
[10]सो [11]अत्थो [12]जो [13]हत्थे, [14]तं [15]विन्नाणं [16]जहिं [17]धम्मो ।।29।।

पइन्नगगाहा

[1]तावच्चिअ [3]होइ [2]सुहं, [4]जाव [8]न [9]कीरइ [7]पिओ [6]जणो [5]को वि ।
[11]पिअसंगो [10]जेण [12]कओ, [14]दुक्खाण [15]समप्पिओ [13]अप्पा ।।30।।

(संस्कृत अनुवाद)

यथा चन्दनभारवाही खरः, भारस्य भागी न खलु चन्दनस्य ।
एवं खलु चरणेन हीनो ज्ञानी, ज्ञानस्य भागी न खलु सुगतेः ।।27।।

श्रुत्वा कल्याणं जानाति, श्रुत्वा पापकं जानाति ।
श्रुत्वोभयमपि जानाति, यच्छ्रेयस्तत् समाचरेत् ।।28।।

तद् रूपं यत्र गुणाः, तन्मित्रं यद् व्यसने निरन्तरम् ।
सोऽर्थो यो हस्ते, तद् विज्ञानं यत्र धर्मः ।।29।।

प्रकीर्णकगाथाः

तावदेव सुखं भवति, यावत् कोऽपि जनः प्रियो न क्रियते ।
येन प्रियसङ्गः कृतः, आत्मा दुःखानां समर्पितः । ।।30।।

(हिन्दी अनुवाद)

जिस प्रकार चंदन के भार को वहन करनेवाला गधा मात्र भार को ही वहन करता है परंतु चंदन की सुगंध ग्रहण नहीं करता है, उसी तरह चारित्र रहित ज्ञानी, मात्र ज्ञान को जानता है परंतु सद्गति प्राप्त नहीं करता है। (27)

श्रावक (जिनवाणी) सुनकर ही अपना श्रेय=संयम जानता है, सुनकर ही पाप को पहिचानता है, सुनकर ही उभय पुण्य और पाप को जानता है, उसके बाद जो श्रेयस्कर लगे उसका आचरण करना चाहिए। (28)

वही रूप है जहाँ गुण रहे हैं, वही मित्र है जो संकट में साथ में रहता है, वही धन है जो अपने हाथ में है और वही सम्यग्ज्ञान है जहाँ धर्म है। (29)

तब तक ही सुख है जब तक कोई भी व्यक्ति प्रिय नहीं बनता है, अतः जिसने प्रिय (=प्रेम) का संबंध किया, उसने अपनी आत्मा को दुःखो को सौंप दिया है । (30)

(प्राकृत)

[5]न हु [7]होइ [6]सोइअव्वो, [1]जो [4]कालगओ [2]दढं [3]समाहीए ।
[10]सो [12]होइ [11]सोइअव्वो, [9]तवसंजमदुब्बलो [8]जो उ ।।31।।

[2]जं चिअ [1]विहिणा [3]लिहिअं, [4]तं चिअ [6]परिणमइ [5]सयललोअस्स ।
[7]इअ [8]जाणिऊण [9]धीरा, [10]विहुरे वि [12]न [11]कायरा [13]हुंति ।।32।।

[2]पत्ते [1]वसंतमासे, [4]रिद्धिं [5]पावंति [3]सयलवणराई ।
[6]जं [9]न [7]करीरे [8]पत्तं, ता [11]किं [12]दोसो [10]वसंतस्स ? ।।33।।

[2]उइअंमि [1]सहस्सकरे, [3]सलोयणो [5]पिच्छइ [4]सयललोओ ।
[6]जं [8]न [7]उलूओ [9]पिच्छइ, [10]सहस्सकिरणस्स [11]को [12]दोसो ? ।।34।।

(संस्कृत अनुवाद)

यो दृढं समाधिना कालगतः, न खलु शोचितव्यो भवति ।
यस्तु तपः संयमदुर्बलः स शोचितव्यो भवति ।।31।।

यच्चैव विधिना लिखितं, तच्चैव सकललोकस्य परिणमति ।
इति ज्ञात्वा धीराः, विधुरेऽपि कातरा न भवन्ति ।।32।।

वसन्तमासे प्राप्ते सकलवनराजय ऋद्धिं प्राप्नुवन्ति ।
यत् करीरे पत्रं न, ततो वसन्तस्य को दोषः ? ।।33।।

सहस्त्रकरे उदिते, सलोचनः सकलजनः पश्यति ।
यदुलूको न पश्यति, सहस्त्रकिरणस्य को दोषः ? ।।34।।

(हिन्दी अनुवाद)

जिस व्यक्ति ने उत्तम समाधिपूर्वक मृत्यु प्राप्त की है, वह शोक करने योग्य नहीं है, परन्तु जो तप और संयमपालन में दुर्बल हो वही वास्तव में शोक करने योग्य है । (31)

जो भाग्य में लिखा है, वही प्रत्येक जीव को होता है, यह जानकर धीरपुरुष संकट में भी कायर नहीं बनते हैं । (32)

वसंतऋतु आने पर संपूर्ण वनसमूह खिलता है, परन्तु करीर (जवासा) के पेड़ पर पत्ते नहीं आते हैं, उसमें वसंतऋतु का क्या दोष ? (33)

सूर्य का उदय होने पर चक्षुवान सभी लोग देख सकते हैं, परन्तु उल्लू देख नहीं सकता है, उसमें सूर्य का क्या दोष ? (34)

(प्राकृत)

[1]गयणंमि [2]गहा [3]सयणंमि, [4]सुविणया [6]सउणया [5]वणग्गेसु ।
[8]तह [9]वाहरंति [7]पुरिसं, [10]जह [12]दिट्ठं [11]पुव्वकम्मेहिं ।।35।।
[1]कत्थइ [2]जीवो [3]बलवं, [4]कत्थइ [5]कम्माइं [7]हुंति [6]बलिआइं ।
[8]जीवस्स य [9]कम्मस्स य, [10]पुव्वनिबद्धाइं [11]वेराइं ।।36।।
[1]देवस्स [2]मत्थए [3]पाडिऊण, [5]सव्वं [6]सहंति [4]कापुरिसा ।
[7]देवो वि [8]ताण [9]संकइ, [10]जेसिं [11]तेओ [12]परिप्फुरइ ।।37।।
[1]जीअं [2]मरणेण [3]समं, [7]उप्पज्जइ [4]जुव्वणं [6]सह [5]जराए ।
[8]रिद्धी [9]विणाससहिआ, [10]हरिसविसाओ [11]न [12]कायव्वो ।।38।।

(संस्कृत अनुवाद)

गगने ग्रहाः, शयने स्वप्नाः, वनाग्रेषु शकुनाः ।
तथा पुरुषं व्याहरन्ति, यथा पूर्वकर्मभिर्दृष्टम् ।।35।।
क्वापि जीवो बलवान्, कुत्राऽपि कर्माणि बलवन्ति भवन्ति ।
जीवस्य च कर्मणश्च, पूर्वनिबद्धानि वैराणि ।।36।।
देवस्य मस्तके पतित्वा, कापुरुषाः सर्वं सहन्ते ।
देवोऽपि तेषां शङ्कते, येषां तेजः परिस्फुरति ।।37।।
जीवितं मरणेन समम्, यौवनं जरया सहोत्पद्यते ।
ऋद्धिर्विनाशसहिता, हर्षविषादौ न कर्तव्यो ।।38।।

(हिन्दी अनुवाद)

आकाश में सभी ग्रह, नींद में स्वप्न और वन में पक्षी भी पुरुष (मानव) को उस प्रकार अनुकूल या प्रतिकूल बनते हैं, जिस प्रकार पूर्वोपार्जित कर्मों द्वारा होनेवाला हो । (35)

कभी आत्मा बलवान होती है, तो कभी कर्म बलवान होता है, सचमुच जीव और कर्म की पूर्वबद्ध वैर जैसी परिस्थिति है । (36)

देवता को लक्ष्य बनाकर कायर पुरुष सब सहन करते हैं, परन्तु देव भी उससे सतर्क रहते हैं, जिसका तेज स्फुरायमान है । (37)

जीवन मृत्यु के साथ और जवानी वृद्धावस्था के साथ ही उत्पन्न होती हैं, समृद्धि भी विनाशसहित है अतः इसमें आनंद या खेद नहीं करना चाहिए। (38)

(प्राकृत)

[4]अवगणइ [3]दोसलक्खं, [8]इक्कं [9]मंनेइ [5]जं [7]कयं [6]सुकयं ।
[2]सयणो [1]हंससहावो, [11]पिअइ [10]पयं [13]वज्जए [12]नीरं ।।39।।
[4]संतगुणकित्तणेण वि, [3]पुरिसा [5]लज्जंति [1]जे [2]महासत्ता ।
[6]इअरा [7]अप्पस्स [8]पसंसणेण, [9]हियए [10]न [11]मायंति ।।40।।
[1]संतेहिं [2]असंतेहिं अ, [3]परस्स [6]किं [5]जंपिएहिं [4]दोसेहिं ।
[7]अच्छो [8]जसो [9]न [10]लब्भइ, [11]सो वि [12]अमित्तो [13]कओ [14]होइ ।।41।।
[1]विहलं [2]जो [3]अवलंबइ, [5]आवइपडिअं च [4]जो [6]समुद्धरइ ।
[7]सरणागयं च [3]रक्खइ, [10]तिसु [9]तेसु [12]अलंकिआ [11]पुहवी ।।42।।

(संस्कृत अनुवाद)

हंसस्वभावः सज्जनः दोषलक्षमवगणयति, यत् सुकृतं कृतम्,
(तद्) एकं मन्यते, पयः पिबति नीरं वर्जयति ।।39।।
ये महासत्त्वाः पुरुषाः सद्गुणकीर्तनेनाऽपि लज्जन्ते ।
इतरे आत्मनः प्रशंसनेनाऽपि हृदयने न मान्ति ।।40।।
परस्य सद्भिरसद्भिश्च, दोषैर्जल्पितैः किम् ?
अच्छं यशो न लभ्यते, सोऽप्यमित्रः कृतो भवति ।।41।।
यो विह्वलमवलम्बते, यश्चाऽऽपतितं समुद्धरति ।
शरणाऽऽगतं च रक्षति, तैस्त्रिभिः पृथ्व्यलङ्कृता ।।42।।

(हिन्दी अनुवाद)

हंस जैसे स्वभाववाला सज्जन, लाखों दोषों की अवगणना करता है, लेकिन जो कोई सत्कार्य किया हो, उस एक को ही देखता है, जैसे हंस दूध पीता है और पानी को छोड़ देता है। (39)

सात्त्विक पुरुष विद्यमान गुणों की भी प्रशंसा करने में शरमाते हैं, जब कि अन्य लोग अपनी प्रशंसा करते हृदय में फूले नहीं समाते हैं। (40)

दूसरो के विद्यमान या अविद्यमान दोष कहने से क्या लाभ ? इससे यश नहीं मिलता है और वह व्यक्ति भी दुश्मन बन जाता है। (41)

जो संकट में आये हुए को आश्रय देता है, जो आपत्ति में आये हुए का उद्धार करता है और शरणागत का रक्षण करता है, इन तीनों द्वारा पृथ्वी शोभा देती है। (42)

(प्राकृत)

[1]सह [2]जागराण [3]सह [4]सुआणाणं, [5]सह [6]हरिससोअवंताणं ।
[3]नयणाणं व [7]धन्नाणं, [9]आजम्मं [10]निच्चलं [11]पिम्मं ।।43।।

[1]विणए [2]सिस्सपरिक्खा, [4]सुहडपरिक्खा य [5]होइ [3]संगामे ।
[6]वसणे [7]मित्तपरिक्खा, [9]दाणपरिक्खा य [8]दुक्काले ।।44।।

[1]आरंभे [3]नत्थि [2]दया, [4]महिलासंगेण [6]नासए [5]बंभं ।
[7]संकाए [8]सम्मत्तं, [10]पव्वज्जा [9]अत्थगहणेण ।।45।।

[2]दीसइ [1]विविहच्छरिअं, [4]जाणिज्जइ [3]सुअणदुज्जणविसेसो ।
[5]अप्पाणं [6]कलिज्जइ, [9]हिंडिज्जइ [7]तेण [8]पुहवीए ।।46।।

(इन्द्रियविषयभावना) (संस्कृत अनुवाद)

सह जाग्रतोः सह स्वपतोः सह हर्षशोकवतोः ।
धन्ययोः नयनयोरिव आजन्म निश्चलं प्रेम ।।43।।

विनये शिष्यपरीक्षा, सङ्ग्रामे च सुभटपरीक्षा भवति ।
व्यसने मित्रपरीक्षा, दुष्काले च दानपरीक्षा ।।44।।

आरम्भे दया नाऽस्ति, महिलासङ्गेन ब्रह्म नश्यति ।
शङ्कया सम्यक्त्वम्, अर्थग्रहणेन प्रव्रज्या ।।45।।

विविधाऽऽश्चर्यं दृश्यते, सुजनदुर्जनविशेषो ज्ञायते ।
आत्मा कल्यते, तेन पृथिव्यां हिण्ड्यते ।।46।।

(हिन्दी अनुवाद)

साथ में जागते, साथ में सोते, साथ में ही आनंद और दुःख व्यक्त करते कुछ धन्य पुरुषों का ही दो नेत्रों की तरह आजीवन निश्चल प्रेम होता है। (43)

विनय में शिष्य की परीक्षा, युद्ध में सैनिकों की परीक्षा, संकट में मित्र की परीक्षा और दुष्काल में दान की परीक्षा होती है (44)

आरम्भ-समारम्भ के कार्य में दया नहीं रहती है, स्त्री के संपर्क से ब्रह्मचर्य नष्ट होता है, शंका से सम्यक्त्व और धन ग्रहण करने से संयम का नाश होता है। (45)

अनेक प्रकार के आश्चर्य देखने को मिले, सज्जन और दुर्जन का भेद ज्ञात हो, आत्मा को बोध हो अथवा स्वयं कलाओं में कुशल बने, अतः दुनिया (जगत्) में घूमना चाहिए। (46)

(प्राकृत)

[2]सत्थं [1]हिअयपविट्ठं, [3]मारइ [5]जणे [6]पसिद्धमिणं।
[7]तं पि [8]गुरुणा [9]पउत्तं, [10]जीवावइ [12]पिच्छ [11]अच्छरिअं ॥47॥
[1]जणणी [2]जम्मुप्पत्ती, [3]पच्छिमनिद्दा [4]सुभासिआ [5]गुट्ठी।
[6]मणईट्ठं [7]माणुस्सं, [8]पंच वि [9]दुक्खेहिं [10]मुच्चंति ॥48॥
[2]जं [1]अवसरे [7]न [8]हूअं, [3]दाणं [4]विणओ [5]सुभासिअं [6]वयणं।
[9]पच्छा [10]गयकालेणं, [11]अवसरहिएण [13]किं [12]तेण ? ॥49॥
[4]उवभुंजिउं [5]न [6]याणइ, [2]रिद्धिं [3]पत्तो वि [1]पुण्णपरिहीणो।
[7]विमले वि [8]जले [9]तिसिओ, [11]जीहाए [10]मंडलो [12]लिहइ ॥50॥

(संस्कृत अनुवाद)

हृदयप्रविष्टं शस्त्रं मार्यते, इदं जने प्रसिद्धम्।
तदपि गुरुणा प्रयुक्तं जीवाययत्याऽऽश्चर्यं पश्य ॥47॥
जननी, जन्मोत्पत्तिः, पश्चिमनिद्रा सुभाषिता गोष्ठी।
मनइष्टं मानुष्यं, पञ्चापि दुःखैर्मुच्यन्ते ॥48॥
अवसरे यद् दानं, विनयः, सुभाषितं वचनं न भूतम्।
पश्चाद् गतकालेन अवसररहितेन तेन किम् ? ॥49॥
पुण्यपरिहीण ऋद्धिं प्राप्तोऽप्युपभोक्तुं न जानाति।
विमलेऽपि जले तृषितो मण्डलो जीह्वया लिखति ॥50॥

(हिन्दी अनुवाद)

हृदय में प्रविष्ट शस्त्र मारता है यह जगत् प्रसिद्ध है, परन्तु गुरु भगवंत द्वारा प्रयुक्त वही शस्त्र जीवन देता है। (47)

माता, जन्मभूमि, पश्चिमरात्रि की निद्रा, सुभाषितों की गोष्ठी (चर्चा) और मनपसन्द मनुष्य ये पाँच दुःखपूर्वक छूटते हैं। (48)

समय (=अवसर) आने पर जो दान दिया न जाए, विनय किया न जाए, सुभाषित वचन बोले न जाए, तो समय बीतने पर, अवसर रहित उनसे =(दान, विनय, सुभाषित वचन से) क्या (लाभ) ? (49)

पुण्यहीन आत्मा समृद्धि प्राप्त करने पर भी उसका उपभोग करना नहीं जानता है, निर्मल पानी में भी रहा तृषातुर कुत्ता जीभ से ही (पानी) चाटता है ।(50)

(प्राकृत)

[3]आकड्ढिउण [2]नीरं, रेवा [4]रयणायरस्स [5]अप्पेइ ।
[7]न हु [8]गच्छेइ [6]मरुदेसे, [9]सच्चं [10]भरिआ [11]भरिज्जंति ।।51।।
[1]सा [2]साई [4]तंपि [3]जलं, [5]पत्तविसेसेण [6]अंतरं [7]गुरुअं ।
[8]अहिमुहि [9]पडिअं [10]गरलं, [11]सिप्पिउडे [12]मुत्तियं [13]होइ ।।52।।
[1]केसिंचि [3]होइ [2]वित्तं, [5]चित्तं [4]अन्नेसिमुभयमन्नेसिं ।
[8]चित्तं [9]वित्तं [10]पत्तं, [11]तिण्णि वि [12]केसिंचि [13]धन्नाणं ।।53।।
[1]कत्थ वि [2]दलं [4]न [3]गंद्यो, [5]कत्थ वि [6]गंधो [8]न [9]होइ [7]मयरंदो ।
[11]इक्ककुसुमंमि [10]महुयर !, [12]दो तिण्णि [13]गुणा [14]न [15]दीसंति ।।54।।

(संस्कृत अनुवाद)

रेवा नीरमाकृष्य रत्नाकरस्याऽर्पयति ।
मरुदेशे न खलु गच्छति, सत्यं भृता भ्रियन्ते ।।51।।
सा स्वातिः, जलमपि तत्, पात्रविशेषेणाऽन्तरं गुरुकम् ।
अहिमुखे पतितं गरलं, शुक्तिपुटे मौक्तिकं भवति ।।52।।
केषाश्चिद् वित्तं भवति, अन्येषां चित्तम्, अन्येषामुभयम् ।
चित्तं वित्तं पात्रं, त्रीण्यपि केषाश्चिद् धन्यानाम् ।।53।।
कुत्राऽपि दलं, गन्धो न, क्वाऽपि गन्धो, मकरन्दो न भवति ।
मधुकर ! एककुसुमे द्वौ त्रयो वा गुणा न दृश्यन्ते ।।54।।

(हिन्दी अनुवाद)

नर्मदा नदी पानी को वहन करके समुद्र को देती है, परन्तु मरुदेश को नहीं देती है, सचमुच भरे हुए ही भरे जाते हैं । (51)

वही स्वाति नक्षत्र है, वही पानी है, परन्तु पात्र विशेष से बड़ा अंतर हो जाता है, सर्प के मुख में गिरा (पानी) जहर बन जाता है और सीप के अंदर गिरा (पानी) मोती बन जाता है । (52)

किसी के पास धन होता है, किसी के पास मन होता है, तो किसी के पास दोनों होते हैं, परन्तु मन, धन और पात्र ये तीनों तो किसी धन्यात्मा को ही प्राप्त होते हैं । (53)

किसी वृक्ष पर फूल होता है, गंध नहीं होती है, कहीं गंध होती है परन्तु मकरंद=पुष्परस नहीं होता है, हे भ्रमर ! एक ही फूल पर दो या तीन गुण देखने को नहीं मिलते हैं। (54)

(प्राकृत)

[1]कत्थ वि [2]जलं [4]न [3]छाया, [5]कत्थ वि [6]छाया [9]सीअलं [8]सलिलं ।
[11]जलछायासंजुत्तं, [12]तं [10]पहिअ ! [13]सरोवरं [14]विरलं ।।55।।
[1]कत्थ वि [2]तवो [4]न [3]तत्तं, [5]कत्थ वि [6]तत्तं [8]न [7]सुद्धचारित्तं ।
[9]तवतत्तचरणसहिआ, [10]मुणिणो वि अ [12]थोव [11]संसारे ।।56।।
[4]दुक्खाण [5]एउ [6]दुक्खं, [1]गुरुआण [2]जणाण [3]हिअयमज्झंमि ।
[7]जंपि [8]परो [9]पत्थिज्जइ, [10]जंपि य [11]परपत्थणाभंगो ।।57।।

(संस्कृत अनुवाद)

क्वाऽपि जलं छाया न, कुत्राऽपि छाया शीतलं सलिलं न ।
पथिक ! जलछायासंयुक्तं, तत् सरोवरं विरलम् ।।55।।
कुत्राऽपि तपः तत्त्वं न, क्वाऽपि तत्त्वं, शुद्धचारित्रं न ।
तपस्तत्त्वचरणसहिता मुनयोऽपि च संसारे स्तोकाः ।।56।।
गुरुकाणां जनानां हृदयमध्ये दुःखानामेतद् दुःखम् ।
यदपि परः प्रार्थ्यते, यदपि च परप्रार्थनाभङ्गः ।।57।।

(हिन्दी अनुवाद)

कहीं पानी होता है परन्तु छाया नहीं होती है, कहीं छाया होती है परन्तु शीतल जल नहीं होता है, हे मुसाफिर ! पानी और छाया दोनों से सुशोभित सरोवर दुर्लभ है। (55)

किसी के पास तप होता है परन्तु तत्त्वज्ञान नहीं होता है, किसी के पास तत्त्वज्ञान होता है परन्तु निर्मलतर संयम नहीं होता है। तप, तत्त्वज्ञान और संयम से सुशोभित साधु भी संसार में अल्प होते हैं। (56)

महान पुरुषों के हृदय में यही सबसे बड़ा दुःख है, एक तो-दूसरों के पास मांगना और दूसरा-अन्य की प्रार्थना का भंग करना। (57)

(प्राकृत)

[3]किं किं [4]न [5]कयं, [6]को को [7]न [8]पत्थिओ, [9]कह कह [11]न [12]नामिअं [10]सीसं ?।
[1]दुब्भरउअरस्स [2]कए, [13]किं [14]न [15]कयं [16]किं [17]न [18]कायव्वं ।।58।।

[2]जीवंति [1]खग्गछिन्ना, [3]पव्वयपडिआवि [4]के वि [5]जीवंति ।
[7]जीवंति [6]उदहिपडिआ, [8]चट्टुच्छिन्ना [9]न [10]जीवंति ।।59।।
[3]जं [5]अज्जिअं [4]चरित्तं, [1]देसूणाए अ [2]पुव्वकोडीए ।
[6]तं पि [7]कसाइयमित्तो, [10]हारेइ [8]नरो [9]मुहुत्तेण ।।60।।
[1]तं [3]नत्थि [2]घरं [4]तं [6]नत्थि, [5]राउलं [8]देउलं पि [7]तं [9]नत्थि ।
[10]जत्थ [11]अकारणकुविआ, [12]दो [13]तिन्नि [14]खला [15]न [16]दीसंति ।।61।।

(संस्कृत अनुवाद)

दुर्भरोदरस्य कृते किं किं न कृतम् ? कः को न प्रार्थितः ? क्व क्व शीर्षं न नामितम् ? किं न कृतं ?, किं न कर्तव्यम् ? ।।58।।

खड्गच्छिन्ना जीवन्ति, पर्वतपतिता अपि केऽपि जीवन्ति ।
उदधिपतिता जीवन्ति, चटुच्छिन्ना न जीवन्ति ।।59।।
देशोनया पूर्वकोट्या च यच्चारित्रमर्जितम् ।
तदपि कषायिकमात्रो नरो मुहूर्तेन हारयति ।।60।।
तद् गृहं नाऽस्ति, तद् राजकुलं नाऽस्ति, तद् देवकुलमपि नाऽस्ति ।
यत्राऽकारणकुपिताः, द्वौ त्रयो वा खला न दृश्यन्ते ।।61।।

(हिन्दी अनुवाद)

दुःखपूर्वक भरा जाय ऐसे पेट हेतु क्या-क्या नहीं किया ? किस-किस के पास (प्रत्येक व्यक्ति के पास) हाथ लम्बा नहीं किया ? कहाँ-कहाँ मस्तक नहीं झुकाया ? क्या-क्या नहीं किया ? और क्या-क्या करने योग्य नहीं है । (58)

तलवार से भेदे हुए जीवित रहते हैं, पर्वत पर से गिरे हुए कुछ व्यक्ति जीवित रहते हैं, समुद्र में गिरे हुए भी जीवित रहते हैं परन्तु कुक्षिप्रमाण आहार नहीं मिलने पर जीवित नहीं रह सकते हैं । (59)

देशोन पूर्वक्रोड़ वर्षपर्यन्त संयमपालन से जो संयमभाव प्राप्त होते हैं, वे भी कषाय करने मात्र से जीव एक मुहूर्त में हार जाता है । (60)

वैसा कोई घर नहीं है, वैसा कोई राजकुल नहीं है, वैसा कोई देवालय नहीं है, जहाँ निष्कारण क्रोधित दो या तीन पुरुष दिखाई नहीं देते हैं । (61)

(प्राकृत)

[4]अइतज्जणा [5]न [6]कायव्वा, [1]पुत्तकलत्तेसु [2]सामिए [3]भिच्चे ।
[7]दहिअं पि [8]महिज्जंतं, [10]छंडइ [9]देहं [12]न [11]संदेहो ।।62।।

[1]वल्ली [2]नरिंदचित्तं, [3]वक्खाणं [4]पाणिअं च [5]महिलाओ ।
[6]तत्थ य [8]वच्चंति [7]सया, [9]जत्थ य [10]धुत्तेहिं [11]निज्जंति ।।63।।
[4]अवलोअइ [3]गंथत्थं, [5]अत्थं [6]गहिऊण [8]पावए [7]मुक्खं ।
[9]परलोए [11]देह [10]दिट्ठी, [2]मुणिवरसारिच्छया [1]वेसा ।।64।।
[1]दो [2]पंथेहिं [3]न [4]गम्मइ, [5]दोमुहसूई [7]न [8]सीवए [6]कंथं ।
[11]दुन्नि [13]न [14]हुंति [12]कया वि हु, [9]इंदियसुक्खं च [10]मुक्खं च ।।65।।

(संस्कृत अनुवाद)

पुत्रकलत्रयोः स्वामिनि भृत्येऽतितर्जना न कर्तव्या ।
दध्यपि मथ्यमानं देहं मुञ्चति, सन्देहो न ।।62।।
वल्ली, नरेन्द्रचित्तं, व्याख्यानं, पानीयं महिलाश्च ।
तत्र च सदा व्रजन्ति, यत्र च धूर्तैर्नीयन्ते ।।63।।
वेश्या मुनिवरसदृशी ग्रन्थार्थमलवलोकयति ।
अर्थं गृहीत्वा मोक्षं प्राप्नोति, परलोके दृष्टिर्ददाति ।।64।।
द्वाभ्यां पथिभ्यां न गम्यते, द्विमुखसूची कन्थां न सीव्यति ।
इन्द्रियसौख्यं च मोक्षश्च द्वे कदापि न खलु भवतः ।।65।।

(हिन्दी अनुवाद)

पुत्र, पत्नी, सेठ अथवा नौकर (सेवक) का अत्यंत तिरस्कार नहीं करना चाहिए, क्योंकि दही भी मथने पर अपना स्वरूप छोड़ देता है, उसमें कोई संशय नहीं है । (62)

बेल, राजा का मन, प्रवचन, पानी और स्त्रियाँ हमेशा वहीं जाते हैं, जहाँ वे धूर्त पुरुषों द्वारा ले जाये जाते है । (63)

वेश्या साधु के समान होती है, जिस प्रकार साधु भगवंत ग्रन्थों के अर्थ का अवगाहन करते हैं, अर्थ को जानकर मोक्ष प्राप्त करते हैं, परलोक तरफ दृष्टि डालते हैं, उसी प्रकार वेश्या गांठ में रहे धन को देखती है, धन को लेकर उससे छूट जाती है और दूसरे पुरुष में नजर ड़ालती है । (64)

जिस प्रकार एक साथ में दो रास्तों पर नहीं चल सकते हैं, एक साथ में दो मुखवाली सलाई से कपड़ा नहीं सीया जाता है, उसी प्रकार इन्द्रियों के सुख और मोक्ष ये दोनों एक साथ में कभी प्राप्त नहीं होते हैं । (65)

(प्राकृत)

[2]वसणे [3]विसायरहिया, [4]संपत्तीए [5]अणुत्तरा [9]हुंति ।
[6]मरणे वि [7]अणुव्विग्गा, [8]साहससारा य [1]सप्पुरिसा ।।66।।
[3]अणुवट्ठिअस्स [4]धम्मं, [5]मा [6]हु [7]कहिज्जाहि [1]सुट्ठु वि [2]पियस्स ।
[11]विच्छायं [12]होइ [10]मुहं, [8]विंज्झायग्गिं [9]धमंतस्स ।।67।।
[4]रयणिं [1]अभिसारियाओ, [2]चोरा [3]परदारिया य [5]इच्छंति ।
[6]तालायरा [7]सुभिक्खं, [1]बहुधन्ना [8]केइ [10]दुब्भिक्खं ।।68।।

(संस्कृत अनुवाद)

सत्पुरुषा व्यसने विषादरहिताः, सम्पत्त्यामनुत्तराः,
मरणेऽप्यनुद्विग्नाः, साहससाराश्च भवन्ति ।।66।।
सुष्ठु प्रियस्याऽप्यनुपस्थितस्य, धर्मं मा खलु कथय ।
विध्याताऽग्निं धमतो, मुखं विच्छायं भवति ।।67।।
अभिसारिकाश्चौराः, पारदारिकाश्च रजनीमिच्छन्ति ।
तालाचराः सुभिक्षं, केचिद् बहुधन्या दुर्भिक्षम् ।।68।।

(हिन्दी अनुवाद)

सत्पुरुष आपत्ति में खेदरहित होते हैं, समृद्धि में अनुत्तर=श्रेष्ठ होते हैं, मृत्यु समय भी उद्वेगरहित और साहसवंत होते हैं । (66)

अत्यंत प्रिय हो तो भी अनुपस्थित=अपने सामने नहीं आये हुए को धर्म नहीं कहना चाहिए, क्योंकि बुझते हुए अग्नि को फूँकने पर आपना ही मुख मलिन होता है । (67)

अभिसारिका=संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्रियाँ, चोर और परस्त्रीलंपट पुरुष रात को चाहते हैं, चोर सुकाल और अधिक धान्यवाले कुछ लोग दुष्काल चाहते हैं । (68)

(प्राकृत)

[5]जंकिंचि [3]पमाएणं, [7]सुट्ठु [1]भे [8]वट्टियं [2]मए [4]पुव्विं ।
[10]तं भे[9] [14]खामेमि [13]अहं, [11]निस्सलो [12]निक्कसाओ अ ।।69।।
[1]गुणसुट्ठिअस्स [2]वयणं, [3]घयपरिसित्तो [5]व्व [4]पावओ [6]भाइ ।
[7]गुणहीणस्स [8]न [9]सोहइ, [11]नेहविहूणो [10]जह [12]पईवो ।।70।।
[1]अइबहुयं [2]अइबहुसो, [3]अइप्पमाणेण [4]भोयणं [5]भुत्तं ।
[8]हाएज्ज व [8]वामेज्ज व, मारेज्ज व [7]त्तं [6]अजीरंतं ।।71।।

[3]जंपेज्ज [2]पियं [4]विणयं, [5]करिज्ज [7]वज्जेज्ज [1]पुत्ति ! [6]परनिंद ।
[8]वसणे वि [11]मा [12]विमुंचसु, [1]देहच्छाय व्व [10]नियनाहं ॥72॥

(संस्कृत अनुवाद)

भो ! मया प्रमादेन पूर्वं यत्किञ्चित् सुष्ठु न वर्तितम् ।
भो ! तन्निःशल्यो निष्कषायश्चाऽहं क्षाम्यामि ॥69॥
गुणसुस्थितस्य वदनं घृतपरिषिक्तः पावक इव भाति ।
गुणहीनस्य न शोभते, यथा स्नेहविहीनः प्रदीपः ॥70॥
अतिबहुकमतिबहुशोऽतिप्रमाणेन भोजनं भुक्तम् ।
अजीर्यमाणं तज्जह्याद्वा वमेद्वा, म्रियेत वा ॥71॥
पुत्रि !, प्रियं जम्पेद्, विनयं कुर्यात्, परनिन्दां वर्जेत् ।
व्यसनेऽपि देहच्छायेव निजनाथं मा विमुञ्च ॥72॥

(हिन्दी अनुवाद)

मैंने पहले प्रमाद के कारण जोह कुछ सम्यक् आचरण नहीं किया है, उसकी शल्यरहित और कषायरहित मैं क्षमापना करता हूँ । (69)

गुणवान पुरुष का मुख घी से सिंचित अग्नि के समान तेजस्वी लगता है और निर्गुण पुरुष का मुख स्निग्धता=घी रहित दीपक के समान निस्तेज लगता है । (70)

अत्यधिक, बहुत बार और प्रमाण से अधिक किया गया भोजन अजीर्णवान पुरुष को दस्त लगाता है, वमन कराता है अथवा मारता (प्राणरहित बनता) है । (71)

हे पुत्री ! प्रिय बोलना चाहिए, विनय करना चाहिए, परनिंदा का त्याग करना चाहिए और संकट में देह की छाया की तरह अपने पति का त्याग नहीं करना चाहिए । (72)

(प्राकृत)

[1]किं [2]लद्धं [4]लहिही [3]वरं [7]पिययमं, [5]किं [6]तस्स [8]संपज्जिही,
[9]किं [11]लोयं [10]ससुराइयं [12]नियगुण-ग्गामेण [13]रंजिस्सए ?
[14]किं [15]सीलं [16]परिपालिही ? [20]पसविही, [17]किं [18]पुत्तमेवं [19]धुवं,
[24]चिंतामुत्तिमई [21]पिऊण [22]भवणे, [25]संवट्टए [23]कन्नगा ॥73॥
[5]धम्मारामखयं [6]खमाकमलिणी-संघायनिग्घायणं,
[7]मज्जायातडिपाडणं [8]सुहमणो-हंसस्स [9]निव्वासणं ।

[11]वुड्ढिं [10]लोहमहण्णवस्स [13]खणणं, [12]सत्ताणुकंपाभुवो,
[14]संपाडेइ [4]परिग्गहो [1]गिरिनई-पूरो [2]व्व [3]वड्ढंतओ ।।74।।

(संस्कृत अनुवाद)

किं लष्टं वरं लप्स्यसे ?, किं तस्य प्रियतमां संपत्स्यसे ?
किं श्वसुरादिकं लोकं निजगुणग्रामेण रङ्क्ष्यति ? ।
किं शीलं परिपालयिष्यसि, ध्रुवं पुत्रमेव प्रसविष्यसे ?
पित्रोर्भवने कन्यका चिन्तामूर्तिमती संवर्तते ।।73।।

गिरिनदीपूर इव वर्धमानः परिग्रहः
धर्माऽऽरामक्षयं, क्षमाकमलिनीसंघातनिर्घातनम्,
मर्यादातटीपातनं, शुभमनोहंसस्य निर्वासनम्,
लोभमहार्णवस्य वृद्धिं, सत्त्वानुकम्पाभुवः खननं सम्पादयति ।।74।।

(हिन्दी अनुवाद)

क्या योग्य पति मिलेगा ? क्या उसका प्रेम संपादन करेगी ? क्या श्वसुर आदि को अपने गुणों के समूह से आनंदित करेगी ? क्या शील का बराबर पालन करेगी ? क्या निश्चय पुत्र को ही जन्म देगी ? इस प्रकार माता-पिता के घर कन्या साक्षात् चिन्ता की मूर्तिसमान है । (73)

पर्वत की नदी में बाढ़ समान वृद्धिगत परिग्रह धर्मरूपी बगीचे का नाश करता है, क्षमारूपी कमलिनी के समूह का उच्छेदक है, मर्यादारूपी किनारे को गिरानेवाला है, शुभ मनरूपी हंस को देशनिकाला करनेवाला है, लोभरूपी महासमुद्र को बढ़ानेवाला और जीवों की अनुकंपारूपी पृथ्वी को खोदनेवाला है । (74)

(प्राकृत)

[1]हा [2]कुंदिंदुसमुज्जलो [6]कलुसिओ, [3]तायस्स [4]वंसो [5]मए,
[8]बंधूणं [9]मुहपंकएसु य [7]हहा, [11]दिन्नो [10]मसीकुच्चओ ।
[12]ही [13]तेलुक्क [14]मकित्तिपंसुपसरे-[16]णुद्धूलियं [15]सव्वओ,
[17]धिद्धी ! [19]भीमभवुब्भवाण [21]भवणं, [20]दुक्खाण [18]अप्पा [22]कओ ।।75।।

[1]ऊसस-निसस-रहियं, [4]गुरुणो [2]सेसं [5]वसे [6]हवइ [3]दव्वं ।
[7]तेणाणुण्णा [9]जुज्जइ, [10]अण्णह [12]दोसो [13]भवे [11]तस्स ।।76।।

[7]न [5]सा [6]सहा, [1]जत्थ [3]न [4]संति [2]वुड्ढा,
[13]वुड्ढा [14]न [12]ते, [8]जे [10]न [11]वयंति [9]धम्मं ।
[19]धम्मो [20]न [18]सो, [15]जत्थ य [17]नत्थि [16]सच्चं,
[24]सच्चं [25]न [23]तं, [21]जं [22]छलणाणुविद्धं ।।77।।

(संस्कृत अनुवाद)

हा मया कुन्देन्दुसमुज्ज्वलस्तातस्य वंशः कलुषितः,
हहा ! बन्धूनां मुखपङ्कजेषु च मषीकूर्चको दत्तः ।
ही ! त्रैलोक्यमकीर्तिपांशुप्रसरेण सर्वत उद्धूलितम,
धिग् धिग् ! आत्मा भीमभवोद्भवानां दुःखानां भवनं कृतः ।।75।।

उच्छ्वासनिश्वासरहितं शेषं द्रव्यं गुरोर्वशे भवति ।
तेनाऽनुज्ञा युज्यते, अन्यथा तस्य दोषो भवेत् ।।76।।

यत्र वृद्धाः न सन्ति, सा सभा न, ये धर्मं न वदन्ति, ते वृद्धाः न ।
यत्र च सत्यं नाऽस्ति, स धर्मो न, यच्छलनानुविद्धं, तत् सत्यं न ।।77।।

(हिन्दी अनुवाद)

अहो ! मैंने कुंद = श्वेतफूल और चंद्रसमान निर्मल पिता के वंश को कलंकित किया है, अहो ! भाइयों के मुखरूपी कमल पर स्याही का काला कूर्चक लगाया है, अहो ! अपयशरूपी रजकणों को फैलाकर चारों तरफ से तीन लोक को धूलवाला बना दिया है, मुझे धिक्कार हो ! कि मैंने स्वयं ही आत्मा को भयंकर भव में उत्पन्न दुःखों का स्थान बना दिया है । (75)

उच्छ्वास और निश्वास (=श्वासोच्छ्वास) रहित शेष सब द्रव्य गुरु भगवंत के अधीन है, अतः अनुज्ञा योग्य (उचित) है, अन्यथा तो उसे दोष होता है । (76)

जहाँ वृद्धपुरुष नहीं है, वह सभा नहीं है ! जो धर्म को नहीं कहते हैं वे वृद्धपुरुष नहीं हैं । जहाँ सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है और जो दूसरों को ठगनेवाला है वह सत्य नहीं है । (77)

(प्राकृत)

[8]जोएइ य [1]जो [7]धम्मे, [6]जीवं [3]विविहेण [2]केणइ [4]नएण ।
[5]संसार-चारग-गयं, [1]सो [10]नणु [11]कल्लाणमित्तो त्ति ।।78।।

[1]जिणपूआ [2]मुणिदाणं, [3]एत्तियमेत्तं [5]गिहीण [6]सच्चरियं ।
[7]जइ [8]एआओ [9]भट्ठो, [10]ता [12]भट्ठो [11]सव्वकज्जाओ ।।79।।

[1]नरस्सा[3]भरणं [3]रूवं, [4]रूवस्सा[5]भरणं [6]गुणो ।
[7]गुणस्सा[8]भरणं [9]नाणं, [10]नाणस्सा[11]भरणं [12]दया ॥80॥

[1]अइरोसो [2]अइतोसो, [3]अइहासो [4]दुज्जणेहिं [5]संवासो ।
[6]अइउब्भडो य [7]वेसो, [8]पंच वि [9]गरुयं पि [10]लहुअंति ॥81॥

(संस्कृत अनुवाद)

यः केनाऽपि विविधेन नयेन संसारचारकगतं जीवं ।
धर्मे योजयति, स ननु कल्याणमित्रमिति ॥78॥

जिनपूजा मुनिदानम्, एतावन्मात्रं गृहिणां सच्चरित्रम् ।
यद्येताभ्यां भ्रष्टः, ततः सर्वकार्याद् भ्रष्टः ॥79॥

नरस्याऽऽभरणं रूपम्, रूपस्याऽऽभरणं गुणः ।
गुणस्याऽऽभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याऽऽभरणं दया ॥80॥

अतिरोषोऽतितोषः, अतिहासो, दुर्जनैः संवासः ।
अत्युद्भटश्च वेषः, पञ्चापि गुरुकमपि लघुयन्ति ॥81॥

(हिन्दी अनुवाद)

जो अनेक प्रकार के नयों द्वारा संसार चक्र में रहे जीव को धर्ममार्ग में जोड़ता है, वह सचमुच उसका कल्याणमित्र है । (78)

जिनेश्वर प्रभु की पूजा और साधु भगवंतों को सुपात्रदान, यही गृहस्थ का सच्चारित्र है, जो इन दोनों से भ्रष्ट हुआ, उसे प्रत्येक कार्य से भ्रष्ट समझना चाहिए । (79)

मनुष्य का आभूषण रूप है, रूप की शोभा गुण है, गुण का आभूषण (शोभा) ज्ञान है और ज्ञान का भूषण दया है । (80)

अतिगुस्सा, अतिसंतोष, अतिहर्ष, दुर्जनों के साथ समागम और अति उद्भट वेशभूषा-ये पाँच अपने बडप्पन को भी कलंकित करते हैं । (81)

(प्राकृत)

[1]अभूसणो [3]सोहइ [2]बंभयारी, [4]अकिंचणो [6]सोहइ [5]दिक्खधारी ।
[7]बुद्धिजुओ [9]सोहइ [8]रायमंती, [10]लज्जाजुओ [12]सोहइ [11]एगपत्ती ॥82॥

[4]न [1]धम्मकज्जा [2]पर [5]मत्थि [3]कज्जं, [9]नं [6]पाणिहिंसा [7]परमं [8]अकज्जं ।
[13]न [10]पेमरागा [11]पर[14]मत्थि [12]बंधो, [18]न [15]बोहिलाभा [16]परमत्थि[19] [17]लाभो ॥83॥

[1]जूए [2]पसत्तस्स [3]धणस्स [4]नासो, [5]मंसे [6]पसत्तस्स [7]दयाइनासो ।
[8]मज्जे [9]पसत्तस्स [10]जसस्स [11]नासो, [12]वेसापसत्तस्स [13]कुलस्स [14]नासो।।84।।

(संस्कृत अनुवाद)

अभूषणो ब्रह्मचारी शोभते, अकिञ्चनो दीक्षाधारी शोभते ।
बुद्धियुतो राजमन्त्री शोभते, लज्जायुत एकपत्नीकः शोभते ।।82।।

धर्मकार्यात्परं कार्यं नाऽस्ति, प्राणिहिंसायाः परममकार्यं न ।
प्रेमरागात्परो बन्धो नाऽस्ति, बोधिलाभात् परो लाभो नाऽस्ति ।।83।।

द्यूते प्रसक्तस्य धनस्य नाशः, मांसे प्रसक्तस्य दयादिनाशः ।
मद्ये प्रसक्तस्य यशसो नाशः, वेश्याप्रसक्तस्य कुलस्य नाशः ।।84।।

(हिन्दी अनुवाद)

अलंकार रहित ब्रह्मचारी शोभा देता है, अकिंचन (निष्परिग्रही) संयमी शोभा देते हैं, बुद्धि से अलंकृत राजमंत्री शोभा देते हैं और लज्जायुक्त एकपत्नीवाला कुलवानपुरुष शोभा देता है । (82)

धर्मकार्य समान (श्रेष्ठ) कोई कार्य नहीं है, जीवों की हिंसा से विशेष कोई दुष्कृत्य नहीं हैं, प्रेम के राग से बड़ा कोई बंधन नहीं है और बोधि = सम्यक्त्व की प्राप्ति समान कोई लाभ नहीं है । (83)

जुए में आसक्त व्यक्ति के धन का नाश होता हैं, मांस में आसक्त व्यक्ति के दयादि गुण नष्ट होते हैं, मदिरा में आसक्त मानव की कीर्ति नष्ट होती है और वेश्या में आसक्त मानव के कुल का उच्छेद होता है । (84)

(प्राकृत)

[1]हिंसापसत्तस्स [2]सुधम्मनासो, [3]चोरीपसत्तस्स [4]सरीरनशो ।
[5]तहा [6]परत्थीसु [7]पसत्तयस्स, [8]सव्वस्स [9]नासो [10]अहमा [11]गई य ।।85।।

[2]दाणं [1]दरिद्दस्स, [3]पहुस्स [4]खंती, [6]इच्छानिरोहो य [5]सुहोइयस्स ।
[7]तारुण्णए [8]इंदिय-निग्गहो य, [10]चत्तारि ए[9]आणि [11]सुदुक्कराणि ।।86।।

विविहसत्थाओ ।

(संस्कृत अनुवाद)

हिंसाप्रसक्तस्य सुधर्मनाशः, चौरीप्रसक्तस्य शरीरनाशः ।
तथा परस्त्रीषु प्रसक्तस्य, सर्वस्य नाशोऽधमा गतिश्च ।।85।।

दरिद्रस्य दानम्, प्रभोः क्षान्ति, सुखोचितस्येच्छानिरोधः ।
तारुण्ये इन्द्रियनिग्रहश्च, एतानि चत्वारि सुदुष्कराणि ॥86॥

(हिन्दी अनुवाद)

हिंसा में आनंदित व्यक्ति का सद्धर्म नष्ट होता है, चोरी में अनुरक्त व्यक्ति के शरीर का नाश होता है, उसी प्रकार परस्त्री में लम्पट (आसक्त) व्यक्ति का सब कुछ नष्ट होता है और दुर्गति होती है। (85)

दरिद्र अवस्था में दिया हुआ दान, स्वामी (मालिक) होते हुए भी क्षमा रखना, सुखी होते हुए भी इच्छा का निरोध और जवानी में इन्द्रियों को वश में करना, ये चार अतिदुष्कर कार्य हैं। (86)

पसत्थी

(प्राकृत)

[4]पणमिअ [3]थंमणपासं, [2]जिणीसरं [1]भत्तचित्तवंछिययं ।
[5]जगगुरुनेमिसुरिंदं, [6]जास [7]पसाया [8]इमा [9]रइआ ॥1॥
[2]सगुरुं [3]विन्नाणसूरिं, [1]संतप्पभविअबोहयं [4]वंदे ।
[9]भवकूवाउ [6]असरणो, [5]जेण [7]जडो [8]हं [10]समुद्धरिओ ॥2॥
[1]पन्नासकत्थुरविजय-गणिणा [7]रइया य [3]पाढमालेयं[2] ।
[4]बाणनिहिनंदचंदे, [5]वासे [6]महुमाससुहपक्खे ॥3॥
[1]जाव [3]जिणसासणमिणं[2], [4]जाव य [5]धम्मो [6]जयम्मि [7]विप्फुरइ ।
[9]पाइअविज्जत्थीहिं, [8]ताव [10]सुहं [11]भणिज्जउ [9]एसा ॥4॥ अवि य–
[1]अट्ठारस-दुसहस्से, [2]विक्कमवरिसे [5]तइज्जसक्करणं ।
[3]कत्थूरायरिएणं, [4]सुपाढमालाइ [6]संरइअं ॥5॥

(प्रशस्त्रिः)

(संस्कृत अनुवाद)

भक्तचित्तवाञ्छितदं, जिनेश्वरं स्थम्भनपार्श्वं प्रणम्य ।
जगद्गुरुनेमिसूरीन्द्रं येषां प्रसादादियं रचिता ॥1॥
सन्तप्तभविकबोधदं स्वगुरुं विज्ञानसूरिं वन्दे ।
येनाऽशरणो जडोऽहं भवकूपात् समुद्धृतः ॥2॥
पंन्यासकस्तूरविजयगणिना चेयं पाठमाला ।
बाणनिधिनन्दचन्द्रे वर्षे मधुमासशुभपक्षे रचिता ॥3॥

यावदिदं जिनशासनं यावच्च धर्मो जगति विस्फुरति ।
तावत् प्राकृतविद्यार्थिभिरेषा सुखं भण्यताम् ।।4।।
अपि च-अष्टादशद्विसहस्रे, विक्रमवर्षे ।
कस्तूराचार्येण सुपाठमालायाः तृतीयसंस्करणं संरचितम् ।।5।।

इति श्री शासन सम्राट् नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि पट्टालङ्काराचार्यदेव श्री विजय चन्द्रोदयसूरि गुरुबन्धु आचार्यश्री विजय अशोकचन्द्रसूरि शिष्य पंन्यास सोमचन्द्रविजय गणि सङ्कलिता श्री प्राकृतविज्ञान पाठमाला मार्गदर्शिका सम्पूर्णा ।।

(हिन्दी अनुवाद)

भक्त के मनोवांछित पूर्ण करनेवाले जिनेश्वर श्रीस्थंभनपार्श्वनाथ प्रभु को प्रणाम करके, जगद्गुरु श्रीनेमिसूरीश्वरजी को वंदन करता हूँ—जिनकी कृपा से मैंने इस पाठमाला की रचना की है । (1)

संसार से संतप्त भव्यजीवों को बोधदायक मेरे गुरु श्रीविज्ञानसूरीश्वरजी को वंदन करता हूँ, क्योंकि जिनके द्वारा अशरण और मंदबुद्धिवान मेरा भवरूपी कुए में से उद्धार कराया है । (2)

पंन्यास श्रीकस्तूरविजयगणि द्वारा विक्रम संवत् 1995 वर्ष, चैत्र महीने के शुक्लपक्ष में इस पाठमाला की रचना की गई । (3)

जब तक यह जिनशासन जयवंत है और जब तक जैनधर्म जगत् में गूंजता है, तब तक प्राकृत के विद्यार्थियों द्वारा इस पाठमाला का सुखपूर्वक अभ्यास किया जाय । (4)

विक्रम संवत् 2018 वर्ष में आचार्य श्रीविजयकस्तूरसूरि ने इस पाठमाला का तीसरी बार संस्करण किया । (5)

इस प्रकार शासनसम्राट्, तपागच्छाधिपति, सूरिचक्रवर्ती, जगद्गुरु कदंबगिरि प्रमुखानेक तीर्थोद्धारक भट्टारकाचार्य श्रीमद् विजयनेमिसूरिजी म. के पट्टालंकार पूज्यपाद आ. भट्टारक आचार्यदेव श्रीमद्विजयज्ञानसूरिजी म. के पट्टधर विजयकस्तूरसूरिजी महाराज द्वारा रची हुई यह पाठमाला पूर्ण हुई ।

इस प्रकार श्री शासन सम्राट् श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि पट्टालंकार आचार्यदेव श्रीमद् विजय चन्द्रोदयसूरि गुरुबंधु आचार्यदेव श्रीमद् विजय अशोकचन्द्रसूरि शिष्य पंन्यास सोमचन्द्रविजय गणि वर्तमान में आचार्य श्री सोमचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. संकलित श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला मार्गदर्शिका पूर्ण हुई ।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न, पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 260 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-1)	210/-	42.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	200/-
2.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-2)	220/-	43.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
3.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-3)	125/-	44.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
4.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-4)	135/-	45.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-
5.	आओ संस्कृत सीखें भाग-1	150/-	46.	सम्यग्दर्शन का सूर्योदय	160/-
6.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	400/-	47.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-
7.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	350/-	48.	कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	240/-
8.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	300/-	49.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
9.	विवेकी बनो	90/-	50.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
10.	प्रवचन-वर्षा	60/-	51.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-
11.	आओ श्रावक बनें !	25/-	52.	मन के जीते जीत है	80/-
12.	व्यसन-मुक्ति	100/-	53.	प्रातः स्मरणीय महापुरुष भाग-1	300/-
13.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	54.	प्रातः स्मरणीय महापुरुष भाग-2	300/-
14.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-	55.	प्रातः स्मरणीय महासतियाँ भाग-1	280/-
15.	समाधि मृत्यु	80/-	56.	प्रातः स्मरणीय महासतियाँ भाग-2	300/-
16.	Pearls of Preaching	60/-	57.	इन्द्रिय पराजय शतक	150/-
17.	New Message for a New Day	600/-	58.	संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ)	160/-
18.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	59.	आनन्दघन चौबीसी विवेचन	200/-
19.	अमृत रस का प्याला	300/-	60.	धर्म-बीज	140/-
20.	ध्यान साधना	40/-	61.	45 आगम परिचय	200/-
21.	जीव विचार विवेचन	100/-	62.	नित्य देववंदन	निशुल्क
22.	नवतत्त्व विवेचन	110/-	63.	श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी	170/-
23.	दंडक सूत्र विवेचन	90/-	64.	अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर	160/-
24.	लघु संग्रहणी	140/-	65.	कोयंबत्तुर-प्रवचन	150/-
25.	तीन भाष्य	150/-	66.	दक्षिण भारत प्रवचन	160/-
26.	पहला कर्मग्रन्थ	160/-	67.	महावीर-प्रभु की अंतिम देशना	220/-
27.	दूसरा कर्मग्रन्थ	55/-	68.	योग की आठ दृष्टियाँ	430/-
28.	तीसरा कर्मग्रन्थ	90/-	69.	साचा माणस बनीए ! (गुजराती)	300/-
29.	चौथा कर्मग्रन्थ	140/-	70.	शुभ-संदेश	250/-
30.	पाँचवाँ कर्मग्रन्थ	160/-	71.	भक्ति से मुक्ति	200/-
31.	छठा-कर्मग्रन्थ	210/-	72.	सहनशील बनों (22 परीषह)	180/-
32.	गणधर-संवाद	80/-	73.	नवपद आराधना विधि	नवपद आराधना
33.	आओ ! उपधान पौषध करें !	130/-	74.	शत्रुंजय की भाव यात्रा	230/-
34.	विविध देववंदन	100/-	75.	नवकार-प्रवचन	180/-
35.	भव आलोचना	10/-	76.	10 श्रमण-धर्म	250/-
36.	आध्यात्मिक पत्र	60/-	77.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-1)	1170/-
37.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1	125/-	78.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-2)	1040/-
38.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2	175/-	79.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-3)	900/-
39.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3	150/-	80.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-4)	1270/-
40.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-	81.	समाधि की साधना	300/-
41.	परमेष्ठि-नमस्कार	180/-			

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299